सन् 1950-51 23

भारत हित तथा अनन्...

...के तट पर या तालाब या ... मन्दिर में आकर वहां मेघों ... रे। कमल के आकार का ... बना के उसमें पर्जन्य सहित ... स्थापन करके कनेर के पीले ... पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि ... मेघों के नाम और आवाहन ... मेघदूताय नमः आगच्छ २ ... ॐ ह्रीं मेघदूती कमलोद्भवाय ... स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं महा ... हिमवद्वासिने मेघराजाय ... हा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं नन्दके ... वासिने मेघराजाय आगच्छ २ ... ॐ ह्रीं सिंहराजाय कैलाश ... राजाय आगच्छ २ ... कुम्भराजाय वा ... राजाय आग... नन्दराज ... राजाय ...

कृ.उ.फा.उ.षा				रो.ह.श्रवण				मृ.चि.ध.		
तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्		
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४
चं	०	६	०	मं	०	[illegible]	०	रा		
मं	०	४	६	रा						
रा	०	१०	२४							
बृ	०	९	[illegible]							
श	०	११								
बु	०	[illegible]								
के	०									

भा.					नि	राहु	केतु
तनु १						रोगी	सकाम
धन २				रा	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३			पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४			सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५			प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६			कामी	रोगी	शत्रुजित	सबल	सबल
स्त्री ७			सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगिणी	स्त्रीहा
मृत्यु ८		गुणी	नीचस्वः	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुत
धर्म ९		सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	...मान्	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	सलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय १२	पतितदारहा	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्री-जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावाः	(सूर्य)	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क...धनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखनी
धन २	दरिद्रा	बहुधना	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्त्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिनी	विधर्मा	कृतघ्नी	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकार्त्ता
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुसुता	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सव्यया	सव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

...हो ... योग मिले तो माता ... दान करना चाहिये।

पितृनाशयोगाः—(१) सूर्य मंगल दश... (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो (३) ... १० वें हो (४) पाप ग्रह से युक्त सूर्य सातवें ... योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोगाः—भ्रातृ गृह को ईश जो भौम ... जाके ऐसे योग है भ्रातृ हीन

...|६।४०
...|६।३६
...६|६।३२
...२|६।२८
...८|६।२४
...|६।२०

संतानसुख नाशयोगः—

गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा योग ... लखि परे, ताके पुत्र अभाव ॥ पुत्र धर्म अरु लग्न पति, जाय परे त्रिक थान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान ॥

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम पञ्चम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जातमन साई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होई कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म के बाल ॥ जिनके बुध भृगु राहु संग, सप्तम भाव विराज। लहे सर्वद राज सुख, होवे वेश्याबाज ॥

जारज योगाः—भानु चन्द्रतनु नालखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तरा जन्ममें तब शिशु कहो परार ॥

अथ स्त्री जातक—क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामी दृष्टि ... होय । ... कुल गरल है, भूलि न ब्याहेउ कोय ।। जाके कुज दशमें बसे ऋणी होय पति तासु । लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नही जासु ।। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच । सो कन्या व्यभिचारिणी दूषवर कहं कुज नीच ।। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और । पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या बाल कुठौर ।। लग्न नीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि । सप्तम कुज रण्डा कहे, पति को तजे तनारि ।। छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर परे निज अंग । भौम आठवें भवन में सो पति करिहै भंग ।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सों हीन । ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन ।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे त्रिकधाम । राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम । पापग्रहों के बीच में लग्न होई वा चन्द । सो त्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द ।। सप्तम भृगु जाके बसे सो कुल दोषी नारि । रूपवती तनु भृगु बसे बुध जन कहत विचारि ।।

वैधव्य (विष) कन्या योगाः—चौ०—रविवार द्वितीया जो होय । श्लेषा ताहि दिन में जोय ।।१।। कृतिका होय शनिश्चर वार । साते तिथि का करो विचार ।।२।। होय शतभिषा मंगलवार । कहो द्वादशी तिथि निर्धार ।।३।। इन योगन में कन्या होय । निश्चय विधवा जानो सोय ।।४।। जन्म लग्न द्वेशुभ ग्रह होय । एक पापग्रह नभ १० में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में है ग्रह मानो । ता कन्या को विधवा जानो ।।६।। अश्लेषा द्वितीया को होय । मन्दवार युत लीजो जोय ।।७।। परे शतभिषा मंगलवार । साते तिथि लीजो निर्धार ।।८।। रविवार द्वादशी जो होय । नक्षत्र विशाखा जानो होय ।।९।। ऐसो योग लखि जो परे । तो कन्या को विधवा करे ।।१०।। दो०—धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान । सूर्य होय सुत सदन में कन्या विधवा मान ।।११।।

वैधव्य (विषकन्या) भंग योगाः—जन्म लग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय । अथवा सप्तम लग्न पति सुभगा कन्या होय ।।

काकवन्ध्यादि योगाः—ज्ञे अष्टमे काकवन्ध्या । मन्दार्कविष्टमे वन्ध्या । अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या ।।

स्त्रीणां राजयोगाः—चौपाई—केंद्रधाम नभगा शुभ होई । नरतनु पाय कलत्र समोई ।। रानी होय बहुत धन ताके । मन प्रसन्न होइ है सुत वाके—चन्द्रज तुंग बसे तनु जाई । लाभ भवन गुरु आवे धाई ।। सो तिय होय नृपति की नारी । जनविख्यात होय सुकुमारी ।। ... षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई । शशि दृग केन्द्रभवन में होई ।। ऐसे योग जन्मे सुकुमारी । रानी ...य सदन धनभारी ।। दोहा—कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर । पुत्र पौत्र धन भूरि ...त ताको पति नृप शूर । लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौन । सुरगुरु परिपूर्ण लखे ...नी होइ है तीन ।।

स्त्रीणां पुत्रभाव विचारः—पञ्चमे शुभसंदृष्टे पञ्चमाधिपतावपि । केन्द्रकोणे तदा ...री बहुपुत्रवती भवेत् ।।

स्त्री आदि के लिये अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष ... हथिनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में ...करी, चैत्र में कुतिया के बच्चा जन्मे तो ६ मास में पिता व घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय ...ता है ।। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र ...

... व्याहृति मंत्रों से घृताक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्म तो कार्तिक शांति करे तो शुभ रहे ।

त्रिखल जन्म फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्र के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण माता पिता को भय धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शान्ति करे तो शुभ होता है ।

बालक की दन्तोत्पत्ति मास फल—

१	२	३	४	५	६	मास
शरीर नष्ट	छोटा भ्राता नष्ट	भगिनी नष्ट	भ्राता नष्ट	ज्येष्ठ भ्राता नष्ट	बहुत भोग	फल
७	८	९	१०	११	१२	मास
पिता से सुख	पुष्टता	धनी	सुख	सुख	धनी	फल

यदि बच्चे के सर्वप्रथम ऊपर की दन्तपंक्ति निकले तो मातुल को भयप्रद हो, सदन्तोत्... पंक्ति वाला बालक जन्मे तो माता पिता आदि को भयप्रद होता है, शान्ति करनी चाहिये

अथैकनक्षत्रजनन फलम्—वृद्ध गर्ग जी कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता ... एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है । स्वर्णदान से कल्याण होता है ।

कन्याजन्मनि नक्षत्र फलम्—

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	[illegible]
फलम्	(१।२।३ च०) श्वशुरहानि	(२।३।४ च०) सासनाश	ज्येष्ठनाश	[illegible]

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः । तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः ... सस्व...

अथ गण्ड मूल नक्षत्राणि

बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चा जन्मे तो ६ मास में पिता ... मृत्यु ...
होता है ।। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र
[illegible]

गण्ड मूल नक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूला	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक मातापिता, कुल अ र अपने शरीर का नाश करने वाला होता है । यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है ।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिये, तत्पश्चात् शांति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है ।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणजन्मफल

मूल पाद फल			आश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	में	पितृनाश	१	में	पितृनाश
२	,,	मातृनाश	३	,,	मातृनाश
३	,,	धननाश	२	,,	धननाश
४	,,	शान्ति से शुभ	१	,,	शान्ति से शुभ

मूलजनने वृक्ष विभाग फलम्

मूल	स्तंभ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
७	८	१०	११	१२	५	४	३
मूल नाश	वंश क्षय	मातृ पीड़ा	मातुल नाश	राज्य लाभ	राज मन्त्री	राज प्राप्ति	अल्प आयु

अथ मूल निवास चक्रम्

जन्ममास	वै० ज्ये० मार्ग० फा०	आषा० आ० मा० भा०	चै० श्रा० का० पौ०
जन्मलग्न	२।५।८।११	१।४।७।१०	३।६।९।१२
मूलनिवास	पाताले	स्वर्गे	भूमौ
फल	शुभ	शुभ	कुलहानि

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्प भय होता है । तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभ मसमन्विता । शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम् ।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत् । शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकर भवेत् ।। दिनक्षये व्यतिपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ । शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके ।। व्रज्र दंडे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः । जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम् ।।

यथा सर्वविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते । तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते ।।
रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत् । शतछिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि ।।
बालकाम्बापितृस्नानं विप्रैः सम्पादिते सति । जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम् ।।
विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः । मुनीनां वचनं सत्यं मंतव्यं क्षेममीप्सुभिः ।।

अथाभुक्तमूलविचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी घटी, अभुक्तमूल कहलाती है । इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो २७ दिन तक पिता मुख न देखे । धनगंडे दरिद्रोऽपि शांति कुर्यात्स्वशक्तितः । ...माप्नोति चाभुक्तक्षे विशेषतः ।।

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो ... भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है ।

गण्ड मूलोत्पन्न बालकका जन्म काल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में	समय
मू० ज्ये० पिता को भय	म० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर भय	फल

मघा पाद फलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धनविद्या लाभ होवे ।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने आपका नाश होता है । ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठे हन्ति बालो न बालिका । न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा ।।

रेवती पादफलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्... वा मुखतार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चौथे चरण में अनेक कष्ट हों ।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म फलम् ।

१	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृहानि	मातृहानि	मातुल हानि	कुल कष्ट	धनहानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखें कि जन्म किस भाग में है तदनुसार फल जाने अशुभ हो तो शांति करे । अमावस्याजन्मफलम्—जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दिन स्त्री, पशु, गौ, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो उसे धनहानि अपयश आदि भय होते हैं । कुहू अमावस्या में प्रसूति हो तो विशेष अशुभ होवे । सिनीवाली—जिस अमावस्या में चन्द्र की कलांश शेष हों; कुहू—जिस में चन्द्र की पूर्ण कला नष्ट हों ।

ग्रहण व्यतिपातादि जन्मफल—व्यति में जन्म हो तो अंगहानि, वैधृति में पितृकष्ट वा दारिद्र. चन्द्र सूर्य ग्रहण में जन्म हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह, धनहानि हो, जपहोमशान्ति कराने से कल्याण हो ।

बालकष्टावली

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़ें और बलि को ७ बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन होकर रख आवे ॥

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है?	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थं द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद, मन्दस्वर, कम्पन, ज्वर, अरुचि, अंगशोष ।	नदीके दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक ५ आटे के सतिये, कपूरलोहबान	श्वेत भात, ५पूर्णपोली, (सुहाली) १ पहर दिन चढे पूर्वदिशा में चौरस्ते पर रखना ।	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्चस्कन्दोवै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥	राईखस आक के फलबिल्ली औरमनुष्य के बाल निम्बपत्र गोघृत ।
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ पैर अकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्ररोग, भय कृशता।	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलोंकेआटेके सतिये १०	भात एकसेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिमदिशामें चौरस्तेपररखना	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं दुष्टाग्रहा गच्छन्वतः स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिरझुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	एकसेर चावलों का आटा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १० ।	एकसेर लालभात, आधसेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशामें किसी वृक्ष के नीचे रखना ।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसन गो भृंग,, सां[illegible] कीकांचल[illegible]
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्रभंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमिलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	तिलचर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेत ध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	भात सेर आटे के पूड़े, आध सेर पूर्ण पोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्षके नीचे रखना ।	सुनन्दनाविधानोक्त	नीम के पत्ते, पुर[illegible] औरबिल्ली के बाल, गोघृत ।
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी, तेज ।	एक सेर चावलों का आटा ।	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये ।	श्वेतभात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना ।	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं मुंचरक्षां कुरुकुरुबलि गृह्णगृह्ण अस्त्रं ठःठः चामुण्डे सर्वरिचण्डिके ठःठःस्वाहा योगिनीविधानोक्त	कूट गग्गुल, राई,
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हंसना कभी २ रोना, मोह, मूर्च्छा ।	नदीके दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां, १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरस्ते पर रखना।		हाथी दांत, घृत [illegible]
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन ।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५ ।	भात, ७पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम मेंचौरस्ते पर मौनहोकर रखना।	विडालिकाविधानोक्त	
अष्टमदिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनोंकिनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झंडी ५ दीपक ५।	गेहूं कीरोटी, मसूरकीदालहरासाग छागमांस, संध्यामेंचौरस्तेपररखना	विडालिकाविधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झंडी ५।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी सुहाली उत्तरमें प्रातःचौरस्तेपर रखना।	ॐनमोभगवते वासुदेवाय कृष्णा[illegible] मंडलबलिमादाय हनहन हुंफट्स[illegible]	
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, २५ झंडी, २५ दीपक २५ सतिये।	गुड के घी भुनेचावल, गोघृत, सायंकालदक्षिणमें चौरस्तेपररखना	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन[illegible] फट् स्वाहा ।	
[illegible]कादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दोंका आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झंडी, २५ आटे के सतिये।	श्वेत भात ७ पूड़े, सुहाली ७ सायं व प्रातः दक्षिणमेंचौरस्तेपररखना	ॐनमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्टग्रहादीन ॐ ह्रींफट् स्वाहा ।	[illegible] सस[illegible] मनु[illegible] बिल्ली के
[illegible]दश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झंडी, १३ [illegible]	सुहाली पूड़े ७ पूड़ियां ७ मत्स्य-[illegible]दक्षिणमें	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हनहन शोषय२ मर्दय२ शोषय २	बाल, राई, गोघृत।

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:— मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

दैनिक लग्नसारणी देखने की रीति––

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टे मिनट लिखे हैं। वे रेल्वे व्यावहारिक ढंग से लिखे गये हैं जैसे रात के १ को १ लिखा गया है और दिन के १ को १३, तथा २ को १४, एवं ३ को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा है। जैसे––वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४९ सिंह है याने मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खतम होकर कन्या लग्न शुरू हो गया जिसका समाप्तिकाल १८।९ अर्थात् शाम के ६ बजकर ९ मिनट पर है अतः मध्याह्नोत्तर ५ बजे कन्या लग्न की संधि में एक आध मिनट का कहीं २ अन्तर रहेगा।

अथ चन्द्रोदयास्त ज्ञानम्–तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणमूनं च युतं भुजाभ्याम्॥ कृष्ण सिते याप्तितिथिभक्तनाडयश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः॥१॥ भावार्थ––जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घट्यादि को गुणें, शुक्लपक्ष की तिथि हो तो उसमें २ घटी जोड़ना, यदि कृष्णपक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना तदनन्तर उसमें १५ का भाग देकर दो फल घटी पलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा, यदि कृष्णपक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो घट्यादि होवें उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा। इस रीति से चन्द्रोदय स्थलमान से आता है, सूक्ष्म चन्द्रोदयास्त "सर्वानन्द लाघव" से जानो।

घण्टात्मक स्पष्ट स्वदेशीय (लोकल) टाइम से घट्यादिक इष्ट निकालने की रीति––

यदि प्रश्न वा जन्म समय का लोकल टाइम दिन के १२ बजे से पहिले हो तो जन्म वा प्रश्नकाल के लोकल घण्टे मिन्टों में से सूर्योदय के लोकल घण्टे मिन्टों को घटा कर जो घंटे मिन्ट शेष बचें, उनकी घड़ी पल बना लो, बस वही सूर्योदयात् शुद्धेष्ट होगा। यदि दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक जन्म व प्रश्न काल हो तो घण्टे मिनटों के घड़ी पल बना कर दिनार्द्ध में जोड़ने से सूर्योदयात् इष्टकाल आता है। यदि रात के १२ बजे से पीछे सूर्योदय पर्यन्त का इष्ट काल अपेक्षित हो तो १२ बजे के अनन्तर जितने घण्टे मिनट हो गये हों उनकी घड़ी पल बना कर उस दिन के मिश्रमान (दिनार्द्ध में से ३० घड़ी जोड़े हुए अंक) में जोड़ देने से सूर्योदयात् शुद्धेष्ट काल होगा।

अथवा जेब घड़ी द्वारा अभीष्ट दिन का स्वदेशीय सूर्योदय पहिले मिला कर नोट कर रक्खें, या दूसरे दिन मिला लें, फिर जितने घण्टे मिनट सूर्योदय से जन्म अथवा प्रश्न पर्यन्त व्यतीत हो चुके हों उनकी घड़ी पल बना लेने से भी सूर्योदयात् शुद्धेष्ट आता है। इसमें स्टैंडर्ड लोकल टाइम का अन्तर जोड़ने घटाने की कोई आवश्यकता नहीं।

नोट––१ घड़ी में २४ मिनट, एक मिनट में २॥ पल और एक सैकिण्ड में २॥ विपल होते हैं।

द्वादशांगुल शंकु पर से इष्ट साधन––

यदि किसी स्थान पर अंगरेजी घड़ी न मिले तो ज्योतिषी को चाहिये कि सूक्ष्मेष्टार्थ आर्यभट्टोक्तद्वादशांगुलशंकु (गाजर सदृश ऊपर से पतला नीचे से मोटा होता है) से इष्टकाल साधन करे––परद्युमानं दिनमानवर्जितं नगघ्नमक्षाप्तमहस्तु मध्यभा। भावार्थ––परमदिनमान (स्वदेशीय सब दिनमानों से बड़ा दिनमान) जो सूर्य की सायन कर्क संक्रांति के दिन होता है, उसमें से इष्ट दिनमान को हीन करे, शेष को सात गुणा करे फिर ५ से भाग दें जो लब्ध मिले सो इष्ट दिन में उसी देश की मध्यभा (मध्यान्हा छाया) होती है, अर्थात् बारह अंगुल के शंकु की छाया होती है। द्युमध्यभोना दशयुङ्गनिजेष्टभा शराहताहर्मितिशुद्धरेत्तया। क्रमान्नतापूर्वपराद्युखण्डयोर्द्वयोरवाप्ता गतगम्यनाड़िका:। जिस समय का इष्टकाल जानना हो उस समय शंकु की अंगुल व्यंगुलात्मक छाया (इष्टभा) को दश १० में युक्त करे फिर इस योग में पूर्व सिद्ध मध्यभा को घटा दे, जो शेष बचे वह भाजक (जिस का भाग देना है) होता है, अपने घटी पलात्मक दिनमान को पांच गुणा कर देने पर भाज्य (जिस अंक में भाग देना है) होता है, भाज्य में भाजक का भाग देकर दो फल लाना जो फल आवे वह घटी पलात्मक इष्ट काल आता है। परन्तु इसमें यह स्मरण रक्खें कि यदि मध्याह्न से पहले नापा हो तो इतने घटी पल गत और मध्याह्न से पीछे नापा हो तो, इतने घटी पल शेष दिन है ऐसा जानना।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष–––जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरांत दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लालमलीन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान गोदान मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष––माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहिले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन––माता का शिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवावे। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क––माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४ बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्मा, घर के दिक्षिणभाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र स्वेत व लाल, माता नें प्रसव के पहले मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिन्ह, देर से रोया, ५।२५।४०।४८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे, इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेशसमय तुलादान, छायादान मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याण प्रद है।

... पूर्व में शिर, मलीन सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या

यदि किसी स्थान पर अंगरेजी घड़ी न मिले तो ज्योतिषी को चाहिये कि सूक्ष्मेष्ट ज्ञानार्थ आर्यभट्टोक्तद्वादशांगुलशंकु (गाजर सदृश ऊपर से पतली नीचे से मोटा गोलाकार)

खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८। इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया। घर के नैऋत कोण में सूतिका स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक है, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठण्डा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई गई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां १ कन्या भी हो दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीये।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक असधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया और छींक भी किया, दीर्घ केश घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२।६७ इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आईं, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्र वर्ण या कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४ या २, १ स्त्री पीछे से आई उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिन्ह भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिकागृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ

वनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याण प्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलीन सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या

में ग्रहशान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक का जन्म लग्न जानना क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

अथादौ पितृपरोक्ष ज्ञानम्—१ जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, २ बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, ३ लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, ४ भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन ४ योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शय्या तहां भंग जहां कुज होय।
रविस्थान में दीप कहि शनौ लोह कहि सोय॥

जन्मकुण्डली में दिशा ज्ञान—लग्न पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम षष्ठ वायव्य। सप्तम पश्चिम। अष्टम नवम नैऋत। दशम दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादि विचारः—

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान, और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिये। दो० लग्ननाथ जो केन्द्र में तौन दिशा को द्वार। वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार। केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित। ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिका गृह का द्वार होता है। ग्रहोंकी दिशा—सूर्य की पूर्व चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण बुध की उत्तर गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्—चन्द्रमा से दीपक के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रिका जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा, शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना। सो—तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्मे तब आई, तब कहि दीपक तैल नहि। सित शनिदशमें धाम पञ्चम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब वाम, दीप तैल सों युक्ति कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतरगतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ बैठा हो तो उसके अंश देखे। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़े। इसी प्रकार जो ग्रह लग्न में हो, और उसके अंश लग्न से अधिक हों, तब ही उसकी संख्याजोड़ना अन्यथा नहीं जोड़े। लग्न चन्द्रान्तर्गत कोई ग्रह वक्र अथवा उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि

स्वनवमांश स्वद्रेष्कोण में हों तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गतग्रह लग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्य्यन्त होवें तो सूतिका गृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्य्यन्त हो तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो जहां शुभ ग्रह हों वहां धर्मशीला सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा व दुश्चरित्रा कहे।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार—

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषडंकान्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण ४।५ में दक्षिण, ६ में नैऋत्य ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्य कोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रहयुक्त हो तो वही सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

अथ चिन्हज्ञानम्—षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहं गर्गवचन परिमाण ॥ भानु तथा सौरी तन धन कुज कण्टक चन्द। बालक के षट अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राह। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिन्ह दरशाह ॥ सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिन्ह को भाषत ज्योतिष मग्न ॥ नौमें पांचमें भृगु बसे तनुवा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिन्ह भणंद ॥

बालारिष्ट—

दो०—चूनाष्टमतनु पाप खग, बरहं शशी जो खीन। कण्टकशुभखग ना बसे, वेगि ताहि यम लीन ॥
बसे चन्द्रमा द्वादशे अष्ट भवन में पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव ॥

अथ काण योगाः—तनु बन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अंध यह योग है भाषत बुध समुदाय ॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान ॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान ॥

मूक योगाः—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिक हि मूक कहि सोय ॥ शुक्र त्रिके गुरसिह अज, दश भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश ॥

दुःखद योगाः—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु सुख विस्वावीस। पापग्रहयुत लग्न पति, परे लग्न में आय। वीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि रुजताय ॥

बन्धन योगाः—क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सर कसर

सुखद योगाः—अगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गेह में परे तो जानो सुख संग ॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सर्व सुखी नर होय ॥

क्लीबयोगाः—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जानु। शुक्र भवन ते रिष्क षट मन्द बसे क्लिब भानु ॥

कुष्टयोगाः—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त या केतु। स्वेत कुष्ट को योग यह वरणत गुणी सचेतु ॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट ॥ जलजगंडयुत चन्द्र जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुध त्रिकयुत तनु नाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भृगुसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून ॥

केमद्रुमः—आगे पीछे चन्द्र के जो न परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारै खोय ॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय ॥

सर्पवेष्टित योगाः—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्म योगाः—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्ध और धन का उत्तरार्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभाव राशिके लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिये। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनीदेकर कटि में बांधे। और साथ ही "ॐमुक्ताः पाशविपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भेहि माचिर माचिर स्वाहा ॥" इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीसरा यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे। तब कष्ट को

रुजताय ॥

बन्धन योगः—कर रहे बन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सुर कसुर

... तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे। तब कष्ट को

अथ नक्षत्र कष्टावली चक्रम् ।

यस्मिनृक्षे यदा नृणां रोगः संजायते तदा । तद्विष्णुपूजाकर्तव्या तत्तदीश्वरचतुष्टये ॥ ऋक्षेशरूपं कमकेन कृत्वा तल्लिगमंत्रैश्च सुगन्धपुष्पैः ।
वस्त्राक्षतैर्गुग्गुलधूपदीपैर्नैवेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक् । पूजां च कृत्वा भयनाशनाय द्विजाय दद्यात्तुलशि.

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टादनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम्	होमद्रव्यम्	दानभोजनम्	जपनीय मन्त्राः	जप-संख्या
अश्विनी (दस्रौ)	९	११	१०	२०	अपामार्ग-मूलम्	वातज्वरअर्द्ध-गात्रपीडानिद्रा-भंग बुद्धिभ्रम	श्वेत चन्दनगन्ध कमलपुष्प घृत-गुग्गुलधूप घृतदीप क्षीरमोदक गुडनैवेद्य	गुडौदन	खण्ड यवाज्य	सुवर्णघृतकुम्भ ब्राह्मणभोजन	ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् । ॐ अश्विनी कुमाराभ्यां नमः ॥ १ ॥	५ हजार
भरणी (यमः)	०	८०	४०	११	अगस्त-मूलम्	अनेक रोग तीव्र ज्वरआलस्य छर्द रोग ।	अगरगंध करवीरपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप गुडौदन नैवेद्य	कृसरान्न (खिचड़ी)	घृतमधु तिलाक्षत	गोमहिषीघृत शर्करा छायापा. ब्राह्मणभोजन	ॐ यमायत्वामखायत्वासुर्यस्यत्वातपसे देव-स्त्वासवितामध्वानक्तु । पृथिव्याः संस्पृश-स्पाहि अर्चिरसिशोचिरसितपोसि ॐ यमायनमः ।	१० हजार
कृत्तिका (अग्निः)	९	११	१६	२८	कार्पास-मूलम्	उदशूल अतिदाह नेत्रपीड़ा अनिद्रा	श्वेतचन्दनगंध जतीपुष्प घृतगुग्गल-धूपघृतदीप तिलमाषान्नबडाषीकानैवेद्य	पायस	तिल यव घृत	स्वर्ण गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ अग्निमर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसिजिन्वति । ॐ अग्नये नमः	१० हजार
रोहिणी (ब्रह्मा)	७	९	१८	३०	अपामार्ग-मूलम्	ज्वरपीडाकुक्षि शूलशिरःपीडा प्रलाप	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्प दशांग-धूप घृतदीप घृत पायस नवेद्य	मध्वाज्यक्षीद्र शाल्यन्न क्षीर	तिलाज्य यव	सप्तधान्य कृष्णा गोदान ५ कुमारीभोजन	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवे-नआवः । सुबध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः । ॐ ब्रह्मणे नमः ॥४॥	५ हजार
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	९	५	७	१०	जयन्ती-मूलम्	अर्द्धगात्रपीडा, महाकष्टत्रिदोष	श्वेतचन्दन गन्ध, कमलपुष्प दशांग धूप घृतदीपपायसअपूपमध्वोदन नैवेद्य	दधि शर्करा शाल्य	दधिपायस	दधि तण्डुल सवत्सागोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ इमंदेवाअसपत्नं सुवध्वं महते क्षत्रायमह तेज्यैष्ठायमहतेजान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममनुष्यपुत्रममुष्येपुत्रमस्यैविशएषवोऽमीराजा-सोमोऽस्माकं ब्राह्मणना राजा । ॐ चंद्रमसे नमः	१० हजार
आर्द्रा (शिवः)	०	१८	०	०	सर्चदनाश्व त्थमूलम्	ज्वरसर्वांगपीडा त्रिदोषअनिद्रा	श्वेतचन्दनगन्ध सौरभपुष्प दशांग धूपघृतदीप पायसौदन नैवेद्य	दध्योदन मध्वाज्य	घृतमधु	कृष्णवृषभ कृष्ण वस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः॥६॥	१० हजार
पुनर्वसु (अदिति)	७	१४	२	२१	अर्क-मूलम्	ज्वरशिरपीडा कटिपीडा	हरिद्राकुंकुमगन्धसेवन्तिकापुष्प अष्टगन्ध धूप घृतदीप घृताक्त पीतवर्णान्न नैवेद्य	साज्य-पीततण्डुल	घृत तण्डुल	वस्त्र स्वर्ण कमल ५ कन्या ५ भोजन	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः । विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदिति-र्जातमदितिर्जनित्वम्। ॐ अदितये नमः॥७॥	१० हजार
पुष्य (गुरुः)	७	७	१०	२१	तुषार-मूलम्	ज्वर शूल महा कष्ट ।	कुंकुम गन्ध कमलपुष्प घृतगुग्गुल-धूपघृतदीपघृतपायसशर्करानैवेद्य	समण्डक मोदक	घृत पायस	सुवर्ण गौ पीतवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ बृहस्पतेअतियदर्योअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुम ज्जनेषु । यद्दीदयच्छ वस ऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। ॐ बृहस्पतये नमः॥८॥	१० हजार

अश्लेषा (सर्पः)	०	०	४१	०	पटोल- मूलम्	सर्वांगपीड़ा पा. मृत्युसम कष्ट	कुंकुम अगरगन्ध अगस्त पुष्प घृत गुग्गुलधूप घृतदीप घृतक्षीर नैवेद्य	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	सवत्साकृष्णागौ छायापात्र ब्राह्मण भो.	ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवी मनु: ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य: सर्पेभ्यो नम.। ॐ सर्पेनम: ॥९॥	१० हजार
मघा (पितरः)	१५	७	१७	२०	भृङ्गराज मूलम्	अर्द्धगात्रपीडा तथा शिरपीडा	श्वेतचंदन गन्ध चम्पकपुष्प, धूप गुग्गुल धूप घृतदीप घृतमिष्टान्न	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिलाज्य तण्डुल	सवस्त्रतिलपात्र दान ब्राह्मणभोजन	ॐपितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम: पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम:। प्रपितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम: अक्षन्नपितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्त पितर: पितर: शुन्धध्वम् ॐ पितृभ्य नम:	१०. हजार
पू. फा. (भगः)	०	११	०	३०	कण्टकारि मूलम्	ज्वरशिरपीडा गात्रव्यथा	श्वेतचन्दनगन्ध मालतीपुष्प धूप बिल्व धूप घृतदीप अपूरान्न मोदक नैवेद्य	घृतौदन .पायस	प्रियंगु कंगनीतिल	तिलपात्रमाषपात्र स्वर्णगोदानभोजन	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगेमांधियमुदवाददन्न: भगप्रणोजनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवंत: स्याम: ॥ ॐ भगाय नम: ॥११॥	१० हजार
उ. फा. (अर्यमा)	७	१४	७	६०	पटोल- मूलम्	कुक्षिशूल, शिरशूल ज्वरअतिकष्ट	कर्पूरकेसर गन्ध अर्क पुष्प धूप गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतशर्कर शाल्यान्न	तिलाज्य	सुवस्त्र रजत स्वर्णान्न गोदान ब्रा० भोजन	ॐदेव्यावध्वर्यू आगतं रथेन सूर्यत्वचा। मध्वायज्ञं समञ्जाथे तं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं ॐ अर्यम्णे नम: ॥१२॥	१० हजार
हस्त (सविता)	१५	१७	१५	०	जाति- मूलम्	अफारा उदरशूल सर्वांग पीड़ा प्रस्वे	रक्तचन्दन केसरगन्ध कमलपुष्प धूप गुग्गुल धूप घृतदीप घृत पायस नैवेद्य	मिष्टान्न	दधि घृत	सुवर्णपयस्विनीगोदान ब्राह्मणभोजन	ॐविभ्राड्बृहत्पिबतु सौम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्। वातजूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजा: पुपोषपुरुधाविराजति। ॐसवित्रे नम:	५ हजार
चित्रा (विश्वकर्मा)	११	९	९	१६	मखव- मूलम्	विचित्रानेक रोग,अतिकष्ट	केसरअगरगन्धविचित्रवर्ण पुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप विचित्रान्न मोदक नैवेद्य	विचित्रान्न घृत	तिलाज्य तण्डुल	तिलगुडविचित्रवस्त्र.छा.पा.ब्रा.भो.	ॐत्वष्टातुरीयो अद्भुत इंद्राग्नी पुष्टिवर्द्धना द्विपदाच्छन्दऽइंद्रियमुक्षागौर्नवयोदधु: ॥ ॐ विश्वकर्मणे नम: ॥१४॥	१० हजार
स्वाति (वायु)	६०	१७	३०	०	जाति- मूलम्	नानाकष्ट	चन्दनगंधदमनकपुष्पअगरगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	घृत पायस	तिलाज्य यव	स्वर्ण रक्तधेनुदान पक्वान्नब्रा. भोजन	ॐवायोयेते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि नियुत्वान्सोमपीतये ॥ ॐ वायवे नम: ॥१५॥	१० हजार
विशाखा (इन्द्राग्नि)	१५	०	४	१३	गुञ्जा- मूलम्	कुक्षिशूलसर्वांग पीड़ा	चंदनकेसरगंध कमलपुष्प देवदारु धूप धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	रक्तपीतवस्त्रक.व. छायापा.दा.वि.भो	ॐइंद्राग्नी आगतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्यपात धियेषिता ॥ ॐ इंद्राग्निभ्यांनम:	१० हजार
अनुराधा (मित्रः)	६०	१२	३६	०	सुरुप- मूलम्	तीव्र ज्वर शिर पीड़ा	केसरगन्धकमलपुष्प चन्दनधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य माषान्न	गुड यवाज्य	स्वर्णगोछा.पा.दा. ब्रा. भोजन	ॐनमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृतं सपर्यत दूरदृशे देवजातायकेतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशंसत। ॐ मित्रायनम: ॥१७॥	१० हजार
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	५९	९	६	४	अपामार्ग- मूलम्	व्याकुलता पेट रोगकम्पन	श्वेतचंदनगंध चम्पकादिसुपुष्प कर्पूर [illegible] मनोहर	दध्योदन [illegible]	तिल तण्डुल	स्वर्ण नलनीलवस्त्र [illegible] भोजन	ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र हवेहवे सुहव शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिन	५ हजार

ज्येष्ठा (इन्द्रः)	५९	९	६	४	अपामार्ग- मूलम्	व्याकुलता पेत्त रोगकम्पन	[illegible] कर्पूरधूप घृतदीप मनोहर [illegible]	[illegible] सुपुष्प	[illegible] तण्डुल	[illegible] ब्राह्मण भोजन	[illegible] नारमिन्द्रमवितारमिन्द्र हवेहवे सुहव शूर- रमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिन	५ हजार
मूलम् (राक्षसः)	०	९	१५	६	मन्दार- मूलम्	उदरतयामुख- रोगसन्नि-भय	कृष्णअगरगन्धनीलोत्पलपुष्पघृतदीप कृष्णागुरुधूप माषमिश्रान्न नैवेद्य	सहवि माषान्न	घृत कन्दमूल	स्वर्ण व.कृ. गौछा पात्र दा. कु.पू. वि.	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवीपुरीष्यमग्निं स्वेयोनाव भारुखा । तांविश्वेदेवऋतुभिःसंवदानःप्रजा- पतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु । ॐनिऋतये नमः ।१९।	५ हजार
पू. षा. (जलम्)	०	१५	२४	१०	कार्पास- मूलम्	शिरपीडाकम्प. महाकष्ट	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्पघृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतपायस मिष्टान्न	तिलतण्डुल घृत	स्वर्णव.ति.त.ज. कु.गो.दा.ब्रा.भो.	ॐ अपाघमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः । अपामार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्न्यं सुव ॥ ॐ अद्भ्यो नमः ॥२०॥	५ हजार
उ. षा. (विश्वेदेवा)	३०	२४	२६	१६	कार्पास- मूलम्	उरुशूल कटि पीडा प्रलाप	श्वेतचन्दनगंध कमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य	सहविपा. तिलाज्य	तिलाज्य यव	आमान्नस्वर्णदान ब्राह्मण भोजन	ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेमं हवंमेये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्टाये अग्निजिह्वा उतवाय जत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिषिमादयध्वम् ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥२१॥	१० हजार
श्रवण (विष्णुः)	६०	२४	६	९	अपामार्ग मूलम्	अतिसार सर्वा. पीडा त्रि. भय	श्वेतचंदनगंध मालतीपुष्प कर्पूरगु. धूप घृतदीपषडरस शाल्यान्न नैवे.	सहवि पायस	तिलाज्य यव	स्वर्णगोछायापा. ब्राह्मण भोजन	ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णव- मसि विष्णवेत्वा ॐविष्णवे नमः ॥२२॥	१० हजार
धनिष्ठा (वसवः)	१५	२	२०	२१	भृंगराज- मूलम्	मूत्रकृच्छ्र ज्वर रक्तातिसार	श्वेतचंदनगंध कमलपुष्पगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	पायसमो. पूपतिपि.	तिलाज्य पायस	छत्रोपानत्अश्वस्व गोदा. ब्रा.भोजन	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र- मसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सवितापुनातु वसोपवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः वसुभ्योनमः	१० हजार
शतभिषा (वरुणः)	०	४५	३	२२	कमल- मूलम्	सन्निपातभय वातज्वरकष्ट	केसरअगरगंध कमलपुष्प कर्पूरचं. धूप घृतदीप घृतपोलिका नैवेद्य	घृत चित्रान्न	आज्य दध्योदन	स्वर्णतिलान्नघट छायापात्रगोदा. कु.पू.ब्रा.भोजन	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भ- सर्जनीस्थो वरुणस्यऋतऽसदन्यसी वरुण- स्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदन- मासीद ॐ वरुणाय नमः ॥२४॥	१० हजार
पू. भा. (अजैकपा.)	०	१२	२१	१९	भृंगराज मूलम्	शरीरपीडाग्नि व्याकुलतावमन	केसरचंदनगंध श्वेतार्कपुष्प शतौष. मिश्रितधूप घृतदीप दधिपायसनै.	दध्योदन	क्षीराज्य शर्करा	स्वर्ण रजत अन्न श्वेत छा. पात्र दान ब्रा. भोजन	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपात्पृ- थिवीसमुद्रः । विश्वेदेवाःऋतावृधोहुवानः स्तुतामंत्राः कविशस्ताअवन्तु। ॐअजैकपदे नमः॥	१० हजार
उ. भा. (अहिर्बुध्न्य)	१०	२०	९	१५	अश्वत्थ मूलम्	शूल ज्वर वात व्याधि अतिसार कामला रोग	चंदनकर्पूरगंध कमलपुष्प बिल्व गुग्गुलधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	तिलाज्य मुद्गमाष	तिलाज्य यव	स्वर्णरजततिल कृष्णवस्त्रदान ब्राह्मण भोजन	ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तु मामा हिं सीः । निवर्त्त याम्यायुषे ऽन्नाद्या प्रजननायराजस्पोषायसुप्रजास्त्वा- यसुवीर्याय। ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥२६॥	१० हजार
रेवती (पूषा)	१८	१०	९	२०	अश्वत्थ- मूलम्	चित्तभ्रम उरु शू.ज्वर वा.पि.	रक्तचंदनगंध मंदारपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	रजतवस्त्र पैत्तल. पा.वृ.छा.दा.भो.	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ ॐ पूष्णे नमः ॥२७॥	५ हजार

अश्लेषा (सर्पः)	०	०	४१	०	पटोल-मूलम्	सर्वांगपीड़ा पा. मृत्युसम कष्ट	[illegible] गुग्गुलधूप घृतदीप घृतक्षीर नैवेद्य	[illegible] दध्योदन	[illegible] घृत	[illegible] छायापात्रब्राह्मणभो.	ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवी मनु: ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ॐ सर्पेनमः ॥९॥	१० हजार
मघा (पितरः)	१५	७	१७	२०	भृङ्गराज मूलम्	अर्द्धगात्रपीडा तथा शिरपीडा	श्वेतचंदन गन्ध चम्पकपुष्प, धूप गुग्गुलधूप घृतदीप घृतमिष्टान्न	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिलाज्य तण्डुल	सवस्त्रतिलमाष दान ब्राह्मणभोजन	ॐपितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन्नपितरोमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॐपितृभ्यो नमः	१०, हजार
पू. फा. (भगः)	०	११	०	३०	कण्टकारि मूलम्	ज्वरशिरपीडा गात्रव्यथा	श्वेतचन्दनगन्ध पालाशपुष्प धूप बिल्व धूप घृतदीप अपूपान्न मोदक नैवेद्य	घृतौदन पायस	प्रियंगु कंगनीतिल	तिलताम्रमापात्र स्वर्णगोदानभोजन	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगेमान्धियमुदवाददन्नः भगप्रणोजनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवंतः स्याम: ॥ ॐ भगाय नमः ॥११॥	१० हजार
उ. फा. (अर्यमा)	७	१४	७	६०	पटोल-मूलम्	कुक्षिशूल, शिरशूल ज्वरअतिकष्ट	कर्पूरकेसर गन्ध अर्क पुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतशर्कर शाल्यान्न	तिलाज्य	सुवस्त्ररजतस्वर्णान्नगादान ब्रा० भोजन	ॐदेव्यावध्वर्यू आगतं रथेन सूर्यत्वचा। मध्वायज्ञं समञ्जाथे तं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं ॐ अर्यम्णे नमः ॥१२॥	१० हजार
हस्त (सविता)	१५	१७	१५	०	जाति-मूलम्	अफारा उरशूल सर्वांग पीड़ा प्रस्वे	रक्तचन्दन केसरगन्ध कमलपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृत पायस नैवेद्य	मिष्टान्न	दधि घृत	सुवर्णपयस्विनीगोदान ब्राह्मणभोजन	ॐविभ्राड्बृहत्पिबतु सौम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्। वातजूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोषपुरुधाविराजति। ॐसवित्रे नमः	५ हजार
चित्रा (विश्वकर्मा)	११	९	९	१६	मखव-मूलम्	विचित्रानेक रोग, अतिकष्ट	केसरअगरगन्धबिचित्रवर्ण पुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप विचित्रान्न मोदक नैवेद्य	विचित्रान्न घृत	तिलाज्य तण्डुल	तिलगुडविचित्रव ष.छा.पा.ब्रा.भो.	ॐत्वष्टातुरीयो अद्भुत इंद्राग्नी पुष्टिवर्द्धना द्विपदाच्छन्दऽइंद्रिय मक्षागौर्नवयोदधुः ॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ॥१४॥	१० हजार
स्वाति (वायु)	६०	१७	३०	०	जाति-मूलम्	नानाकष्ट	चन्दनगंधदमनकपुष्पअगरगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	घृत पायस	तिलाज्य यव	स्वर्ण रक्तधेनुदान पक्वान्नब्रा. भोजन	ॐवायोयेते सहस्त्रिणो रथासस्ते भिरागहि नियुत्वामसोमपीतये ॥ ॐ वायवे नमः ॥१५॥	१० हजार
विशाखा (इद्राग्नि)	१५	०	४	१३	गुञ्जा-मूलम्	कुक्षिशूलस-र्वांग पीड़ा	चंदनकेसरगंध कमलपुष्प देवदारु घृत धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	रक्तपीतवस्त्रक्र.व. छायापा.दा.वि.भो	ॐइंद्राग्नी आगतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्यपात धियेषिता ॥ ॐ इद्राग्निभ्यांनमः	१० हजार
अनुराधा (मित्रः)	६०	१२	३६	०	सुगुप्प-मूलम्	तीव्र ज्वर शिर पीड़ा	केसरगन्धकमलपुष्प चन्दनधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य माषान्न	गुड यवाज्य	स्वर्णगोछा.पा.दा. ब्रा. भोजन	ॐनमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत सपर्यत दूरदृशे देवजातायकेतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशंसत्। ॐ मित्रायनमः ॥१७॥	१० हजार
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	५९	९	६	४	अपामार्ग मूलम्	व्याकुलता पस्त रोगकम्पन	श्वेतचंदनगंध चम्पकादिसुपुष्प कर्पूर [illegible]	दध्योदन [illegible]	तिल तण्डुल	स्वर्ण नलनीलवस्त्र ब्राह्मण भोजन	ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र हवेहवे सुहव शूरमिन्द्रम। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिन [illegible]	५ हजार

ज्येष्ठा (इन्द्र.)	५९	९	६	४	अपामार्ग-मूलम्	व्याकुलता पेत्त रोगकम्पन	श्वेतचंदनगंध चम्पकादिसुपुष्प कर्पूरधूप घृतदीप मनोहर [illegible]	दध्यादन [illegible]	तिल [illegible]	स्वर्ण [illegible]	[illegible] वयामि [illegible] पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिन [illegible]	हजार
मूलम् (राक्षसः)	०	९	१५	६	मन्दार-मूलम्	उदरतथामुख-रोगसन्नि-मय	कृष्णअगरगन्धनीलोत्पलपुष्पघृतदीप कृष्णागुरुधूप माषमिश्रान्न नैवेद्य	सहवि माषान्न	घृत कन्दमूल	स्वर्ण व.कृ. गौछा पात्र दा.कु.पू.वि.	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवीपुरीष्यमग्निं स्वेयोनाव भारुखा। तांविश्वेदेवऋतुभिःसंवदानःप्रजा-पतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु। ॐनिऋतये नमः ।१९।	५ हजार
पू. षा. (जलम्)	०	१५	२४	१०	कार्पास-मूलम्	शिरपीडाकम्प. महाकष्ट	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्पघृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतपायस मिष्टान्न	तिलतण्डुल घृत	स्वर्णव.ति.त.ज. कु.गो.दा.ब्रा.भो.	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः। अपामार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्यं सुव ॥ ॐ अद्भ्यो नमः ॥२०॥	५ हजार
उ. षा. (विश्वेदेवा)	३०	२४	२६	१६	कार्पास-मूलम्	उरुशूल कटि पीडा प्रलाप	श्वेतचन्दनगंध कमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य	सहविषा. तिलाज्य	तिलाज्य यव	आमान्नस्वर्णदान ब्राह्मण भोजन	ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेमं हवंमेये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्टाये अग्निजिह्वा उतवाय जत्राआसद्यास्मिन्वर्हिविषमादयध्वम् ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥२१॥	१० हजार
श्रवण (विष्णुः)	६०	२४	६	९	अपामार्ग मूलम्	अतिसार सर्वा. पीडा त्रि. भय	श्वेतचंदनगंध मालतीपुष्प कर्पूरगु. धूप घृतदीपषडरस शाल्यान्न नैवे.	सहवि पायस	तिलाज्य यव	स्वर्णगोछायापा. ब्राह्मण भोजन	ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णव-मसि विष्णवेत्वा ॐविष्णवे नमः ॥२२॥	१० हजार
धनिष्ठा (वसवः)	१५	२	२०	२१	भृंगराज-मूलम्	मूत्रकृच्छ्र ज्वर रक्तातिसार	श्वेतचंदनगंध कमलपुष्पगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	पायसमो. पूपतिपि.	तिलाज्य पायस	छत्रोपानत्अश्वस्व गोदा. ब्रा.भोजन	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र-मसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सवितापुनातु वसोपवित्रेण शतधारेण सुप्त्वाकामधुक्षः वसुभ्योनमः	१० हजार
शतभिषा (वरुणः)	•	४५	३	२२	कमल-मूलम्	सन्निपातमय वातज्वरकष्ट	केसरअगरगंध कमलपुष्प कर्पूरचं. धूप घृतदीप घृतपोलिका नैवेद्य	घृत चित्रान्न	आज्य दध्योदन	स्वर्णतिलान्नघट छायापात्रगोदा. कु.पू.ब्रा.भोजन	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भ-सर्जनीस्थो वरुणस्यऋतऽसदन्यसी वरुण-स्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदन-मासीद ॐ वरुणाय नमः ॥२४॥	१० हजार
पू. भा. (अजैकपा.)	•	१२	२१	१९	भृंगराज मूलम्	शरीरपीडात्रि व्याकुलतावमन	केसरचंदनगंध श्वेतार्कपुष्प शतौष. मिश्रितधूप घृतदीप दधिपायसनै.	दध्योदन	क्षीराज्य शर्करा	स्वर्णरजत अन्न श्वेत छा. पात्र दान ब्रा. भोजन	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृ-थिवीसमुद्रः। विश्वेदेवाःऋतावधोहुवानः स्तुतामंत्राः कविशस्ताअवन्तु। ॐअजैकपदे नमः॥	१० हजार
उ. भा. (अहिर्बु-ध्न्य)	१०	२०	९	१५	अश्वत्थ मूलम्	शूल ज्वर वात व्याधि अतिसा-र कामला रोग	चंदनकर्पूरगंध कमलपुष्प बिल्व गुग्गुलधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	तिलाज्य मुद्गमाष	तिलाज्य यव	स्वर्णरजततिल कृष्णवस्त्रदान ब्राह्मण भोजन	ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तु मामा हिं सीः। निवर्त्तं याम्यायुषे ऽन्नाद्या प्रजननायराजस्पोषायसुप्रजास्त्वा-यसुवीर्याय। ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥२६॥	१० हजार
रेवती (पूषा)	१८	१०	९	२०	अश्वत्थ-मूलम्	चित्तभ्रम उरु शु.ज्वर वा.पि.	रक्तचंदनगंध मंदारपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	रजतवस्त्र पैत्तल. पा.वृ.छा.दा.भो.	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ ॐ पूष्णे नमः ॥२७॥	५ हजार

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो ।

(२) सूर्यवार को मघा द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो ।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो ।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो ।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो ।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया व मघा हस्त हो ।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा व श्रवण या रिक्ता आर्द्रा व धनिष्ठा हो ।

(८) शनिवार को नवमी व पूषा. या हस्त वा पूभा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो ।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्यु व मृत्युतुल्य कष्ट होता है ।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना । क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं, हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है । उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है ॥

अथ रोग त्रिनाड़ी चक्रम्

आर्द्रा.	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा:
पुन	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्या:
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या.

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ी चक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निस्संदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना ।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०।१८ वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाड़ां) होती हैं । काल के मुख दाड़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादिदर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर, काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है ।

ज्वर यन्त्र

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिख कर अपनी कलाई पर धूप देकर बांधे तो बारी का बुखार दूर हो। पहले यंत्र सिद्ध कर लेवे फिर लिख कर देना शुरु करे । विधि—सफेद कागज पर अनार की कलम और लाल चन्दन से २१ सौ लिख कर आटे की गोलियां बना मछलियों को डाल देवे ।

ओं

प	व	क	०
३	४९	८	३३
३५	८७	५	३९
५१	७	३	२५

तिथि कष्टावली यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि.	बलि व दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्य बलि घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायस बलि भोजनदान
३	काम	७	घृतान्न बलि रक्त वस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्न बलि मूंगादान
५	सर्प	२१	पायस बलि दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलिचित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायस बलि ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलिपीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्टान्नबलि रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलिपीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलिश्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्करावलि सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि रौप्यदान
३०.	पितर	१८	पूपकान्नबलि उत्तमान्नभो.

वार कष्टावली यन्त्रम्

वा.	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायवसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुबलिशुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांगविभाग

कालपुरुष के शिर में मेष राशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशिका , उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, उरू (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानू (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है । कई एक आचार्य द्वादश [illegible] भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में ऊरु, दशम भाव में जानू, एकादश भाव में जंघा, और द्वादश भाव में पादों को जानना । उपरोक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों में युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है और पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग [illegible] ार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है ।

में धनु राशि का, दोनों जानू (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है । कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की [illegible] वा दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है और पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग रोगादि से युक्त होता है, अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है ।

ग्रहाः गोचराद्यदशाङ्कमाद्यग्रहकलानिष्टफलशमनार्थं प्रत्यक ग्रहाणां दानपदार्थाः														जपनीय मन्त्राः	समय	समिधः
सूर्य	मणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंगा	रक्त गौ	रक्त चन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सु. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेत बैल	श्वेत चन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्त चन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथदांत	कर्पूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेत चन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सु. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णाग	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तैल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	सूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मिसरी	श्वेत चंदन	हाथीदांत	मुथेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः		मुन्थेशाकाले

सूर्यादि ग्रहपीड़ासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धौषधैं रोगान्नश्येयुर्मन्तो भयम् । तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालती पुष्प	इलायची	काले तिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचन्दन	अक्षत	श्वेत सरसों	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	सुवृक्षला	लोबान	मुत्यरां	मुत्यरां
केशर	सिप्पी	रक्त पुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदंत	गजदंत
खश	श्वेतचंदन	सगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती			मत्यरां		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		
रक्तकनेर								

सप्त धान्य—उड़द १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६ कंगनी ७ ।

अष्टगन्ध—अगर, तगर, कस्तूरी, दोनों कुंकुम, कपूर दोनों चन्दन ।

सर्वग्रहाणां दोषोशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवंती (छुई-मुई), कूट, खिल्लां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध इन औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ानाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है ॥ गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता; जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह भी पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

तीर्थ में मुण्डन विचार—मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः । वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां गिरिजां गयाम् ।

शनि विचारः—गोचरे द्वादशे नेत्रे हृदये जन्मभे शनिः । द्वितीये गुल्फयोर्मध्ये द्यूनादौ च विलोमतः ॥ फलं—नेत्रस्थे शत्रुसन्तापो हृदये मानसी व्यथा । चरणे भ्रमणं देशे देशे संचारयेच्छनिः ॥ अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधि बन्धुविरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम् ॥ मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्निभयं । लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥ १ ॥ अथ बृहत कल्याणी (साढसती) फलम्—राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः । नानाक्लेशं करोति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत । हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् । रामा ऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे बाधवा ॥ २ ॥

गोचरग्रहाणां द्वादश भाव फलबोधक चक्रम्

ग्रहाः	जन्म	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम	एका	द्वादश
सूर्य	गमन	हानि	धन लाभ	रोग	दैन्य	ोख्य	यमच	रोग	पाप	सौख्य	धन प्राप्ति	पीड़ा
चन्द्र	पुष्टि	धनलाभ	श्रीः	रोग	सुख	लाभ	धनला.	रोग	मान	सौख्य	लाभ	पीड़ा
मंगल	भय	हानि	श्रीः	वैर	रोग	लाभ	कृशता	नष्ट	रोग	शोक	लाभ	व्याधि
बुध	बन्ध	लाभ	भय	लाभ	शोक	लाभ	क्षय	लाभ	हानि	भोग	सौख्य	क्लेश
गुरु	भय	लाभ	रोग	व्यय	सौख्य	शोक	सौख्य	रोग	सन्मान	दैन्य	धनला.	रोग
शुक्र	सुख	लाभ	धन प्राप्ति	सौख्य	सुत-कष्ट	पीड़ा	विपत्	मित्र-प्राप्ति	धर्मलाभ	दुःख	धनला.	लाभ
शनि	भय	शोक	श्रीः	दुःख	हानि	सौख्य	भय	रोग	पाप	कलह	धनला.	कष्ट
राहु	हानि	धन-नाश	धन प्राप्ति	वैर	शोक	धन प्राप्ति	कलह	पीड़ा	पापकर्म	सौख्य	धन-लाभ	चिंता
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	शोक.	लाभ	मार्गक्र.	रोग	दुष्टकर्म	शुभ	कीर्ति	शत्रुभय

अथ ग्रहणामेकगेभोग फलसमयादिज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा. के.	ग्रहाः
मा १	.दि२।	मा १।।	मा. १	म. १२	मा. १	मा ३०	मा. १८	एकक्षभोग
आदी	भांत्ये	भादी	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्त्ये	अन्त्ये	फलसमयः
दि. ५	घ. ३	दि. ८	दि. ७	मा. २	दि. ७	मा ६	मा. ६	गंतव्यराशेः प्राक्फलम्

शनियंत्र मिदम्		
११	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

अथ ग्रहतुष्टचर्थधारणाय मणयः

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यं	मुक्ताफलम्	प्रवाल	पन्ना	पुष्पराग	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैडूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	रौप्यम्	ओहम्	आजवर्त	आजवर्त

शनि-यन्त्र विधि

यह यन्त्र शनि वार को भोज पत्र पर लिख कर धारण करने से शनि कृत अरिष्ट निवृत्त करता है।

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश से आदि लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों की अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

अथ शनैश्चरस्तोत्रम्—पिप्लाद उवाच—ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोस्तु ते। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो! नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ।। इस स्तोत्र को प्रातः पढने से साडसाती व ढैया की दुःखद पीड़ा नहीं होती ।। अथ शनैश्चर पाद विचार—ग्रहगोचर फल विचार में प्रायः शनैश्चर के राशि बदलने पर सुवर्णादिपाद विचार इस प्रकार देखा जाता है कि शनैश्चर जिस दिन जिस समय राश्यन्तर में जावे उस समय अपनी जन्मराशि से चन्द्रमा (जन्मनिरसे रुद्र सुवर्ण हानि) १।६।११ वें स्थान में हो तो सुवर्ण पाद जानना, फल हानि ।। यदि २।५।९वें हो तो चांदी के पाद आया जानना फल शुभ (द्विपञ्चनन्दा रजतं शुभं च) यदि ४।८।१२ वें हो तो लोह के पाद आया जानना फल कष्ट (चतुरष्टमद्वादशलोहकष्टम्) यदि ३।७।१० वें हो तो ताम्रपाद आया जानना फल शुभ (त्रिसप्तदशमे ताम्रं शुभञ्च) अथ सुवर्ण पादफलं—कुटुम्बरोधं बहुरोगयुक्तं क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम्। द्रव्यार्थनाशं बहुलं करोति सुवर्णपादे स्वजने विरोधम् ।। १ ।। अथ रजतपाद फलम्—व्यापारमुग्रं धन-धान्यसम्पत्महत्प्रतापः खलु राजमान्यम्। तद्वर्षमध्ये सुखसम्पदाप्तिः स्यान्मंगलं वै यदि रौप्यपादे ।। २२ ।। अथ ताम्रपाद फलम्—अनन्तलक्ष्मीं प्रकरोति लाभंकलत्रपुत्रैः सुखसम्पदाप्तिम्। लाभोदयं चैव करोति सौख्यं शरीरसौख्यं खलु ताम्रपादे ।। ३ ।। अथ लोहपाद फलम्—शरीरपीडां रुधिरप्रकोपं कलत्रपीडां पशु-पुत्र-पीडाम्। व्यापारनाशं नृपतेर्भयञ्च लोहस्य पादे खलु निर्धनत्वम् ।। ४ ।।

ग्रह पीड़ा नाशकारी नवग्रह मुद्रिका

ई. बुध पन्ना	प. शुक्र हीरा	आ. चन्द्र मोती
उ. बृ. पुखरा.	मध्येसू. माणि.	द. भौम मूंगा
वा. केतु वैडूर्य	प. शनि नीलम	नै. राहु गोमेद

ग्रहाणां दृष्ट्यादि चक्रम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टिः
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	षष्ठी जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	भुजग दान	ध्वजा दान	नेष्ट ग्रहस्य वर्षे दानोपाय साधनं
कृ. उफा. उषा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	अश्ले. ज्ये. रे.	पुन.वि. पू. भा.	भ. पूफा. पू. षा.	पुष्य. अ. उभा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. मू. अश्वि.	विंशोत्तरी नक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरी वर्षाणि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. गु. श.	शु. श.	मं. श. गु.	श. रा.	मं. गु.	गु.	गु.	०	सम-ग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं	र. चं. मं.	०	शत्रु-ग्रहाः
मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चि. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनुः १५	मिथुन १५	नीच राशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे.वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूल त्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु. स्त्री. नपुंसक
चतुरस्र	व. स्थूल.	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षीस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दग्ध	श्मशान	वाणी	जलभू	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	वायु	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव.	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

राशिज्ञाने विशेषः

नक्षत्र वा राशि में श और स में ब और व में कोई भेद नहीं होता, तथा जिस के नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरे 'नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्ष-रम्)

अथ नक्षत्र राशि नाम चक्रम्

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी,	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
प्रथमचरण	चू	ली	आ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीयच०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीयच०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशयः	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	चित्रा	स्वाति	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	रू	ती	०	ना	ना	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीयच०	०	रे	तू	०	नी	या	यो	ध	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीयच०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गु	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	री	ता	०	तो	ने	यु	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	[illegible]	चि

नाम्नि ङञणक्२ अनुस्वारमात्रायां न भवन्ति ते । चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाक्रमम् ॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युःकथञ्चन। ततःपश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषिते येन येनागच्छति शब्दितः । तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स्वरः स एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशि–नामराश्योर्प्रधानता निर्णीयते––विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥३॥ कुर्यात्षोडश३ कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम् । नामभाच्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्–निर्णयः––वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़ के उसके चार भाग करो,उसको अभिजित् का एक चरण मान कर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढा का एक एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़ के जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १–१ चरण मानो। उस प्रकार को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थ यहां लिखा गया है । अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हो तो "राश्यभिधान कल्पलता" मोतीलाल बनारसीदास, चौक, बनारस से मंगाइये । मूल्य १।) रु० ।

नक्षत्र विषघटी ज्ञानम्––अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिये । क्योंकि नक्षत्रगुणज्ञानचक्र में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनका स्पष्ट ऐसे करना,यथा––जिस दिन विषघटी देखना है उस दिन के सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्र के ध्रुवांक को गुणा कर ६०का भाग देनेसे जो लब्धि मिले वही विषघटी के प्रवेश का समय है और विष-घटी ४ घटी की होती है । इनका भी स्पष्ट करना जरूरी है। उदाहरण––मघा के सर्वर्क्ष ५५को मघा के ध्रुवांक ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले, बस इसी समय से विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ के गुणा कर ६० का भाग देने से लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तक अर्थात् २७।३० से ३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना ।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्ट शुद्धि

लघु भ्राता का जन्म समय जानना––(१)जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो, उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है ।

(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थ राशीश की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो ।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना––(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहिन को कष्ट होता है ।

(२) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा––ल० तृ०–शे० । द०×मं=यो. शे.––यो=शे.) शेष राशि में जब गोचर का शनि होता है तब भ्रातृकष्ट होता है ।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, मंगल इन चारों स्पष्टों को जोड़ कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब भ्रातृकष्ट जानिये ।

माता की मृत्यु का समय जानना––(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना ।

(२) सुखेश, चन्द्रमा या इनके साथ वाला ग्रह सुखस्थ ग्रह चतुर्थ भाव पूर्णदर्शी ग्रह इनमें जो माता के लिये विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट

टिप्पणी––(१) जबौर्जः, यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशिः । कषसंयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं घालारामस्य कुम्भराशिः। (२)यथा–ऋषभदेवः ऋतकरामः लृतरामः । (३)गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः । जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमप्राशने क्रमात् । [illegible]

[illegible]पातका समय जानना––(१) जन्मलग्नेश पुत्रेश के [illegible] के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता

भावों विचार

सुतोत्पात्त का समय जानना---(१) जन्मलग्नेश [illegible] के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवम स्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्री सुख होने का समय जानना---जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़ कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) शु० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना---(१) गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है। और उक्त शेष राश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

पराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्ट काल शुद्ध करना---जहां अटे-सटे से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करें। पल १५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्ध आवे वह चारगुणी की हुई इष्ट घटी के अंक में मिला दें। १५ का भाग देने से जो शेष पल रहें उनको दुगुने कर चतुर्गुणित इष्ट घटी के नीचे रखना। पश्चात् १२ का भाग देना शेष राशिअंश बचे उनमें स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि का हो तो ज्यों का त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिलाकर, द्विस्वभाव, में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राणपद बन जाता है। प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।९ स्थान में, पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में, पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है। लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं।

[illegible]वी विचार

(१) पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों को ध्यान पूर्वक देखकर कापी में लिख रक्खें, यदि इन दिनों में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक ११ नक्षत्रों में वर्षा होवे। अर्थात् मूल नक्षत्र में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र बर्षता निकले। ऐसे ही पूर्वाषाढा से पुनर्वसु, उत्तराषाढा से पुष्य, श्रवण से आश्लेषा, धनिष्ठा से मघा, शतभिषा से पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद से उ. फा. उ. भा. से हस्त, रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाति, और भरणी से विशाखा नक्षत्र में वर्षा होवे॥ सुज्ञ जनों को चाहिये कि इन दिनों को अवश्य देखें और विचार पूर्वक अपने पास नोट कर लें जिस से वर्षा का अन्दाजा ध्यान में रहे॥

(२) माघ शुक्ल सप्तमी को पूर्व उत्तर की वायु चले, आकाश बादलों से ढका रहे वा बिजली चमके तो आगामी वर्ष अच्छा होता है, इस दिन आकाश निर्मल हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, निश्चय है।

(३) माघ शुक्ल नवमी को बादल या वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी होती है।

(४) चैत्रकृष्ण में आकाश का निर्मल रहना अच्छा है, यदि यहां मूल से भरणी नक्षत्र तक बादल व वर्षा हो तो अनावृष्टि होती है। पौष में तो इन नक्षत्रों में बादल होना अच्छा है और इधर इस मास में निर्मल रहना अच्छा है॥

(५) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को वर्षा बिजली या मेघ गर्जन हो तो श्रावण भाद्रपद में वर्षा की खेंच जरूर होती है॥

(६) अश्विनी भरणी नक्षत्र पर सूर्य रहते यदि वायु-शास्त्रसम्बन्धी कोई वर्षा-नाशक अपयोग बना हो, परन्तु कृत्तिका के सूर्य में बिजली छींटे आदि हो जायें तो अशुभ फल नहीं होता है। रोहिणी में तपे, कृत्तिका में छींटे बिजली वा वर्षा हो और मृगशिर में वायु चले तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है, परन्तु रोहिणी में मेघ गर्जे, थोड़ी वर्षा हो या वायु चले, कृत्तिका में तपे पर मेघ गर्जन बिजली छींटे न हों, मृगशीर्ष में तपत हो तो वर्षा में खेंच होती है और दुर्भिक्ष पड़ता है॥

(७) कृत्तिका में यदि वर्षा बूंदा बांदी हो जाय तो वायुमण्डल में यदि पहले कुछ अशुभ योग भी हुए हों तो उनका बुरा फल नहीं होता, वर्षा काल में अच्छा पानी बर्षता है। अतः कृत्तिका के सूर्य में बूंदा बांदी बिजली बादल का होना अच्छा है।

(८) रोहिणी पर सूर्य तब तक सूर्य अच्छा तपना चाहिये, गर्मी अधिक हो तो वर्षा श्रेष्ठ, वायु अधिक हो तो वर्षा की खेंच और वर्षा हो तो पहिले वर्षा की खींच होकर पीछे वर्षा होती है, इन १५ दिनों में वायु, बादल, बिजली वर्षा होना हितकर नहीं, स्वच्छ धूप पड़नी चाहिये, रोहिणी में बूंदाबांदी होने पर वर्षा की खींच जरूर होती है यह अनुभवसिद्ध है, आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु अच्छी होने पर भी इसके खेंच का असर तो पहिले होता ही है॥

(९) मृगशिर नक्षत्र पर सूर्य रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है, यदि वायु न चले तो वर्षा देर से आती है और काम भी होती है॥

वर्षा विज्ञान।

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां वर्षा न होवे जैसे

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७५	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	२१	१६	१२

रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन थोड़ी सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खेंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों में गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ। वायु से राजाओं में विग्रह। थोड़ी वर्षा से संवत् नेष्ट, दैवात यदि अधिकवर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली से वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली से शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी। निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञानसारणी

दिसंबर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
जून	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
जौलाई	जू.																	जौ.													
जनवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जौलाई	जौ.																	अ.													
अगस्त	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
फरवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८			
अगस्त	अ.																	सि.													
सितंबर	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मार्च	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
सितंबर	सि.																			अ.											
अक्टूबर	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अप्रैल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
अक्टूबर	अ.																			न.											
नवंबर	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

वर्षा ज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति–दिसंबर, जनवरी, फरवरी मार्च इन चारों मासोंकी तारीखों में जिनजिन तारीखों में जहां वर्षा होती है। उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जौलाई, अगस्त, सितंबर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के वृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय से अनुसार भारत में १२ दिसंबर के बाद ही शीत काल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना में १९ दिसंबर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां २ जौलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञानसारणी यह बता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में कहीं वर्षा हुई हो

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घटयादि को ६० में से घटा कर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घटयादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियां को ६० गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्षों से गुणा कर भभोग की पलों से भाग देवें लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणें भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणा कर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणा कर भभोग के पलों का भाग दें लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणा कर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है इस को दशा के वर्षों में घटाने से भभोग दशा होगी॥

(दशान्तर्दशा चक्र देखो पृष्ठ १)

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २००७ वि०

राशयः	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	स्वास्थ्य खराब, लाभ खर्च सम, पुत्रचिन्ता शत्रुनाश।	धर्म में रुचि, कारोबार मध्यम, वृथा खर्च, यात्रा में कष्ट।	मास का अन्तिम भाग अशुभ, स्वजन मिलाप, लाभ कम।	सन्तति चिन्ता, रक्त विकार लाभ श्रेष्ठ, कारोबार ठीक।	स्त्रीपुत्र चिन्ता, अचानक सफर, जलभय, कारोबार मध्यम।	शरीरकष्ट, किसी जीव का चिन्तालाभ अच्छा, मित्रविरोध हो
वृष	सन्तान कष्ट, राजपक्ष शुभ, नेत्र कष्ट, लाभ कम।	बन्धु चिन्ता, सम्मान हानी, उद्योग निष्फल, खर्च अधिक।	सफर से लाभ, बन्धुओं द्वारा खर्च, नीच भय, शिर पीड़ा।	कुटुम्ब से कष्ट, सफर में भय, पुत्रादिकी चिन्ता, खर्च ज्यादा	शत्रुनाश, लाभ से खर्च ज्यादा, वाहनभय, वायु पीड़ा।	चित्त खिन्न, राज्य से चिन्ता कारोबार मध्यम स्त्री सुख।
मिथुन	यात्रा से लाभ, वाहन सुख, बंधु पीड़ा, रोग भय।	उत्साह वृद्धि, धर्म में रुचि, लाभ अच्छा, शिर पीड़ा।	जल वा अग्नि से भय, शुभ में खर्च, भाग्योदय, लाभ उत्तम।	उदर विकार, शत्रुहानि, लाभ श्रेष्ठ, विवाद में जय।	मित्र बन्धु द्वारा लाभ, नये कार्यं का उत्साह, सुखवृद्धि।	विवादमे जय, लाभ मध्यम, शत्रुनाश, देव तीर्थयात्रा, तथा दर्शन।
कर्क	खर्च विशष, बंधुविरोध, रोगभय, शत्रुभय, उद्वेग।	बन्धु कष्ट, चित्त भ्रम राज्य, चिंता, वृथाविवाद, धनहानी।	स्वास्थ्य में बिगाड़, अचानक यात्रा, मित्र विरोध, लाभकम।	बने बनाये कार्यों में बिगाड़, रोग भय, कारोबार ढीला।	विवाद से हानि शत्रु चिन्ता, भ्रातृ कष्ट, धर्म में प्रवृत्ति।	स्वास्थ्य ठीक, बन्धुओं द्वारा खर्च, लाभ मध्यम, वृथायात्रा
सिंह	वायु पीड़ा, लाभ कम, वृथा व्यय, पशुचिन्ता, यात्रा में कष्ट	कार्य बिगड़े, चित्त उदास, ऋण चिंता, शरीर कष्ट।	रागभय, मित्रसे बिगाड़, कारोबार में हानि, वृथा यात्रा।	जलभय, धर्म में रुचि, कारोबार में गड़बड़ी, वायु पीड़ा।	लाभ मध्यम, मित्रमिलाप, शिर पीड़ा, बेचैनी, गुप्तचिन्ता,	कारोबार में कमी, पैसे की तंगी, मासान्त कुछ शुभ।
कन्या	लाभ से खर्च विशेष, हैरानी, बंधु मिलाप, नीच से भय।	शिरवा नेत्र में, कष्ट शत्रु चिंता, यात्रा में कष्ट, लाभ कम।	कारोबार में हानि, विवाद में खर्च, मित्र से संतोष।	ज्वर वा उदर विकार, लाभ से खर्च विशेष, शत्रु वृद्धि।	शत्रुभय होकर नाश, शरीरकष्ट अकस्मात लाभ धर्ममें रुचि,	विवाद भय, कार्य सिद्धि में विघ्न, चित्तखिन्न, मित्रसे सुख
तुला	लाभ अच्छा, शत्रु नाश, स्वास्थ्य में गड़बड़ी, वृथा चिंता।	लाभ मध्यम, समीप की यात्रा, राज्य पक्ष शुभ, वंश वृद्धि।	स्त्री पुत्रादि द्वारा खर्च, बन्धु कष्ट, यश वृद्धि, चिन्ता नाश।	शिर वा नेत्र में कष्ट, कारोबार में वृद्धि, राज्य से विजय।	ज्वर व रक्त पित्तपीड़ा, बन्धु सुख, वाहनभय, लाभश्रेष्ठ।	पुत्र स्त्री हेतु खर्च, विवाद में जय, रुका हुआ कार्य बने
वृश्चिक	स्वजनबंधु कष्ट, राज्य पक्षशुभ बड़े पुरुषों से मान, लाभ कम	खर्च अधिक, विवाद में जय, गुप्त चिन्ता, धर्म में रुचि।	शत्रु से भय, लाभ उत्तम, देह सुखी, राज पक्ष शुभ।	स्त्री मित्र से सन्तोष, कारोबार उत्तम, बिगड़े कार्य सुधरें।	परिवार में वृद्धि, मित्र से प्रसन्नता गुप्त चिन्ता, लाभ श्रेष्ठ।	यात्रा से लाभ, बिगड़े कार्य की सिद्धि, शरीर कष्ट, यश वृद्धि।
धन	धर्म में अरुचि, विवाद में जय, शत्रुनाश, लाभ उत्तम।	बन्धु सुख, कार्य सिद्ध, पुत्र से संतोष, लाभ अच्छा, शत्रु नाश।	कारोबार ठीक चलते हुवे भी लाभ कम, उत्साह वृद्धि।	इज्जतकी चिन्ता, वृथा भय, शत्रु वृद्धि, बन्धु सुख कोष में कमी।	धर्म में अरुचि, शरीर शिथिल, भाई से संतोष, लाभ अच्छा।	चिन्ता दूर, शरीर कुछ अस्वस्थ लाभ श्रेष्ठ, पशु पीड़ा।
मकर	विवाद में हानि, वृथा यात्रा, गुप्त चिंता वायु विकार।	रक्त विकार, स्वजनों से विरोध, चिंता कष्ट लाभ कम।	गुप्त चिन्ता, शुभ में खर्च, मित्र मिलाप, लाभ में रुकावट।	रोग भय, सन्तान वा शत्रु चिन्ता, कारोबार मध्यम।	राज्य पक्ष अशुभ, स्थान हानि, लाभ से खर्च विशेष।	धर्म कार्य में खर्च, चित्त खिन्न, अंग पीड़ा, लाभ कम।
कुम्भ	बन्धु कष्ट, लाभ अच्छा, चौर भय, मित्र से सुख, शिर पीड़ा।	स्वास्थ्य अच्छा, कारोबार उत्तम, वृद्धजनों की चिन्ता।	स्त्री पुत्र चिन्ता, लाभ अच्छा, अग्नि वा जल का भय, यात्रा में सुख।	वायु विकार, उद्योग करते हुवे भी लाभ कम, बन्धु हानि।	कारोबार शिथिल, नये काम का विचार, स्त्री पुत्र चिन्ता।	उदर विकार, शत्रु नाश, कारोबार कुछ ठीक, मित्र सुख।
मीन	चित्त में उद्वेग, कारोबार ठीक, शत्रुनाश, स्वास्थ्य खराब।	उत्साह वृद्धि, व्यापार से लाभ, शुभ कार्यों में खर्च, पशु लाभ।	अचानक कष्ट, विवाद में जय, सेवक वा मित्र से विरोध।	बन्धु सुख, उत्साह वृद्धि, लाभ श्रेष्ठ, पुत्र स्त्री चिन्ता।	लाभ मध्यम, शुभ में खर्च, झगड़े से हानि, स्वास्थ्य खराब	गतमास की अपेक्षा ठीक शुभ विचार, वायु विकार।

सूचना—उपर्युक्त राशिफल सामूहिक रूपेण स्थूल मानसे मिलता है सूक्ष्मयथार्थ मासिकफल जानना चाहें तो अपना वर्ष फल बनवाईये।

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २००७ वि०

राशयः	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
मेष	चित्तभ्रम, लाभ श्रेष्ठ, राज्य पक्ष से चिन्ता, वाहन भय।	पराक्रम वृद्धि, स्त्रीसुख, नये उद्योग से लाभ, वायुपीड़ा।	दुःस्वप्न, शत्रुओं के उत्साह नष्ट, लाभ उत्तम, शिर पीड़ा।	लेनदेन की चिन्ता, धर्म में खर्च, सेवक से चित्त में क्षोभ।	शत्रुनाश, बिगड़े कार्य सिद्ध, मास के मध्यम में लाभ अच्छा।	सन्ताप बढ़ पर चिन्ता साथ रहे, लाभ श्रेष्ठ, वायु पीड़ा।
वृष	कार्यसिद्धि, सफर से भय, स्त्री पुत्रों द्वारा खर्च, लाभ कम।	रागोत्पत्ति, शत्रुबाधा, लाभ साधारण, मित्र शत्रु बनें।	जुकाम, नीच से लाभ, बन्धुओं से प्रेम, स्त्री सुख, कार्यसिद्धि।	एकाएक चिन्ता, लाभ कम चोट या गिरने का भय।	वायु विकार, कोष में कमी, कारोबार अच्छा, वृथा खर्च।	मित्र से खुशी, यात्रा में कष्ट, शुभ में खर्च, लाभ मध्यम।
मिथुन	उद्योग में लाभ, मित्रों से मिलाप, स्त्रीसुख श्रेष्ठ, वाहन भय।	संतान की तरफ से खुशी, लाभ अच्छा, अकस्मात् चिन्ता।	गृहस्थ से उदासी, लाभ से खर्च ज्यादा, कारोबार ठीक।	बन्धुओं की चिन्ता, शिर वा कमर में रोग, लाभ में रुकावट।	धर्म में प्रवृत्ति, शत्रुनाश, राज्य से मान, लाभ अच्छा, पशुकष्ट।	घरू फिकर, नये काम और जायदाद की चिन्ता, लाभ कम।
कर्क	व्यापार में हानि, सुख में बाधा, धर्म में खर्च, अधिक चिन्ता।	शत्रु पीड़ा, व्यापार की चिन्ता, बन्धु विरोध, सफर में चिन्ता कष्ट।	नौकरी से हानि, उत्तम कार्य में रुकावट, मासान्त में लाभ।	पारिवारिक उलझन पड़े धर्म में प्रवृत्ति, अग्नि भय।	जायदाद की चिन्ता, शुभ अधिक, बन्धुकष्ट, लाभ ठीक।	धर्म कृत्य का विचार, शत्रु नाश, स्वकार्य में शिथिलता।
सिंह	लाभ खर्च सम, चित्त में अशान्ति, राज्य से भय, रोग वृद्धि।	स्त्री पुत्रार्थ खर्च, लाभ अच्छा, विवाद में भय, उत्साह वृद्धि।	अग्नि भय वंश वृद्धि, खर्च से हैरानी, कोष में कमी।	सफलता में रोक, शत्रुकष्ट, लाभ मध्यम, गृहकलह।	किसी दुर्घटना का भय, द्रव्य की तंगी, वाहनभय, स्त्री चिन्ता।	जीव जन्तु का भय, लाभ होकर पीछे हानि, प्रेमी से सुख।
कन्या	वृथा यात्रा, खर्च विशेष लाभ कम, शत्रु भय, मान हानि।	सरदी छाती में रोग, शत्रु वृद्धि, कारोबार कुछ ढीला।	स्थान हानि, कारोबार मध्यम सन्तान की चिन्ता, स्त्रीसुख।	लाभ होते रुके, यात्रा में कष्ट, चित्त अशान्त, मित्र से सन्तोष	स्वास्थ्य में गड़बड़ी, बड़े पुरुषों से मिलाप, लाभ मध्यम।	उदर विकार, शत्रु की चिन्ता, लाभ से खर्च ज्यादे, स्त्री कष्ट।
तुला	भाग्य व व्यापार में वृद्धि, शत्रु नाश, शरीरपीड़ा, लाभ अच्छा।	व्यर्थ भ्रम, नई चिन्ता, लाभ दिखते हुवे भी हानि रहे।	मित्रवियोग, कोई बिगड़ा काम बने, लाभ कम, खर्च ज्यादा।	नये काम का उत्साह, खर्च विशेष, कोई नई चिन्ता हो।	ठगों का भय, यात्रा चिन्ता, कार्यान्तर का विचार, मित्र मिलाप।	लाभ होकर अकस्मात् खर्च पड़े, मित्र से खुशी, वायु विकार।
वृश्चिक	नये कार्य का विचार, वृथा खर्च, शुभ कर्म में प्रवृत्ति।	झगड़े में जय, कफ से कष्ट, व्यापार से लाभ, खर्च शुभ में।	बन्धु पीड़ा, लाभ अच्छा, वाहनों से खतरा, देर की चिन्ता दूर।	स्वास्थ्य उत्तम, पुण्य में खर्च, लाभ ठीक, शत्रु नाश, कुलवृद्धि	गृह धन रक्षा की चिन्ता, कारोबार अच्छा, सन्तति चिन्ता।	चिन्ता होकर दूर हो, कारोबार ठीक, सन्ततिकष्ट।
धन	वायु पीड़ा, मित्र मिलाप, क्रोध अधिक, लाभ अच्छा, उन्नति।	खर्च ज्यादा, वृथा विवाद, राज से मान, स्वास्थ्य ठीक।	लाभ मध्यम, शरीरकष्ट, चौर भय, कार्यसिद्धि से खुशी अचानक यात्रा।	कार्यसिद्धि, चिन्ताप्रद समाचार आवे, परिणाम शुभ, यात्रा।	वायुविकार, विवाद में जय लाभ ठीक, यात्रा हो, चित्त चचल।	लाभ अच्छा, चौरभय, शत्रु नाश, अस्थिर विचार, अंग पीड़ा।
मकर	नौकरी में कष्ट, बुद्धि भ्रम भ्रम अधिक, लाभार्थ यात्रा।	चिन्ताजनक कारण, बनगा, गतमास से लाभ अच्छा!	लाभ अच्छा, शरीरकष्ट, मित्र द्वारा खुशी, अग्निभय, दुःस्वप्न।	पुत्र स्त्री के कारण व्यय, शिर वा गुप्तांग में पीड़ा, लाभ ठीक।	मास के अखीर में लाभ, कोष में कमी, धर्म में अरुचि।	मकानादिक में खर्च, लाभ उत्तम, सोचे हुवे काम सफल।
कुम्भ	सफर से कष्ट, वृथा खर्च, स्त्री सुख उत्तम, लाभ मध्यम।	मित्रों से विनोद, राज्य व दुष्ट भय, कार्य सिद्धि में विघ्न।	शरीर सुख उत्तम, पशु भय, लाभ के काम में विघ्न।	कारोबार ढीला, लाभ कम, खर्च अधिक, पुत्र से सुख।	अंग पीड़ा, मित्र से संतोष, अकस्मात् लाभ, विवाद भय।	मन अशान्त, वृथा व्यय, किसी कार्य सिद्ध्यर्थ दौड़ धूप।
मीन	सुख वृद्धि, मित्र लाभ, कारोबार कुछ ठीक, शत्रु नाश।	रोग वा चोट भय, परिणाम शुभ, शुभ में खर्च, लाभ ठीक।	अंग पीड़ा, धर्म में प्रवृत्ति, स्त्री से सन्तोष, लाभ कम।	स्त्री द्वारा खर्च, यश वृद्धि, सेवक से चित्त खिन्न, लाभ में विघ्न।	लाभ श्रेष्ठ, शत्रु भय, बन्धु चिन्ता, चोट से कष्ट, रक्त विकार।	लाभ खर्चसम, शरीर में कुछ रोग, झगड़े में विजय।

सूचना—उपर्युक्त राशिफल सामूहिक रूपेण स्थूल मानसे मिलता है सूक्ष्मयथार्थ मासिक फल जानना चाहें तो अपना वर्ष फल बनवाईये।

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने । समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥
सम्यक् बिचार्य गणितं दैवज्ञजनतुष्टिदम् । मुकुन्दवल्लभेनेदं तिथिपत्रं विनिर्मितम् ॥३॥
अनन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना । तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्वित्येव याच्यते ॥४॥
तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च । पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नानफलं लभेत् ॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सरप्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरण आदि से गृह सुशोभित करें, मङ्गल स्नान कर देवता ब्राह्मणगुरुकी पूजाकर, स्त्रियां शिर आदि वस्त्र आभूषण आदि परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषीजीका सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर का फल श्रवणकरें प्रातःकाल में कटुनिम्बके कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें कालीमिर्च, हींग, नमक (सेंधा) अजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावे, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है (वर्ष पर्यन्त ज्वरादि बीमारी नहीं होती)।

पञ्चाङ्गस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें, मिष्टान्न आदि भोजन करावें, गीत (गायन) वाद्य कथा श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें, गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है।

ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः। ते दुःखदारिद्र्यरुगादिवर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्यसंकुलाः ॥१॥ शाकस्यश्रवणात्सुपुण्यजननं संवत्सरस्याद्यता,राज्ञो राजकुले जयो विजयते मन्त्री फलं बुद्धिदम् धान्यं धान्यपतेः रसं रसपतेः क्षेत्रेषु स्तथा,सस्यं सर्वसुखञ्च वत्सरफलं संशृण्वतां सिद्धिदम्॥ ॥ इति संवत्सरादिफलश्रुतिः।

सृष्टिक्रम वर्णन—

अथवा सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका—समस्त जगत् की उत्पत्ति स्थिति और लय कारणरूप ब्रह्मा की आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती है। अब ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय है। इस दिन की १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल व्यतीत हो चुकी है। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है—एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौरमान से वर्ष-संख्या ४३२०००० है। इस प्रकार के एक हजार युगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है (ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घड़ी होती है, विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्रकलार्ध होता है। रुद्र के अर्बुद संख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है) ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष,यह छे मनु व्यतीत हो गये हैं, अब सातवां वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमेंभी २७ चतुर्युगी गत होकर अठाईसवीं चतुर्युगी के ३युग व्यतीत हो गये हैं, और यह २८ वां कलियुग है

अथ युगकाल व्यवस्था—-सतयुग-कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम पहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सतयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी, इसमें श्रीनारायणके मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह, ये ४ अंशावतार हुए, श्रीमत्स्यजी ने वेदों के चोर शंखासुर को मार कर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये, भगवान् कच्छप ने पृथ्वी की रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारणकर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र-मंथन करा कर का उद्धार किया। श्रीनृसिंहावतार ने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पद पर कायम था, गौएँ कामधेनु के समान होती थीं, प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था। इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बो कर २१ बार काटते थे। ब्राह्मण चारों वेद के जानकार तथा सत्यभाषी परद्रव्य-परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे। शाप देने और वर प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियें पद्मिनी और पतिव्रता होती थी। शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को और सपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे। इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था।

त्रेतायुग—-वैशाख शुक्ल तृतीया चन्द्रवार के द्वितीया प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२९६००० वर्ष की थी, इसमें भगवान् के श्रीवामन, श्रीपरशुराम और श्रीरामचन्द्र ये तीन अवतार हुए श्री वामनजी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने कर्तव्यविमुख एवं अन्यायी विलासिता के प्रेम में प्रमत्त अभिमानी क्षत्रियोंका नाश करके २१वार ब्राह्मणराज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्रजी ने महा-अभिमानी राक्षस-राज रावणका वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था। इस युग में धर्म तीन पैर का रह गया था। गौएँ त्रिकाल दूध देनेवाली होती थी, प्रायः चान्दी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बोकर सात वार काटते थे। ब्राह्मणतीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ठ परस्त्री-परद्रव्यसे पराङमुख होते थे, वर शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियें चित्रिनी पतिव्रता होती थीं। इस युग में सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियोंका राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वह इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला में तोलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था। द्वापर—-माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीयप्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरियान् योग में द्वापरयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी,आयु ८६४००० वर्ष की थी। इसमें पूर्ण ब्रह्म के श्रीकृष्ण श्रीबलदेव ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्णने दैत्यराज कंसादि दुष्टोंका वध किया, तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्रीबलदेव जी ने सामयिक लीला करते हुए दुष्टोंका नाश करके धर्मका उद्धार किया।इस युग में धर्म दो पैर वाला रह गया था, गौएँ दो वक्त घटपूर्ण दुग्ध देने वाली होती थीं। प्रायः ताम्र पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था। वर्षा समय पर हो जाती थी, एक वार अन्न बीज कर २ वार काटते थे। ब्राह्मणलोग दो वेदों के पारंगत होते थे और कुछ असत्य विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देव-पूजनादि करनेवाले किञ्चित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियें शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थी। इस युग में धर्मप्राणचन्द्रवंशी राजा हुए। प्रायः चारों वर्ण अपने अपने वर्णाश्रम धर्म पर कायम थे, परस्त्री-परद्रव्यसे लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था। कलियुग—-भाद्रपद कृष्ण१३ अर्धरात्रि के समय आश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग की उत्पत्ति हुई थी, इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध और श्री कल्कि (निष्कलंक) हैं जिनमें अहिंसा धर्म के उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुके, और कल्कि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब संभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा; इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म की स्थापना

के साथ साथ न्यायपरायणक्षत्रियराज्य भी कायम होगा ... जायगा। गौएं दूध कम देंगी, मृण्मय पात्र और ताम्रमयी तथा कर्गल मुद्रा प्रायः चलेगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का सञ्चार होगा। ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से शून्य तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलाञ्जलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने लगेंगे, शास्त्रनिन्दित मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से भी लाभ उठायेंगे, शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ जायगा, धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियें ज्यादा हस्तिनी पैदा होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रता कहीं कहीं देखने में आयेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे। स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या-विक्रय करेंगे। गौ ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्रों का माता पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा। राज्यव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। इस युग में प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामकरे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति ॥ अथ कलिमाहात्म्यम्——धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूर गतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्योज्झितम्। राजानोऽर्थपरा हयरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः। साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे ॥ निर्वीजा पृथ्वी निरौषधिरसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्मरहिता विप्राः कुमार्गं गताः। भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्रा पितुर्द्वेषिणो, हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः ॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचाश्च अवनिपतयो दुष्टमतयो, जना शिष्टा नष्टा अहह! कलिकालो विलसति ॥ कलौ गंगायाः स्थितिः——पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ, तदैव विष्णुस्त्यजति मेदिनीं नरपुंगव। भगीरथं प्रति गंगावाक्यञ्च——यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते गुरुर्नभस्थो दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रं वड़वानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते ॥ इति ॥ कलौ दशसहस्राणीति वाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम, नान्येषु कलिष्विति ॥

वर्षफलविचार २००७

अथ श्रीमन्नृपतिधर्ममूर्ति-विक्रमादित्यानां राज्यसिंहासनाध्यासनादतीताब्दानि तत्संवताभिधः २००७ श्रीमन्नृपतिचक्रचूड़ामणि शकजातियवननिर्वीजक शालिवाहनराज्याद् गतहायनानि तत् शकाभिधः १८७२ श्रीकृष्णजन्म सं० ५१८६ श्री महावीर निर्वाण (जैन) संवत्सरः २४७६——७७ ईस्वीसन् १९५०——५१ हिजरी सन् १३६९——७० फसली सन् १३५६ वर्षादौ गुरु मानेन प्रभवादिषष्टयब्दानां मध्ये विष्णु विंशत्यां (३६) (त्रिकाण्डमण्डनः——श्रौतस्मार्तक्रियाः सर्वाः कुर्याच्चिन्द्रमसर्तुषु। तदभावे तु सौरर्तुष्विति ज्योतिर्विदां मतम्। तथा आर्ष्टिषेणि—समरेत्सर्वं कर्मादौ चान्द्रसंवत्सरं सदा। नान्यां यस्माद्वत्सरादौ प्रवृत्तिस्तस्य कीर्तिताः) नाम्नः संवत्सरस्तस्यफलं शोभने शुक्रः स्वामी राज्ञां प्रजानाञ्च सुखं, अतिवर्षा चैत्रादिमासत्रये धान्यं समर्घं, राजविग्रहः, किञ्चिदुत्पातः, आषाढेऽल्पमेघः, श्रावणोऽतिवर्षा परं लोकपीड़ा, भाद्रपदे महान्मेघः, आश्विने सुभिक्षं तेऽपि किंचिद्विग्रहः ॥ अथात्र १ वर्षे राजा रविः २ मंत्री गुरुः ३ सस्येशः सूर्यः, ४ धान्येशः शुक्रः, ५ मेघेशो बुधः, ६ रसेशो भौमः ७ निरसेशो रविः, ८ फलेशो बुधः, ९ धनेशो रविः, १० दुर्गेशोगुरुः। अथैषां फलानिः—राजा रवि स्तस्य फलम्, (काम्बोज काश्मीर ... देशेषु ...) ...

... सुधान्यं फलमल्पवृक्षाच्चौराग्निबाधा निधनं नृपाणां ॥१॥ मंत्रीगुरु तस्य फलम्, (वाल्हीक मालयोः) विविधधान्ययुता खलु मेदिनी प्रचुरतोयघनामुदिता भवेत् ॥ नृपतयोजनपालनतत्पराः सुरगुरौ ननु मंत्रिपदं गते ॥२॥ सस्येशः सूर्यं तस्य फलम्, (पौण्ड्रविदर्भयोः) सस्याधिनाथे तरणौ हि पूर्वं धान्यंसमर्घं बहुधोपि चौराः। युद्धं नृपाणां जलदा जलाढ्याः स्वल्पं च सस्यं बहु भूरुहाश्च ॥३॥ धान्येशो शुक्रः तस्य फलम्, (नर्मदा तटे मध्यदेशे च) भृगौ पश्चिमधान्येशे पश्चाद्धान्येन पश्यते ॥ सस्याः समर्घतां यांति स्वल्पं क्षीरं गवामपि ॥४॥ मेघेशो बुधः तस्य फलम् (मागध देशे) अमृतरश्मिसुते यदि वारिपे बहुजलं तृषधान्यरसादिकम् ॥ द्विजवराय जनोत्सुकचेतसा विविधसौख्ययुता धरणी तदा ॥५॥ रसेशो भौमः तस्य फलम्, (कोंकणमागधयोः) यदि धरासनयो रसपो भवेन्न रस राशि युता जनता। नरपतिर्विषमो जनता पदो न जलदो बहु वृष्टिकरो भुवि ॥६॥ निरसेशो रवि तस्य फलम्, (मालवदेशे) निरसाधिपती, सूर्ये त्रपु चंदनयोरपि। रत्नमाणिक्य, मुक्तादेरर्घं वृद्धि प्रजायते ॥७॥ फलेशो बुधः तस्य फलम्, (सर्वदेशे) यदि बुधे फलपेफलमुत्तमं जलधरा जलराशि मुचस्तदा। बहुतृणं कुसुमं कमलैर्युतं जनपदा जनसौख्य मुदान्विताः ॥८॥ धनेशो रविःतस्य फलम्, (सर्वत्र) द्रविणपे यदि वासरपे तदा वणिजतो बहुद्रव्य समागमः। गजतुरंगममेषकरोष्ट्रतो धनचयं लभते क्रयविक्रयात् ॥९॥ दुर्गेशोगुरु तस्य फलम्, (सर्वदेशे) सुरगुरौ गढपे न यशोभिता नरवरा नरपाकरपालिताः। गिरिषु वै नगरेषु समं सुखं सुखमतिर्द्विजशस्त्रवतां विशाम् ॥१०॥

नौ मेघों में से तम नाम मेघराज का फल—रोग और चौर अधिक, जल की न्युनता रहे, धान्य का पोषण नहीं हो, प्रजा दुःखी रहे। द्वादश नागों में नन्द सारी नाम नाग राजका फल——अति वृष्टि प्रजा में सुख। सप्त वायु में विवह नाम वायु का प्रभाव रहेगा। इसवर्ष रोहिणी का निवास समुद्र में है फल—महावृष्टि हो। संवत् का निवास माली के घर में है फल——वर्षा अच्छी हो। संवत् की सवारी अश्व की है, शनैश्चर की दृष्टि दक्षिण में है। संवत् विश्वे १०।

अथ वर्षादीनां विश्वा मानम् ॥ वर्षा ९ धान्य १५ तृण ५ शीत ५ तेज ५ वायु १३ वृद्धि १५ क्षय १५ विग्रह ११ क्षुधा १३ तृषा १५ निद्रा ११ आलस्य १५ उद्यम १५ शान्ति ११ क्रोध ११ दम्भ ११ पाखण्ड ९ लोभ ७ मैथुन ९ रसनिष्पत्तिः १३ फलनिष्पत्तिः ११ उत्साह ३ उग्रत्व १ पाप ३ पुण्य १३ व्याधिः १ व्याधिनाशः ५ आचार १३ अनाचार ११ मृत्यु १ जन्म ३ देशोपद्रव ३ देशस्वास्थ ३ चौरभय ५ चौर नाश ११ अग्नि ५ अग्नि शान्ति ५ टिड्डी ३ तोता ११ मूषक ११ सोना ११ तांबा ३ स्वचक्र १७ पर चक्र ७ अतिवृष्टि १५ अनावृष्टि १५ उद्भिज (तरु गुल्माद्याः) ५ जरायुज (नृगवाद्याः) ३ अण्डज (पक्षि सर्पाद्याः) १५ स्वेदजाः (कृमिदंशाद्याः) १३।

अथ नव वर्ष प्रवेशः—सं० २००६ वि० चै. कृ. ३० शनि को इष्ट घटी ३३।१३ पर कन्या लग्न में नव वर्षका प्रवेश होता है। सो इसवर्ष पूर्वीय भारतमें कोई उपद्रव हो यवन, देश में युद्ध से संहार हो, पूना बम्बई प्रान्तमें रोग भय हो। वर्षेशलग्नम्——सं. २००७ वि. वैशाख कृ. ११ गुरु वार को इष्ट घटी ३३।३९ तुला लग्न में श्रीसूर्यनारायण मेष राशि में प्रवेश होंगे। लग्नेशभृगु गुरु के साथ त्रिकोण में बैठा है, और लग्न को बुध गुरु की दृष्टिपूर्ण भी है अतः यदा शुभग्रहैर्दृष्टं लग्नं स्थातु तदा शुभम्। अर्थात्——वर्ष लग्न को शुभ ग्रह देखते हों तो प्रजा को धन धान्यादि वस्तुओं का सुख अच्छा मिलता है। आश्विन, फाल्गुन, चैत्र महीने प्रजा को भयप्रद हैं। सूर्य का आर्द्रा ... सं० २००७ प्रथम आषाढ ... को इष्ट

घटी ५८।१५ पर वर्षलग्न में श्रीसूर्यभगवान आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश होंगे। उस समय तात्कालिक ...

... निर्णय:

रवि:, ८ फलेशो बुध:, ९ धनेशो रवि:, १० दुर्गेशोगुरु: । अथषा फलानि:—राजा रवि स्वस्थ सुख अच्छा मिलता है। आश्विन, फाल्गुन, चैत्र महीने प्रजा को भयप्रद हैं। सूर्य का आर्द्रा

घटी ५८।१५ पर वृषलग्न में श्रीसूर्यभगवान् आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश होंगे। उस समय तात्कालिक तिथि सप्तमी है। फल—लोक में उत्तम क्षेम रहे। वारबुधफल—-विप्रवर्ग का कल्याण हो। नक्षत्र पू. फा. है फल—-राष्ट्र नायकों का यश बढ़े, योग सिद्धि है फल—-धनधान्य वस्त्रादि की वृद्धि हो और रोग हो। समयफल—-प्रजा में रोग कष्ट हो। लग्नफल—-सूर्य लग्न में और चन्द्रमा चौथे बैठा है जो धान्योत्पत्ति के लिये शुभ है, पर निर्जल राशि में होने के कारण पूर्ण शुभ फलप्रद नहीं रहे। गुरूदय-फल—-चैत्र में गुरु का उदय होगा सो प्रजा को पीड़ा और राजाओं में युद्ध हो। कुम्भराशिस्थ गुरु-फल—-वर्षा कम कृषकों को चिन्ता, पूर्व में अन्न सस्ता।

स्तम्भ चतुष्टय विचार—-इस वर्ष जल स्तम्भ का सम्पर्क घटयादि केवल ४।४४ अत्यन्त न्यून है। अत: अवर्षण से जनता कष्ट पावेगी।

तृण स्तम्भ और वायु स्तम्भ का तो अभाव ही है, अत:—तृणोत्पत्ति बहुत कम होगी, पशु कष्ट पावेंगे। वायु का न्यून संचार भी कष्टप्रद ही सिद्ध होगा। अन्न का स्तम्भ तृतीयांश के आसन्न है, अत: अन्न की कमी का अनुभव इस वर्ष भी रहेगा। आर्षमान (वर्ष रक्षा के चार दुर्ग) विचार—-गत पौष कृष्ण ३० को मूल का सम्पर्क केवल १७।४७ था। और इस वर्ष वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी का सम्पर्क चतुर्थांश के आसन्न १३।४९ है और श्रावण शुक्ल पूर्णमासी के साथ श्रवण का सम्पर्क किञ्चिन्मात्र भी नहीं। कार्तिक शुक्ल १५ को कृत्तिका नक्षत्र का सम्पर्क अन्य सब आर्षों से उत्तम है, अत: पूर्वापर विचार देखते हुए यह वर्ष अन्नादि की उत्पत्ति के लिये अच्छा नहीं है।

अखै तीज रोहणी नहिं होई। | राखी श्रवणो हीन विचारो। | सही माह खलबली प्रकाशे।
पौष अमावस मूल न जोई॥ | कार्तिक पुण्यो कृतिका टारो॥ | कहे भड्डली साख बिनाशे॥

॥ अथ लाभव्ययचक्रम् ॥

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशय:
१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११	लाभ:
११	५	२	१४	११	२	५	११	५	५	५	५	व्ययम्

लाभव्यय देखने की रीति—-लाभ और व्यय के अंकों को जोड़ कर १ घटावे और आठ ८ का भाग देवें शेष १।२।६।७ बचें तो उस वर्ष में लाभ उत्तम होवे, और शेष ३।४।५।० बचे तो लाभ बहुत कम होवे। और चिन्ता भी रहे।

वर्षलग्नम्

वर्षेशलग्नम् (जगल्लग्नम्)

आर्द्रा प्रवेश लग्नम्

ग्रहण निर्णय:

ज्योतिषे ग्रहणं सारं गारुड़े विषभक्षणं।
शैवे घटवती दीक्षा कौलके ग्रहनिग्रहौ॥

सं. २००७ विक्रमी में इस भूमण्डल पर ३ ग्रहण होंगे जिनमें २ चन्द्रमा के और १ सूर्य का जिनका संक्षेप से विवरण निम्न लिखित है।

(१) खग्रास चन्द्रग्रहण—-चैत्र शुक्ल १५ रविवार ता. २ अप्रैल सन् १९५० को होगा, यह पूर्णग्रस्तग्रहण भारत में एक जैसा दीखेगा। यह ग्रहण भारत के अतिरिक्त चीन, जापान, ब्रह्मदेश एशिया, काबुल, ईरान में भी दीखेगा, केतकी पक्षीयगणित की सूक्ष्मता ज्ञानार्थ इस ग्रहण के स्पर्श मोक्षादि, काल को रेलवे टाईम से मिलाई हुई ठीक चलने वाली घड़ी से देखिए। ग्रहलाघवादि स्थूल ग्रन्थों की स्थूलता प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होगी। प्रत्यक्षानुभवं न लुम्पति वच:,

स्टैंडर्ड स्पर्शादिकाल केतकीमते

रात्रौ	स्पर्श	सम्मील.	मध्य	उन्मीलन	मोक्ष	सर्व
रेलवे						
घं.	१२	१	२	२	३	३
मि.	३९	५९	१४	२९	४९	१०

ग्रहणमध्यकालेग्रासस्वरूपम्,
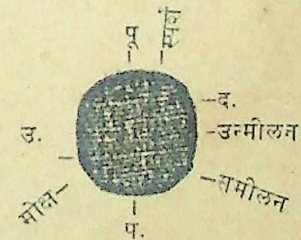
(२) खग्रास सूर्यग्रहणं—-भाद्र पद कृ. ३० भौमवार ता. १२ सितंबर १९५० को होगा। यह ग्रहण चीन और पर्जन्यक महासागर के उत्तरभाग एवं रशिया के पूर्वभाग में दीखेगा। भारत, ब्रह्मा, जावा, सुमात्रादि में नहीं दीखेगा अत: हमारे यहां इसका पर्व भी नहीं माना जावेगा! (३) खग्रासचन्द्र ग्रहण—-भाद्रपद शु. १५ भौमवार २६ सितंबर १९५० को होगा। यह भारत में दिन के कारण दृष्टि-गोचर नहीं होगा। पश्चिमी अफ्रीका, अरब, मिसर, केनिया आदि यवन प्रदेशों में दीखेगा।

राशियों पर ग्रहण का फल—-

यह ग्रहण हस्त नक्षत्र और कन्या तुला, मकर, कुम्भ मीन, वृष, मिथुन और सिंह राशि वाले प्राणी तथा प्रान्तों के लिए अशुभ तथा पीड़ा कारक हैं। और शेष राशियों के लिए शुभ रहेगा। चने, चावल आदि तुष वाले धान्य तथा सुवर्ण के भाव में तेजी करेगा। उज्जैन प्रान्त तथा कावेरी, नरमदा के तट वासियों के लिए पीड़ा होगी। व्यापारी और पण्डित लोगों के लिए भी अशुभफल कारक है। इस ग्रहण का सूतक (वेध) शाम के ३ बजकर ३९ मिंट पर आरम्भ होगा, बाल वृद्ध और रोगियों के बिना सूतक में भोजन करने का निषेध है।

दृश्यग्रहणे कृत्यम्—-ग्रहण के स्पर्श होने पर स्नान करके जपादि करे, मध्य में हवन, मध्य के बाद दान जप और मोक्ष के बाद पुन: स्नान करना चाहिये।

आकाशी कौंसिल का विचार

स्वतन्त्र भारत के जन्म की चलित कुं.

ता. १५ अगस्त
१९४७ इष्ट ४५–२०

विमृश्य ग्रहसद्‌गतिं मुनिवचः
सिद्धान्तयित्वा स्फुटम् ।
शास्त्रं शाकुनकं विचार्य नित-
रामालोच्य सत्संहिताः ॥
राष्ट्रे राजसमाजधर्मविषये
ह्युद्‌भाविनी या स्थितिः ।
सा शम्भोः कृपया यथामति
मया प्रागेव निर्णीयते ॥

स्वतंत्र भारत के चतुर्थ वर्ष प्रवेश की कुं.

ता. १५ अगस्त १९५०
इष्ट ३१।५४

११गु.
९
रा.
१२
१०
८
७ मं.
१
२
सू.४ शु.
६ के.
५
३
बु.श.मुं.चं.

अखिल ब्रह्माण्ड में जगत्पिता की अलौकिक शक्ति का परिज्ञान कराने वाले जो अनन्त कोटी तारे आकाशमण्डल में हम को दीखते हैं। उनमें जिन तारों (ग्रहों) का हमारी पृथ्वी से अत्यन्त घनिष्ट सम्बन्ध है। उन्ही की उच्चनीच स्थानादि स्थिति एवं वक्रमार्गादि, अष्टधा गतिओं के भ्रमणवशात् इस पृथ्वी के राष्ट्रों में सुभिक्ष दुर्भिक्ष कभी युद्धविग्रह वा रोग महामारी भय फूट परस्पर विद्वेष कभी शान्त कभी अशान्त वातावरण आदि अचिन्तित अकल्पित परिवर्तन सदैव हुआ करते हैं यह बात ज्योतिश्शास्त्रज्ञ भली प्रकार जानते हैं ! श्री बृहस्पति महाराजश्री इसतथ्य को स्वीकार करते हुए लिखते हैं,"ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावराः। सृष्टिरक्षण संहाराः सर्वे चापिग्रहानुगाः" ॥ जिसतरह इस भूमण्डल पर लोकतन्त्र राज्य का शासन करने के लिए शासन मण्डल में प्रधान मन्त्री आदि कौंसिल के अधिकारियों की मतप्रदान (चुनाव) के अनन्तर तीन या पांच वर्ष के लिए नियुक्ति होती है, और उन अधिकार प्राप्तव्यक्तियों की योग्यता अयोग्यता सच्चारित्रता दुश्चारित्रता निःस्वार्थता एवं स्वार्थपरायणादि गुणावगुणों के अनुसार जैसे शासन यन्त्र पर अच्छा बुरा असर पड़ताहै उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभुकी इच्छा से निर्मित आकाशीय [illegible] शुमार चक्रस्थ ग्रहोंकी परिषद् में प्रतिवर्ष संसारचक्र को चलाने के लिए एक दिव्य एवं अद्‌भुतशक्तिमति आकाशी कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशी कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट फेर तथा अघटित घटनाएँ घटित होती हैं। वह त्रिकालज्ञ महर्षियों के निर्मित ज्योतिर्विज्ञान के ग्रन्थों के आधार से अच्छी तरह जानी जा सकती है। अबहम इस वर्ष आकाशी कौंसिल का धार्मिक सामाजिक तथा राजकीय स्थिति पर जैसा भी शुभाशुभ प्रभाव पड़ेगा वह अपनी तुच्छ मति के अनुसार और प्रभुकृपावशात् जो स्फुरित हो रहा है, लिख रहे हैं।

इस वर्ष आकाशी कौंसिल (ग्रहपरिषद्) के राजा मन्त्री आदि दशाधिकारियों तथा आर्षविचारपूर्वक भारत एवं अन्य राष्ट्रों के वर्ष वर्षेशादि लग्नों और शकुनशास्त्र व. सूक्ष्म ग्रहयोगों को ध्यान में रखते हुए तथा राष्ट्रनायकों की दशा वर्षप्रवेश आदि अनेक प्रकार

करने वाला है ! इस वर्ष यहां लड़ाई झगड़े तो होते ही रहेंगे साथ ही भारत के पश्चिम भाग तथा यवन प्रदेश में भी भारी विपत्तियें आवेंगी, जिससे उसके बरबाद हो जाने का भय है। सर्वत्र कौमी हुल्लड़बाजी पार्टीबाजी का जोर रहेगा ! जिससे साधारण जनता को भयंकर कष्ट का सामना करना पड़ेगा ! कई निर्जीव सभाएँ भी सजीव होंगी ! असैनिक जाति ब्राह्मणादिक भी परिस्थितिवशात्,कई जगह शस्त्रधारण कर सैनिक महत्व प्राप्त करेंगे! भारत स्वतन्त्र होते हुए भी आर्थिक तथा रक्षात्मक रूप से अभी परतन्त्र ही रहेगा ! स्वतन्त्र भारत की जन्मकुण्डली की ग्रहस्थिति ही ऐसी है ! वर्ष के उत्तरार्ध में कई जगह परस्पर संघर्ष खून खराबी तथा रास्तों की लूट मार भी होगी ! विद्रोह की लहर उठते ही दबाई जावेगी ! पूर्वी पञ्जाब के हृदय पर अभी शनि का अशुभ घृणित प्रभावहै, जो साम्प्रदायिकता से अदूरदर्शियों द्वारा खतरा देता है, परन्तु भौमस्थितिवशात् वह खतरा रुक जावेगा. अदूरदर्शियों को उनकी ही जाति वालों से निंदित व मर्दित होना पड़ेगा ! ग्रहगति देखते हुए महात्माजी के रामराज्य का स्वप्न इस वर्ष भी पूर्ण होते दीखता नहीं ! अभी तो बड़े राष्ट्र कूट राजनैतिक ढंग से आर्थिक राजनैतिक दबाव के साथ स्वार्थ भरे दावपेचों से अपने उपनिवेशों पर हस्ताक्षेप करेंगे! परन्तु बहुधा उनके वह दाव पेच पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर सकेंगे ! वास्तव में बड़े माने जाने वाले राष्ट्रों की अन्तर राष्ट्रियस्थिति बहुत ही नाजुक दौर पर रहेगी ! भारत की वर्ष कुण्डली से स्पष्ट है कि वर्तमान भारत अभी बाहरी और भीतरी खतरा से निश्शंक होने की स्थिति में नहीं है देवस्थानों में महायज्ञ तथा लक्ष चण्डी आदि का आयोजन कर इस खतरे से सहज ही रक्षा पा सकता है ! पर खेद है कि हमारे राष्ट्र के कर्णधार पाश्चात्य शिक्षा से रंगे हुए इस विषय को न समझते हैं, नहीं इन महर्षियों के अनुभूतमार्ग की खोज ही करते हैं यदि प्रभु सन्मति दे उनके हाथों श्रद्धा पूर्वक यह कृत्य हो जाय तो सद्यः फल मिलने में देरी नहीं लगेगी, क्योंकि इस विधि से दैवी शक्ति द्वारा परिस्थितियों में स्वयं सुधार होता दीखेगा ! इसमें किञ्चिन्मात्र भी सन्देह नहीं है, भारत की वर्षकुण्डली में ग्रहस्थिति ही ऐसी है कि राष्ट्रिय एकता के विरुद्ध बोलने वालों को पर्याप्त दण्ड मिलेगा ! और अन्त में उन्हें दबना ही पड़ेगा। भृगुभौमगतिवशात्, इस वर्ष भारतीय वैज्ञानिकों की प्रगति उत्तम स्तर पर रहेगी उनसे नई सूझें कुछ गुप्त रूप से भारत सरकार को मिलेंगी, शासकों के प्रयत्न से यात्रा में सुविधा होते हुए भी कई वेर पूर्ववत् गुरु भौमग्रह पुनः असुविधाएँ उत्पन्न करेंगे। गुरुस्थिति तो शिक्षा स्वास्थ्य तथा उद्योग धन्दों में शनैः शनैः सुधार एवं सुविधाएँ प्राप्त करावेगी ऐसा दीखता है ! इस वर्ष कांग्रेसी कार्यकर्ताओं की नैतिक पतनता व निरंकुशता कम हो जावेगी कांग्रेसविरुद्ध भारी षडयंत्र होंगे परन्तु चुनाव के समय विशेष सफलता कांग्रेस लेजावेगी कुछ स्थान गैरकांग्रेसी भी ले जावेंगे ! कांग्रेस की जन्म व गोचर स्थिति से स्पष्ट है कि भविष्य में अन्य वर्ग समुदाय के सुयोग्य व्यक्ति भी भारतीय शासन में कांग्रेस के साथ मिलेंगे एक प्रकार से संयुक्त सरकार ही बनेगी !

कम्यूनिष्ट---यूरोप और भारत में कम्यूनिष्टों की संहारकारिणी क्रियाओं का सामना बड़ी बुद्धिमत्ता से किया जावेगा और उद्दण्डों को समुचित उत्तर मिलेगा ! तिब्बत, हैनान, द्वीप, और मलाया में कम्युनिष्ट हलचलें होंगी !

रूस---रूस के वर्षलग्न से स्पष्ट है कि वह इस वर्ष यूरोप में सशस्त्र आक्रमण करके अभी सफल न होगा परन्तु आन्तरिक भयप्रद तो यूरोप के अतिरिक्त भारत को भी रहेगा, रूस के प्रधान की जन्मकुण्डली मेरे सामने है इनको यह वर्ष महाकष्ट या मृत्यु देने वाला है, इसकी क्रूर नीति से नवीन कम्यूनिष्ट भड़क कर यूरोप में अशान्ति की आग भड़काते रहेंगे, एक

यूरोप---इस वर्ष यूरोपीय इतिहास में नया अध्याय प्रारम्भ होगा, [illegible]

सहयोगों को ध्यान में रखते हुए तथा राष्ट्रनायकों की ... भड़क कर यूरोप में अशान्ति की आग भड़काते रहेंगे, एक

यूरोप—इस वर्ष यूरोपीय इतिहास में नया अध्याय प्रारम्भ होगी, इंग्लैंड तथा पश्चिमी यूरोप में शनिग्रह की चाल भीषण आर्थिक संकट पैदा करेगी, अन्त में गुरुगतिवशात् उसका हल भी बुद्धिमत्तापूर्ण परस्पर सहयोग से हो जावेगा। यहां विश्वशान्ति की चर्चा तो होती रहेगी परन्तु शनि के प्रभावसे दृढ स्थाई सफलता नहीं मिलेगी !

कांग्रेस कुण्डली

२८—१२—१८८५

समाजवादी कुण्डली
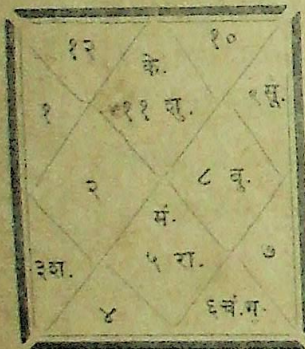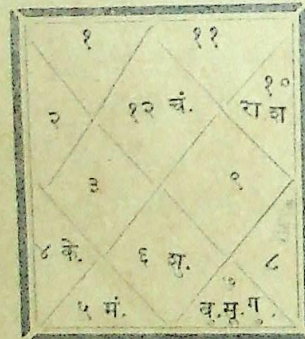
२१—१०—३४ समय ४—४५

भारत सरकार—इस वर्ष नए नए कार्य क्रम सफल बनाने में दौड़ धूप करेगी, मजदूरों और सर्व, साधारण जनताके हितार्थ नए नए सफल पग उठाए जावेंगे। शस्त्रादिकों पर विशेष खर्च करेगी और आत्मनिर्भरता की ओर पग बढावेगी।

कांग्रेस—इस वर्ष कांग्रेस में परस्पर मत भेद और तकरार बहुत होंगे, बड़ी कठिन परीक्षा में से निकलेगी, मध्यभारत,यूपी, और बिहार में जनता कांग्रेस के साथ अच्छा सहयोग करेगी। कांग्रेसी रियास्तों के संघ में मतभेद के कारण कहीं कहीं फूट विद्वेष फैलेगा जिस से वहां की उन्नती में बाधा उपस्थित होगी। आगामी चुनाव में शुद्धान्तः करण वाले शक्ति शाली व्यक्ति जिनके वर्ष व जन्म में भौम गुरु बली होंगे वही स्थान प्राप्त कर सकेंगे अन्य नहीं जिस मंत्री का चतुर्थेश नवमेश उस समय विपरीत होगा उसके विरुद्ध प्रचार स्वयं बढता जावेगा। समाज वादियों की प्रगति के योग है इन का वर्ष के उत्तरार्द्ध में कांग्रेस के साथ मत भेद धीरे धीरे कम हो जायगा।

धार्मिक—धार्मिक जगत में धार्मिक हलचलें और नया जोश दिखाई देगा ज्येष्ठ के बाद आश्विन शुक्ल तक देव पूजन होम यज्ञादि शुभकर्म विशेषतया होंगे कार्तिक बाद राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ की नीति में कोई विशेष परिवर्तन होगा। वैशाख कृष्ण में होने वाले कुम्भ राशिस्थ गुरु शुक्र युद्ध के फल स्वरूप राज्य मदान्ध व्यक्ति जो धार्मिक जनता का कुमार्ग में चलाने के लिये प्रवृत्त है उन कुकर्मियों का अपने पद से मुंह काला होगा।

जापानादि—इस वर्ष जापान में फिर स्वतंत्रता की लहर दृढ होगी इसे अन्तर राष्ट्रिय संघटन में लिया जावेगा, बृहस्कर्म वचनानुसार जापान और न्यूजिलैण्ड में भयंकर अग्निकांड का भय है, यूनान में आर्थिक संकट से भयंकर तबाही मचेगी, ऐसा योग है, फ्रांस देशीय लोग भारत से मित्रता का व्यवहार रक्खेंगे वैसे भारत भी उन से सद्भावना पूर्ण व्यवहार रक्खेगा।

पाकिस्तान—पाकिस्तान के अधिकारियों के सम्मुख विकट समस्याएं पेश आवेगी युद्धविद्रोह अग्निकांड खून खराबीयें अधिक होंगी पाकिस्तानी नेताओं के अथक परिश्रम के होते हुए भी यह शीघ्र सबलराष्ट्र नहीं हो सकेगा। इस वर्ष किसी उत्तर या पूर्वी अराजकतासे घबराकर शिथिल सा हो जावेगा परन्तु भारत के साथ फिर भी कुटिल नीति बर्तेगा।

वर्षा—इस वर्ष वर्षा और गर्मी समय से पहिले होगी पीछे वर्षा की कमी का अनुभव सर्वत्र होगा, द्वितीय आषाढ शुक्ल से श्रावण शुक्लतक वर्षा न होनें या कम होनें से कई प्रान्त कष्ट पावेंगे नदी नालों में भी जल की कमी रहेगी भाद्रपद कृष्ण में कई जगह वर्षा अच्छी होगी, शीतकाल में गुरु भौम की स्थिति वर्षाकारक है। किसी प्रकार खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी।

श्री नेहरू जी की जन्मकुण्डली

१४—११—१८८९

श्री पटेल जी की जन्मकुण्डली
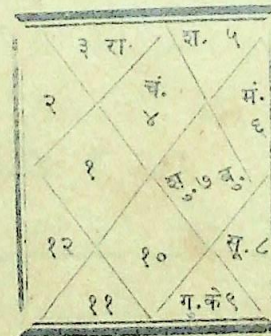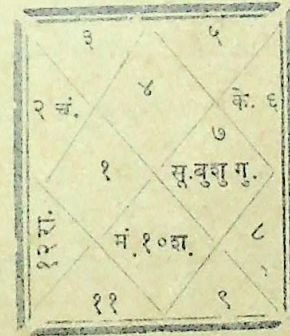
१७—१०—१८७५

श्री नेहरू जी के सम्मुख भारी समस्याएं खड़ी होंगी जिनके कारण विशेष चिन्ता रहते हुए भी प्रबल हिम्मत से उलझनों को सुलझा ही देंगे। इनका सम्मान व नेतृत्व और विस्तृत होगा, वैशाख आश्विन कार्तिक में सावधानी की अवश्यकता है।

श्री पटेल जी को कांग्रेस की भयानक खींचातानी से कष्ट होगा उसे अपने प्रभाव से सुधारने में समर्थ होंगे। स्वास्थ्यके उत्तम न रहते हुए भी देश के उद्धारार्थ सर्वदा कटी बद्ध रहेंगे। ज्येष्ठ सुदि १३ तक आपके द्वारा कांग्रेस को बहुत सफलता मिलेगी इसी तरह सनातन धर्म के स्तम्भ त्यागमूर्ति गो. श्री गणेशदत्त जी महाराज स्वास्थ्य ठीक न रहते हुए भी धार्मिक और राजनैतिक समस्याओं के सुलझाने में दत्तचित्त रहेंगे।

व्यापारिक—इस वर्ष व्यापारिक संस्थाओं के संचालकों को कोई विशेष भय व्यापेगा अब चान्दी सुवर्ण का भाव गत तेजी के रिकार्ड से नीचे धीरे २ मन्दा होना शुरु हो जायगा। बीच में तेजी मन्दी भी अच्छी चलेगी। वैशाख कृ. १२ से ज्ये. शु. ७ तक सोना चान्दी में मंदी का झटका आवे। शेयर बाजार प्रथम आषाढ सुदीतक भारी मंदा रहेगा। अलसी में मार्गशीर्ष तक खासी मंदी आवगी। शण सूत्र के खरीदने वाले पौष कृष्ण के अनन्तर द्विगुण त्रिगुण लाभ में रहेंगे चैत्र शुक्ल १० मी से वैशाख कृष्ण २ तक रुई में खास तेजी होकर बाद में कुछ दिन एकदम मन्दी जावेगी। श्रावण शुक्ल में ३० और फाल्गुन में रुई ५० मन्दी होगी। घी. गुड़,

गेहूं आषाढ़ शुक्ल से एक मास तक खास तेज रहेंगे कातिक कृष्ण २ से एकादशीतक तथा मार्ग शीर्ष शुक्ल १० से पौषकृष्ण ११ तक फाल्गुण शुक्ल में गेहूं आदि अनाज तेज रहेंगे। खड़ी फसलों को अनावृष्टि से हानि पहुंचेगी। मारवाड़ आदि कई प्रदेशों में अन्न संकट विशेष रहेगा। अनाज पर से कंट्रोल नहीं हटेगा ग्रामों की अपेक्षा बड़े नगरों की जनता को खाद्य पदार्थों के लिए कष्टों का सामना करके बाल बच्चों की रक्षा करनी पड़ेगी। घासतृण के संग्रह करने वाले व्यापारी माघ तक उत्तम लाभ में रहेंगे। पशु गौ भेंस जिन के घर हो उन्हें चाहिए कि घास तड़ी संग्रह करलें अन्यथा कष्ट होगा। आश्विन को घृत संग्रह करने से कातिक में अच्छा लाभ होगा माघ से लाल वस्तुयें तेज रहेंगी गत वर्ष की अपेक्षा कई वस्तुओं का मूल्य गिरकर एक दम फिर उच्चस्तर पर हो जावेगा जिससे बहुधा शुभ दशा वाले व्यापारी मालो माल और अशुभ धन नाशिनी दशावाले नष्ट भ्रष्ट हो जावें गे।

दुर्घटना रोगोपद्रव—यह वर्ष पशुओं के लिए पीड़ा व नाशकारक है वर्षारम्भ से ही (पदाजीवसुतो मन्दो जीवाद्वासप्तमेस्थित:। तदा प्रजाविनश्यन्ति भूयश्चात्र परिक्षय:) ग्रहस्थिति अनेक प्राणियों की रोगव. शस्त्रादि से अकालमृत्यु तथा अन्न संकट की सूचक है। वैशाख शुक्ल से किसी नेता को भय कातिक के आसन्न कहीं छत्रभंग होगा। ज्येष्ठ में पूर्वोत्तर के लोग व्याधि पीड़ित रहेंगे। किसी प्रान्तके लोग घर दर भी छोड़ जावेंगे। विश्व में वैमानिक दुर्घटनाएँ बहुत होंगी सवार. व संचालक सावधान। चोरी डाके तथा पश्चिमोत्तर में निर-पराधों पर अत्याचार बहुत होंगे। कई जनपदों के कुछ ग्राम एक मास के लिए अशान्त क्षेत्र मानें जावेंगे। और म्युनिसिपल कमेटियों में अव्यवस्था सी रहेगी। प्रेस और प्रकाशकों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध अंकुशमय अशुभ रहेगा माघ में प्रजा रोग भय से पीड़ित रहे।

युद्ध भय व अशान्ति—लद्दाख में विशेष परिवर्तन के योग हैं। और मलाया में अन्य देशीय जातियों को भय अशान्ति होने के योग है। कानूनों में भी परिवर्तन होंगे कई देशों के निवासी वैशाख वा. कातिक से बाद सुखशान्ति की खोज में फिरें गे। हालैंड जर्मनी के किसी भाग में तथा इटली के किसी जल प्रवाह के समीप विद्रोह व युद्ध का भय होगा, विशेषकर शनिभौम युद्ध का भय अफ्रीका के भूभाग में करते हैं। सिंह कन्या का शनि और कुम्भ के गुरु बड़े भयानक चिन्ताजनक युद्ध की ओर ले जाने वाले है। उद्दण्ड, मजदूर, परदेशी गुप्त शत्रु भारत की शान्ति के विरुद्ध प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में कई कार्य करेंगे, परञ्च गुरु भ्रमण-वशात् भारत के लिए परिणाम शुभ ही रहेगा। भाद्रपद शुक्ल ८ तथा पौष शुक्ल ८ के लग-भग कोई विचित्र फेर फार या कहीं कोई दुर्घटना होगी।

पौष शुक्ल ६ (१३–१–५१) को कन्या में शनि वक्री होगा यह अन्तर राष्ट्रिय जगत में नई अशान्ति उत्पन्न करने वाला लिखा है (नृप युद्ध भयं लोके दुर्भिक्षं तत्र जायते) भारत के शासकों को भी सावधान रहना चाहिये।

महोदयो। ज्योतिःशास्त्रदृष्ट्या ग्रहगत्यनुकूल और श्रीप्रभुकृपावशात् जो मुझे विश्व का शुभाशुभ फल दीख पड़ा वह अपनी अल्प मति के अनुसार लिख दिया है। आगे, कर्तु-मकर्तु मन्यथा कर्तुं समर्थ श्रीप्रभु ही है। उन की प्रबल माया के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ व्यक्ति क्या भविष्य कह सकते हैं, दैवे न विहित कर्म को विजानाति मानव:"।

शुभेच्छु:—बघाट नरेशाश्रितो मुकुन्दवल्लभ:—

संवत् २००७ शक: १८७२ चैत्रशुक्लपक्ष: १ (... अप्रैल १९५० ई०) उत्तरायण दक्षिणगोल:

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. ग्रीष्म	अ. अंग्रेजी	मु. जुमा	चन्द्र सञ्चार:	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्ट उदय काले				ग्रहदर्शन—मं. श. पूर्वरात्रि में पूर्वक्षितिज के ऊपर दीखेंगे । बुध अस्त है । गुरु शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्वक्षितिज + में देखें । वसन्तर्तु:
२९	५५	१	र.	३७	१२	उ.भ	३३	२८	शु.	२४	३९	कि.	५	२१	६	१९	२९	मीने	६	३५	६	३१	११	४	४७	५०	व. उ. फा. यां भौम: ४९।४३ चान्द्र संवत्सरारम्भ: नवरा. घटस्था. ✕
३०	०	२	चं.	४१	४६	रे.	३१	१९	ब्र.	२५	२७	बा.	९	२९	७	२०	३०	मे.३९।१९	६	३३	६	३२	११	५	४७	२८	चन्द्र दर्शनम् श. मेषे भानु: २४।४६। ✕ वर्ष फ.का. निम्ब पत्र भक्षणम्
३०	४	३	मं.	४६	५६	अ.	४५	४४	ऐं.	२६	४२	तै.	१४	२१	८	२१	१	मेषे	६	३१	६	३२	११	६	४७	३	मीने बुध: ४।५१ जमादि उलाखर मु. ६ गणगौरी ३ पु.
३०	९	४	बु.	५२	१६	भ.	५२	२०	वै.	२८	१५	व.	१९	३६	९	२२	२	मेषे	६	३०	६	३३	११	७	४६	३५	भ. १९।३६ उ. ५२।१६या. उ. भा. बुध: ४९।५४ धनि. शुक्र: ५।१२.
३०	१४	५	गु.	५७	१७	कृ.	५८	४०	वि.	२९	४०	ब.	२४	४६	१०	२३	३	वृ.८।५५	६	३०	६	३४	११	८	४६	५	
३०	१८	६	शु.	६०	०	रो.	६०	०	प्री.	३०	४१	कौ.	२९	२८	११	२४	४	वृषे	६	२९	६	३५	११	९	४५	३३	मेला माई सर खाना
३०	२३	६	श.	१	३९	रो.	४	१९	आ.	३१	६	तै.	१	३९	१२	२५	५	मि३६।४१	६	२७	६	३५	११	१०	४५	०	
३०	२८	७	र.	५	४	मृ.	९	४	सौ.	३०	३९	व.	५	४	१३	२६	६	मिथुने	६	२५	६	३७	११	११	४४	२६	भ. ५।४। उ. ३६।१३ या.
३०	३२	८	चं.	७	२२	आ.	१२	४३	शो.	२९	२१	ब.	७	२२	१४	२७	७	क.५९।२६	६	२३	६	३७	११	१२	४३	४७	श्री दुर्गा अष्टमी मेला श्री मनसा देवी
३०	३७	९	मं.	८	२१	पुन.	१५	७	अ.	२७	०	कौ.	८	२१	१५	२८	८	कर्के	६	२२	६	३८	११	१३	४३	९	धनिष्ठा ४ गुरु: १२।८ श्री राम नवमी व्रतम्
३०	४२	१०	बु.	८	०	पु.	१६	११	सु.	२३	४०	ग.	८	०	१६	२९	९	कर्के	६	२१	६	३९	११	१४	४२	२१	भ. ३७।१३ उ. रेवत्यां, बुध: ३२।१३
३०	४६	११	गु.	६	२७	श्ले.	१६	५	धृ.	१९	२०	वि.	६	२७	१७	३०	१०	सि. १६।५	६	२०	६	४०	११	१५	४१	३५	भ. ६।२७या. रेव. रवि: ५९।१५ कुम्भे शुक्र: ६।३२ कामदा ११ व्रतम्
३०	५०	१२	शु.	३	४५	म.	१४	५२	शू.	१४	८	बा.	३	४५	१८	३१	११	सिंहे	६	१८	६	४०	११	१६	४०	४६	प्रदोष व्रतम् गुड फ्राइडे
३०	५४	१३	श.	०	२	पू.फा	१२	५०	गं.	८	११	तै.	०	२	१९	१	१२	कं.२७।६	६	१७	६	४१	११	१७	३९	५६	भ. ५५।३० उ. अप्रैल ४ ता० ३०
अवम्		१४	श.	५५	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	÷ इष्टर संडे
३०	५८	१५	र.	५०	१८	उ.फा	९	५४	वृ.	[illegible]	[illegible]	वि.	२२	५४	२०	२	१३	कन्यायाम्	६	१६	६	४१	११	१८	३९	४	भ. २२।५४ या. सत्य व्रतम् वैशाख स्नानारम्भ: खग्रास चन्द्रग्र० ÷

चैत्र शुक्ल ८ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगण: ५४७०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
११	५	११	१०	९	४	११	५
१२	७	११	३	२७	२१	१४	१४
४३	३२	३१	४	१९	३०	२६	२६
४७	४६	८	५२	५९	५०	५३	५३
५९	२०	४४	१२	५०	४	३	३
२१	१६	४५	४७	५७	२०	११	११
मार्गी	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ३	उ.फा. ४	उ.भा. ३	ध. ३	ध. २	पू.फा. ३	उ.भा. ४	ह. २

१ — ११ बृ.
सू. बु. १२ रा.
२ — १० शु.
३ चं. — ९
४ — ६ के. मं. — ८
५ श. — ७

इस पक्ष में कहीं कोई उत्पात या क्रान्ति होवे, चांदी, गेहूँ मन्दा, बिनौला और अफीम तेज, दशमी से यही वस्तु प्राय: मन्दी होती दीखें, कई अष्टमी तक कुछ तेज रह कर बाद मंदी गिरेगी, मीन में राहु सूर्य का संबंध भी रुई में ४० टका मन्दी करता है ।

ति. ५।७।१३।१५ को कहीं कहीं बादल चाल रहेगी प्राय: इस पक्ष में वायु का जोर रहेगा ।

शकुनविचार—यदि द्वितीया को चन्द्र श्याम रंग बादलों से ढका हुआ हो और अस्त समय फिर दृष्टिगोचर हो जाये तो घृतादि वस्तु की कीमत बढ़े । चैत्र शुदि जो पंचमी दक्षिण पूर्व वाय, वर्षा भी होवे कछु भादों तेज बिकाय । चैत्र शुदि जो त्रयोदशी धूल उड़े दरम्यान, आगे वर्षा हो नहीं ऐसा लो तुम जाना ।

चैत्र शुक्ल १५ स्वाविष्टम् ०।० दिनगण: ५४७६

१ — शु. ११ बृ.
सू. १२ रा. बु.
२ — १०
३ — ९
मं. चं. ६ के.
४ — ८
५ श. — ७
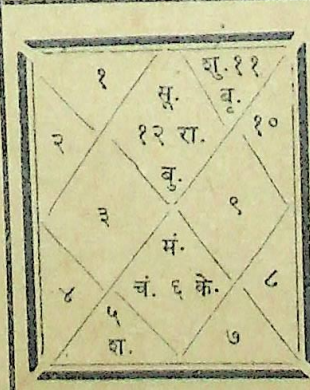
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
११	५	११	१०	१०	४	११	५
१८	५	२३	४	२	२१	१४	१४
३९	२८	४९	१९	३५	५	७	७
४	१९	२३	१६	२८	४९	५०	५०
५९	१९	४४	१२	५४	४	३	३
८	४५	४५	१५	२९	१	११	११
मार्गी	व.	मा.	मा.	मा	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रे. १	उ.फा. ३	रे. ३	ध. ४	ध. ३	पू.फा. ३	उ.भा. ४	ह. २

चैत्र मास में दूध, दही मिष्ठान्न स्वयं न खाकर ब्राह्मण दम्पति की पूजा कर बारीक वस्त्र और मिठाई उनको देवे; यह गौरीव्रत कल्याणकारक है ॥ यदि कोई रामनवमी का व्रत न रखकर अन्य व्रत रखता है तो उसे उनका भी फल नहीं मिलता क्योंकि यह व्रत सर्वश्रेष्ठ है ।

दि.मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि. (वैशाख)	अं. (अप्रैल)	म.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	नित्यसूर्य स्पष्ट उदयकाले
३१ ३	१	चं.	४४ ३५	ह.	६ २३	व्या.	४६ ५६	बा.	१७ २६	२१	३	१४	तु. ३४।२८	६ १५	६ ४१	११ १९ ३८ १०
३१ ७	२	मं.	३८ ३६	चि.	२/५८ ३४/२०	ह.	३९ १२	तै.	११ ३५	२२	४	१५	तुलायाम्	६ १४	६ ४२	११ २० ३७ १४
३१ १२	३	बु.	३२ ३४	वि.	५४ २०	व.	३१ २८	व.	५ ३५	२३	५	१६	वृ.४०।२२	६ १३	६ ४३	११ २१ ३६ १७
३१ १६	४	गु.	२६ ३८	[illegible]	५० २३	सि.	२३ ५२	बा.	२६ ३८	२४	६	१७	वृश्चिके	६ १२	६ ४३	११ २२ ३५ १८
३१ २०	५	शु.	२१ २	[illegible]	४६ ५३	व्य.	१६ ३१	तै.	२१ २	२५	७	१८	ध.४६।५३	६ १०	६ ४३	११ २३ ३४ १३
३१ २४	६	श.	१५ ५७	मू.	४३ ५९	व.	९ ३३	व.	१५ ५७	२६	८	१९	धनुषि	६ ९	६ ४४	११ २४ ३३ ८
३१ २८	७	र.	११ ३८	पू.	४१ ५८	प.	३/१७ १/२९	ब.	११ ३८	२७	९	२०	म.५६।४०	६ ८	६ ४४	११ २५ ३२ ०
३१ ३२	८	चं.	८ ८	उ.	४० ४७	सि.	५२ ३७	कौ.	८ ८	२८	१०	२१	मकरे	६ ६	६ ४४	११ २६ ३० ५०
३१ ३६	९	मं.	५ ४१	श्र.	४० ४२	सा.	४८ ३९	ग.	५ ४१	२९	११	२२	मकरे	६ ५	६ ४५	११ २७ २९ ३७
३१ ४१	१०	बु.	४ ३०	ध.	४१ ५४	शु.	४५ ३४	वि.	४ ३०	३०	१२	२३	कुं.११।१८	६ ४	६ ४६	११ २८ २८ २२
३१ ४५	११	गु.	४ २८	श.	४४ २०	शु.	४३ ३६	बा.	४ २८	१	१३	२४	कुम्भे	६ ३	६ ४७	११ २९ २७ ५
३१ ५०	१२	शु.	५ ४६	पूभा.	४८ १	ब्र.	४२ ४०	तै.	५ ४६	२	१४	२५	मी.३२।६	६ १	६ ४७	० ० २५ ४७
३१ ५५	१३	श.	८ १५	उभा.	५२ ४७	ऐं.	४२ ३५	व.	८ १५	३	१५	२६	मीने	६ १	६ ४८	० १ २४ २७
३२ ०	१४	र.	११ ५३	रे.	५८ ३०	वै.	४३ १९	श.	११ ५३	४	१६	२७	मे.५८।३०	६ ०	६ ४९	० २ २३ ५
३२ ४	३०	चं.	१६ २४	अ.	६० ०	वि.	४४ ३२	ना.	१६ २४	५	१७	२८	मेषे	५ ५९	६ ५०	० ३ २१ ४०

ग्रहदर्शन—मं. श. पूर्वरात्रि में पूर्वक्षितिज के ऊपर दिखाई देंगे। ति. ७ से पश्चिम में बुध का उदय होगा।*

*गुरु शुक्र सूर्योदय से पहले पूर्व में देखें।

अश्विमेषे च बुधः ५८।३३

भ. ५।३५ उ. ३२।३४ या.

शते शुक्रः २४।२६

भ. १५।५७ उ. ४३।४७ या.

पश्चिमोदयो बुधः २१।१

× वैशाखी अमृतसर व रोपड़ मेला कुम्भ महापर्व हरिद्वार ÷

भ. ३५।५ उ. भर. बुधः ४५।१३

भ.४।३० या.

अश्वि. सं. मेषेऽर्कः ३३।३९ मु. १५ पुण्यं घ. १८।३९ उ. मेला ×

शते १ गुरुः ४।७ प्रदोष व्रतम्

भ. ८।१५ उ. ४०।१४ या. ÷ वरूथिनी ११ व्र.स.

उ.भा, ३ राहुः हस्ते १ केतुः ३।२७ मेला पञ्चपुर (पञ्चौर) सोमवती ३०

वैशाख कृष्ण ८ चन्द्र इष्टम ०।० दिनगण: ५४८४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	०	१०	१०	४	११	१५
२६	२	१०	५	१०	२०	१३	१३
३०	५६	३	५३	६	३६	४२	४२
५०	१६	४७	५६	७	४०	२५	२५
५८	१८	[illegible]	११	५८	३	३	३
५०	८	५९	३४	५	२८	११	११
मार्ग	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रे.	उ.फा.	[illegible]	ध.	श.	पू.फा.	उ.भा.	ह.
३	२	४	४	२	३	४	२

१ बु. | वृ. ११ | सू. १२ रा. | शु | १० चं. | २ | ३ | ९ | ४ | ६ के. मं. | ८ | ५ श. | ७

इस पक्ष में रुई खांड, तिल, तेल के भाव में मंदी हो, सुवर्ण, मोती आदि जवाहरात तथा चौपाये पशु तेज रहें, चांदी में एक मंदी का झटका आवेगा। गेहूँ आदि अनाज में तेजी रहेगी।

ति. १ से ७ तक और १० से १२ तक पूर्वोत्तर में कहीं कहीं बादल देखने में आवेंगे तथा वायु जोर की चले वृक्ष टूटें।

वैशाख बदी आठें दिना बिजली गर्जन होय।
संवत् अच्छा जानिये संशय करो न कोय॥
वैशाख बदी एकादशी प्रबल मेघ जो जान।
धान्य बीज खेती करो अच्छा संवत् मान॥

वैशाख मास में प्याऊ (छबील) लगानी चाहिये और भगवत्प्रीत्यर्थ अभिषेकपात्र शिवजी पर देना तथा जूता, पंखा, छतरी, बारीक कपड़े, चन्दन, जलपात्र, (घड़ा, झज्झर, इत्यादि) फलों के हार, सुन्दर सुन्दर नये नये केले तथा दाख आदि फल देने चाहिये। चैत्र शुक्ल १५ अथवा मेष संक्रान्ति

वैशाखकृष्ण ३० चन्द्र इष्टम ०।० दिनगण: ५४९१

२ | १२ रा. | १ | ३ | सू. चं. बु. | बृ. ११ शु | १० | ४ | ९ | ७ | श. ५ | के. मं. ६ | ८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
०	५	०	१०	१०	४	११	५
३	१	२१	७	१७	२०	१३	१३
२१	७	५८	१२	२	१४	२०	२०
४०	४८	१९	११	४९	३८	११	११
५८	१३	३०	१०	६१	२	३	३
३५	३४	१८	५२	१२	५३	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि.	उ.फा.	भ.	श.	श.	पू.फा.	उ.भा.	ह.
२	२	३	१	४	३	४	२

संवत् २००७ शकः १८७२ वैशाखशुक्ल पक्षः ३ (अप्रैल-मई १९५० ई०) उत्तरायणगोलौ वसन्ततु:

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. वैशाख	अं. अप्रैल	म. मई	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदयकाले			
३२	९	१	मं.	२१	२८	अ.	४	४९	प्र	४६	६	ब.	२१	२८	६	१८	३०	मेषे	५	५७	६	५०	०	४	२०	१२
३२	१४	२	बु.	२६	४४	भ.	११	२६	आ	४७	४१	कौ	२६	४४	७	१९	१	वृ. २८।२	५	५६	६	५१	०	५	१८	४३
३२	१९	३	गु.	३१	४०	कृ.	१७	५१	सौ	४८	५२	ग.	३१	४०	८	२०	२	वृषे	५	५५	६	५२	०	६	१७	१२
३२	२३	४	शु.	३५	५७	रो.	२३	४०	शो	४९	३४	ब.	३	४८	९	२१	३	मि५६।१०	५	५४	६	५३	०	७	१५	३८
३२	२७	५	श.	३९	१५	मृ.	२८	४०	अ.	४९	२५	ब.	७	३६	१०	२२	४	मिथुने	५	५३	६	५३	०	८	१४	१
३२	३१	६	र.	४१	२९	आ.	३२	३२	सु.	४८	२६	कौ.	१०	२२	११	२३	५	मिथुने	५	५२	६	५४	०	९	१२	२३
३२	३५	७	चं.	४२	२३	पुन.	३५	१२	धृ.	४६	२६	ग.	११	५६	१२	२४	६	क. १९।३२	५	५१	६	५४	०	१०	१०	४३
३२	३९	८	मं.	४१	५७	पु.	३६	३५	शू.	४३	२२	वि.	१२	१०	१३	२५	७	कर्के	५	५०	६	५५	०	११	९	०
३२	४२	९	बु.	४०	१९	श्ले.	३६	४५	गं.	३९	२०	बा.	११	८	१४	२६	८	सि३६।४५	५	४९	६	५६	०	१२	७	१४
३२	४६	१०	गु.	३७	३२	म.	३५	४५	वृ.	३४	२७	तै.	८	५५	१५	२७	९	सिंहे	५	४८	६	५६	०	१३	५	२६
३२	५०	११	शु.	३३	४२	पू. फा	३३	५३	ध्रु.	२८	४४	व.	५	३७	१६	२८	१०	क. ४८।१२	५	४७	६	५६	०	१४	३	३५
३२	५३	१२	श.	२९	४	उ फा	३१	७	व्या.	२२	२१	ब.	१	२३	१७	२९	११	कन्यायाम्	५	४६	६	५७	०	१५	१	४३
३२	५७	१३	र.	२३	४५	ह.	२७	४२	ह.	१५	२२	तै.	२३	४५	१८	३०	१२	तु. ५५।४६	५	४५	६	५८	०	१५	५९	५०
३३	१	१४	चं.	१७	५८	चि.	२३	५१	व.	८	१	व.	१७	५८	१९	१	१३	तुलायाम्	५	४५	६	५८	०	१६	५७	५६
३३	४	१५	मं.	११	५५	स्वा.	१९	४६	सि.	०/५२	२६/४३	ब.	११	५५	२०	२	१४	तुलायाम्	५	४४	६	५९	०	१७	५६	०

ग्रहदर्शन—मं. श. पूर्वरात्रिमें समध्या सा. वृषाकदिग्रीष्मर्तुः सन्निदिखाई देवें। बुध पश्चिम क्षितिज ×

चन्द्रदर्शनम्

पू.भा. शुक्रः ५२।३८ या. वृषे भानुः ५४।३९ रज्जब मु. ७ अमस्त्यस्तः +

कृत्तिका बुधः ३२।५९ अक्षय्य ३ कल्पादिः रो. ।।। ।।ऽचौ. ।।।।लः ८

भ. ३।४८ उ. ३५।५७ या भक्तराज सूरदास जयन्ती मृ ।।।।।।ऽऽ।।ल.८

व. पू.फा. यां. २ शनिः ४०।०

वृषे बुधः ४४।४५ वक्रगत्या सिंहे भौमः ६।४७

भ. ४२।२३ उ. श्री गंगा जन्म ७ (गंगा स्नाने पूजने च महत्फलम्)

भ. १२।१० या. ( ) याम व्यापिनी ग्राह्या

× के ऊपर। गुरुशुक्रसूर्योदय से पहिले पूर्वक्षितिज में देखें।

भरण्यां रविः १५।२ × जी का जन्मदिवस है।

भ. ५।३७ उ. ३३।४२ या. मोहिनी ११ व्रत सर्वेषाम्

मीने शुक्रः २६–२९ प्रदोष व्रतम्

नृसिंह १४ व्र. (प्रदोष व्यापिनी मानी जाती है)

भ. १७।५८ उ. ४४।५७ या० मई ५ ता० ३१

उ.भा.शुक्रः३२।५१कूर्मजःयमाय सान्न जलकुम्भदानम् वैशाखस्ना.स.

+ ४०।५७ श्रीपरशुरामजयन्ती इयं ७ रात्रि प्रथम ( )

वैशाख शुक्ल ८ भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ५४९९

सु.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
०	४	१	१०	१०	४	११	५
११	२९	१	८	२५	१९	१२	१२
९	४४	६	३५	१८	५४	५४	५४
०	३८	१८	३८	१४	५०	४५	४५
५८	७	५१	१०	६२	२	३	३
१७	२३	२२	१	५८	१०	११	११
	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति	[illegible]	कृ.	श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ह
४	१	२	१	२	२	३	१

बु.२ | १२ रा. | शु. ११ | सू. १ | ३ | चं. ४ | १० | वृ. | ५ मं. श. | ७ | ९ | ६ के. | ८

इस पक्ष में सोना, चांदी लोहा मंदा श्वेत कपड़ा रुई आदि अन्य सफेद वस्तु ते , अमरीका, बंबई में भी रुई तेज होगी, प्रजा में रक्त विकार से कष्ट बच्चों को भी पीड़ा अग्नि से बहुत जगह हानि होगी।

ति. ९ से १५ तक कहीं बूंदाबांदी या बादल देखने में आवें।

श० वि०—वैशाख सुदी साते दिना बाजे पूर्व बाय। बादल हो बिजली दिखें और बूंद पड़ जाय। धान्य इकट्ठे तुम करो सुनलो ध्यान लगाय। भादों मास में लाभ हो इसमें संशय नाय। शुक्लपक्ष वैशाख की तिथि दशमी दिन देख, बादल हो श्रावण विषै जल नहिं पड़े विशेष। वैशाख शुदी नवमी दिना बादल हो भरपूर। चातुर्मास वर्षा नहिं घटे प्रजा को नूर।

वैशाख शुक्ल ३ को यदि गंगा स्नान देवदर्शन किया जाय तो अक्षय फल देता है। इस पक्ष में सभी रस सुवर्ण, अन्न के साथ पानी के घड़े, जौ गेहूं चणे के सत्तू, दही, चावल, पंखा छत्री और जूता पितृ तथा देवताओं के निमित्त ब्राह्मणोंको दान दें। दान का संकल्प—"नामगोत्रमुच्चार्य—अद्यैतदन्नं शीतलोदकयुतं घटं विष्णुप्रीतये अमुकगोत्रायामुकशर्मणे विप्राय तुभ्यमहं संप्रददे" इसी तृतीया को भगवान् परशुराम×
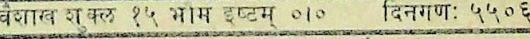
वैशाख शुक्ल १५ भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ५५०६

२ बु. | शु.१२ रा. | ३ | सू. १ | वृ. ११ | ४ | १० | मं. श.५ | चं. ७ | ९ | ६ के. | ८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
०	४	१	१०	११	४	११	५
१७	२९	४	९	२	१९	१२	१२
५६	१२	२२	४३	४४	४२	३२	३२
०	११	४४	१६	४९	५८	३१	३१
५८	२	१०	९	६४	१	३	३
४	४२	५१	२९	५५	३०	११	११
	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भ.	[illegible]	कृ.	श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
२	१	३	१	४	२	३	१

संवत् २००७ शकः १८७२ ज्येष्ठकृष्णपक्षः ४

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. सौर	अं. मई	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे घ.	प.	सू. अ. रेल्वे घ.	प.	नित्य सूर्य स्पष्टः उदयकाले रा.	अं.	क.	वि.
३३	८	१	बु.	५	४८	वि.	१५	३६	व.	४५	६	कौ.	५	४८	२१	३	१५	वृ. १।३९	५	४३	७	०	०	१८	५४	२
अवम्		२	बु.	५४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३३	१२	३	गु.	५४	६	अनु.	११	३६	प.	३७	४१	व.	२६	५७	२२	४	१६	वृश्चिके	५	४२	७	०	०	१९	५२	१
३३	१५	४	शु.	४८	५८	ज्ये.	८	०	शि.	३०	३९	ब.	२१	३२	२३	५	१७	ध. ८।०	५	४२	७	१	०	२०	४९	५७
३३	१९	५	श.	४४	३२	मू.	४	५७	सि.	२४	११	कौ.	१६	४५	२४	६	१८	धनुषि	५	४१	७	२	०	२१	४७	५१
३३	२३	६	र.	४०	५८	पू.षा.	२	४५	सा.	१८	२१	ग.	१२	४५	२५	७	१९	म. १७।२३	५	४०	७	२	०	२२	४५	४४
३३	२७	७	चं.	३८	२४	उ.षा	१	१९	शु.	१३	१८	वि.	९	४१	२६	८	२०	मकरे	५	३९	७	३	०	२३	४३	३६
३३	३०	८	मं.	३७	४	श्र.	१	०	शु.	९	११	बा.	७	४४	२७	९	२१	कु. ३१।२७	५	३८	७	३	०	२४	४१	२७
३३	३४	९	बु.	३६	५७	ध.	१	५४	ब्र.	६	४	तै.	७	०	२८	१०	२२	कुम्भे	५	३७	७	४	०	२५	३९	१६
३३	३८	१०	गु.	३८	१०	श.	४	२	ऐ.	३	५७	व.	७	३३	२९	११	२३	मी ५१।३६	५	३६	७	५	०	२६	३७	३
३३	४१	११	शु.	४०	३२	पू.भा	७	२८	वै.	२	५२	ब.	९	२१	३०	१२	२४	मीने	५	३६	७	५	०	२७	३४	४८
३३	४५	१२	श.	४४	३	उ.भा	१२	०	वि.	२	३८	कौ.	१२	१७	३१	१३	२५	मीने	५	३५	७	६	०	२८	३२	३२
३३	४९	१३	र.	४८	२८	रे.	१७	३२	प्री.	३	१८	ग.	१६	१५	१	१४	२६	मे. १७।३२	५	३४	७	७	०	२९	३०	१३
३३	५२	१४	चं.	५३	२७	अ.	२३	४५	आ.	४	३०	वि.	२०	५७	२	१५	२७	मेषे	५	३४	७	८	१	०	२७	५३
३३	५६	३०	मं.	५८	३६	भ.	३०	१९	सौ.	६	५	च.	२६	१	३	१६	२८	बृ ४६।५६	५	३३	७	८	१	१	२५	३१

(मई १९५० ई०) उत्तरायणगोलो ग्रीष्मर्तुः

ग्रहदर्शन---ति० ४ से पश्चिम में बुध का अस्त, मंगल शनि पूर्व रात्रि में ख मध्य के समीप में । गुरु शुक्र सूर्योदय से पहले पूर्व ()

वक्री बुधः ५०।२६ शते २ गुरुः ५२।२७

() क्षितिज में देखना ।

भ. २६।५७ उ. ५४।६ या. मार्गीभौमः २१।३६

पश्चिमास्तो बुधः २९।६ मू.।।।।।।ऽ।।ल. गोधूलि

भ. ४०।५८ उ उ. षा. ऽ चं. ऽ।।।।।।ऽ ल. अन्यगो.दग्ध

भ. ९।४१ या.

✕ महासती । ब्रह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम्।।"—

— इस मन्त्र से मूर्त्ति ब्राह्मण को देवें ।

भ. ७।३३ उ. ३८।१० या. कृति. रवि.३।४

अपरा ११ व्र. भद्र काली

÷ रेव. शुक्रः ४४।७ प्रदोष व्र.

भ. ४८।२८ उ. सं. वृषेऽर्कः ३०।५९ मु. ३० पुण्यं १४।५९ उ. ÷

भ. २०।५७ या. वक्री मेषे बुधः ५।१ मार्गी शनिः ३०।०

कन्या भौमः २४।३ बट सावित्री ३० व्रतम्

ज्येष्ठकृष्ण ८ भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ५५१३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	४	१	१०	११	४	११	५
२४	२९	३	१०	१०	१९	१२	१२
४१	१८	११	४४	२०	३५	१०	१०
२७	१४	४९	३५	३८	३५	१६	१६
५७	२	२३	८	६६	०	३	३
५१	५०	२८	३१	३	४३	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भ.	उ.फा.	कृ.	श.	उ.भा.	पू.फा.	उ.भा.	ह.
४	१	२	२	३	२	३	१

२ बु. | शु.श. १२ | सू. १ | ११ बृ. | ३ | ४ | १० | चं. | श. ५ मं. | ७ | ९ | ६ के. | ८

इस पक्ष में रूई में १५।२० टका की तेजी होकर मंदी हो, चांदी में घटा वढ़ी होकर ३।४ [illegible] तेज हो, शेयर तेज हों ५ रुपये प्रतिपदा से २४ दिन के अंदर घी, गुड़, खांड़, शक्कर, बिनौला, मूंगफली, कपूर, तिल, तेल आदि तेज हों। गेहूँ, जौ, चना आदि अनाज में मंदी हो, कुछ दिन गरमी अधिक होकर बीच में कुछ दिन कम होगी। ति. १ से ५ तक और ८ से १० तक कहीं बूंदा बांदी भी हो, बादल व वायु चले ।

शकुनविचार---ज्येष्ठ बदी जो पंचमी बाजे दक्षिण वाय । घृत, तैल, तिल, लाभ दे आसो जावे साय । ज्येष्ठ बदी मावस दिना मेघ घटा हो जाय । अनावृष्टि दुर्भिक्ष हो ऐसा योग बताय ॥

इस अमावस्या को वैधव्य नाश करने वाला "बट सावित्री" व्रत होता है। ज्ये० कृष्ण ३० को सर्ति की [illegible] (असमर्थ हों तो मिट्टी की) मूर्ति बनाकर फल, पुष्प, व धूप दीप नैवेद्य हल्दी, कंठसूत्र और कुंकुम केसर आदि उप-

ज्येष्ठकृष्ण ३० भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ५५२०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	०	१०	११	४	११	५
१	२९	२९	११	१८	१९	११	११
२५	५६	२७	३८	४	३३	४८	४८
३१	३८	५०	४२	२३	११	१	१
५७	७	३५	७	६६	०	३	३
३८	४०	६	१६	४०	०	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृ.	उ.फा.	कृ.	श.	रे.	पू.फा.	उ.भा.	ह.
२	१	१	२	१	२	३	१

३ | चं.बु. १ | सू. २ | रा. | शु. | ४ | ५ | ११ बृ. | श. मं. | ६ के. | ८ | १० | ७ | ९

परिक्रमा [illegible] बट के नीचे ३ [illegible] सत्यवान के साथ [illegible]

[illegible] शु. सूर्यास्त के बाद ख मध्य में दीखेंगे। बुध पूर्व में

... दीप नैवेद्य हल्दी, कंठसूत्र और कुंकुम केसर आदि उप-

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	ब्रि.	बं.	मासा	लग्नद्वारः	रेल्वे		रेल्वे		उदय काले			
३४	०	१	बु.	६०	०	कृ.	३६	४१	शो.	७	४६	कि.	३१	१	४	१७	२९	वृषे	५	३२	७	९	१	२	२३	६
३४	३	१	गु.	३	२६	रो.	४२	४८	अ.	९	८	ब.	३	२६	५	१८	३०	वृष	५	३१	७	१०	१	३	२०	४०
३४	७	२	शु.	७	४०	मृ.	४८	०	सु.	१०	०	कौ.	७	४०	६	१९	१	मि१५।२४	५	३१	७	१०	१	४	१८	१२
३४	११	३	श.	१०	५४	आ.	५२	५	धृ.	१०	९	ग.	१०	५४	७	२०	२	मिथुने	५	३०	७	११	१	५	१५	४३
३४	१४	४	र.	१३	४	पुन.	५५	२	शू.	९	२४	वि.	१३	४	८	२१	३	क.३१।१८	५	३०	७	१२	१	६	१३	१२
३४	१७	५	चं.	१३	५५	पु.	५६	४२	गं.	७	३९	बा.	१३	५५	९	२२	४	कर्के	५	२९	७	१३	१	७	१०	३९
३४	१९	६	मं.	१३	२६	श्ले.	५७	८	वृ.	४	५२	तै.	१३	२६	१०	२३	५	सिं. ५७।८	५	२९	७	१३	१	८	८	५
३४	२१	७	बु.	११	४४	म.	५६	२४	ध्रु.	[illegible]	[illegible]	व.	११	४४	११	२४	६	सिंहे	५	२९	७	१४	१	९	५	२९
३४	२३	८	गु.	८	५५	पू.फा.	५४	४०	ह.	५०	५५	ब.	८	५५	१२	२५	७	सिंहे	५	२९	७	१५	१	१०	२	५२
३४	२४	९	शु.	५	४	उ.फा.	५२	४	व.	४४	४२	कौ.	५	४	१३	२६	८	क. ९।१	५	२८	७	१५	१	११	०	१३
३४	२५	१०	श.	०	२५	ह.	४८	४८	सि.	३७	५६	ग.	०	२५	१४	२७	९	कन्यायाम्	५	२८	७	१६	१	११	५७	३३
अवम्		११	श.	५४	३९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	२७	१२	र.	४९	१३	चि.	४५	१	व्य.	३०	४१	ब.	२२	८	१५	२८	१०	तु.१६।५५	५	२८	७	१६	१	१२	५४	५२
३४	२९	१३	चं.	४३	७	स्वा.	४०	५८	व.	२३	१०	कौ.	१६	१०	१६	२९	११	तुलायाम्	५	२८	७	१६	१	१३	५२	१०
३४	३१	१४	मं.	३६	५६	वि.	३६	४६	प.	१५	३०	ग.	१०	१	१७	३०	१२	वृ.२२।४९	५	२८	७	१६	१	१४	४९	२७
३४	३२	१५	बु.	३०	५१	अनु.	३२	४५	शि.	७	५६	वि.	३	५३	१८	३१	१३	वृश्चिके	५	२८	७	१७	१	१५	४६	४३

ग्रहदर्शन—मं. श. सूर्यास्त के बाद ख मध्य में दीखेंगे। बुध पूर्व में उदय ति.७से होगा। गुरु अर्द्धरात्रि बाद शुक्र सूर्योदय से पहले पूर्व में

चन्द्र दर्शनम् रो. ||||||||ल. अन्य गो.

सावान मु. ८ रम्भा ३ व्र.

भ. ४१।५९ उ. सा. मिथुने भानुः ५८।३९

भ. १३।४ या. व. भर. बुधः ४२।५

पूर्वोदयो बुधः ५०।३३

भ.११।४४ उ. ४०।२० या. रोहि. रविः ५७।० म. ||||||ऽ||ल. ९

घ. ४०।२० उप.

अश्वि मेषे च शुक्रः ३६।५६ श्री गंगादशहरा

भ. २७।४५ उ. ५५।४ या. मार्गी बुधः४०।४९ निर्जला ११व्र.स्मा.

+ नदी में ही स्नान करके गंगा की पूजा करें।

निर्जला ११ व्र. वैष्णवानाम्

सोम प्रदोष व्रतम्

भ. ३६।५६ उ.

भ. ३।५३ या. सत्यव्रतम्

ज्येष्ठशुक्ल ८ गुराविष्टम ०।० दिनगणः ५५ २९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१	५	०	१०	११	४	११	५
१०	१	२५	१२	२८	१९	११	११
२	३४	४२	३८	१०	३८	१९	१९
५२	१९	४७	२४	२६	१७	२५	२५
२७	१२	१२	६	६७	०	३	३
२३	५४	५७	७	५५	५४	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रो.	[illegible]	भ.	श.	रे.	[illegible]	[illegible]	ह.
१	२	४	२	४	२	३	१

३   १ बु.
शु.
४   २ सू.   १२ रा.
चं. ५ श.   ११ वृ.
के. ६ मं.   ८   १०
७   ९

इस पक्ष में कहीं विग्रह हो, युद्धादि में भय, नीं वस्त्र, हींग, मोती आदि तेज हो, ज्येष्ठ कृष्णपक्ष में जो वस्तु मंदी हुई हो वह यहां तेज होगी, और जो वस्तु तेज हुई हो वह यहां मंदी होगी। ति. १० से रूई तथा अनाज में तेजी रहे, चांदी में खासी तेजी हो, अलसी, ऊन में मंदी होवे। ति. १।२।६।७।१४ को बादल चाल वायु के साथ कहीं बूंदा बांदी भी होगी।

शकुन विचार—ज्येष्ठ मास में आर्द्रा से चित्रा तक जोय। नभ में चमके बिजली अथवा बादल होय। चौमासा बरसे नहीं सारा सूखा जाय। जितना भी यह योग हो उतना जल टपकाय। ज्येष्ठसुदी सप्तमदिने बिजरी मेघ निहार। दक्षिण दिशि वायु चले निल से लाभ अपार॥ तिथि पूर्णमासी को वर्षा होने पर दुर्भिक्ष होता है।

ज्येष्ठशुक्ल १५ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ५५ ३५

३   शु. १ बु.
४   २ सू.   रा. १२
५. श   वृ.११
के.६ मं   चं. ८   १०
७   ९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१	५	०	१०	०	४	११	५
१५	३	२५	१३	४	१९	११	११
४६	४	४७	१०	५९	४५	०	०
४३	३०	१०	५९	१३	५४	२१	२१
५७	१६	११	५	६८	१	३	३
१६	३०	३२	६	२०	२६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रो.	[illegible]	भ.	श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ह.
२	२	४	२	२	२	३	१

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को संवत्सर का मुख माना है इसलिये उस दिन विशेष स्नान और दान करने से बिना दी हुई वस्तु पर अपना हक जमा लेना, तीनों प्रकार की अवैध हिंसा और परस्त्री सेवन, कटु तथा मिथ्याभाषण, चुगली, निंदा। व्यर्थभाषण, पराई वस्तु की चाहना, दूसरे का बुरा सोचना ये १० पाप दूर हो जाते हैं। यदि गंगा में न जा सकें तो सतलज आदि +

संवत् २००७ शकः १८७२ प्र० आषाढकृष्ण पक्षः ६

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	स.	चन्द्र. सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय काले			
३४	३४	१	गु.	२५	७	ज्ये.	२९	३	सि.	४३	२८	कौ.	२५	७	१९	१	१४	ध.२९।३	५	२८	७	१८	१	१६	४३	५७
३४	३६	२	शु.	१९	५३	मू.	२५	५२	शु.	४६	५४	ग.	१९	५३	२०	२	१५	धनुषि	५	२८	७	१८	१	१७	४१	९
३४	३७	३	श.	१५	२२	पू.षा	२३	२७	शु.	४१	२	वि.	१५	२२	२१	३	१६	म०३८।३	५	२८	७	१८	१	१८	३८	२०
३४	३९	४	र.	११	४०	उ.षा	२१	५०	ब्र.	३५	५४	बा.	११	४०	२२	४	१७	मकरे	५	२७	७	१९	१	१९	३५	२९
३४	४०	५	चं.	९	०	श्र.	२१	१६	ऐं.	३१	३७	तै.	९	०	२३	५	१८	कुं.५१।३५	५	२७	७	१९	१	२०	३२	३७
३४	४२	६	मं.	७	३२	ध.	२१	५४	वै.	२८	१८	व.	७	३२	२४	६	१९	कुम्भे	५	२७	७	१९	१	२१	२९	४५
३४	४३	७	बु.	७	१७	श.	२३	४५	वि.	२६	१	ब.	७	१७	२५	७	२०	कुम्भे	५	२७	७	२०	१	२२	२६	५२
३४	४५	८	गु.	८	२३	पू.भा	२६	५४	प्री.	२४	४६	कौ.	८	२३	२६	८	२१	मी.११।७	५	२७	७	२१	१	२३	२३	५८
३४	४६	९	शु.	१०	३९	उ.भा	३१	८	आ.	२४	२२	ग.	१०	३९	२७	९	२२	मीने	५	२७	७	२१	१	२४	२१	३
३४	४८	१०	श.	१४	५	रे.	३६	२८	सौ.	२४	५३	वि.	१४	५	२८	१०	२३	मे.३६।३८	५	२६	७	२२	१	२५	१८	७
३४	४९	११	र.	१८	२३	अ.	४२	३१	शो.	२६	१	बा.	१८	२३	२९	११	२४	मेषे	५	२६	७	२२	१	२६	१५	९
३४	५१	१२	चं.	२३	१६	भ.	३९	३	अ.	२७	३५	तै.	२३	१६	३०	१२	२५	मेषे	५	२६	७	२२	१	२७	१२	१०
३४	५२	१३	मं.	२८	२१	कृ.	५५	३३	सु.	२९	१७	व.	२८	२१	३१	१३	२६	वृ.५।४०	५	२६	७	२३	१	२८	९	९
३४	५४	१४	बु.	३३	१०	रो.	६०	०	धृ.	३०	४५	वि.	०	४५	१	१४	२७	वृषे	५	२६	७	२४	१	२९	६	८
३४	५५	३०	गु.	३७	२२	रो.	१	४१	शू.	३१	४५	च.	५	१६	२	१५	२८	मि.३४२२	५	२६	७	२४	२	०	३	६

(जून १९५० ई०) उत्तरायणगोली ग्रीष्मर्तुः

ग्रहदर्शन---बुध, शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्वक्षितिज के ऊपर मंगल शनि सूर्यास्त बाद में ख मध्य में। गुरु मध्यरात्रि में पूर्वक्षितिज ÷

शते, ३ गुरुः ५३।१७ जून ६ ता० ३० मू. ।ऽ।।ऽरा. ।।।ल. गा.

भ. ४७।३७ उ. कृति, बुधः ४०।१८

भ. १५।२२ या.

÷ की तर्फ दिखाई देंगे।

भ. ७।३२ उ. ३७।२४ या. पू. फा. ३ शनिः ५८।२८

मृगे रविः ५५।५० भरण्यां शुक्रः १६।५८

वृषे बुधः ३।४४

भ. ४२।२२ उ.

भ. १४।५ या.

योगिनी ११ व्र. सर्वेषाम्

सोमप्रदोष व्र.

भ.२८।२१ उ.

भ. ०।४५ या. सं. मिथुनेऽर्कः ५६।४७ मु. ४५ पुण्यं परदिनेघ. १२ प. ४७ या.

प्र. आषाढकृष्ण ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ५५४३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	५	०	१०	०	४	११	५
२३	५	२९	१३	१४	२०	१०	१०
२३	३२	५६	४५	९	२	३४	३४
५८	३८	५३	२२	३२	१७	५५	५५
५७	२०	४६	३	६९	२	३	३
६	६	९	३६	३	१३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृ.	उ.फा.	कृ.	श.	भ.	पू.फा.	उ.फा.	ह.
१	३	१	३	१	३	३	१

३
शु. १ बु.
१२ रा.
४
सू. २
चं. ११ बृ.
५ श.
के. ६ मं.
८
१०
७
९

इस पक्ष में वायु का जोर रहेगा, हैजा आदि से प्रजा में कष्ट, अनाज अलसी में कुछ मंदा होगा, रूई में घटाबढ़ी होकर तेज रहेगा, मंदी में खरीदने से लाभ होगा। ति, ७ से ११ तक चांदी का बाजार दुतर्फा रहेगा, बाद में तेजी रहेगी। तांबा, पीतल तेज, धान्य गुड़ शकर भी तेज हों।

ति. ३ से ६ तक और ९ से १३ तक पूर्वोत्तर में कहीं साधारण वर्षा व बूंदा बांदी के योग हैं।

शकुनविचार---पहिला दिन आषाढ़ का गर्जन करै घनघोर। भूप लड़ें झगड़ा बढे काल पड़े चहुँ ओर॥ आषाढ़ बदी जो अष्टमी बादल ऊगे चन्द। वर्षा अच्छी होयगी मिटे सभी दुख द्वन्द॥१॥ काली बादल करवरा धौलों करे सुकाल। चन्दा ऊगे

प्र. आषाढकृष्ण ३० गुराविष्टम ०।० दिनगणः ५५५०

४
चं. बु. २
५ श.
सू. ३
शु. १
के. ६ मं.
रा. १२
७
९
११ बृ.
८
१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	१	१०	०	४	११	५
०	८	७	१४	२२	२०	१०	१०
३	४	८	५	१५	२१	१२	१२
६	८	२४	४२	४७	१४	३९	३९
५६	२२	७२	२	७०	३	३	३
५८	४०	५४	३८	९	३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृ.	उ.फा.	कृ.	श.	भ.	पू.फा.	उ.फा.	ह.
३	४	४	३	३	३	३	१

बादल करवरा धोला करे सुकाल । चन्दा ऊग

मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सञ्चारः	रेल्वे		रेल्वे		उदय काले			
३४		१	शु.	४०	३७	मृ.	७	३	गं.	३२	५	कि.	९	०	३	१६	२९	मिथुन	५	२६	७	२४	२	१	०	५
३४	५८	२	श.	४२	४५	आ.	११	२२	वृ.	३१	३०	बा.	११	४१	४	१७	३०	कं.५८।४६	५	२६	७	२५	२	१	५७	३
३५		३	र.	४३	३७	पुन.	१४	३४	ध्रु.	२९	५८	तै.	१३	११	५	१८	१	कर्के	५	२६	७	२६	२	२	५४	०
३५	१	४	चं	४३	१०	पु.	१६	३०	व्या.	२७	२६	व.	१३	२३	६	१९	२	कर्के	५	२६	७	२६	२	३	५०	५५
३५	३	५	मं.	४१	२९	श्ले.	१७	१०	ह.	२३	५२	व.	१२	२०	७	२०	३	सिं १७।१०	५	२६	७	२६	२	४	४७	४९
३५	४	६	बु.	३८	३९	म.	१६	३८	व.	१९	२२	कौ.	१०	४	८	२१	४	सिंहे	५	२५	७	२७	२	५	४४	४५
३५	५	७	गु.	३४	५०	पूफा.	१५	३	सि.	१४	०	ग.	६	४४	९	२२	५	कं २९।३७	५	२५	७	२७	२	६	४१	४०
३५	४	८	शु.	३०	१०	उफा.	१२	४१	व्य.	८	०	वि.	२	२५	१०	२३	६	कन्यायाम्	५	२६	७	२८	२	७	३८	३४
३५	३	९	श.	२४	५१	ह.	९	३०	व.	[illegible]	[illegible]	कौ.	२४	५१	११	२४	७	तु.३७।४०	५	२७	७	२८	२	८	३५	२७
३५	१	१०	र.	१९	१	चि.	५	४९	प.	४६	४१	ग.	१९	१	१२	२५	८	तुलायाम्	५	२७	७	२७	२	९	३२	२०
३५	०	११	चं.	१२	५३	स्वा.	[illegible]	[illegible]	सि.	३९	६	वि.	१२	५३	१३	२६	९	बृ.४३।३७	५	२७	७	२७	२	१०	२९	१३
३४	५८	१२	मं.	६	३८	अनु	५३	२८	सा.	३१	२९	बा.	६	३८	१४	२७	१०	वृश्चिके	५	२८	७	२७	२	११	२६	५
३४	५७	१३	बु.	०	३१	ज्ये.	४९	३९	शु.	२४	३	नै.	०	३१	१५	२८	११	ब.४९।३९	५	२९	७	२७	२	१२	२२	५६
अवम्		१४	बु.	५४	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	५५	१५	गु.	[illegible]	२४	मू.	४५	१९	शु.	१६	५४	वि.	२२	३	१६	२९	१२	धनुषि	५	२९	७	२७	२	१३	१९	४८

ग्रहदर्शन —बु. शु. सूर्योदयसे पंहिले पूर्व क्षितिज में दक्षिणायन दिखें। मं.श.सूर्यास्त के बाद खमध्य से पश्चिम की तरफ, +

पुरुषोत्तम (मल) मासारम्भः अधिक मास का पक्ष १

रोहिण्यां बुध: ११।५७ चन्द्र दर्शनम्

कृति. शुक्र: ४७।२२ उ. भा. २ राहु. उ. फा. ४ केतु: ५८।४५

भ. १३।२३ उ. ४३।१० या., हस्ते भौम: ५३।१३

रमजान मु. ९

आर्द्रा रवि: ५८।१५, वृषे शुक्र: ३८।२४, सा. कर्के भानु: २८।३२ +

भ. ३४।५० उ. ÷ दक्षिणायनम् वर्षर्तु प्रा.

भ. २।२५ या.

+ गुरु, सूर्यास्त के बाद पूर्व में दिखेगा ।

भ. ४५।५७ उ० मृग. बुध: ४०।३

भ. १२।५३ या., पुरुषोत्तमा (परमा) ११ ब्र. सर्वे.

वक्री गुरु: २६।२४ भौम प्रदोष व्रतम्

भ. ५४।४३ उ. × से दान करते रहें । यदि अत्यशक्त हो तो ()

() पूर्णमासीऔरअमावस्याद्वादशीइनतिथियोंको दान करे ।

भ. २२।३ या. मिथुने बुध: १४।३१ सत्य व्रतम्

प्र० आषाढशुक्ल ८ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगण: ५५५८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	१	१०	१	४	११	५
७	११	१८	१४	१	२०	९	९
३८	१८	४५	१८	३५	४४	४७	४७
२४	१८	१८	०	१३	११	१३	१३
५६	२५	९८	०	७०	३	३	३
२४	४१	२०	५०	११	४७	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आ.	ह.	रो.	श.	कृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१	१	३	३	२	३	२	४

४ | २ बु. शु. | श. ५ | ३ सू. | १ | के. ६ मं. चं. | १२ रा. | ७ | ९ | गु. ११ | ८ | १०
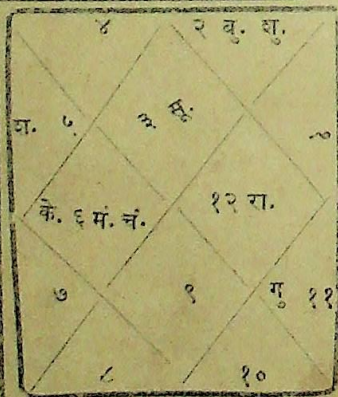
इस पक्ष में रुई, अलसी, सोना, चांदी में काफी घटा बढ़ी चलकर रुख मंदी में रहे । ति. ८ से अनाज का भाव तेजी की ओर होगा, गुड़, खांड़ में गत मास की अपेक्षा मंदी रहेगी । प्रजा में राजनैतिक हलचलें बहुत होंगी, भारतीयमंत्रियों को भारी चिन्ता का सामना करना पड़ेगा ।

इस पक्ष में वर्षा कहींकहीं अच्छी होगी, बादल चाल बहुत रहेगी ।

मलमास में व्रत विशेष---हेमाद्रि में लिखा है कि जब पुरुषोत्तम मास प्राप्त हो तब ३३ देवताओं के निमित्त गुड़, गोधूमचूर्ण घी के ३३ मालपूड़े प्रतिदिन देने से भूमिदान के समानफलहोता है।मालपूड़ेघी स्वर्ण सहित कांसी की थाली में रखकर सुपात्र ब्राह्मण को देता हुआ इस मन्त्र को मुख से पढ़े---ॐ विष्णुरूपी सहस्रांशुः सर्वपापप्रणाशकः । अपूपान्नप्रदानेन मम पापं व्यपोहतु ।। इस मंत्र को पढ़कर जो धर्मात्मा दान करते हैं और भक्ति पूर्वक जप, पाठ पूजन सप्ताह करते हैं वह मनेप्सित फलसे युक्त हो देवत्व को प्राप्त होते हैं । स्वर्ण कांस्य पात्र दान नित्य न कर सके तो मलमास के अन्त में एक दिन करने से व्रत सफल होता है । अन्य दिन ३३, ३३ पुड़े ही रोज साधारण रीति ×

प्र० आषाढ़ शुक्ल १५ गुराविष्टम् ०।० दिनगण: ५५६४

४ | २ ब.शु. | ५ श. | ३ सू. | १ | ६ मं. के. | १२ रा. | ७ | चं. ९ | ११ गु. | ८ | १०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	१	१०	१	४	११	५
१३	१३	२९	१४	८	२१	९	९
१९	५७	३१	१९	३७	१२	२८	२८
४८	४७	४४	१६	२३	२५	८	८
५६	२७	[illegible]	०	७०	४	३	३
५२	२२	४२	३२	३०	८	११	११
	मा	मा	व.	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आ.	ह.	मृ.	श.	कृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३	२	२	३	४	३	२	४

संवत् २००७ शकः १८७२ द्वि० आषाढ़कृष्णपक्षः ८ | (जुलाई १९५० ई०) दक्षिणायनं उत्तरगोलः, वर्षर्तुः

ग्रहदर्शन---ति. १ से बुध का पूर्व में अस्त। शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्व में, गुरु सूर्यास्त के बाद पूर्व में दीखेगा। मलमासः।

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. तारीख	अं. तारीख	मु. ता.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदयकाले				
३४	५३	१	शु.	४४	४६	पू.षा	४३	३९	ब्र.	१०	१३	बा.	१७	५	१७	३०	१३	म.५८।१२	५	३०	७	२७	२	१४	१६	४०	पूर्वास्ता बुधः १।१० रोहि. शुक्रः १०।४ अधिक मास का पक्ष २
३४	५२	२	श.	४१	०	उ.षा	४१	५०	ऐ.	[illegible]	[illegible]	तै.	१२	५३	१८	१	१४	मकरे	५	३०	७	२७	२	१५	१३	३२	जुलाई ७ ता० ३१
३४	५०	३	र.	३८	१३	श.	४१	१	वि.	५४	२८	व.	९	३६	१९	२	१५	मकरे	५	३१	७	२७	२	१६	१०	२३	भ. ९।३६ उ. ३८।१३ आ. आर्द्रायां बुधः ३३।३७
३४	४९	४	चं.	३६	३५	ध.	४	२०	प्री.	५०	५६	व.	७	२४	२०	३	१६	कुं.११।१०	५	३१	७	२७	२	१७	७	१४	श्री गणेश ४ व्र.
३४	४७	५	मं.	३६	१३	श.	४२	५३	आ.	४८	२६	कौ.	६	२४	२१	४	१७	कुम्भे	५	३२	७	२६	२	१८	४	५	
३४	४६	६	बु.	३७	१०	पू.भा	४५	४३	सौ.	४६	५८	ग.	६	४१	२२	५	१८	मी.३०।०	५	३२	७	२६	२	१९	०	५७	भ. ३७।१० उ.
३४	४४	७	गु.	३९	२०	उ.भा	४९	४१	शो.	४६	२४	वि.	८	२९	२३	६	१९	मीने	५	३२	७	२६	२	१९	५७	५०	भ. ८।२९ या. पुनः रविः २।१७
३४	४३	८	शु.	४२	३८	रे.	५४	४८	अ.	४६	४५	बा.	१०	५९	२४	७	२०	मे.५४।४८	५	३३	७	२६	२	२०	५४	४३	
३४	४१	९	श.	४६	५०	अ.	६०	०	सु.	४७	४७	तै.	१४	४४	२५	८	२१	मेषे	५	३४	७	२६	२	२१	५१	३५	पुन. बुधः ४७।६
३४	४०	१०	र.	५१	४१	अ.	०	४२	धृ.	४९	१६	व.	१९	१५	२६	९	२२	मेषे	५	३४	७	२६	२	२२	४८	२७	भ. १९।१५ उ. ५१।४१ या.
३४	३८	११	चं.	५६	४५	भ.	७	८	शू.	५०	५८	बं.	२४	१३	२७	१०	२३	वृ. २३।४६	५	३५	७	२६	२	२३	४५	१९	कमला ११ व्र. स्मा.
३४	३६	१२	मं.	६०	०	कृ.	१३	४०	गं.	५२	२९	कौ.	२९	११	२८	११	२४	वृषे	५	३५	७	२५	२	२४	४२	११	मृग. शुक्रः २६।६ कमला ११ व्र. वै. नि.
३४	३५	१२	बु.	१	३७	रो.	१९	५३	वृ.	५३	३५	तै.	१	३७	२९	१२	२५	मि.५२।४०	५	३५	७	२५	२	२५	३९	४	प्रदोष व्र.
३४	३३	१३	गु.	५	४८	मृ.	२५	२६	ध्रु.	५४	३	व.	५	४८	३०	१३	२६	मिथुने	५	३६	७	२५	२	२६	३५	५८	भ. ५।४८ उ. ३७।२८ या, कर्के बुधः २४।२७
३४	३२	१४	शु.	९	७	आ.	३०	०	व्या.	५३	३६	श.	९	७	३१	१४	२७	मिथुने	५	३६	७	२५	२	२७	३२	५३	पुष्ये बुधः ५।१९ मलमास (लौंद) समाप्ति
३४	३०	३०	श.	११	१९	पुन.	३३	२९	ह.	५२	१७	ना.	११	१९	३२	१५	२८	क. १७।३७	५	३७	७	२५	२	२८	२९	४८	*श. मं. पूर्व रात्रि में ख मध्य से पश्चिम की ओर दीखेंगे।

द्वि. आषाढकृष्ण ८ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५५७२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
२	५	२	१०	१	४	११	५
२०	१७	१६	१४	१८	२१	९	९
१४	४५	६	९	४	४८	२	२
३३	५८	५८	५०	२४	५०	४१	४१
५६	२९	[illegible]	१	७१	४	३	३
३	१७	३६	४५	७	५५	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पु. १	ह. ३	आ. ३	श. ३	रो. ३	पू.फा. ३	उ.भा. २	उ.फा. ४

२ शु.
४
५
श.
सू. ३ बु.
१
चं. १२ रा.
६ मं. के.
७
९
गु. ११
८
१०

इस पक्ष में व्यापारी वर्ग लाभ में रहेंगे, रूई में खासी घटा बढ़ी होगी, सोने में तेजी होगी। चांदी में घटा बढ़ी चलकर फिर तेजी होवे, लोहा, पित्तल, तांबा, सरसों, चना, चावल, गेहूँ अलशी मंदी रहे। ति. ५ से घृत, तिल, खाड, तोरिया, मिर्च, हल्दी, सुपारी ऊन आदि भी मंदे हों।

ति. १।५।६।१२।१३ को वर्षा के योग हैं।

श० वि०---बिन बादल हो गर्जना जिस दिशि गर्जन जाय। करे भंग उस देश का ऐसा योग बताय।

मलमास में देवालय बगीचा तालाब आदि की प्रतिष्ठा, उपनयन, विवाह, गृहा-

द्वि. आषाढकृष्ण ३० शनौ इष्टम् ०।० दिनगणः ५५८०

शु. २
बु. ४
चं. ३ सू.
५ श.
१
६
के. मं.
रा. १२
७
९
गु. ११
८
१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
२	५	३	१०	१	४	११	५
२८	२१	३	१३	२७	२२	८	८
२९	४९	२१	४८	३४	२९	३७	३७
४८	१२	४७	३२	४४	३५	१४	१४
५६	३१	[illegible]	३	७१	५	३	३
५५	१२	२५	१५	४२	२१	११	११
	मा	मा	व.	मा	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. ३	ह. ४	पुष्य १	श. ३	मृ. २	पू.फा. ३	उ.भा. २	उ.फा. ४

... द्वि. शुद्ध आषा. शु. पक्ष ... चन्द्र. सू. उ. सू. अ. नित्यसूर्यस्पष्टः (जुलाई १९५०) दक्षिणायनम् उत्तरगोलः वर्षर्तुः

ग्रहदर्शन-श.मं.सूर्यास्त के बाद पश्चिमक्षितिज ऊपर ति.९ से पश्चिममें

वि.सा.	ति. वा.	घ. प.	न. घ. प.	यो. घ. प.	क. घ. प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सञ्चारः	रेलवे	रेलवे	उदय-काले
३४ २९	१ र.	१२ १६	पु. ३५ ४०	ब. ४९ ५५	ब. १२ १६	१	१६	२९	क.	५ ३८	७ २५	२ २९ २६ ४४
३४ २७	२ सं.	११ ५३	श्ले. ३६ ३५	सि. ४६ ३३	कौ. ११ ५३	२	१७	१	सिं. ३६ ३५	५ ३८	७ २५	३ ० २३ ४१
३४ २६	३ मं.	१० १७	म. ३६ १९	व्य. ४२ ११	ग. १० १७	३	१८	२	सिं.	५ ३८	७ २४	३ १ २० ३९
३४ २४	४ बु.	७ ३१	पू. ३४ ५६	व. ३७ ०	वि. ७ ३१	४	१९	३	कं. ४१ २३	५ ३९	७ २४	३ २ १७ ३८
३४ २२	५ गु.	३ ४५	उ. ३२ ४६	प. ३१ ६	बा. ३ ४५	५	२०	४	कं.	५ ३९	७ २४	३ ३ १४ ३७
अवम	६ शु.	५५ २३	० ० ०	० ० ०	० ० ०	०	०	०	० ० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
३४ २१	७ शु.	५३ ४९	ह. २९ ४२	शि. २४ ३१	ग. २६ २८	६	२१	५	तु. ५७ ५४	५ ४०	७ २३	३ ४ ११ ३६
३४ १९	८ श.	४८ १	चि. २६ ७	सि. १७ २६	वि. २० ५५	७	२२	६	तु.	५ ४०	७ २३	३ ५ ८ ३५
३४ १७	९ र.	४१ ५३	स्वा. २२ ६	सा. १० ०	बा. १४ ५७	८	२३	७	तु.	५ ४१	७ २२	३ ६ ५ ३५
३४ १४	१० चं.	३५ ३९	वि. १७ ५५	शु. [illegible]	तै. ८ ४६	९	२४	८	वृ. ३ ५८	५ ४१	७ २२	३ ७ २ ३६
३४ ११	११ मं.	२९ ३२	अनु. १३ ४७	ब्र. ४७ १२	व. २ ३५	१०	२५	९	वृ.	५ ४२	७ २१	३ ७ ५९ ३८
३४ ७	१२ बु.	२३ ४३	ज्ये. ९ ५२	ऐं. ३९ ५६	बा. २३ ४३	११	२६	१०	ध. ९ ५२	५ ४२	७ २१	३ ८ ५६ ४१
३४ ३	१३ गु.	१८ २१	मू. ६ २३	वै. ३३ ८	तै. १८ २१	१२	२७	११	ध.	५ ४३	७ २०	३ ९ ५३ ४६
३४ ०	१४ शु.	१३ ४१	पू. ३ ३३	वि. २६ ४७	व. १३ ४१	१३	२८	१२	म. १८ ३	५ ४३	७ १९	३ १० ५० ५२
३३ ५७	१५ श.	९ ५०	उ. १ ३४	प्री. २१ १७	ब. ९ ५०	१४	२९	१३	म.	५ ४४	७ १९	३ ११ ४८ ०

ग्रहदर्शन-श.मं.सूर्यास्तके बाद पश्चिमक्षितिज ऊपर ति.९से पश्चिममें बुधकाउदयगुरुसूर्यास्तकेबाद पूर्वमें,शुक्रसूर्योदयसे पहलेपूर्वमेंदिखेगा।

स.कर्कोऽर्कः ३५।३, मु. ३० पुष्यं ५।३. उ. चन्द्रदर्शनं
मिथुने शुक्रः १।५४.चित्रा.भौमः५२।१,सव्वालमु.१०श्री जगदीशरथो
भ. ३८।५४ उ. [*]वस्तुएं छोड़ देवे।
भ. ७।३१ या.
पुष्ये रविः ५।४०

भ. ५३।४९ उ. आश्ले. बुधः ३७।३०
भ. २०।५५ या.,आर्द्रा. शुक्रः ३५।५९, ब. वात. २ गुरुः ६।३३
पश्चिमोदयो बुधः१०।२४,पू.फा४शनिः ५०।१३,सा.सिंहेभानुः६।२८
* व्रतनियमाद्या रम्भश्च
भ. २।३५ उ. २९।३२ या. देवशयनी ११ व्र. सर्व. चातुर्मास्या *

परीक्षाध्वजारोपणम्
भ. १३।४१ उ. ४१।४५ या. मघा. सिंहेचबुधः ५७।२१ वायु
तुलायां भौमः ५६।२०, सत्य व्रतम् श्री गुरु व्यासयोः पूजामन्वादि

द्वि. आषाढ़ शुक्ल ८ शनाविष्टम् । दिनगणः ५५८७

सू.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	३	१०	२	४	११	५
५	२५	१७	१३	५	२३	८	८
८	३४	२३	२०	५६	९	१४	१४
३५	५	३५	३१	५३	०	५८	५८
५७	३२	११६	४	७१	५	३	३
०	३५	१२	३०	५७	३५	११	११
मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	
उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	
पु. १	चि. १	[illegible]	श. ३	मृ. ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इसपक्ष में धनी वर्ग और नौकरी पेशा लोगोंको अशान्ति रहेगी। रूईकेभावमें २०।२५ टका की मन्दी होवे, चान्दीमें ३ टका की तेजी हो, सूत, वस्त्र, शण में मंदा, और अलसी में १ या १॥ टका की घटा बढ़ी होकर तेजीहो, खांड़ २।३ टका मंदी हो, अनाजका भाव समान रहेगा।

ति० ४।५।९।१०।१५ को वर्षा श्रेष्ठ होगी नाले नदियों की बाढ़से हानि भी कई जगह होगी।

शकुन विचार-शुक्लपक्ष आषाढ़ शर पश्चिम धनुष दिखाय। पश्चिमकी वायु चले जल वर्षे झड़ लाय। तृणका संग्रह कीजिये बेचो कार्तिक मास। निश्चय उसमें लाभ हो, कर लेना विश्वास। आषाढ़-सुदी नौमी दिना ना बादल ना बीज। हलफाड़ ईंधन करो बेटा राखो बीज। आषाढ़ १५ दिने जो वर्षे सुर राय। एक मास तक अन्नकी निश्चय तेजी थाय।

द्वि. आषाढ़ शुक्ल १५ शनाविष्टम् । दिनगणः ५५९४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	४	१०	२	४	११	५
११	२९	०	१२	१४	२३	७	७
४८	२७	४	४४	२१	५१	५२	५२
०	४०	३४	२४	२९	१४	४२	४२
५७	३३	१०३	५	७२	६	३	३
८	३३	९	५३	१५	११	११	११
मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	
पु. ३	चि. २	म. १	श. २	आ. ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चातुर्मास व्रत के आरम्भ करते समय "इमं करिष्ये नियमं निर्विघ्नं कुरु मेऽच्युत। इदं व्रतं मया देव गृहीतं पुरतस्तव। गृहीतेऽस्मिन् व्रते देव पंचत्वं यदि भवेत्। तदा भवतु

संवत् २००७ शकः १८७२ श्रावण कृष्ण पक्षः १० | (जुला. अगस्त १९५० ई.) दक्षिणायनं उत्तरगोलः वर्षर्तुः

ग्रहदर्शन—मं.बु.श.सूर्यास्तके बाद पश्चिम क्षितिजमें दिखाई देंगे। गुरु सूर्यास्तके बाद पूर्वमें, शुक्र सूर्योदयसे पहिले पूर्व क्षितिजमें दीखेगा।

बि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्रः सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३३	५२	१	र.	६	५९	श्र.	०	२८	आ.	१६	४८	कौ.	६	५९	१५	३०	१४	कुं.	३०	३०	५	४५	७	१८	३	१२	४५	८
३३	५०	२	चं.	५	१७	ध.	०	३१	सौ.	१३	१	ग.	५	१७	१६	३१	१५	कुं.			५	४५	७	१८	३	१३	४२	१७
३३	४८	३	मं.	४	५०	श.	१	४३	शो.	१०	१७	वि.	४	५०	१७	१	१६	मी.	४८	३७	५	४६	७	१७	३	१४	३९	२८
३३	४३	४	बु.	५	४०	पू.	४	१४	अ.	८	३४	बा.	५	४०	१८	२	१७	मी.			५	४७	७	१६	३	१५	३६	४०
३३	४०	५	गु.	७	४७	उ.	७	५८	सु.	७	४९	तै.	७	४७	१९	३	१८	मी.			५	४८	७	१५	३	१६	३३	५२
३३	३६	६	शु.	११	१	रे.	१२	४९	धृ.	७	५८	व.	११	१	२०	४	१९	मे.	१२	४९	५	४९	७	१४	३	१७	३१	५
३३	३३	७	श.	१५	१२	अ.	१८	३२	शू.	८	४९	ब.	१५	१२	२१	५	२०	मे.			५	४९	७	१३	३	१८	२८	२०
३३	३०	८	र.	२०	०	भ.	२४	५०	गं.	१०	१२	कौ.	२०	०	२२	६	२१	वृ.	४१	२८	५	५०	७	१३	३	१९	२५	३८
३३	२७	९	चं.	२५	५	कृ.	३१	२४	वृ.	११	५०	ग.	२५	५	२३	७	२२	वृ.			५	५१	७	१२	३	२०	२२	५८
३३	२३	१०	मं.	२९	५७	रो.	३७	४२	ध्रु.	१३	२३	वि.	२९	५७	२४	८	२३	वृ.			५	५१	७	११	३	२१	२०	१९
३३	१९	११	बु.	३४	१८	मृ.	४३	२५	व्या	१४	३२	ब.	२	७	२५	९	२४	मि.	१०	३३	५	५१	७	१०	३	२२	१७	४१
३३	१६	१२	गु.	३७	४३	आ.	४८	१३	ह.	१५	७	कौ.	६	१	२६	१०	२५	मि.			५	५२	७	९	३	३	१५	४
३३	१२	१३	शु.	४०	०	पु.	५१	५८	व.	१४	४८	ग.	८	५१	२७	११	२६	क.	३६	२	५	५३	७	८	३	२४	१२	२९
३	८	१४	श.	४१	५	पु.	५४	२७	सि.	१३	३९	वि.	१०	३२	२८	१२	२७	क.			५	५४	७	७	३	२५	९	५३
३	५	३०	र.	४०	५१	श्ले.	५५	३७	व्य	११	२७	च.	१०	५८	२९	१३	२८	सि.	५५	३७	५	५४	७	७	३	२६	७	१८

भ. ३५।४ उ.
भ. ४।५० या. अगस्त ८ ता.२१ श्री गणेश ४ व्र.
पुन. शुक्रः ४।१४
आश्ले. रविः ६।२६
भ. ११।१उ. ४३।६ या.

पू. फा. बुधः १६।०
भ. ५७।३१ उ.
भ. २९।५७ या.
कामदा ११ व्र. सर्वे
कर्के शुक्रः ५६।२३ स्वात्यां भौमः १९।३५
भ. ४०।० उ. प्रदोष व्रतम्
भ. १०।३२ या.
पुष्ये शुक्रः ४०।५८ हरियाली ३०

रजस्वला होती है अतः उसमें स्नान नहीं करना चाहिये।

श्रावण कृष्ण ८ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ५६०२

	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	१०	२	४	११	५
	४	१२	११	२४	२४	७	७
	५	५६	५५	०	४२	२७	२७
	३५	२०	५	२५	५०	१६	१६
	३५	९०	६	७२	७	३	३
	२४	५०	३२	३६	११	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	व.		व.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.		अ.
चि.	म.	श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
१	४	४	२	२	[illegible]		[illegible]

५ श.बु.
शु ३
के. ६ सू. ४ २
७ म. च. १
८ १० रा. १२
९ ११गु.

इस पक्षमें पशुओं में रोग,भय, सिन्ध प्रान्त में कोई उत्पात या जलसे हानि हो, रूई, सूत, शणमें तेजी हो, घृत, गेहूँ चना, जौ, उड़द,गुड़, और श्वेत वस्तुओंमें भी तेजी रहे, शेयरोंके भावमें मंदी हो। ति. १३से रूई, चांदीमें मंदी अलशी घृत, तेल, गुड़ खांड़ शक्करमें तेजी रहेगी।

ति. १।२।३।५।१०।११को वर्षाके योग हैं वर्षा अच्छी होगी

शकुनविचार—तम ग्यारस दिन गर्जना नभका भला न चीन। अन्न भाव घट जायगा दुनिया तेरह तीन। श्रावण पहली पंचमी वर्षे करे निहाल। पवन चले तो अति बुरी पड़े हलाहल काल। श्रावण वदीएकादशी जोनभवर्षाहोयअच्छासंवत् होयगा संशय करो न कोय

श्रावण कृष्ण ३० रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ५६०९

श.बु ५ ३
के. ६ सू. ४ शु. बु. २
७ मं. १
८ १० १२ रा.
९ ११गु.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	१०	३	४	११	५
२६	८	२२	११	२	२५	७	७
७	१६	३९	६	३०	३०	५	५
१८	५९	२९	४	४	०	०	०
५७	३६	७७	७	७२	६	३	३
२५	२२	२४	१५	४६	५८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्ले ३	[illegible]	[illegible]	श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible] यदि सायं होती [illegible] नक्तरूपेनहींतो रात्रिको भोजनकर लेवें। शिवतथा पार्वतीकी प्रतिमा बनाकर 'ॐनमः शिवाय' मंत्रका जप करने से शिवलोककी

४३ संवत् २००७ शकः १८७२ श्रावणशुक्ल पक्षः ११ हि. अं. [illegible] १९५०)दक्षिणायनं उत्तरगोलः वर्षर्तुः

४३ सम्वत् २००७ शकः १८७२ श्रावणशुक्लपक्षः ११ | ह. | अं. | सु. | चन्द्रः | सू. उ. | सू. अ. | नित्य सूर्य स्पष्टः

दि. मा.		ति.	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.				सञ्चारः			रेलवे		रेलवे		उदय-काले			
३३	१	१	चं.	३९	२३	म.	५५	३८	व.	८	१५	कि.	१०	७	३०	१४	२९	स			५	५५	७	६	३	२७	४	४५
३२	५७	२	मं.	३६	४२	पू.	५४	२७	प.	५८	५३	बा.	८	२	३१	१५	३०	सि.			५	५५	७	५	३	२८	२	१४
३२	५४	३	बु.	३३	२	उ.	५२	२७	सि.	५३	१०	तै.	४	५२	३२	१६	१	कं.	८	५७	५	५५	७	४	३	२८	५९	४५
३२	५०	४	गु.	२८	३१	ह.	४९	३४	व्या.	४६	४१	व.	०	४६	१	१७	२	कं.			५	५६	७	३	३	२९	५७	१९
३२	४६	५	शु.	२३	१७	चि.	४६	४	ह.	३९	३८	बा.	२३	१७	२	१८	३	तु.	१७	४९	५	५७	७	२	४	०	५४	५५
३२	४३	६	श.	१७	३२	स्वा.	४२	८	वृ.	३२	११	तै.		३२	३	१९	४	तु.			५	५८	७	१	४	१	५२	३३
३२	३९	७	र.	११	२९	वि.	३७	५८	ध्रु.	२४	३२	व.	११	२७	४	२०	५	वृ.	२४	१	५	५८	७	०	४	२	५०	१२
३२	३५	८	चं.	५	१३	अ.	३३	४६	वृ.	१६	४७	व.	५	१३	५	२१	६	वृ.			५	५८	६	५९	४	३	४७	५१
अवम्		९	चं.	५३	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	३२	१०	मं.	५३	१९	ज्ये.	२९	४४	वै.	९	१०	तै.	२६	१४	६	२२	७	ध.	२९	४४	५	५९	६	५८	४	४	४५	३१
३२	२८	११	बु.	४७	५८	मू.	२६	८	वि.	५४	४६	व.	२०	३८	७	२३	८	ध.			५	५९	६	५७	४	५	४३	१३
३२	२४	१२	गु.	४२	१७	पू.	२३	६	आ.	४८	२५	व.	१५	३७	८	२४	९	म.	३७	३३	५	५९	६	५६	४	६	४०	५८
३२	१९	१३	शु.	३९	२५	उ.	२०	५६	सौ.	४२	४३	कौ	११	२१	९	२५	१०	म.			६	०	६	५५	४	७	३८	४५
३२	१५	१४	श.	३६	३४	श्र.	१९	३४	शो.	३७	४२	ग.	८	०	१०	२६	११	कुं.	४९	२६	६	१	६	५४	४	८	३६	३४
३२	१०	१५	र.	३४	५०	ध.	१९	१८	अ.	३३	४९	वि.	५	४२	११	२७	१२	कुं.			६	१	६	५३	४	९	३४	२५

ग्रहदर्शन–मं० बु० श० सूर्यास्तके बाद पश्चिम क्षितिजमें दिखेंगे । गुरु सूर्यास्तके बाद पूर्वमें, शुक्र सूर्योदयसे पहिले पूर्वमें दिखेगा ।

नक्त व्रतारम्भः (*) और ग्राममें अग्निभय होता है ।
चन्द्र दर्शनम् भारते स्वतन्त्रोत्सवम् ☰ चिन्त पूर्णी
उ. फा.यां बुधः १७।८ जिल्काद मु. ११ संधारा तीज मधुश्रवा ३
भ. ०।४६ उ. २८। ३१ या. मघा. सं. सिंहेर्कः २।४८ मु. ३० ()
नाग ५ () पुण्यं २।४८ या.
कन्या. बुधः १९।३ + ५१।३१ श्रीगो. तुलसी जयन्ती
भ. ११।२७ उ. ३८।२० याः उ. भा. १ राहुः ; उ.फा. ३केतुः +
वक्री शतः १ गुरु.४२।१९ श्री दुर्गा ८ मेला श्री नयनादेवी व ☰
श्रावणी कर्म रक्षा बंधनम रखडी मेला श्री अमर नाथ जी []
उ. फा.यां १ शनिः ५६।२३ प्रा. पवित्रा ११ व्र०
भ.२०।३८ उ.४७।५८ या. ला. कन्यायां भानुः २९।३२ शरदृतुः
आश्ले. शुक्रः ३७।० निम्बार्का. ११ व्र विष्णो पवित्रार्पणम्
प्रदोष व्र.
भ.३६।३४ उ. [] काश्मीर
भ. ५।४२ या. सत्य व्रतम भद्रोत्तरं ऋषि तर्पणम् यजुर्वेदि नां

[*] करनेसे सर्पभय नहीं रहता । श्रावणी और होली प्रजा मैं नहीं मनानी चाहिये, क्योंकि पूजा करनेसे राजा का अनिष्ट (*)

श्रावण शुक्ल ८ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५६१७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	६	५	१०	३	४	११	५
३	१३	१	१०	१२	२६	६	६
४७	१३	४१	५	१५	२६	३९	३९
५१	२३	४२	३५	०	६	३३	३३
५७	३७	५९	७	७२	७	३	३
३९	२७	२४	३०	५४	१२	११	११

[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
म. २	[illegible]	[illegible]	श. २	पु. ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]

के. ६ बु. | ४ शु. | ७ मं. | श. ५ सू. | ३ | च. ८ | २ | ११ गु. | ९ | १ | १० | रा. १२

इस पक्ष में प्रजा में रोग भय हो और कहीं मजदूरों और पूंजी पतियों के मध्य मजदूरी पर खींचा तानी होगी, वमनस्य बढ़ेगा, तथा अग्नि से कहीं हानि होगी, तेल गुड़; खण्ड के व्यापारी हानि में रहेंगे, बम्बई व अमेरिका में रुई तेज चावलःकी खेती कई जगह बरबाद हो जावेगी । चांदी में तेजी,तांबा लोहा कुछ सस्ता रहेगा । ति० ७ से रुई चांदी मंदी, गेहूं ,जौ चना, तेज हो ।

इस पक्ष में बुध शुक्र के मध्य सूर्य होने के कारण वर्षा में रुकावट होगी, कई प्रदेशों में फसल को भी नुकसान पहुंचेगा ।

श० वि–श्रावणशुक्ला पंचमी और छट को जान-कुछ वर्षा पश्चिम पवन तो दुर्भिक्ष पिछान ॥

श्रावण शुक्ल १५ रविविष्टम् ०।० दिनगणः ५६२३

के. ६ बु. | ४ शु. | ७ मं. | श. ५ सू. | ३ | ८ | २ | ९ | गु. ११ च. | १ | १० | रा. १२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	६	५	१०	३	४	११	५
९	१७	६	९	११	२७	६	६
३४	१	३४	१७	३५	९	२०	२०
२५	८	४४	५३	३५	४३	२८	२८
५७	३८	४०	७	७२	७	३	३
५१	६	३१	५५	२७	८	११	११

[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
म. ३	[illegible]	[illegible]	श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्रावण शुक्ला पंचमी बर्सत मेघ अपार । यह लक्षण अति भले सुख पावे संसार ॥ श्रावण शुक्ला पञ्चमी नागपञ्चमी होती है । यह परविद्धा ही ग्रहण करनी चाहिये अर्थात् षष्ठी युक्त का ही ग्रहण होता है इस दिन दर्वाजेके दोनों तरफ गोबरके सर्प बना कर घी, दूध, जल, खिल्लों, धूप, दही और दूर्वासे पूजा करें और ब्राह्मण को पुष्पोपहारादिसे सन्तुष्ट करें ऐसा [*]

श्रावण शु ६ सं 2019 शनिवार [illegible]

(अग. सितं. १९५० ई.) दक्षिणायनं उत्तरगोलः शरदृतुः

ग्रहदर्शन–ति. २ से शनिकापश्चिममें अस्त, ति. १४ से बुधका अस्त होगा। मंगल सूर्यास्त के बाद पश्चिम में और गुरुपूर्व में दीखेगा शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्व में

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. भाद्र.	अं. सितं.	मु.	चन्द्रः संचार			सू.उ. रेलवे		सू.अ. रेलवे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदयकाले				
३२	५	१	चं.	२४	२०	श.	२०	१३	धृ.	३०	४६	बा.	४	३५	१२	२८	१३	कु.			६	२	६	५२	४	१०	३२	१८	
३२	०	२	मं.	३५	७	पू.	२२	२२	शू.	२८	४६	तै.	४	४३	१३	२९	१४	मी.	६	५०	६	३	६	५०	४	११	३०	१३	अस्तः शनिः ३११४८
३१	५५	३	बु.	३७	१४	उ.	२५	५१	गू.	२७	४७	व.	६	१०	१४	३०	१५	मी.			६	४	६	४९	४	१२	२८	९	भ. ६।१० उ. ३७।१४ या.पूर्वफा.रविः ५३।३९।कज्जली ३
३१	५०	४	गु.	४०	२७	रे.	३०	२५	गं.	२७	४०	व.	८	५०	१५	३१	१६	मे.	३०	२५	६	४	६	४७	४	१३	२५	८	विशा. भौमः ३८।४ श्रीगणेश ४व्र.
३१	४५	५	शु.	४४	४०	अ.	३५	५६	वृ.	२८	२०	कौ.	१२	३३	१६	१	१७	मे.			६	५	६	४६	४	१४	२४	१०	सितंबर १ ता० ३०
३१	४१	६	श.	४९	२८	भ.	४२	७	ध्रु.	२९	३२	ग.	१७	४	१७	२	१८	वृ.	५८	४५	६	६	६	४५	४	१५	२२	१३	भ. ४९।२ ८उ. चन्दनषष्ठी व्र. चन्द्रोदय रेलवे घं. ९।४८
३१	३६	७	र.	५४	३६	कृ.	४८	३८	व्या	३१	४	वि.	२२	२	१८	३	१९	वृ.			६	६	६	४४	४	१६	२०	१७	भ. २२।२ या.
३१	३१	८	चं.	५९	३४	रो.	५५	१	ह.	३२	३६	बा.	२७	५	१९	४	२०	वृ.			६	७	६	४३	४	१७	१८	२२	वक्रीबुधः १०।५७म.सिंहे शुक्रः २८।१६, अगस्त्योदयः १९।४५श्रीकृष्ण *
३१	२६	९	मं.	६०	०	मृ.	६०	०	व.	३३	४८	तै.	३१	४६	२०	५	२१	मि.	२७	५७	६	८	६	४२	४	१८	१६	३०	[* जयन्ती ८व्रत्तम् सर्वेषाम् चन्द्रोदय रेलवेघं. ११ मि. ५
३१	२२	९	बु.	३	५८	मृ.	०	५३	सि.	३४	२८	ग.	३	५८	२१	६	२२	मि.			६	८	६	४०	४	१९	१४	३९	भ. ३५।४३ उ.
३१	१७	१०	गु.	७	२९	आ.	५	५६	व्य.	३४	२०	वि.	७	२९	२२	७	२३	क.	५३	५४	६	८	६	३९	४	२०	१२	५०	भ. ७।२९ या.
३१	१२	११	शु.	९	५३	पु.	९	५३	व.	३३	२०	बा.	९	५३	२३	८	२४	क.			६	९	६	३८	४	२१	११	४	अजा ११ व्र.
३१	७	१२	श.	११	८	पु.	१२	३८	प.	३१	१९	तै.	११	८	२४	९	२५	क.			६	९	६	३६	४	२२	९	२०	प्रदोषव्र. गोवत्स १२
३१	२	१३	र.	११	२	श्ले.	१४	८	शि.	२८	१५	व.	११	२	२५	१०	२६	सिं.	१४	८	६	१०	६	३५	४	२३	७	३८	भ. ११।२ उ. ४०।२२ या. पश्चिमास्तो बुधः ३३।४५
३०	५८	१४	चं.	९	४१	म.	१४	२९	सि.	२४	१३	श.	९	४१	२६	११	२७	सिं.			६	११	६	३४	४	२४	५	५९	
३०	५३	३०	मं.	७	८	पू.	१३	२९	सा.	१९	१९	ना.	७	८	२७	१२	२८	क.	२८	८	६	११	६	३२	४	२५	४	२२	कशोत्पाटिनी ३० ''ॐहुं फट'' इतिमंत्रेण

भाद्रपद कृष्ण ८चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५६३१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	६	५	१०	३	४	११	५
१७	२२	९	८	२९	२८	५	५
१८	११	२०	१५	२५	८	५५	५५
२२	५६	२४	१८	५	२०	२	२
५८	३९	१	७	७३	७	३	३
५	२१	३४	४८	३७	१९	११	११

मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
वि.	[illegible]	ग.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस पक्षमें रुई आदि सफेद वस्तुओं के भावमें तथा सोना शेयरों में मंदी होवे, और लोहा, कथोल, तिल, तेल, उड़द में तेजी होगी। लोहे की कम्पनियों के शेयर तेज रहेंगे। ति. ८ से गेहूं, चणा, विनौला, गुड़, खंड, में मंदी हो। ति. ९ से रुई में कुछ तेजी होकर मंदी हो, उस मंदी में रुई और लाल रंग की वस्तुएं खरीदने से भविष्य में ४ मास के बाद नफा होवे।

ति. १।२।४।६।१२।१३ को खंड वर्षा के योग हैं।

श०वि०—भादोकारी तीजमें उत्तर दिशा प्रदोष। बादल लख सुख मानिये मिटे मिटाया दोष संग्रह करलो अन्नका रुका रहे षट मास। लाभ होय उस माल में कर लेना विश्वास ॥ भादवको दोयज दिना जो ना दीखे चन्द। धान्यसमृद्धि पशु बड़े प्रजामें हो आनन्द ॥ ति. १४ को वर्षा हो तो

भाद्रपद कृष्ण ३० भौमेष्टम् ०।० दिनगणः ५६३९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	६	५	१०	४	४	११	५
२५	२७	६	७	९	२९	५	५
४	३०	३	१६	१७	८	२९	२९
२२	४०	१४	३४	१०	३	३५	३५
५८	४०	४७	७	७४	७	३	३
२३	२०	१४	४	१०	२३	११	११

मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
वि.	[illegible]	श.	म.	[illegible]	[illegible]	[illegible]

प्रजामें रोगभय हो। भाद्रपदमें दही छोड़ना चाहिये। इस अष्टमीको कृष्णकी पूजा और व्रत करनेसे सभी पाप दूर हो जाते हैं। व्रत न रखनेसे दोष लगता है। लिखा भी है कि यदि कोई भी

४५ संवत् २००७ शकः१८७२ भाद्रपदशुक्ल पक्षः१३ — (सितम्बर १९५० ई०) दक्षिणायनम् उत्तरगोलः शरदृतुः

ग्रहदर्शन-मं. सूर्यास्त बाद पश्चिम में दीखेगा। ति. १३ से बुध पूर्व में उदय होगा गु.सूर्यास्त बाद पूर्वमें शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्वमें दीखेगा[]

दि.मा.	ति. वा	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि.	अं.	सु.	चन्द्रः सञ्चारः	सू. उ. रेलवे	सू. अ. रेलवे	नित्य सूर्यस्पष्टः उदयकाले	
३० ४८	१ बु.	३ ३४	उ.	११ ४०	शु.	१३ ३६	व.	३ ३४	२८	१३	२९	क.	६ १२	६ ३१	४ २६ २ ४६	उ.का. रवि.३८।११ चन्द्र दर्शनम् मेला श्री बाबा गुसाईयाणा कुराली
अधम	२ बु.	५५ ३५	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ० ० ०	पू.फा. यांकः१६।३२ वृश्चिके भौम. ४१।३० कलङ्क (पत्थर ४)
३० ४३	३ गु.	५४ ०	ह.	८ ५७	शु.	७ ८	तै.	२६ ३४	२९	१८	१	तु. ३७ १५	६ १३	६ ३०	४ २७ १ १३	जिल्हेज मु १२ हरि तालिका व्रतम् ‖‖ चन्द्रास्त घं८।२७
३० ३८	४ शु.	४८ २०	चि.	५ ३३	ब्र.	[illegible]	व.	२१ १०	३०	१५	२	तु.	६ १३	६ २८	४ २७ ५९ ४३	म.२१।१०उ.४८।२०ध.जन्मोत्सव धर्म मार्तण्ड श्री१०५ बघाट नरेशजी
३० ३३	५ श.	४२ २०	स्वा	[illegible]	वि.	४४ ५९	व.	१५ २०	३१	१६	३	वृ. ४३ ३६	६ १४	६ २७	४ २८ ५८ १६	ऋषि पञ्चमी
३० २९	६ र.	३६ ६	अनु	५३ १९	वै.	३७ १०	कौ.	९ १३	१	१७	४	वृ.	६ १४	६ २६	४ २९ ५६ ५१	सं. कन्यायामर्कः ३।१३ मु. ३० पुण्यं ३।१३ उ. १९।१३या.
३० २४	७ चं.	३० ७	ज्ये.	४९ १४	प्री.	२९ २७	ग.	३ ३	२	१८	५	ध. ४९ १४	६ १४	६ २४	५ ० ५५ २८	म. ३०।७ उ. ५७।१४ या. वक्रोसिंहेबुधः२।८उ. फा. कन्या. शनिः५५।४४
३० १९	८ मं.	२४ २१	मू.	४५ ३०	आ.	२१ ५७	व.	२४ २१	३	१९	६	ध.	६ १४	६ २३	५ १ ५४ ६	श्रीदधीचि जयन्ती []शनि अस्त है।
३० १४	९ बु.	१९ १	पू.	४२ १६	सौ.	१४ ४७	कौ.	१९ १	४	२०	७	म. ५६ ४०	६ १५	६ २२	५ २ ५२ ४५	अनु. भौम; ३४।५५ श्रीचन्द्र ९ (उदासीन सम्प्रदायका महोत्सव)
३० ९	१० गु.	१४ २०	उ.	३९ ५३	शो.	८ ११	ग.	१४ २०	५	२१	८	म.	६ १६	६ २०	५ ३ ५१ २६	म. ४२।२५ उ. वक्री. पू.फा. बुध ५४।१८
३० ४	११ शु.	१० ३१	श्र.	३८ १७	अ.	[illegible]	वि.	१० ३१	६	२२	९	म.	६ १७	६ १९	५ ४ ५० १०	म. १०।३१ या. पद्मा ११. व्र.
३० ०	१२ श.	७ ४३	ध.	३७ ४३	धृ.	५२ ४४	बा.	७ ४३	७	२३	१०	कुं. ८ ५	६ १७	६ १८	५ ५ ४९ ०	सा. तुला. भानुः २३।० प्रबोधव्र.श्रीवामन १२ मेला अंबाला व पटियाला
२९ ५५	१३ र.	६ १	श.	३८ २२	शू.	४९ २५	तै.	६ १	८	२४	११	कुं.	६ १८	६ १६	५ ६ ४७ ५१	पूर्वोदयो बुधः५९।४६
२९ ५०	१४ चं.	५ ३२	पू.	४० १५	ग.	४७ ३	व.	५ ३२	९	२५	१२	मी. २४ ४७	६ १९	६ १५	५ ७ ४६ ४३	म. ५।३२ उ. ३५।५७ या श्री अनन्त १४ व्र. मेला छपार
२९ ४६	१५ मं.	६ २३	उ.	४३ २६	वृ.	४५ ४६	ब	६ २३	१०	२६	१३	मी.	६ २०	६ १३	५ ८ ४५ ३७	मार्गीबुधः ४५।५२ उ.फा. या शुक्रः १।५४ प्रौष्ठपदी श्राद्धम् सत्य व्र.

भाद्रपद शुक्ल ८ भौमइष्टम् ०।० दिनगणः ५६४६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	७	४	१०	४	५	११	५
१	२	२९	६	१७	०	५	५
५४	१५	१	३०	५६	०	७	७
६	११	१	१२	२०	३२	१८	१८
५८	४०	६१	६	७४	७	३	३
३८	५१	९	१७	१३	३०	११	११
	मा.	व.	ध.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.

७ सू. बु. ५ शु. ६ श. के. ४ ८ मं. चं. ३ ९ रा. १२ १० २ बृ. ११ १

इस पक्षमें घृत, रूई, सरसों, उड़द, अलशी, तेजरहे। चांदीमें घटा बढ़ी होकर तेजी हो, प्रायः प्रत्येक धातुओं के भावमें तेजी रहे गी। खण्ड, गुड़में घटा बढ़ी होकर मन्दा रहे। छठ रवि वारी है अन्नतेज यहां तिल, माश मूंगी, के योग भविष्य में तेजी कारक हैं। बंगाल गुजरात में जल हानि हो। पक्षके अंतमें व्यापारमें विशेष घटा बढ़ी होगी तेजी या मंदीका लाभ पहले ही लेलेना।

ति. ९ से १४ तक वर्षाके अच्छे योग हैं किसानों को कष्ट भी होगा।

दा० वि–भाद्रों मासमें जानिये विशाखा चित्रा स्वात। ये नक्षत्र बर्षे नहीं वर्षा का अपघात ॥ भादों सुदी की पूर्णिमा बादल बिजली गाज। बादल चन्दा ऊगसी पल्वी बेचो नाज ॥ जो चन्दा निर्मल उगे घन ना बिजली होय। गेहूँ जौ संचय करो लाभ सवाया होय ॥

भाद्रपद शुक्ल १५ भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ५६५३

सू.शु. ५ ७ के. सू. ६ श. ८मं. ४ ९ ३ १० रा.१२चं. २ ११ बृ.११ १

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	७	४	१०	४	५	११	५
८	७	२५	५	२९	०	४	४
४५	४	०	४९	३७	५२	४५	४५
२७	३०	११	३४	३९	४४	२	२
५८	४१	१३	५	७४	७	३	३
५४	३१	२६	२४	२७	३४	११	११
	मा.	व.	ध.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
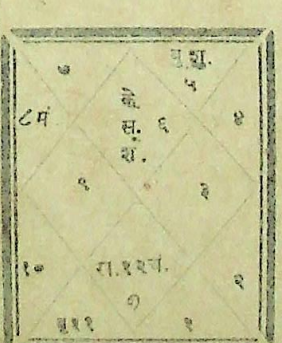
भाद्रपद शुक्ला ४ को चन्द्रदर्शन करने से झूठा कलंक लगता है। अतः इस दिन चन्द्र का दर्शन न करे और यदि भूल-चूकसे हो जाये तो "ॐसिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारकारोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः ॥ इस मन्त्र को पूर्व अथवा उत्तर की तरफ मुँह करके जपनेसे दोष का परिहार हो जाता है।

दि.मा.		ति.	वा.	घ.प.		न.	घ.प.		यो.	घ.प.		क.	घ.प.		हि.	अं.	मु.	चन्द्रः सञ्चार			सू.उ. रेलवे		सू.अ. रेलवे		नित्य सूर्यस्पष्टः उदय-काले			
२९	४२	१	बु.	८	३२	रे.	४७	४३	ध्रु.	४५	१८	कौ	८	३२	११	२७	१४	मे.	४७	४३	६	२१	६	१२	५	९	४४	३२
२९	३७	२	गु.	११	४९	अ.	५३	३	व्या	४५	४४	ग.	११	४९	१२	२८	१५	मे.			६	२१	६	११	५	१०	४३	२९
२९	३२	३	शु.	१६	३	भ.	५९	६	ह.	४६	४५	वि.	१६	३	१३	२९	१६	मे.			६	२२	६	१०	५	११	४२	३१
२९	२८	४	श.	२०	५७	कृ.	६०	०	व.	४८	१०	बा.	२०	५७	१४	३०	१७	वृ.	१५	४३	६	२३	६	९	५	१२	४१	३५
२९	२३	५	र.	२६	११	कृ.	५	३६	सि.	४९	३९	तै.	२६	११	१५	१	१८	वृ.			६	२३	६	८	५	१३	४०	४०
२९	१९	६	चं.	३१	१५	रो.	१२	३	व्य.	५०	५४	व.	३१	१५	१६	२	१९	मि.	४५	३	६	२४	६	६	५	१४	३९	४६
२९	१५	७	मं.	३५	४३	मृ.	१८	४	व.	५१	४०	वि.	३	२९	१७	३	२०	मि.			६	२४	६	५	५	१५	३८	५५
२९	१०	८	बु.	३९	२२	आ.	२३	२३	प.	५१	४१	बा	७	३३	१८	४	२१	मि.			६	२४	६	४	५	१६	३८	७
२९	५	९	गु.	४१	५१	पु.	२७	३५	शि.	५०	५१	तै.	१०	३६	१९	५	२२	क.	११	३२	६	२५	६	३	५	१७	३७	२२
२९	१	१०	शु.	४३	९	पु	३०	४२	सि.	४९	२	व.	१२	३०	२०	६	२३	क.			६	२६	६	१	५	१८	३६	३९
२८	५७	११	श.	४३	१०	श्ले	३२	३१	सा.	४६	१३	ब.	१३	१०	२१	७	२४	सि.	३२	३१	६	२७	६	०	५	१९	३५	५८
२८	५२	१२	र.	४१	५६	म.	३३	१६	शु.	४२	२४	कौ.	१२	३३	२२	८	२५	सि.			६	२७	६	०	५	२०	३५	२०
२८	४७	१३	चं.	३९	२९	पू.	३२	२८	शु.	३७	३५	ग.	१०	४०	२३	९	२६	कं.	४७	३	६	२८	५	५८	५	२१	३४	४४
२८	४२	१४	मं.	३६	१	उ.	३०	४९	ब्र.	३१	५६	वि.	७	४५	२४	१०	२७	कं.			६	२९	५	५७	५	२२	३४	९
२८	३७	३०	बु.	३१	४१	ह.	२८	२१	ऐं.	२५	३७	च.	३	५१	२५	११	२८	तु.	५६	४४	६	२९	५	५७	५	२३	३३	३६

ग्रहदर्शन—मं० सूर्यास्त बाद पश्चिम क्षितिज पर दीखेगा, बुध शुक्र सूर्योदय पहिले पूर्व में देखें। गुरु सूर्यास्तपूर्वमें ति० ७ से शनि उदय पूर्वमें

हस्ते रविः १५।४५ पितृ पक्ष महालयारम्भः

भ. ४३।५६ उ. कन्याशुक्रः ४३।३०

भ. १६।३ या. श्री गणेश ४ व्र

उ. फायां बुधः १३।० अक्टूबर १० ता. ३१

भ. ३१।१५ उ.

भ.३।२९ या. उदयः शनिः ४५।८

कन्याः बुधः ४३।५०

सौभाग्यवतीनां श्राद्धम्

भ. १२।३० उ. ४३।९ या. हस्ते शुक्रः ४४।३

इन्दिरा ११ सर्वे.

भ. ३९।२९ उ. ज्येष्ठायां भौमः ३४।४३ सोम प्रदोष व्र.

भ. ७।४५ या. चित्रायां रविः ४६।१६ शस्त्राग्नि विषादि हतानां श्राद्धम्

हस्तेबुधः ३८।२७ अज्ञातमृत तिथिनां श्राद्धम् सर्वपितृणां च

आश्विन कृष्ण ८ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ५६६१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	७	४	१०	५	५	११	५
१६	१२	२९	५	६	१	४	४
३८	४१	१०	१२	३५	५१	१९	१९
७	३४	४१	७	१०	४७	३५	३५
५९	४२	६१	४	७४	७	३	३
१२	२४	३०	९	५०	१६	११	११
क्रान्ति	सा.	सा.	व.	सा.	सा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

७ श. बु.५
८ के.सू.शु. ४
मं. ६
चं. ३
९
रा. १२
१० २
गु.११ १

इस पक्षमें रूई मंदी होकर फिर उतनी ही तेजी होइसे चांदोमें घटा बढ़ी होकर तेजी होवे, घी, तेल, गुड़ खंड, मूंगफली विनौलामें मंदी होवे, चावल गेहूँ, जौ, चणामें तेजी होवे। कहीं अतिवृष्टी कहीं अनावृष्टी से खेतियों को हानि पहुंचे। ति.८को रूईमें १. टका मंदा हो, पश्चिमी यूरोपमें दुर्भिक्ष तथा भारतमें किसी नेताको एक्सीडेण्ट (दुर्घटना) का खतरा।

ति.१ से ४ तथा ७ से १२ तक कहीं २ वर्षाके योग हैं।

श-वि.दशमी और एकादशीऔरद्वादशी जान। घन गर्जे बिजली खीवे तेज पिछान ॥

आश्विनमें बुध वर्जित है। श्राद्ध समय निर्णय-एकोद्दिष्ट श्राद्ध मध्यान्हमें, वृद्धिनिमित्तक प्रातःकाल

आश्विन कृष्ण ३० बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ५६६८

७ ५
मं.८ बु.के.चं. सू.शु. श. ४
९ ६
१० १२ रा. २
गु ११ १

सू.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
५	७	५	१०	५	५	११	५
२३	१७	८	४	१५	२	३	३
३३	४१	५७	४८	१९	४२	५७	५७
३६	१७	४	५८	२४	३६	१९	१९
५९	४३	८६	९	७५	७	३	३
२७	१३	०	३२	४	१२	११	११
क्रान्ति	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

में वैदिक पूर्वाह्नमें, और पार्वणश्राद्ध अपराह्नमें करना चाहिए। दिनमानके पांच भाग करने पर पहिले भागको प्रातः, द्वितीय को संगव, तीसरेको मध्यान्ह, चौथेको अपराण्ह और

४७ सम्वत् २००७ शकः १८७२आश्विन शुक्ल पक्ष १५ ... (...१९५०ई.)दक्षिणायनगोलेशरदृतु:सा.वृश्चिक.हेमन्तर्तु:

४७ सम्वत् २००७ शकः १८७२ आश्विन शुक्ल पक्ष १५ (अक्टूबर १९५० ई.) दक्षिणायनगोलेशरदृतुः सा. वृश्चिक. हेमन्ततुः

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्रः सञ्चारः			सू. उ. रेलवे		सू. अ. रेलवे		नित्यसूर्य स्पष्ट उदय काले			
२८	३२	१	गु.	२६	३८	चि.	२५	७	वै.	१८	४१	ब.	२६	३८	२६	१२	२१	तु.			६	२९	५	५६	५	२४	३३	६
२८	२८	२	शु.	२१	३	स्वा	२१	२२	वि.	११	१५	कौ.	२१	३	२७	१३	३०	तु.			६	३०	५	५५	५	२५	३२	३९
२८	२३	३	श.	१५	८	वि.	१७	१७	प्री.	३	५५	ग.	१५	८	२८	१४	१	वृ.	३	२१	६	३१	५	५३	५	२६	३२	१४
२८	१९	४	र.	८	५८	अनु.	१३	३	सौ.	४७	५४	वि.	८	५८	२९	१५	२	वृ.			६	३२	५	५२	५	२७	३१	५१
२८	१४	५	चं.	३	४	ज्ये	८	५६	शो.	४०	१५	बा.	३	४	३०	१६	३	ध.	८	५६	६	३३	५	५०	५	२८	३१	३०
अवम्		६	चं.	१४	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	९	७	मं.	५२	७	मू.	५	६	अ.	३२	५६	ग.	२४	४४	१	१७	४	ध.			६	३३	५	४८	५	२९	३१	११
२८	५	८	बु.	४७	३०	पू.	५	४६	सु.	२६	५	वि.	१९	४८	२	१८	५	म.	१६	६	६	३४	५	४७	६	०	३०	५३
२८	०	९	गु.	४३	४४	श्र.	५७	१८	धृ.	१९	५३	बा.	१५	३७	३	१९	६	म.			६	३५	५	४६	६	१	३०	३७
२७	५५	१०	शु.	४०	५८	ध.	५६	२९	शू.	१४	२४	तै.	१२	२१	४	२०	७	कुं.	२६	५३	६	३६	५	४५	६	२	३०	२६
२७	५०	११	श.	३९	२२	श.	५६	५०	गं.	९	४५	व.	१०	०	५	२१	८	कुं.			६	३७	५	४४	६	३	३०	१७
२७	४५	१२	र.	३८	५८	पू.	५८	२५	वृ.	६	३	ब.	९	१०	६	२२	९	मी.	४३	२	६	३७	५	४३	६	४	३०	१०
२७	४१	१३	चं.	३९	५५	उ.	६०	०	ध्रु.	३	२१	कौ.	९	२६	७	२३	१०	मी.			६	३७	५	४२	६	५	३०	५
२७	३६	१४	मं.	४२	१०	उ.	१	१६	व्या	१	४२	ग.	११	२	८	२४	११	मी.			६	३८	५	४१	६	६	३०	२
२७	३२	१५	बु.	४५	३३	रे.	५	१४	ह	०	५३	वि.	१३	५१	९	२५	१२	मे.	५	१४	६	३९	५	४०	६	७	३०	०

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्त बाद पश्चिम में और गुरुपूर्वमें दीखेगा। ति ३ से बुध. ति. १४से शुक्रपूर्वमें अस्तहोगा। शनि सूर्योदयसे पहिलेपूर्वमें दिखेगा।

मातामह श्राद्धम्, शारद नवरात्रा- () चन्द्र दर्शनम्, ()रम्भः घटस्था. भ. ४२।३ उ. पूर्वास्तोबुधः३।१८, मोह [] भ. ८।५८ या. उ.फायां३शनिः१७।१३मेला भाई सर- []

||||| लिये ब्राह्मणी, युद्धके लिये क्षत्रिया, धनके लिये वैश्य। सुख के लिये शूद्रा और दारुण कार्य सिद्धिके लिये अंत्यज कन्याकी विधिपूर्वक पूजा करे।

पू. ५।६ उ. चित्रा. शुक्रः २४।२५ []रंभ मु. १ सन् १३७० हिजरी, भ. ५२।७उ.,सं. तुलायामर्कः २८।५८मु. ३० पुण्यं १३।५८ उ. सरस्वती भ. १९।४८ या. श्री दुर्गा८ मेला श्रीज्वालामुखी व तारादेवी सरस्वती * चित्रा.बुधः२९।३२सरस्वती विसर्जनम् []खाना सरस्वत्यावाहन(मूलाद्यपादे) बौद्ध जयन्ती विजया १० मेला दशहरा ४१।१३ शु. पू. अ. भ. १०।१० उ. ३९।२२ या पापाङ्कुशा ११ व्र० सर्वे. * बलिदानम् तुलायां शुक्रः ४३।५६. पू. भायां ४ राहुः उ. फायां २ केतुः ४३।५९ सा. वृश्चिके भानुः ४१।२६ हेमन्ततुः प्रा. तुलायां बुधः २२।४२प्रदोषव्र. भ. ४२।१० उ. स्वात्यां रविः ९।५९, मार्गी गुरुः ४०।० शुक्रास्त पूर्वे भ. १३।५१ या. शरत् १५ आकाश दीप दानं का.स्ना. प्रा. को जागरी व्र.

आश्विन शुक्ल ८ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ५६७५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	५	१०	५	५	११	५
०	२२	२०	४	२४	३	३	३
३०	४५	४५	३४	४	३१	३५	३५
५३	३२	४३	५९	१२	५५	३	३
५९	४३	१०३	१	७४	६	३	३
६२	३४	१९	२३	५९	५७	११	११
मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	
उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

८ मं.
बु.श.६ के.
शु.
चं.९
सू.
७
५
१०
४
गु.
११
३
१
रा.१२
२
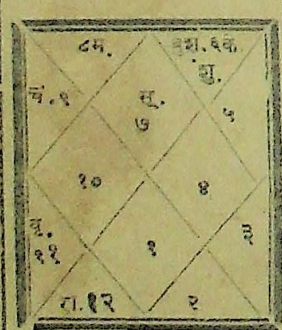
इस पक्षमें रूईके भावमें काफी घटा बढ़ी चलेगी, पश्चात्से रूई मंदी सुवर्णमें तेजी, चांदीमें घटा बढ़ी होकर२या २॥ की तेजी रहे,गेहूं,चावल, अलशीमें तेजी हो,खांड़,गुड़, में१ या२ तेज,गौ,बैल,भैंसका भाव सस्ताई पर रहेगा। पक्ष के अंत में अलसी सरसों मूंगफली मंदा कहीं फिसाद टंटेका तथा चोर का भय हो, स्त्रियों को पीड़ा, दक्षिण भारतमें कोई उत्पात हो।

ति. ३।७।८।१४।१५कोकहीं२बादलश्वेत रंगके दीखेंगे

श०वि०—साते आठे क्वार सुदी जो वर्षा हो जाय।
राज प्रजा दोनों सुखी सब संशय मिट जाय॥ १॥
आसोज मासमें जानिये बादल पर्वतकार। बर्षा उसी
दिन होयगी ऐसा योग विचार॥ २॥

आश्विन शुक्ला १ को वैधृति और चित्राके प्रथम

आश्विनी शुक्ल १५ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ५६८२

म.८
के.श.६
९
शु.बु.सू.
७
५
१०
४
११
गु.
चं.
३
१
रा.१२
२
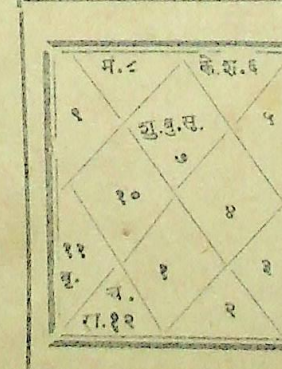
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	६	१०	६	५	११	५
७	२७	२	४	२	४	३	३
३०	५२	४५	३०	५०	१९	१२	१२
०	४८	३२	३६	४२	४४	४७	४७
५९	४४	१०१	०	७५	६	३	३
५८	१३	५६	७	१८	५०	११	११
मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व	व.	
उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पादको छोड़कर कुम्भ स्थापन करे। कन्या पूजन विधि प्रत्येक दिन एक २ कन्याकी पूजा करे, अथवा ९।९ की, या प्रति दिन एक २ बढ़ावे, अथवा द्विगुण या त्रिगुणित बढ़ाता जावे। नित्य नौ कन्याओंकी पूजा करनेसे भूमि और द्विगुणित करनेसे ऐश्वर्यकी प्राप्ति होती है। एक वर्षकी कन्याका पूजन न करे। और भी विशेष नियम हैं कि सर्व कार्योंकी सिद्धिके |||||

संवत् २००७ शकः १८७२ कार्तिक कृष्ण पक्ष १६ (अक्टू.नवं.१९५०ई०) दक्षिणायन गोलो हेमन्तर्तुः। शुक्रास्तः।

दि. मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हिं.	अं.	मु.	चन्द्रः सञ्चारः			सू. उ. रेलवे		सू. अ. रेलवे		नित्यसूर्य स्पष्टः उदय काल			
२७	२८	१	बु.	४९	५३	अ.	१०	२२	व.	१	२	बा.	१७	४३	१०	२६	१३	भे.			६	४०	५	३९	६	८	३०	२
२७	२४	२	गु.	५४	५४	भ.	१६	१५	सि.	१	४८	तै.	२२	२३	११	२७	१४	वृ.	३२	५१	६	४०	५	३८	६	९	३०	६
२७	२१	३	शु.	६०	०	कृ.	२२	३९	व्य.	३	४	व.	२७	३४	१२	२८	१५	वृ.			६	४१	५	३७	६	१०	३०	१२
२७	१७	३	श.	०	१४	रो.	२९	११	व.	४	३०	वि.	०	१४	१३	२९	१६	वृ.			६	४२	५	३७	६	११	३०	१९
२७	१३	४	चं.	५	२२	मृ.	३५	१९	प.	५	४७	बा.	५	२२	१४	३०	१७	मि.	२	१५	६	४२	५	३६	६	१२	३०	२८
२७	९	५	मं.	९	५६	आ.	४०	४९	शि.	६	३८	तै.	९	५६	१५	३१	१८	मि.			६	४३	५	३५	६	१३	३०	४०
२७	५	६	बु.	१३	४०	पुन.	४५	१९	सि.	६	५१	व.	१३	४०	१६	१	१९	क.	२९	११	६	४४	५	३४	६	१४	३०	५४
२७	२	७	गु.	१६	१२	पु.	४८	४४	सा.	६	१०	ब.	१६	१२	१७	२	२०	क.			६	४४	५	३३	६	१५	३१	११
२६	५८	८	शु.	१७	३४	श्ले	५०	४९	शु.	५	३८	कौ.	१७	३७	१८	३	२१	सिं.	५०	४९	६	४६	५	३२	६	१६	३१	३०
२६	५४	९	श.	१७	३६	म.	५१	४१	शु.	५८	२३	ग.	१७	३६	१९	४	२२	सिं.			६	४७	५	३१	६	१७	३१	५१
२६	५०	१०	र.	१६	२४	पू.	५१	२१	ऐं.	५३	४५	वि.	१६	२४	२०	५	२३	सिं.			६	४८	५	३१	६	१८	३२	१३
२६	४६	११	चं.	१४	१	उ.	४९	५५	वै.	४८	२०	बा.	१४	१	२१	६	२४	क.	६	०	६	४९	५	३०	६	१९	३२	३७
२६	४३	१२	मं.	१०	३६	ह.	४७	३९	वि.	४२	९	तै.	१०	३६	२२	७	२५	क.			६	५०	५	२९	६	२०	३३	३
२६	३९	१३	बु.	६	२०	चि.	४४	३४	प्री.	३५	२१	व.	६	२०	२३	८	२६	तु.	१६	७	६	२१	५	२८	६	२१	३३	३१
२६	३५	१४	गु.	१	२१	स्वा	४१	०	आ.	२८	१	श.	१	२१	२४	९	२७	तु.			६	५१	५	२८	६	२२	३४	०
अवम्		३०	गु.	५४	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

ग्रहदर्शन—बुध, शुक्र अस्त है। मं. सूर्यास्त बाद पश्चिममें और गुरु पूर्व में दीखेगा। शनि सूर्योदयसे पहिले पूर्वमें दीखेगा।

स्वात्यां बुधः १८।५१, मूलेधनुषिच भौमः ५२।२५,
भ. २७।३४ उ. स्वात्यां शुक्रः २।४९
भ. ०।१४ या. करक ४ व्र. (करवा ४) चन्द्रोदय घं. ७।४३

भ. १३।४० उ. ४४।५६ या., नवम्बर ११ ता० ३०
अहोई ८ (सायंकाल व्यापिनी होनेसे)

"अद्येत्यादि...त्वर्थम् अमुक तीर्थे कार्तिकस्नानमहं करिष्ये।"

भ. ४७।० उ., विशा. बुधः २३।५४
भ. १६।२४ या., (* दिनरात्री गतेगुरो सूर्योदयात्प्रागेव चन्द्रोदये स्नानादि
विशा. रविः २७।११ रमा ११ व्र. स. मध्यान्होत्तरे गोवत्स पूजनम्
विशा. शुक्रः ३९।४८ प्रदोष व्र. धन १३ यमायदीपदानम्
भ.६।२० उ.३३।५०या., श्रीहनुमज्जन्म दिनं नरकहरा १४ रूप१४बुधे (
श्रीमहालक्ष्मी पू. दीप माला शेष रात्रो दारिद्रय निस्सारणम् (समस्त *

कार्तिककृष्ण ८ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५६९१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	८	६	१०	६	५	११	५
१६	४	१७	४	१४	५	२	२
३१	३३	४३	४०	८	१७	४४	४४
३०	०	४४	२६	१७	४२	१०	१०
६०	४४	९७	१	७५	६	३	३
१९	३१	५५	४४	२२	६	११	११
सौरमा.	सा.	सा.	सा.	सा.	सा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

के.श.६ ८ ७ मं.९ बु.शु.सू. ५ १० चं.४ गु.११ १ ३ रा.१२ २

इस पक्षके प्रारम्भ में अलसी, सरसों, चावल,और तमाखूके भावमें तेजी आवे, रूईमें मंदी, चांदी,में विशेष घटा बढ़ी होकर तेजी होवे, सुवर्ण, तांबा, पितल, जिस्त तेज हों। तृतीयाके अनन्तर रूईमें खासी उथल पुथल होकर आखीर तेजी ही रहेगी। और बिनौला, वस्त्र, लकड़ी चौपाया पशु, इनके भाव भी तेज हों, यहां अमावसका क्षय और चतुर्ग्रही योग है, जो किसी जगह उत्पातसे हानी और किसी महाराज्याधिकारी को दुःखसे खतरा करेगा सावधान,

ति. २१३।७८ को उत्तर में मेघ दर्शन तथा कहीं बिजली व मेघ गर्जन होगा।

शकुन विचार—कार्तिक बदी दोयज दिना और तीजको जान। इसदिन वर्षा होय तो आगे वर्षा मान॥

कार्तिक कृष्ण १४ गुरा चिष्टम् ०।० दिनगणः ५६९७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	८	६	१०	६	५	११	५
२२	९	२७	४	२१	५	२	२
३४	२	२३	५५	४०	५४	२५	२५
०	४६	४६	४४	४८	४	४	४
६०	४५	९५	३	७५	५	३	३
२९	८	३२	०	२५	५७	११	११
सौरमा.	सा.	सा.	सा.	सा.	सा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श.६ के. ८ शु. ९मं. सू.बु.चं. ५ १० ७ ४ गु.११ १ ३ रा.१२ २

कार्तिक बदी एकादशी वर्षा बादल होय। ... वर्षा अधिक ...

४९ संवत् २००७ शकः १८७२ कार्तिकशुक्ल पक्षः १७ ... नित्य सूर्यस्पष्टः (नवम्बर १९५० ई०) दक्षिणायनगोलो हेमन्ततुः शुक्रास्तः

१९ सम्वत् २००७ शकः १८७२ कार्तिकशुक्ल पक्षः ... ई०) दक्षिणायनगोलौ हेमन्ततुः शुक्रास्तः

दि.मा.	ते.वा.	घ.प.	न.	घ.प.	यो.	घ.प.	क.	घ.प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सञ्चारः	रेलवे	रेलवे	उदयकाले
२६ ३१	१ शु.	४९ ५७	वि.	३६ ५४	सौ.	२० २०	कि.	२२ ५३	२५	१०	२८	वृ. २२ ५८	६ ५१	५ २७	६ २३ ३४ ३०
२६ २७	२ श.	४३ ५६	अनु.	३२ ४१	शो.	१२ ३१	बा.	१६ ५७	२६	११	२९	वृ.	६ ५२	५ २७	६ २४ ३५ १
२६ २४	३ र.	३८ ४	ज्ये.	२८ ३२	अ.	[illegible]	तै.	११ ०	२७	१२	१	ध. २८ ३२	६ ५३	५ २६	६ २५ ३५ ३४
२६ २०	४ चं.	३२ २८	मू.	२४ ३६	वृ.	४१ १९	व.	५ १६	२८	१३	२	ध.	६ ५४	५ २५	६ २६ ३६ १०
२६ १६	५ मं.	२७ १८	पू.	२१ ६	ध्रु.	४२ १६	बा.	२७ १८	२९	१४	३	म. ३५ २३	६ ५४	५ २४	६ २७ ३६ ४८
२६ १२	६ बु.	२२ ४७	उ.	१८ १५	गं.	३५ ४८	तै.	२२ ४७	३०	१५	४	म.	६ ५५	५ २४	६ २८ ३७ २७
२६ ८	७ गु.	१९ ७	श्र.	१६ १५	वृ.	३० १	व.	१९ ७	१	१६	५	कुं. ४५ ४२	६ ५६	५ २४	६ २९ ३८ ८
२६ ५	८ शु.	१६ २७	ध.	१५ ९	ध्रु.	२५ ३	व.	१६ २७	२	१७	६	कु.	६ ५८	५ २३	७ ० ३८ ५०
२६ १	९ श.	१४ ५७	श.	१५ ११	व्या.	२० ५८	कौ.	१४ ५७	३	१८	७	कु.	६ ५९	५ २२	७ १ ३९ ३४
२५ ५७	१० र.	१४ ३८	पू.	१६ २५	ह.	१७ ५४	ग.	१४ ३८	४	१९	८	मी. १ ६	७ ०	५ २१	७ २ ४० २१
२५ ५३	११ चं.	१५ ४३	उ.	१८ ५८	व.	१५ ४९	वि.	१५ ४३	५	२०	९	मी.	७ १	५ २१	७ ३ ४१ ९
२५ ४९	१२ मं.	१८ ५	रे.	२२ ४२	सि.	१४ ४४	बा.	१८ ५	६	२१	१०	मे. २२ ४२	७ २	५ २१	७ ४ ४१ ५९
२५ ४६	१३ बु.	२१ ३५	अ.	२७ ३६	व.	१४ ३३	तै.	२१ ३५	७	२२	११	मे.	७ २	५ २१	७ ५ ४२ ५२
२५ ४३	१४ गु.	२६ ४	भ.	३३ १८	व्य.	१५ ७	व.	२६ ४	८	२३	१२	वृ. ४९ ५३	७ ३	५ २०	७ ६ ४३ ४६
२५ ४०	१५ शु.	३१ ११	कृ.	३९ ३८	प.	१६ १०	व.	३१ ११	९	२४	१३	वृ.	७ ३	५ २०	७ ७ ४४ ४२

ग्रहदर्शन—बुधशुक्र अस्त हैं । मं. सूर्यास्त पीछे पश्चिममें और गुरु खमध्य के समीपमें दिखाई देंगे । शनि सूर्योदयसे पहिले पूर्वमें देखें ।

वृश्चिके बुधः ३८।१८ अन्नकूट गोवर्द्धन पू. वष्टिका कर्षणं (रस्साकशी चन्द्रदर्शनम् भाई दूज यम २शारदा कलमदवात पू. बलराज (रथकाराणाम)

अनु. बुधः ४५।४ सफर मु २
भ. ५।१६ उ. ३२।२८ या.
पू. षाढ़ां भौमः ३९।५२
वृश्चिके शुक्रः ३७।११

विष्णुकी पूजा करनेसे बड़ा भारी पुण्य होता है, क्योंकि सभी देव ऋषि यज्ञ और तीर्थोंका आंवलेके नीचे निवास होता है ।

भ. १९।७उ. ४७।४७ या. सं. वृश्चिकेऽर्कः २१।३७मु. ३० पुण्यं ५।३७ उ.*
उ.षाढ़ां. ४ शनिः ११।४६ (* गोपाष्टमी (सायंकाल व्यापिनी होनेसे)
अनु. शुक्रः १६।५ अक्षय ९ स्वर्ण गर्भकूष्माण्ड दानम् परिक्रमा ९
भ. ४५।१० उ. अनु. रविः ३९।८
भ. १५।४३ या. प्रबोधिनी ११ व्र. सर्वे. भीष्म पंचकारम्भः
ज्येष्ठा बुधः २१।१४ मन्वादिः भौम प्रदोष व्र.
सा. धनुषि भानुः २८।७ वैकुण्ठ १४ व्र. (निशीथ व्यापिनी होली है)
भ. २६।४ उ. ५८।३७ या. राज मेला रामतीर्थ का.स्ना.स. सत्य व्र.
पश्चिमोदयो बुधः ४२।७ श्री गुरु नानक देव जयन्ती, मेला श्री पुष्कर

कार्तिक शुक्ल ८ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५७०५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	८	७	१०	७	५	११	५
०	१५	९	५	१	६	१	१
३८	६	५७	२७	४४	३९	५९	५९
५०	२५	३६	११	६	०	३७	३७
६०	४५	९३	४	७५	५	३	३
४२	५०	७	३४	२२	७	११	११

सौरपरण	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध. ४	वि. ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]
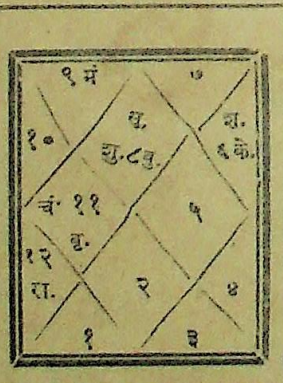
इस पक्षमें प्रजामें सुख शान्ति अग्नि होत्र आदि यज्ञ बहुत हों, रुई चांदीके भावमें घटा बढ़ी होकर तेजी होवे, घी तेल, और चौपाया पशु मंहगे हों, लाख चपड़ा, रेशम, जूट मन्दा होगा, रक्त वर्णके पदार्थ रक्त चन्दन, लाल मिर्च, नारियल, जायफल, तेज रहें । ऊनी, वस्त्र, तथा रेशमी, इस पक्षमें तेज रहकर आगे सस्ते हो जायेंगे । गुड़ खंड कुछ मन्दे, अनाजके भावमें घटा बढ़ी होकर रुख मजबूत रहेगा। दक्षिण प्रदेशकी प्रजाको भय होगा।

ति. १३ से १५ तक कहीं २ बूंदा बांदी व हवा जोरकी चलेगी ।

श.वि. कार्तिकसुदी एकादशी बादल वर्षा होय। चार मास वर्षा अधिक संशय करो न कोय ।। कार्तिक शुक्ल ११ कहिये देव उठान । जितनी घड़ियां होंयगी आधा सेरा

कार्तिक शुक्ल १५ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५७१२
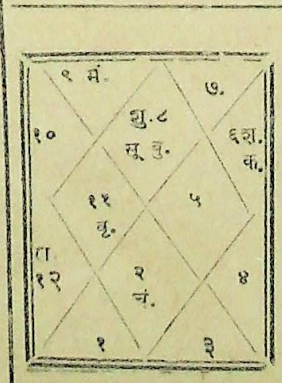
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	८	७	१०	७	५	११	५
७	२०	२०	६	१०	७	१	१
४४	२७	४१	४	३२	१४	३७	३७
४२	१४	३१	२	३८	४९	२१	२१
६०	४६	९०	५	७५	४	३	३
५६	१	४३	४९	३२	५९	११	११

सौरपरण	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	०.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	ज्ये. २	ध. ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

९ मं. ७. शु.८ सू. बु. १० ६श. के. ११ बृ. ५ रा. १२ २ चं. ४ १ ३

धान ।। ति. १ को सूर्य को कुंडल पडें तो तिल तेल तेज हो । भाईदूजके दिन अपनी बहनके घर जाकर वहीं पर उसके हाथसे प्रेमपूर्वक भोजन करें और उसे यथा शक्ति अनेक प्रकारके दान देवे । कार्तिक मासमें आंवलेके नीचे ब्राह्मणोंको भोजन करावे और बादमें आप भी उसी वृक्षके नीचे भोजन करे आंवलेकी छायामें श्राद्ध और उसके पत्र फलोंसे

५० सम्वत् २००७ शकः १८७२ मार्गशीर्षकृष्ण पक्षः १८ (नवं०दिसं० १९५०ई०)दक्षिणायनगोलौ हेमन्तर्तुःशुक्रास्तः

बि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्रः सञ्चारः	घ.	प.	सू. उ. रेलवे		सू. अ. रेलवे		नित्यसूर्य स्पष्टः उदय-काले			
२५	३९	१	श.	३६	३५	रो.	४६	९	शि.	१७	३२	बा.	३	५३	१०	२५	१४	वृ.			७	४	५	२०	७	८	४५	३९
२५	३७	२	र.	४१	४९	मृ.	५२	२८	सि.	१८	४९	तै.	९	१२	११	२६	१५	मि.	१९	१८	७	५	५	२०	७	९	४६	३८
२५	३५	३	चं.	४६	२६	आ.	५८	८	सा.	१९	४८	व.	१४	७	१२	२७	१६	मि.			७	५	५	२०	७	१०	४७	३७
२५	३४	४	मं.	५०	१०	पु.	६०	०	शु.	२०	१३	ब.	१८	१८	१३	२८	१७	क.	४६	४३	७	६	५	२०	७	११	४८	३७
२५	३२	५	बु.	५२	४४	पुन	२	५५	शु.	१९	४५	कौ.	२१	२७	१४	२९	१८	क.			७	७	५	२०	७	१२	४९	३९
२५	३०	६	गु.	५४	८	पु.	६	३६	ब्र.	१८	२८	ग.	२३	२६	१५	३०	१९	क.			७	७	५	२०	७	१३	५०	४३
२५	२८	७	शु.	५४	१०	श्ले.	९	३	ऐं.	१६	८	वि.	२४	९	१६	१	२०	सिं.	९	३	७	८	५	२०	७	१४	५१	४८
२५	२६	८	श.	५२	५७	म.	१०	११	वै.	१२	४८	बा.	२३	३३	१७	२	२१	सिं.			७	९	५	२०	७	१५	५२	५४
२५	२५	९	र.	५०	३२	पू.	१०	१०	वि.	८	२९	तै.	२१	४४	१८	३	२२	कं.	२४	५२	७	१०	५	२०	७	१६	५४	०
२५	२३	१०	चं.	४७	७	उ.	८	५७	प्री.	[illegible]	[illegible]	व.	१८	४९	१९	४	२३	कं.			७	११	५	२०	७	१७	५५	८
२५	२१	११	मं.	४२	५१	ह.	६	५६	सौ.	५०	४२	ब	१४	५९	२०	५	२४	तु.	३५	२८	७	११	५	२०	७	१८	५६	१७
२५	१९	१२	बु.	३७	५५	चि.	४	०	शो.	४३	२९	कौ.	१०	२३	२१	६	२५	तु.			७	११	५	२०	७	१९	५७	२८
२२	१८	१३	गु.	३२	२६	स्व.	[illegible]	[illegible]	अ.	३५	५४	ग.	५	१०	२२	७	२६	वृ.	४२	३१	७	१२	५	२०	७	२०	५८	३९
२५	१६	१४	शु.	२६	३८	अनु	५२	२२	सु.	२८	६	श.	२६	३८	२३	८	२७	वृ.			७	१३	५	२०	७	२१	५९	५२
२५	१५	३०	श.	२०	४३	ज्ये	४८	९	धृ.	२०	९	ना.	२०	४३	२४	९	२८	ध.	४८	९	७	१४	५	२०	७	२३	१	६

ग्रहदर्शन—मं.बु. सूर्यास्तबाद पश्चिममें दीखेंगे। गुरु पूर्वरात्रिमें खमध्यसे पश्चिमक्षितिजपर जाते दीखेंगे। शुक्र अस्त है। शनि सूर्योदयसे पहले पूर्वमें

भ. १४।७ उ.४६।२६ या.
ज्येष्ठा. शुक्रः ५१।५० श्रीगणेश ४ व्र.
शत. १ गुरुः ३५।५८
भ. ५४।८ उ.मूले धनुषि बुधः १२।५२
भ. २४।९ या. दिसंबर १२ ता. ३१
ज्येष्ठा.रविः४६।१५ उ. षायां भौमः
३।३७ श्रीमहाकाल भैरव जयन्ती ८
भ. १८।४९ उ. ४७।७ या.
उत्पन्ना ११ व्र. स्मा. वै.
मकरे भौमः २२।४ निम्बा. ११ व्र.
भ. ३२।२६ उ. ५९।६ या. प्रदोष व्र.
सेला पुर मण्डल देविका स्नानम्
पू. षा. बुधः ३८।८ मू. धनुषि शुक्रः २७।२८

[*] व्रत करने की प्रतिज्ञा की हुई हो किन्तु रोग आदि कारणवश उस समय यह व्रत न रख सके तो किसी अपने प्रतिनिधिसे रखा लेवे। व्रतमें पुत्र, पत्नी, भाई, पति पुरोहित और मित्र ये प्रतिनिधि माने गए हैं।

मार्गशीर्ष कृष्ण ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५७२०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	८	८	१०	७	५	११	५
१५	२६	२	६	२०	७	१	१
५२	३७	३७	५६	३६	५०	११	११
५४	१२	३०	४२	४७	५३	५४	५४
६१	४६	८७	३	७५	४	३	३
६	१६	५८	५८	२९	९	११	११
सौम्य	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ४	[illegible]	मू. १	श. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
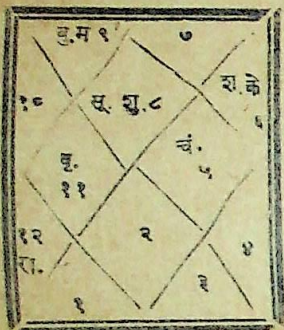
इस पक्षमें रूई और शेयरोंके भावमें मंदी होगी, चावल, चांदी, सुपारी, तमाखू, बस्त्र, चन्दन, केशर, बिनौला, सरसों, ताम्बा सिक्का, लालमिर्च, तेज। गेहूं, जौ, चणा, के भावमें घटा बढी बहुत हो, आश्विन शुदी में जो भाव होगा उससे विपरीत यहां पक्ष के प्रारम्भमें होगा। ति. ८ से अनाज, घी, तेल, उड़द, के भावमें तेजीका असर रहेगा। ति. ११ से रूई, सोना, चांदी, घी, तेल, अलशी, ऊन, इनमें तेजी चलेगी। प्रजामें कहीं विग्रह होगा।

ति. ५।७।१२।१३ को कहीं २ बूंदा बांदी या मेघोदय होगा।

श० वि०—ति. १४।३० को सूर्य बादलोंसे ढंका रहे तो तृण धान्य महंगा होवे। मंगशिर की तिथि सप्तमी नवमी

मार्गशीर्ष कृष्ण ३० शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५७२७
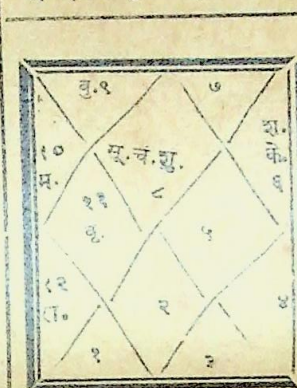
सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	९	८	१०	७	५	११	५
२३	२	१२	७	२९	८	०	०
१	३	२९	५०	२५	१८	४९	४६
६	११	१७	४९	२३	०	३७	३७
६१	४६	८०	८	७५	३	३	३
१४	५५	४६	६	३६	३२	११	११
सौम्य	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. २	[illegible]	मू. ४	श. १	[illegible] ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]

५१ सम्वत् २००७ शकः १८७२ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः १९ [illegible] (दिसंबर १९५०ई०)दक्षिणायनगोलौ सा.मक.उत्तरायणंशिशिरर्तुश्च

५१ सम्वत् २००७ शकः १८७२ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः १९ हि. अ. मु. चन्द्र सू. उ. सू. अ. नित्य सूर्य स्पष्ट: (दिसम्बर १९५०ई०) दक्षिणायनगोलौ सा. मक. उत्तरायणं शिशिरर्तुश्च

दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	बै.	सौ.	उ.	सञ्चार		रेलवे	रेलवे	उदय काल
२५ १३	१	र.	१४ ५६	मू.	४४ ८	शू.	१२ १८	ब.	१४ ५६	२५	१०	२९	ध.		७ १४	५ २०	७ २४ २ २१
२५ ११	२	चं.	९ २३	पू.	४० ३७	गं.	४ [illegible]	कौ.	९ २३	२६	११	३०	म.	५४ ४६	७ १५	५ २०	७ २५ ३ ३७
२५ १०	३	मं.	४ २१	उ.	३७ २९	ध्रु.	५० ४२	ग.	४ २१	२७	१२	१	म.		७ १६	५ २०	७ २६ ४ ५४
अवम्	४	मं.	५५ ३८	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
२५ ८	५	बु.	५६ २८	श्र.	३५ २०	व्या.	४४ ३९	ब.	२८ १३	२८	१३	२	म.		७ १७	५ ३०	७ २७ ६ १३
२५ ७	६	गु.	५३ ५६	ध.	३३ ५८	ह.	३९ २३	कौ.	२५ १२	२९	१४	३	कुं.	४ ३९	७ १८	५ २०	७ २८ ७ ३२
२५ ५	७	शु.	५२ ३६	श.	३३ ४५	व.	३४ ५७	ग.	२३ १६	१	१५	४	कुं.		७ १८	५ २०	७ २९ ८ ५२
२५ ३	८	श.	५२ ३१	पू.	३४ ४२	सि.	१३ ३१	वि.	२२ ३४	२	१६	५	मी.	१९ २८	७ १९	५ २०	८ ० १० १२
२५ २	९	र.	५३ ४४	उ.	३६ ५७	व्य.	२९ ४	बा.	२३ ७	३	१७	६	मी.		७ २०	५ २१	८ १ ११ ३३
२५ ०	१०	चं.	५६ १३	रे.	४० २८	व.	२७ ४०	तै.	२४ ५८	४	१८	७	मे.	४० २८	७ २१	५ २१	८ २ १२ ५५
२४ ५९	११	मं.	५९ ५३	अ.	४५ ७	प.	२७ ५	व.	२८ ३	५	१९	८	मे.		७ २१	५ २१	८ ३ १४ १८
२४ ५७	१२	बु.	६० ०	भ.	५० ४१	शि.	२७ २४	ब.	३२ ९	६	२०	९	मे.		७ २२	५ २२	८ ४ १५ ४१
२४ ५६	१२	गु.	४ २६	कृ.	५६ ५७	सि.	२८ १७	बा.	४ २६	७	२१	१०	वृ.	६ १५	७ २३	५ २२	८ ५ १७ ३
२४ ५८	१३	शु.	९ ३७	रो.	६० ०	सा.	२९ ३२	तै.	९ ३७	८	२२	११	वृ.		७ २४	५ २२	८ ६ १८ २७
२४ ५६	१४	श.	१५ ३	रो.	३ २९	शु.	३० ५३	व.	१५ ३	९	२३	१२	मि.	३६ ४१	७ २४	५ २२	८ ७ १९ ५१
२४ ५७	१५	र.	२० १८	मृ.	९ ५४	शु.	३१ ५७	ब.	२० १८	१०	२४	१३	मि.		७ २४	५ २३	८ ८ २१ १५

ग्रहदर्शन-बु. मं. गु० सूर्यास्त पीछे पश्चिम क्षितिज के ऊपर दिखाईदेंगे । ति. ५ से पश्चिममें शुक्रका उदय होगा । शनि मध्यरात्रिके बाद पूर्व* *में दीखेगा ।

चन्द्रदर्शनम्

भ. ३२।१०उ. ५६।५१ या. रविकृताब्दल मु.३

शुक्रोदय : पश्चिमे ९।१४ मू.प.उ.

भ. ५२।३६ उ. मूले सं० धनुष्यर्कः ५०।१मु. ३०

भ.२२।३४ या.

□ मोक्षदा ११ व्र. स्मा.

भ. २८।३उ. ५९।५३ या. श्रवणे भौमः ११।५७ श्री गीता जयन्ती □

पू. षाग्यां शुक्रः २।५९ निम्बार्काः ११ व्र वैष्ण. ११ मल्ला १२

सा. मकरे भानु ५३।२ शिशिरर्तु प्रा. प्रदोष व्र. उत्तरायणम् ५३।२

शत. २ गुरुः ५५।२९ (*) श्रीदत्त जयन्ती

भ. १५।३ उ. ४७।४० या. वक्री बुधः ३९।१९ सत्यव्र. पिशाचमो. (*)

कुंभे राहुः सिंहे केतुश्च ३६।८

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगण: ५७३४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	९	८	१०	८	५	११	५
०	७	२०	८	८	८	०	०
१०	२९	५२	५२	१४	४०	२७	२७
१२	५६	५९	३४	२	२३	२२	२२
६१	४६	६१	९	७५	२	३	३
२०	५१	४५	१८	३२	४९	११	११

सौरप	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मू. १	[illegible]	[illegible]	श० १	मू. ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चं. ११ वृ. | १०मं. | ८ | बु.सू. ९ शु. | ७ | १२ रा. | श. ६ के. | १ | ३ | ५ | २ | ४

इस पक्षमें रूई, चांदी, सोना, सरसों, रेशम और अलसी, के भावमें मंदा रहे । जौ, गेहूँ, मक्की, केभावमें कुछ तेजी रहे । ति. १० के बाद अनाज का भाव खासा तेज होता आवेगा, मन्देका काम न करें, अन्यथा हानि होगी । ति. ५ के अनन्तर रंगीन वस्त्र, और नारियल तेज हो, इस तिथिसे ४० दिन के अन्दर किसी प्रसिद्ध सम्मानितपुरुष की मृत्यु होवे ।

ति.३से१० तक तथा१४।१५ को वर्षा के योग हैं ।

शकुन वि०---मंगशिर शुक्ला पक्ष में तिथि की होवे हान । रोग दोष दुर्भिक्ष हो यह तुम निश्चय जान ॥ मार्गशीर्ष के काम्य-रविवार व्रत में भक्ष्य- पदार्थ लिखते हैं---मार्गशीर्ष में ३ तुलसी के पत्ते खावे, पौषमें ३ पल घी (१पल-३ तोले ४ माशे का होता है) ।

मार्गशीर्ष शुक्ल १५ रवाविष्टम् ०।० दिनगण ५७४२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	९	८	१०	८	५	११	५
८	१३	२४	१०	१८	९	०	०
२१	४५	५५	१०	१७	०	१	१
१५	२९	४८	५५	४२	१८	५५	५५
६१	४७	१	१०	७५	२	३	३
२४	६	३०	९	११	१०	११	११

सौरप	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मू. ३	श्र. २	[illegible]	श. २	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

माघ में ३ मुठी तिल फाल्गुन में ३पल दही, चैत्र में ३पल दूध, वैशाखमें गोबर, ज्येष्ठमें ३ अञ्जली पानी आषाढ़ में ३ कालीमिर्च, श्रावणमें ३ पल सत्तु, भाद्रपद में गोमूत्र के ३ गण्डूष, आश्विनमें शक्कर और कार्तिकमें हविष्य भक्षण करे । स्कन्द ६ को कार्त्तिकेय का पूजन रात्रिके प्रथम प्रहर में करना चाहिए ।

५२ सम्वत् २००७ शकः १८७२ पौष कृष्ण पक्षः २० (दिसं० १९५० जन. १९५१ई.) उत्तरायणं दक्षिणगोलः शिशिरर्तुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चार	घ.	प.	सू. उ. रेलवे		सू. अ. रेलवे		नित्य सूर्य स्पष्ट उदय काल			
२४	५९	१	चं.	२४	५३	आ.	१५	४७	ब्र.	३२	३०	का.	२४	५३	११	२५	१४	मि.			७	२४	५	२४	८	९	२२	४०
२५	०	२	मं.	२८	३४	पुन.	२०	५१	ऐं.	३२	२५	ग.	२८	३४	१२	२६	१५	क.	४	३५	७	२५	५	२५	८	१०	२४	६
२५	२	३	बु.	३१	८	पु.	२४	४९	बै.	३१	२६	वि.	३१	८	१३	२७	१६	क.			७	२५	५	२६	८	११	२५	३३
२५	४	४	गु.	३२	२५	श्ले.	२७	३६	वि.	२९	२७	ब.	१	४६	१४	२८	१७	सिं.	२७	३६	७	२५	५	२७	८	१२	२७	०
२५	५	५	शु.	३२	२३	म.	२९	७	प्री.	२६	२९	ग.	२	२४	१५	२९	१८	सिं.			७	२६	५	२८	८	१३	२८	२७
२५	७	६	श.	३१	७	पू.	२९	२३	आ	२२	३०	ग.	१	४५	१६	३०	१९	कं.	४४	१०	७	२६	५	२९	८	१४	२९	५५
२५	९	७	र.	२८	३८	उ.	२८	३०	सौ.	१७	३६	ब.	२८	३८	१७	३१	२०	कं.			७	२६	५	३०	८	१५	३१	२२
२५	१०	८	चं.	२५	१०	ह.	२६	३९	शो.	११	५३	कौ.	२५	१०	१८	१	२१	तु.	५५	१८	७	२६	५	३०	८	१६	३२	४८
२५	१२	०	मं.	२०	५१	चि.	२३	५७	अ.	५८	२९	ग.	२०	५१	१९	२	२२	तु.			७	२६	५	३१	८	१७	३४	१४
२५	१४	१०	ब.	१५	५१	स्वा	२०	३५	सु.	५०	५९	वि.	१५	५१	२०	३	२३	तु.			७	२६	५	३२	८	१८	३५	४०
२५	१५	११	गु.	१०	२१	वि.	१६	४५	धृ.	४३	१४	बा	१०	२१	२१	४	२४	वृ.	२	४२	७	२७	५	३३	८	१९	३७	६
२५	१७	१२	शु.	४	३४	अ.	१२	३८	शू.	३५	१९	तै.	४	३४	२२	५	२५	वृ.			७	२७	५	३३	८	२०	३८	३२
अवम्		१३	शु.	५४	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	१९	१४	श.	५२	५३	ज्ये	८	२६	वृ.	२७	२६	वि.	२५	४६	२३	६	२६	ध.	८	२६	७	२७	५	३४	८	२१	३९	५८
२५	२०	३०	र.	४७	२५	मू.	४	२५	ध्रु.	१९	४४	च.	२०	९	२४	७	२७	ध.			७	२७	५	३५	८	२२	४१	२४

ग्रहदर्शन—ति २ से पश्चिममें बुधका अस्त है। मं. गु. शु. सूर्यास्त बाद पश्चिम क्षितिजकी ओर दीखेंगे। शनि मध्यरात्रिके बाद पूर्वमें देखना

भ. ५९।५१ उ० पश्चिमास्तो बुधः २८।१५ मेला बाबाहर वल्लभ जालंधर
भ. ३१।८ या.
पू. षा. रविः ५१।४५ श्री गणेश ४ व्र.

भ. ३१।७ उ. ५९।५२ या. उ.षायां. शुक्रः ३९।२२

जनवरी १ ता. ३१ सन् १९५१
भ. ४८।२१ उ. मकरे शुक्रः १८।५०
भ. १५।५१ या,
वक्री मूले बुधः ५८।३ सफला ११ व्र. सर्वे.
भ. ५८।४० उ. धनिष्ठा. भौमः १२।४० प्रदोष व्र.

भ. २५।४६ या,
पूर्वोदयो बुधः ४३।४०

पौष कृष्ण ८ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५७५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	के.
८	९	८	१०	८	५	१०	४
१६	२०	१८	११	२८	९	२९	२९
३२	१	२२	३६	२१	१३	३६	३६
४८	५९	१२	४३	४	१६	२९	२९
६१	४७	७४	११	७५	१	३	३
२६	६	५३	६	२९	१२	११	११
मार्गी	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
सौम्य	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	ध. ४	[illegible]	श. २	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

म. १० | ८ | ११ रा.बृ. | सू.बु.शु. ९ | ७ | १२ | चं. ६ श. | ५ | १ | ३ | के. | २ | ४

इस पक्षमें गेहूँ, मक्की, का भाव विशेष घटा बढ़ी रहकर तेज रहेगा, गुड़, खंड़, मंदी होगी। लोहा, पीतल, जस्तके भावमें घटा बढ़ी रहेगी। रुख तेज। चांदीमें ४ टका तेज होकर पीछे भाव मुलायम होगा। ति. २ या ३ को रुईमें १५।२ मंदे एकदम आवेंगे। ति. ७ से रुई चांदी, शेयर गुड़, खण्ड़, अफीम, घृत, तथा गेहूँ, जौ, चना, मक्की, आदि, सब अनाजोंमें तेजीका बोल बाला रहेगा। ति. १४।३० को एक मंदी का रिएकसन् भी आवेगा। यह पक्ष पशु, बाल वृद्धोंको कष्ट प्रद है।

ति. १।२।४।१४।३० को कहीं २ खंड़ वृष्टि होगी।

शकुन विचार—पौ. कृ. ८ को जो पूर्व दिशामें बादल हो और गर्जना भी सुनाई दे तो आगे तृण और अनाज तेज होवेगा। तेरस-चौदस मावस पौष वदी में जान।

पौष कृष्ण ३० रवा विष्टम् ०।० दिनगणः ५७५६

म. शु. १० | ८ | रा.बृ. ११ | सू. बु. चं. ९ | ७ | १२ | श. ६ | ५ के. | १ | ३ | २ | ४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	९	८	१०	९	५	१०	४
२२	२४	११	१२	५	९	२९	२९
४१	४४	८	४५	५३	१८	१७	१७
२४	२०	३१	३६	१०	४०	२[illegible]	२४
६१	४७	५८	११	७५	०	३	३
२६	१	२३	४६	२२	३६	११	११
मार्गी	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
सौम्य	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	ध. १	मू. ४	श. २	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

५३ संवत् २००७ शक: १८७२ पौषशुक्ल पक्षः २१ (जनवरी १९५१ई०) उत्तरायणम्। दक्षिणगोलः शिशिरर्तुः।

५३ संवत् २००७ शकः १८७२ पौषशुक्ल पक्षः २१

(जनवरी[illegible]) उत्तरायणम् । दक्षिणगोलः शिशिरर्तुः ।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	घ.	प.	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्यस्पष्टः उदय-काले			
२५	२२	१	चं.	४२	२७	पू.	०७	४३	व्या	१२	२०	किं.	१४	५६	२५	८	२८	म.	१४	५४	७	२८	५	३६	८	२३	४२	५०
२५	२४	२	सं.	३८	१०	श्र.	५५	१२	ह.	[illegible]	[illegible]	बा.	१०	१८	२६	९	२९	म.			७	२८	५	३६	८	२४	४४	१५
२५	२५	३	बु.	३४	४५	ध.	५३	३९	सि.	५३	३६	तै.	६	२७	२७	१०	१	कुं.	२४	२५	७	२८	५	३७	८	२५	४५	३९
२५	२७	४	गु.	३२	२१	श.	५३	१०	व्य.	४८	५२	व.	३	३३	२८	११	२	कुं.			७	२८	५	३८	८	२६	४७	९
२५	२८	५	शु.	३१	७	पू.	५३	५२	व.	४५	६	व.	१	४४	२९	१२	३	मी.	३८	४१	७	२८	५	३९	८	२७	४८	२५
२५	३०	६	श.	३१	९	उ.	५५	४०	प.	४२	१९	कौ.	१	८	३०	१३	४	मी.			७	२८	५	३९	८	२८	४९	४७
२५	३२	७	र.	३२	३२	रे.	५९	६	शि.	४०	३५	त.	१	५०	१	१४	५	मे.	५९	६	७	२८	५	४०	८	२९	५१	९
२५	३३	८	चं.	३५	८	अ.	६०	०	सि.	३९	४३	वि.	३	४०	२	१५	६	मे.			७	२८	५	४१	९	०	५२	३१
२५	३५	९	मं.	३८	५४	अ.	३	२८	सा.	३९	४५	बा.	७	१	३	१६	७	मे.			७	२८	५	४२	९	१	५३	५३
२५	३७	१०	बु.	४३	३४	भ.	८	५२	शु.	४०	२७	तै.	११	१४	४	१७	८	वृ.	२५	२४	७	२८	५	४२	९	२	५५	१४
२५	३८	११	गु.	४८	४९	कृ.	१५	०	शु.	४१	४०	व.	१६	११	५	१८	९	वृ.			७	२७	५	४३	९	३	५६	३४
२५	४०	१२	शु.	५४	१६	रो.	२१	३२	ब्र.	४३	३	ब.	२१	३२	६	१९	१०	मि.	५४	४७	७	२७	५	४४	९	४	५७	५२
२५	४३	१३	श.	५९	२८	मृ.	२८	२	ऐं.	४४	१६	कौ.	२६	५२	७	२०	११	मि.			७	२७	५	४४	९	५	५९	९
२५	४६	१४	र.	६०	०	आ.	३४	३	वै.	४५	६	ग.	३१	४९	८	२१	१२	मि.			७	२७	५	४५	९	७	०	२५
२५	४९	१४	चं.	४	२	पु.	३९	२२	वि.	४५	१८	व.	४	२	९	२२	१३	क.	२३	३	७	२७	५	४६	९	८	१	४०
२५	५३	१५	मं.	७	३८	पु.	४३	३४	प्री.	४४	३६	ब.	७	३८	१०	२३	१४	क.			७	२७	५	४७	९	९	२	५४

ग्रहदर्शन-मं. गु. शु. सूर्यास्त बाद पश्चिम क्षितिज के ऊपर बुध सूर्योदय से पहिले पूर्व में । शनिमध्यरात्रिसेंपूर्व क्षितिज के ऊपर दीखेगा ।

चन्द्रदर्शनम् शत ३ गुरुः ५४।४
उ. षा. रविः ५३।८ श्रवणे शुक्रः १६।५३ रविउलाखरमु० ४
भ. ३।३३ उ. ३२।२१ या.
मार्गी बुधः ५।७
कुंभे भौमः ४१।३ वक्रीशनिः २०।० लोहड़ी महोत्सवः पंजाबदेशे
भ. ३२।३२ उ. सं. मकरेऽर्कः ८।३९ मु. ३० पुण्यं ८।३९उ जन्म दिन*
भ. ३।४० या. * सिक्ख गुरु गोविन्द सिंहजी

≡ साथ कुल नष्ट हो जाते है ।”

भ. १६।११ उ. ४८।४९ या. पुत्रदा ११व्र. सर्वे.
[*] प्रदोष व्र.
सा. कुंभे भानुः ११।५० धनिष्ठा.शुक्रः ५५।४०अभि.प्र.रविः ३९।५३ [*]
पू. षाढ़ां बुधः ३७।२०
भ. ४।२उ. ३५।५० या. शत. भौमः ९।२९ सत्यव्रतम्
श्रवणे रविः ५५।५६ माघस्नान व्रत नियमाद्यारम्भश्च

पौष शुक्ल ८ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५७६४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	१०	८	१०	९	५	१०	४
०	१	९	१४	१५	९	२८	२८
५२	२	२	२२	५४	१९	५१	५१
३१	१०	१३	१६	५८	५५	५८	५८
६१	४७	१५	१२	७५	०	३	३
२२	१४	३६	२२	१५	११	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	ध. ३	मू. ३	श. ३	ध. २	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वृ.म.रा. ११ | ९बु. | १२ | सू.१०शु. | ८ | च. १ | ७ | २ | ४ | ६श. | ३ | के. ५
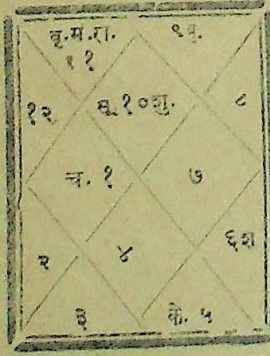
इस पक्षमें अग्निसे कई जगह हानि हो । पशुओंके व्यापारी लाभ में रहें, अनाज के भावमें मंदा आकर तेजी चलेगी, चांदी, सुवर्ण, में विशेष घटा बढ़ी होकर मंदा रहेगा । सरसों, तोरिया, मूंगफली, बिनौला, लोहा, जस्ता और चावल, घी, तेल, अलशी, तमाखू, कपड़ाके भावमें तेजी चलेगी । गुड़, खंड़ के भावमें पहले कुछ मंदा आकर साथ ही तेजी आवे, लाख, चपड़ा तेज ।

यहां एकादशीको कृतिका नक्षत्र है, अतः गुड़, गेहूं, मसूर लाल रंग के व्यापार से अच्छा लाभ हो ।
इस पक्षमें गुरु मंगल एक राशि पर है अतः वर्षा सर्वत्र अच्छी होगी । ति. ४।५।६।७।१२।१३ को वर्षा के योग हैं ।

शकुन विचार—पौषसु. १४ दिना बिजली का घनघोर । शुभ वर्षा अषाढ़में बोलें दादुर मोर । ति ७।८।९ को जल वर्षे तो आगामी चौमासा उत्तम रहे । यदि ति. १३ को जल बरसे तो गेहूँ आगे तेज हो, रोकने में लाभ होवेगा पौष मासमें स्नान दानादि कर्मोंके लिए नर्मदा श्रेष्ठ मानी गई ह । व्रत वाले दिन दातुन नहीं करनी चाहिए क्योंकि लिखा है “जो पुरुष श्राद्ध वाले दिन काष्ठ की दातुन करता है उसके ≡

पौष शुक्ल १५ भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ५७७२
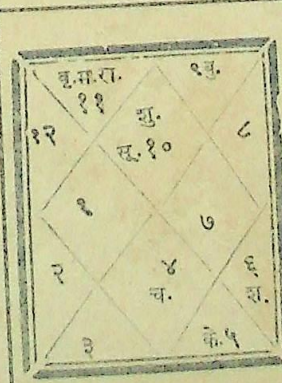
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
९	१०	८	१०	९	५	१०	४
९	७	१४	६	२५	९	२८	२८
२	१९	३६	४	५५	१३	२६	२६
५४	५२	३६	५	२३	३७	३१	३१
६१	४७	५६	१३	७४	१	३	३
१४	३१	३१	१	४९	९	११	११
	सा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	श. १	[illegible]	श. ३	ध. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]

५४ संवत्२००७ शकः १८७२ माघ कृष्ण पक्षः२२

दि.मा.	ति.वा.	घ.प.	न.	घ.प.	यो.	घ.प.	क.	घ.प.	हि	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू.उ. रेलवे	सू.अ. रेलवे	नित्य सूर्य स्पष्ट उदय काल
२५ ५७	१ बु.	१० ७	श्ले.	४६ ४०	आ.	४३ ४	कौ.	१० ७	११	२४	१५	सिं. ४६ ४०	७ २६	५ ४८	९ १० ४ ९
२६ १	२ गु.	११ १७	म.	४८ ३८	सौ.	४० २७	ग.	११ ७	१२	२५	१६	सिं.	७ २५	५ ४९	९ ११ ५ २२
२६ ५	३ शु.	११ ९	पू.	४९ २	शो.	३६ ५२	वि.	११ ९	१३	२६	१७	सिं.	७ २५	५ ५०	९ १२ ६ ३३
२६ ८	४ श.	९ ४७	उ.	४८ २४	अ.	३२ १७	बा.	९ ४७	१४	२७	१८	कं. ३ ५२	७ २४	५ ५१	९ १३ ७ ४४
२६ १२	५ र.	७ १३	ह.	४६ ४५	सु.	२६ ५४	तै.	७ १३	१५	२८	१९	कं.	७ २४	५ ५२	९ १४ ८ ५४
२६ १६	६ चं.	३ ४१	चि.	४४ १३	धृ.	२० ४६	व.	३ ४१	१६	२९	२०	तु. १५ २९	७ २३	५ ५२	९ १५ १० ३
अवम्	७ चं.	५५ ३७	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
२६ २०	८ मं.	५४ १४	स्वा	४१ २	शू.	१३ ५९	बा.	२६ ४६	१७	३०	२१	तु.	७ २२	५ ५३	९ १६ ११ ११
२६ २४	९ बु.	४८ ४१	वि.	३७ २०	गं.	,, ,,	तै.	२१ २७	१८	३१	२२	वृ. २३ १५	७ २१	५ ५४	९ १७ १२ १६
२६ २७	१० गु.	४२ ५३	अनु	३३ १४	ध्रु.	५१ ११	व.	१५ ४७	१९	१	२३	वृ.	७ २१	५ ५६	९ १८ १३ २०
२६ ३१	११ शु.	३६ ५८	ज्ये.	२९ ४	व्या	४३ १८	व.	९ ५५	२०	२	२४	ध. २९ ४	७ २१	५ ५७	९ १९ १४ २३
२६ ३५	१२ श.	३१ १०	मू.	२५ ०	ह.	३५ ३१	कौ.	४ ४	२१	३	२५	ध.	७ २०	५ ५८	९ २० १५ २४
२६ ३९	१३ र.	२५ ४२	पू.	२१ १३	ब.	२८ ३	व.	२५ ४२	२२	४	२६	म. ३५ २४	७ १९	५ ५९	९ २१ १६ २३
२६ ४३	१४ चं.	२० ४७	उ.	१७ ५८	सि.	२० ५९	श.	२० ४७	२३	५	२७	म.	७ १९	५ ५९	९ २२ १७ २१
२६ ४६	३० मं.	१६ ३३	श्र.	१५ २४	व्य.	१४ ३२	ना.	१६ ३३	२४	६	२८	कुं. ४४ ३२	७ १९	६ ०	९ २३ १८ १८

(जन. फर. १९५१ ई०) उत्तरायणं दक्षिण गोलः शिशिर्तुः

ग्रहदर्शन---मं. गु. शु. सूर्यास्त के बाद पश्चिम में देखें। बुध सूर्योदय से पहिले पूर्वमें दीखेगा। शनि पूर्वरात्री में पूर्वक्षितिजसे खमध्य की तरफ * आता हुआ दिखाई देगा

अभीः नि. रविः ४८।११

भ. ४१।१३ उ. शत ४ गुरुः ४४।४७ ⊂⊃ व्र. चन्द्रोदयरेल्वे घं. ९।०

भ. ११।९ या. कुंभे शुक्रः १५।४० श्रीगणेश जन्म ४ (संकट हरणी) ⊂⊃

ह. ।।।।ऽ नू. ऽऽ ।। ल. ८---९ वृश्चिक ल. घ. ४८।२४ उप.

ह. ।।।।। ऽऽ ।। ल. ७।४४।४५।३

भ. ३।४१ उ. ११।२९ या. श्री जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जयन्ती

+ माघे पापविनाशनम्

शतः शुक्रः ३६।७ अनु. ।।।।ऽ रो. ऽऽ ।। ल. ७---९

भ. १५।४७ उ. ४२।५३ या. फरवरी २ ता० २८

उ. षा. बुधः २१।१६ षट् तिला ११ व्र. स.

भ. २५।४२ उ. ५३।१४ या. मकरे बुधः ५०।५७ प्रदोष व्र.

[] पूर्व १४।३२ या.

धनिष्ठा. रविः १।४० युगादि मौनी३०प्रयागस्नाने महत्फलम् महोदय []

माघ कृष्ण ८ भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ५७७९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
९	१०	८	१०	१०	५	१०	४
१६	१२	२२	१७	४	९	२८	२८
११	४९	२४	३६	४०	२	४	४
११	१९	४	२९	५	३१	१६	१६
६१	४७	७०	१३	७४	२	३	३
८	६	१२	२३	४२	४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्र.	श.	[illegible]	श.	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	२	[illegible]	४	४	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शु.रा.मं. ११   ९ बु.   १२   १० सू.   ८   १   च. ७   २   ४   ६ श.   ३   के. ५

इस पक्षमें गेहूं, चावल, चांदी, सुवर्ण, अफीम, मदसुपारी लौंग, इलायची, में तेजी हो, फसलको कहीं नुकसान होवे, यहाँ बुधवारी प्रतिपदा अन्न की तेजी करेगी। ति. ३ से रूई, और चांदी के भाव मंदी को ओर रहें, घी, तेल, खंड, गुड़, तेज। ति. १४ से सोना, चांदी कुछ तेज, मिल शेयरोंमें भी तेजी चले, रूस, वा जापान में कोई भयंकर उत्पात हो, पूर्वीय भारत की जनता में कष्ट रोग भय हो, तेजीके व्यापारी प्रायः हानी में रहेंगे।

गुरु मंगल संयोग हैं वर्षा होगी। ति. ३।५।९।१२ १४।३० को वर्षाके योग है।

रा० वि---माघ वदी जो पंचमी बादल होवे जान। वर्षा कछु होवे नहीं भादो वर्षा जान ॥ माघवदी जो६

माघ कृष्ण ३० भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ५७८६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	१०	९	१०	१०	५	१०	४
२३	१८	१	१९	१३	८	२७	२७
१८	१८	३४	१२	२३	४७	४२	४२
१८	२५	५२	०	३१	६	१	१
६०	४६	८२	१३	७४	२	३	३
५७	५९	४५	४८	४९	३८	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्र.	श.	[illegible]	श.	श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	४	[illegible]	४	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]

को निर्मल हो आकाश। तो तुम निश्चय जानियो निपजै नहीं ... सूर्योदय के समय किसी सुन्दर नदीमें स्नान करना ...

को निर्मल हो आकाश । तो तुम निश्चय जानियो नियजै ... के समय किसी सुन्दर नदीमें स्नान करता है वह

५५ संवत् २००७ शकः १८७२ माघ शुक्ल पक्षः २३

दि.मा.	ति.वा.	घ.प.	न.	घ.प.	यो.	घ.प.	क.	घ.प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेलवे	सू. अ. रेलवे	नित्यसूर्य स्पष्टः उदय-काले
२६ ५०	१ बु.	१३ १२	ध.	१३ ४०	व.	८ ४४	व.	१३ १२	२५	७	२९	कुं.	७ १८	६ १	९ २४ १९ १३
२६ ५४	२ गु.	१० ५२	श.	१२ ५७	प.	३ ४२	कौ.	१० ५२	२६	८	१	मी. ५८ १९	७ १७	६ २	९ २५ २० ६
२६ ५८	३ शु.	९ ४५	पू.	१३ २६	सि.	५६ ३७	ग.	९ ४५	२७	९	२	मी	७ १६	६ २	९ २६ २० ५८
२७ २	४ श.	९ ५२	उ.	१५ ९	सा.	५४ ३२	वि.	९ ५२	२८	१०	३	मी.	७ १५	६ ३	९ २७ २१ ५०
२७ ५	५ र.	११ २१	रे.	१८ ८	शु.	५३ २७	बा.	११ २१	२९	११	४	मे. १८ ८	७ १५	६ ४	९ २८ २२ ४१
२७ ९	६ चं.	१४ ०	अ.	२२ १५	शु.	५३ २०	तै.	१४ ०	१	१२	५	मे.	७ १४	६ ५	९ २९ २३ ३१
२७ १३	७ मं.	१७ ५०	भ.	२७ २२	ब्र.	५३ ५६	व.	१७ ५०	२	१३	६	वृ. ४३ ५९	७ १३	६ ५	१० ० २४ २०
२७ १७	८ बु.	२२ ३२	कृ.	३३ २९	ऐ.	५५ ४	व.	२२ ३२	३	१४	७	वृ.	७ १२	६ ६	१० १ २५ ८
२७ २१	९ गु.	२७ ४८	रो.	३९ ५८	वै.	५६ ३०	कौ.	२७ ४८	४	१५	८	वृ.	७ ११	६ ७	१० २ २५ ५३
२७ २४	१० शु.	३३ १६	मृ.	४६ ३२	वि.	५७ ५३	तै.	० ३२	५	१६	९	मि. १३ १५	७ ११	६ ८	१० ३ २६ ३६
२७ २८	११ श.	३८ २२	आ.	५२ ४६	प्री.	५८ ५६	ब.	५ ४९	६	१७	१०	मि.	७ १०	६ ८	१० ४ २७ १७
२७ ३२	१२ र.	४२ ४९	पु.	५८ १४	आ.	५९ २५	व.	१० ३५	७	१८	११	क. ४१ ५२	७ ९	६ ९	१० ५ २७ ५६
२७ ३६	१३ चं.	४६ १७	पु.	६० ०	सौ.	५९ ३	कौ.	१४ ३३	८	१९	१२	क.	७ ८	६ १०	१० ६ २८ ३४
२७ ४१	१४ मं.	४८ ३८	पु.	२ ४३	शो.	५७ ५२	ग.	१७ २७	९	२०	१३	क.	७ ७	६ ११	१० ७ २९ ९
२७ ४६	१५ बु.	४९ ३२	श्ले.	६ ७	अ.	५५ ३९	वि.	१९ ८	१०	२१	१४	सिं. ६ ७	७ ६	६ १२	१० ८ २९ ४२

(फरवरी १९५१ ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः शिशिरवसन्तर्तु

ग्रहदर्शन-मं. गु. शु. सूर्यास्तबाद पश्चिम में दिखेंगे। बुध सूर्योदयसे पहिले पूर्व में शनि पूर्वरात्रि में पूर्व क्षितिज से ऊपर दीखेगा।

चन्द्रदर्शनम् श्री वल्लभ जयन्ती
पू. भाया भौमः ९।४८ जमादि उलावल मु. ५
भ. ३९।४८ उ. पू. भाया १ गुरुः २९।२२
भ. ९।५२ या.
श्रवणे बुधः ५२।१४ पू. भाया शुक्रः १९।१४ बसन्त ५ श्री ५
सं. कुंभेऽर्कः ३६।० मु. १५ + जयन्ती देवी
भ. १७।५० उ. ५०।११ या. रथ ७ (अरुणोदय स्नाने महत्फलम्)
भीष्माष्टमी रो. ।।।।ऽआनिऽ।।। ल ८

मृ. ।ऽ ।।ऽनृ ।ऽ।। ल. ७ वा गो. ७
भ. ५।५९ उ. ३८।२२य. जया ११व्र.स.
सा. मीने भानुः ४२।४६ वसन्तर्तु. प्रा.
शत. रविः ११।१९ मीने शुक्रः २२।५४ सोम प्रदोष व्र.
भ. ४८।३८ उ. धनिष्ठा. बुधः २७।१५ मीने भौमः ५९।३१ मेला श्री +
भ. १९।१८ या. सत्यव्र. माघस्न. स. म. ।।।।ऽबु. ।।ऽ।। ल. ८-९

[*] भीष्मको जल देते हैं उनके एक वर्षके सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

माघ शुक्ल ८ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ५७९४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	९	१०	१०	५	१०	४
१	२४	१३	२१	२३	८	२७	२७
२५	३३	१२	३	१९	२३	१६	१६
८	४०	२२	२९	५९	२४	३६	३६
६०	४६	९०	१४	७४	३	३	३
४८	४१	४४	६	३९	२२	११	११

सौरप.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ध. ३	[illegible]	श्र. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१२ बु.१० रा.वृ. म.शु.सू. ११ ९ १ चं २ ८ ३ के. ५ ७ ४ श.६

इस पक्षमें प्रजा रोग, भय, तथा चौर आदिसे कष्ट पावे। मोती, मूंगे, रेशम, श्वेत वस्त्र चांदी ये तेज हों, लवण, तैल, घी कुछ महँगे हों, विन्ध्य पर्वत और कन्नौज निवासी गरीबों को अन्न कमी तंगी हो, अनाजके भाव में घटा बढ़ी चलकर रुख मजबूत ही रहेगा, घीका भाव तेज। ति० ८ से रूई भाव तेजी में रहेगा पूर्वीय भारत से अन्नकी मांग आवे। ति १२ की शाम से चांदीमें तेजी का झटका आवेगा, और रूई, गेहूं बिनौला में कुछ मंदी रहेगी।

ति. २।३।९।१०।१३।१४।१५की कहीं खण्ड वृष्टि होगी (श.बि.) माघ सुदी सप्तमी बादल बिजली होय। पूर्व उत्तर बायु चलै संवत् अच्छा होय ।। माघ उजाली दूज वा तीज रखो जल धार। चमके दामिनि जानिये चौमासा भयकार ।।

माघ शुक्ल १५ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ५८०१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	११	९	१०	११	५	१०	४
८	०	२४	२२	२	७	२६	२६
२९	०	१३	४३	०	५८	५४	५४
४२	२२	८	१	१४	३४	२१	२१
६०	४६	९७	१४	७४	३	३	३
३३	४६	२२	२४	२०	४३	११	११

सौरप.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ,	अ.
श. १	[illegible]	ध. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

माघशुक्ला सप्तमीको सूर्योदयके समय स्नानके करने से सूर्यग्रहण स्नानके तुल्य फल होता है, स्नान मन्त्र यह है-यदा जन्मकृतं पापं यदा जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताऽज्ञाते च ये पुनः ।। इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्त सप्तिके। सप्तव्याधिसमायुक्ते हर माकरि सप्तमी"। भीष्माष्टमी–माघशुक्लाष्टमीको जो मनुष्य [*]

संवत् २००७ शकः १८७२ फाल्गुनकृष्ण पक्षः२४ | (फर.मार्च१९५१ई.)उत्तरायणं दक्षिणगोलौ वसन्तर्तुः गुर्वस्तः

दि.मा.	ति. वा	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्रः सञ्चार	सू. उ. रेलवे	सू. अ. रेलवे	नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले
२७ ५१	१ बु.	४९ २१	म.	८ १२	सु.	५२ २४	बा.	१९ ३०	११	२२	१५	सिं.	७ ५	६ १३	१० ९ ३० १४
२७ ५६	२ गु.	४७ ४९	पू.	९ १	धृ.	४८ ११	तै.	१८ ३५	१२	२३	१६	कं. २३ ५६	७ ३	६ १४	१० १० ३० ४४
२८ १	३ शु.	४५ ९	उ.	८ ४०	शू.	४३ ७	व.	१६ २९	१३	२४	१७	कं.	७ २	६ १४	१० ११ ३१ ११
२८ ६	४ र.	४१ ३०	ह.	७ १२	गं.	३७ १३	ब.	१३ २०	१४	२५	१८	तु. ३६ ५	७ १	६ १४	१० १२ ३१ ३६
२८ ११	५ चं.	३७ १	चि.	४ ५९	वृ.	३० ४०	कौ.	९ १६	१५	२६	१९	तु.	७ ०	६ १५	१० १३ ३१ ५८
२८ १६	६ मं.	३१ ५५	स्वा.	[illegible]	ध्रु.	२३ ३३	त.	४ २८	१६	२७	२०	वृ. ४४ ११	६ ५९	६ १६	१० १४ ३२ १९
२८ २१	७ बु.	२६ १७	अ.	५४ १६	व्या.	१६ ३	ब.	२६ १७	१७	२८	२१	वृ.	६ ५८	६ १७	१० १५ ३२ ३८
२८ २४	८ गु.	२० २५	ज्ये.	५० ६	ह.	८ २०	कौ.	२० २५	१८	१	२२	ध. ५० ६	६ ५६	६ १८	१० १६ ३२ ५५
२८ २६	९ शु.	१४ २९	मू.	४६ ०	व.	[illegible]	ग.	१४ २९	१९	२	२३	ध.	६ ५५	६ १८	१० १७ ३३ ११
२८ ३०	१० श.	८ ४१	पू.	४२ १०	व्य.	४५ ११	वि.	८ ४१	२०	३	२४	म. ५६ १८	६ ५३	६ १९	१० १८ ३३ २५
२८ ३५	११ र.	३ ११	उ.	३८ ४४	व.	३८ १	बा.	३ ११	२१	४	२५	म.	६ ५२	६ २०	१० १९ ३३ ३८
अवम्	१२ र.	५५ १	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
२८ ४०	१३ चं.	५४ ०	श्र.	३६ १	प.	३१ २४	ग.	२६ ६	२२	५	२६	म.	६ ५१	६ २१	१० २० ३३ ४९
२८ ४५	१४ मं.	५० ३८	ध.	३४ १०	शि.	२५ २६	वि.	२२ १९	२३	६	२७	कुं. ५ ५	६ ४९	६ २१	१० २१ ३३ ५७
२८ ५०	३० बु.	४८ १९	श.	३३ १२	सि.	२० १७	च.	१९ २८	२४	७	२८	कुं.	६ ४८	६ २२	१० २२ ३४ ४

ग्रहदर्शन-ति.१से पूर्व में बुध अस्त होगा। ति.७से पश्चिम में गुरु अस्त होगा। शु. मं: सूर्यास्त बाद पश्चिम में और शनि पूर्व क्षितिज पर दीखेगा

उ. भायां शुक्रः ४।२१ पूर्वास्तो बुधः ५७।५३

पू. भायां २ गुरुः ३४।२

भ. १६।२९ उ. ४५।९ या. कुंभे बुधः २९।५३ (१ त्सरारम्भः २३।९

उ. भायां भौमः १७।१ पू.भा. २ राहू. पू.फा. ४ केतुः ३१।२५ गुरोर्वा *

* र्धक्यारम्भः १२।५८ श्री गणेश ४ व्र. बार्हस्पत्यमानेन क्रोधी संव- ()

भ ३१।५५ उ. ५९।६ या.

शत. बुधः २३।४१ अस्तो गुरुः १२।५८ गु. अ. सीता जन्मा ८

मार्च ३ ता. ३१ (अर्ध रात्र व्यापिनी होनेसे)

भ. ४१।३५ उ,

भ. ८।४१ या.

पू. भा. रविः २६।१७ रेवत्यरां शुक्रः ५२।४१ विजया ११ व्र. स.

भ. ५४।० उ. सोम प्रदोष व्र.

भ- २२।१९ या, श्री महाशिवरात्रि व्र.

पू. भायां बुधः ४६।३०

फाल्गुन कृष्ण ८ गुरा विष्टम् ०।० दिनगणः ५८०९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	११	१०	१०	११	५	१०	४
१६	६	७	२४	११	७	२६	२६
३२	१२	४३	३८	५३	२६	२८	२८
५५	१८	२३	१३	२४	३१	५६	५६
६०	४६	१०४	१४	७३	४	३	३
१७	३४	४२	२०	५५	१२	११	११

[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श. ३	[illegible]	श. ५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शु.म. १२
१०
१
सू.गु.बु.रा. ११
९
चं.
२
८
३
के.५
७
४
श.६
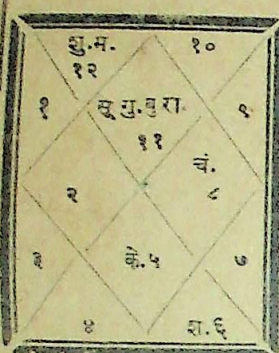
इस पक्षमें रूई, सुवर्ण, घास, लकड़ी, तेज हों, चांदी में घटा बड़ीसे मंदी हो, और चौपाया पशु मंहगे हों। ति. ४ से घी, तेल, रस, कस में और सुगन्धित पदार्थ चन्दन, कपूर, देवदारू में तेजी। तिः ७ से रूई, शेयर में तेजी आवे, सुवर्ण, चांदी, अलशी, अनाज में मंदी हो, प्रजामें सुख शान्ति रहे।

ति. १।७।११।१२।१३।१४ को कहीं २ बूंदा बांदी होगी।

श०वि०—फाल्गुण बदी तीज को जान। दीखे पवन प्रमान॥ आसोज शुदीमें वर्षा होय। रात दिना वर्षे मेघ मन मोय। फाल्गुन कारीदूजदिन निर्मल रहे अकाश। श्रावणभादों जल बहु सुधर जाय चौमास॥

फाल्गुन कृष्णमें शिवरात्रि व्रत अवश्य करना चाहिये

फाल्गुन कृष्ण ३० बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ५८१५

शु.म. १२
१०
रा चं.
१
बु.सू.बृ. ११
९
२
८
३
५ के.
७
४
श.६
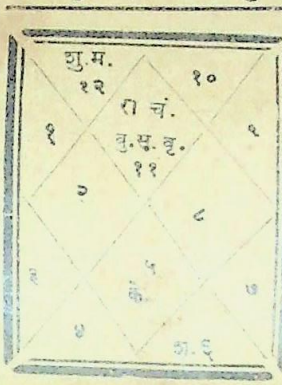
सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	११	१०	१०	११	५	१०	४
२२	१०	१८	२६	१९	७	२६	२६
३४	४९	३३	४	१६	०	९	९
४	१२	११	५५	५	०	५२	५२
६०	४५	११०	१४	७३	४	३	३
७	५४	५३	२७	२७	३०	११	११

[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	श. ४	[illegible]	रे. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इससे मनुष्यका कल्याण होता है। चाहे सौर हो अथवा वैष्णव या किसी और देवताके मानने वाला हो या क्यों न हो वह शिवरात्रि व्रतके बिना किसी देवता की पूजाके फल को

इससे मनुष्यका कल्याण होता है। चाहे सौर हो अथवा वैष्णव या किसी और देवताके मानने वाला हो या क्या न हो वह शिवरात्रि व्रतके बिना किसी देवता की पूजाके फल को
प्राप्त नहीं कर सकता। शिवरात्रिकी ... प्रवेश ... है।

५७ संवत् २००७ शकः १८७२ फाल्गुन शुक्ल पक्षः २५ | हि.अं. | मु. | चन्द्र | सू.उ. | सू.अ. | नित्य सूर्य स्पष्टः

(मार्च १९५१ ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः सा. मेषार्कादुत्तर. वस.

ग्रहदर्शन— ति.५ से मंगल अस्त होगा। बु.गु. अस्त हैं। शुक्र सूर्यास्तके पीछे पश्चिममें और शनि पूर्वमें खमध्य की तरफ आता हुआ दिखेगा।

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	चैत्र	हि.अं.	मु.	सञ्चारः			सू.उ. रेलवे		सू.अ. रेलवे		उदयकाले			
२८	५५	१	बृ.	४७	१४	पू.	३३	२४	सा.	१५	५८	किं.	१७	४६	२५	८	२९	मी.	१८	२१	६	४७	६	२३	१०	२३	३४	८
२९	०	२	शु.	४७	२३	उ.	३४	४९	शु.	१२	३९	बा.	१७	१८	२६	९	३०	मी.			६	४६	६	२४	१०	२४	३४	९
२९	५	३	श.	४८	५२	रे.	३७	३२	शु.	१०	२३	तै.	१८	७	२७	१०	१	मे.	३७	३२	६	४४	६	२४	१०	२५	३४	८
२९	१०	४	र.	५१	३२	अ.	४१	२५	ब्र.	९	१०	व.	२०	१२	२८	११	२	मे.			६	४३	६	२५	१०	२६	३४	६
२९	१५	५	चं.	५५	२२	भ.	४६	२५	ऐ.	८	४६	ब.	२३	२७	२९	१२	३	मे.			६	४३	६	२५	१०	२७	३४	१
२९	२०	६	मं.	६०	०	कृ.	५२	१८	वै.	९	१८	कौ.	२७	४२	३०	१३	४	वृ.	२	५३	६	४२	६	२६	१०	२८	३३	५४
२९	२५	६	बु.	०	२	रो.	५८	४४	वि.	१०	२१	तै.	०	२	१	१४	५	वृ.			६	४१	६	२७	१०	२९	३३	४५
२९	३०	७	गु.	५	१५	मृ.	६०	०	प्री.	११	४७	व.	५	१५	२	१५	६	मि.	३२	३	६	३९	६	२७	११	०	३३	३४
२९	३५	८	शु.	१०	३६	मृ.	५	२०	आ.	१३	१८	ब.	१०	३६	३	१६	७	मि.			६	३८	६	२८	११	१	३३	२१
२९	४०	९	श.	१५	३७	आ.	११	४०	सौ.	१४	३३	कौ.	१५	३७	४	१७	८	मि.			६	३८	६	२९	११	२	३३	५
२९	४५	१०	र.	१९	५९	पु.	१७	२१	शो.	१५	१७	ग.	१९	५९	५	१८	९	क.	०	५९	६	३७	६	३०	११	३	३२	४८
२९	५०	११	चं.	२३	१५	पु.	२२	४	अ.	१५	१८	व.	२३	१५	६	१९	१०	क.			६	३५	६	३०	११	४	३२	२९
२९	५५	१२	मं.	२५	२८	श्ले.	२५	४२	सु.	१४	२४	बा.	२५	२८	७	२०	११	सिं.	२५	४२	६	३५	६	३१	११	५	३२	७
३०	०	१३	बु.	२६	२०	म.	२८	५	धृ.	१२	३२	तै.	२६	२०	८	२१	१२	सिं.			६	३३	६	३२	११	६	३१	४३
३०	४	१४	गु.	२५	५५	पू.	२९	९	शू.	९	३९	व.	२५	५५	९	२२	१३	क.	४४	८	६	३१	६	३२	११	७	३१	१६
३०	९	१५	शु.	२४	१२	उ.	२९	४	गं.	५	४६	ब.	२४	१२	१०	२३	१४	कं.			६	३०	६	३३	११	८	३०	४६

चन्द्रदर्शनम् पू.भा.ऍ ३ गुरुः २४।५९
जयादि उलाखर मृ. ६
भ. २०।१२ उ. ५१।३२ या. वक्री उ, फा. ३ शनीः २०।१७
मीने बुधः ५९।४७ भौमास्तः ४१।३

[ ] रे व. भौमः ३७।१५

सं. मीने ऽर्कः २६।२० मृ. ४५ पुष्यं २६।२० उ. भायां बुधः ४१।१२. [ ]
भ. ५।१५ उ. ३७।५५ या. अश्वि-मेषे च शुक्रः ४५।४२

होलाष्टकारम्भः
उ. भ. रविः ४७:८
भ. ५१।३७ उ.
भ. २३।१५ या. आमला ११ व्र स.
सा. मेषे भानुः ३९।१५ भौम प्रदो.प्र. व्र.
रेवत्यां बुधः २१।९

[ ] अग्निभय वायव्यकी हो तो वायु अधिक, ऊपरकी हो तो भय और यदि चारों तरफकी जोरदार हवा चले तो राजाओंमें युद्ध और प्रजा का नाश होता है।

भ. २५।५२ उ. ५५।२ या. सत्य व्रतम् होलिका दहनम् (भद्रा मुखकी ()
पू. भ. ४ मीने च गरुः १५।१२ () ५ घटी त्याज्य है)

फाल्गुन शुक्ल ८ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५८२४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	११	१०	०	५	१०	४
१	१७	५	२८	०	६	२५	२५
३३	४२	५६	१५	१७	१८	४१	४१
२१	५९	२०	२५	२४	४०	१७	१७
५९	४५	११९	१४	७३	४	३	३
४७	३९	६	२७	१	४४	११	११

[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	रे. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१ शु. | बु | सू. | ११ | म. १२ गु. | २ | १० | ३ | ९ | ४ | ६ श. | ८ | ५ के | ७

इस पक्षमें घी, तेल, तिल, तथा चांदी रुई को छोड़ अन्य सफेद वस्तुएं मन्दी हों, हाथी दन्त, कपूर, लवण, तेजहो, तृण, घास में आगे तेजी रहेगी। खण्ड, गुड़, का भाव भी कुछ तेज रहेगा। हल्दी, लोहा, फौलाद में खासी तेजी रहेगी। ति. ६ से रुई, चांदी, गेहूं, मंदी होवे बिनौला, तेज ति. ९ से किसी अफवाहके कारण गेहूं, चना, जौं, तेज हों। ति. १३ से वायदे व्यापार की वस्तुएं तेजी पर रहेंगी। कहीं पश्चिमी प्रदेशों में राजा प्रजाका संघर्ष होगा।

इस पक्षमें वायुका जोर रहेगा। ति. ५।६।१३।१४ १५ को उत्तरमें कहीं २ बून्दा बांदी हो।

शकुन विचार—फाल्गुन सुदी जो सप्तमी वर्षा महाघन छाय। पांचम नव आसोज सुदी जल थल एक कराय॥

फाल्गुन शुक्ल १५ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५८३१

१ शु. | रा. ११ गु. | सू. | १० | २ | मं १२ | ३ चं. | ९ | ६ श. | ४ | ८ | के. | ७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	११	१०	०	५	१०	४
८	२३	१९	२९	८	५	२५	२५
३०	२	५५	५६	४९	४५	१९	१९
४६	१८	१२	२४	७	१४	२	२
५९	४५	११७	१४	७२	४	३	३
३०	३४	४०	२८	५६	४५	११	११

	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	रे. २	रे. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गर्जे वर्षा होय। धान्य सातवें मासमें निश्चय मंहगा होय॥ फा० शु०१५ को शामके वक्त भद्रा रहित समय में होलीका पूजन और हवन करना चाहिये। होलीके दाहके समय यदि पूर्वकी हवा हो तो राजा प्रजामें सुख, नैऋत्य कोणकी हो तो दुर्भिक्ष पश्चिम उत्तर और ईशान की हो तो सुभिक्ष सुख, अग्निकोणकी हो तो [ ]

५८ संवत् २००७ शकः १८७२ चैत्रकृष्ण पक्षः २६. (मार्च.अप्रैल १९५१ ई०) उत्तरायणगोलौ वसन्तर्तु:गुरोरूदयः

दि. मा.		ति. वा.		घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हि.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेलवे		सू. अ. रेलवे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले			
३०	१४	१	श.	२१	२४	ह.	२७	५०	वृ.	[illegible]	[illegible]	कौ.	२१	२४	११	२४	१५	तु.	५६	४९	६	३०	६	३४	११	९	३०	१४
३०	१८	२	र.	१७	३८	चि.	२५	४८	व्या	४९	३	ग.	१७	३८	१२	२५	१६	तु.			६	२९	६	३५	११	१०	२९	४०
३०	२३	३	चं.	१३	१	स्वा	२२	५३	ह.	४२	९	वि.	१३	१	१३	२६	१७	तु.			६	२७	६	३५	११	११	२९	५
३०	२८	४	मं.	७	४८	वि.	१९	२०	व.	३४	४७	बा.	७	४८	१४	२७	१८	वृ.	५	१४	६	२५	६	३६	११	१२	२८	२९
३०	३२	५	बु.	२	५	अ.	१५	२५	सि.	२७	१०	तै.	२	५	१५	२८	१९	वृ.			६	२३	६	३७	११	१३	२७	५१
अवम्		६	बु.	५४	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३०	३७	७	गु.	५०	८	ज्ये.	११	१८	व्य.	१९	२९	वि.	२३	९	१६	२९	२०	ध.	११	१८	६	२२	६	३८	११	१४	२७	२
३०	४२	८	शु.	४४	१७	मू.	७	११	व.	११	३९	बा.	१७	१३	१७	३०	२१	ध.			६	२१	६	३९	११	१५	२६	१८
३०	४६	९	श.	३८	४८	पू.	[illegible]	[illegible]	प.	[illegible]	[illegible]	तै.	११	३२	१८	३१	२२	म.	१७	२१	६	२०	६	४०	११	१६	२५	३०
३०	५०	१०	र.	३३	४८	श्र.	५६	४०	सि.	५०	९	व.	६	१८	१९	१	२३	म.			६	१८	६	४०	११	१७	२४	४०
३०	५४	११	चं.	२९	३२	ध.	५४	५०	सा.	४४	६	ब.	१	४०	२०	२	२४	कुं.	२५	४५	६	१७	६	४१	११	१८	२३	४९
३०	५८	१२	मं.	२६	८	श.	५३	३९	शु.	३८	४६	तै.	२६	८	२१	३	२५	कुं.			६	१६	६	४१	११	१९	२२	५५
३१	३	१३	बु.	२३	४७	पू.	५३	३५	शु.	३४	१९	व.	२३	४७	२२	४	२६	मी.	३८	३६	६	१५	६	४१	११	२०	२२	०
३१	७	१४	गु.	२२	३९	उभ	५४	४२	ब्र.	३०	५१	श.	२२	३९	२३	५	२७	मी.			६	१४	६	४२	११	२१	२१	२
३१	१२	३०	शु.	२२	४६	रे.	५६	९	ऐं.	२८	२४	ना.	२२	४६	२४	६	२८	मे.	५६	९	६	१३	६	४३	११	२२	२०	३

ग्रहदर्शन—मं, अस्त है। ति. १से पश्चिममें बुधउदय होगा। ति.९ से पूर्वमें गुरुउदय होगा। शुक्र सूर्यास्त बाद पश्चिममें और शनि पूर्वमें दिखाई देंगे

पश्चिमोदयो बुधः ३८।५ होला १ मेला श्री आनन्द पुर सा. आम्र *

भ. ४५।१९ उ. * पुष्प प्राशनम्

भ. १३।१ या. भरण्यां शुक्रः ४३।३८ श्री गणेश ४ व्र.

भ. ५६।९ उ. अश्वि. मेषे च बुधः २८।३८

भ, २३।९ या मेला श्री शीतला कुराली

श्री शीतला ८

रेवत्यां रविः १४।४२ उदयोगुरोः ३९।२५ गु. उ.

भ. ६।१८ उ. ३३।४८ या. अश्वि. मेषे च भौमः १३।२९ अप्रेल ४ ता.३०

पाप मोचिनी ११ व्र. स.

भौम प्रदोष व्र. गुरोबाल्यत्वनिवृत्तिः ३९।२५

भ. २३।४७ उ. ५३।१३ या.

मेला पृथुदक (पेहोवा)

कृतिका शुक्रः ४७।१ उ.भायां १ गुरुः १५।४५ मन्वादिः चान्द्रसंवत्समाप्ति

चैत्रकृष्ण ८ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५८३८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	०	११	०	५	१०	४
१५	२८	२	१	१७	५	२४	२४
२६	१९	२९	३६	१७	१२	५६	५६
१८	४०	२४	४७	५६	१८	४८	४८
५९	४५	९६	१४	७२	४	३	३
१६	३	३२	१३	२८	३७	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	रे. ४	[illegible]	[illegible]	भ. २	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शु.१बु. ११ रा
११ १२म. १०
२ ९ चं.
३ ६ श.
४ ५ के. ७ ८

इस पक्षमें चांदी, सरसों, घी, तेल, तेज हो, लोहा, ताम्बा, जस्त,वा रंग के भावमें सस्तापन रहेगा। मक्की, ज्वार, बाजरा, का भाव सम रहेगा। गेहूं, तेज, खण्ड, गुड़के भावमें नरमाई रहेगी। ति. ४ से रूई में २५ मंदे हो, यदि बाजार पहले से ही पूरी तेजी से चल रहा हो तो इससे भी ज्यादा मंदी आवेगी। ति. १० से १४ तक चांदीमें तेजी का उछाला आवेगा। मूंगाभी तेज होगा।

इस पक्षमें गुरुका उदय और मंगलका राशि चार होता है यह कुछ वर्षा मेघाडम्बर करेंगे। ति. १।६।९ १० को कहीं कुछ वर्षाके योग हैं।

शकुन विचार—चैत्र बदी प्रतिपदा को गर्जे मेघ अपार, श्रावण भादवके विषे अनावृष्टि निरधार। चौथ पंचमी चैत्र वदि, वर्षे और चले वाय। पड़े काल उस

चैत्रकृष्ण ३० शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५८४५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	०	११	०	५	१०	४
२२	३	११	२३	२५	४	२४	२४
२०	३४	२३	१६	४३	४०	३४	३४
३	४८	३८	२०	४८	५५	३३	३३
५९	४४	५८	१४	७१	४	३	३
१	४२	५५	८	५६	३०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रे. २	[illegible]	[illegible]	[illegible]	भ. ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]

देश में ऐसा योग बताय ॥ संमता— चन्द्रमौलि शंकर चरण बार २ शिर नाय। संवत यह पूर्ण कियो गिरा गणेश मनाय ॥ चैत्र कृष्ण १ भृगु वार को "आम्र[illegible]

सर्व शुभ कार्यों के लिये वर्जित काल—जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, व्यति- भद्रायां कार्याकार्य निर्णयः— भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

देश में ऐसा योग बताय ॥ संगला--- ... मनाय ॥ चैत्र कृष्ण १ भृगु वार को "आश्रमधूर्व

सर्व शुभ कार्यों के लिये वर्जित काल---जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु शुक्र का अस्त तथा इनका बाल-वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्धयाम, महापात, विष्कुम्भ और वज्र योग के आदि की ३ घड़ियां, परिघयोग का आधा भाग, शूलयोगके आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदिकी ६ घड़ियां और व्याघात-योग के आदि की ९ घड़ियां ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्य रात्रि से पहले और पीछे के दस दस पल पापग्रह, का नवांशक ग्रहण के पहले के तीन दिन उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन, ३ दिन या ५ मूहूर्त) वर्जित हैं; स्वराशि से ४।८।१२ वां चन्द्रमा तथा पाप ग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश के भी वर्जित हैं। सब शुभ कार्यों के लिये साधारणत: शुभमुहूर्त---अपने जन्मलग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११ वीं राशि लग्न में हो, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हो, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभकार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है ॥

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म---बावली, बगीचा, तालाब, कूप मकान; इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुंडनसंस्कार, देवतास्थान, दीक्षा यज्ञोपवीत, विवाह अपूर्वदेवतीर्थदर्शन, सन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ; इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिये ॥ सीमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि च ॥ न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः ॥

गुरु शुक्र का बाल्य वृद्धत्व---शुक्र पश्चिमोदय के बाद १०दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल्य होता है। इसी प्रकार अस्त प्रथम पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का ही होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन, वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्र प्रशंसा---कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय ॥ द्वादशचन्द्रप्रशंसा--गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप दर्शने	सर्वसत्कार्ये	संग्रामे	विद्याभ्यासे	विवाहे चोत्सवे	यात्रायां	दीक्षायां	पापकर्मणि	क्रूरकृत्ये	एतत् कृत्येषु

भद्रायां कार्याकार्य निर्णयः--

वधबन्धविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत् ॥ तुरंगमहिषोष्ट्रादि कर्मविष्ट्यां तु सिद्ध्यति ॥ न कुर्यान्मंगलं विष्ट्यां जीवितार्थी कदाचन। कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं तत् सर्वं नाशतां व्रजेत् ॥ आवश्यके परिहारः---दिवापरार्द्धजाविष्टिः पूर्वार्द्धोत्था यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम् ॥

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथीनाम्
प.	आ.	उ.	नै.	ई.	द.	वा.	पू.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्ठेर्मुखघटी ५ कृष्णेशुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयंपुच्छंशुक्ला शुभम्

गुर्वादित्यविचारः---एकर्क्षे गुर्वर्के व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे। न शुभफलदाश्च गदिता अस्तमितेज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः) एकराशौ गुरुसूर्यौ न विवाहः कदाचन। ऋक्षान्तरे गुरुसूर्यौ तदा दोषो विनश्यति। सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहे कदाचन। मेषस्थिते दिवानाथे सिंहेज्ये च शुभप्रदः ॥ आवश्यके परिहारः---मघादि पञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। गंगा--गोदान्तरं हित्वा शेषांध्रिषु न दोषकृत् ॥ नीचराशि (मकर) गतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता ॥ यात्रोद्वाहो प्रतिष्ठाञ्च गृहचूड़ाव्रतादिकम्। वर्जयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे। अपवादः---अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेव च। नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥ अन्यच्च---वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे) ॥

ताराबलविचारः---कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु ॥ ताराऽपवादः---पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्याः तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरे चरमोऽशुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोअंशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

आवश्यक मुहूर्त

गर्भधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। शुभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा. मृ. ह. अनु. रो स्वा. श्र. ध. श.। शुभ लग्न—जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३.६.११ स्थानों में पापग्रह हों सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो रजोदर्शनकाल समरात्रि है ॥

चित्रा पुन. पुष्य. अश्विनी नक्षत्र गर्भधान के लिये मध्यम हैं।

गर्भधान के लिये अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्राति का दिन, संध्याकाल, मंगल रवि शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहिली चार रात्रियां, ज्येष्ठा रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२, लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १ लग्नों के आदि की आधी घड़ी, ५, १०, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधनतारा, जन्म नक्षत्र मूल भरणी अश्विनी रेवती मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात वैधृतियोग, माता पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापग्रहयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं। ।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी		मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमयकालग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिये और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिये, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—गर्भाधान से तीसरे मास में गुरु रवि मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३,५,७,१०,११,१३,१५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं ॥

सीमन्त संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ

गर्भरक्षा के लिये विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभ लग्न वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिये ॥

मेधाजनन संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहिले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगा के सुवर्ण सहित अंगुली से शहत और गौ के घी को मिला के "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा २ चार बार मधु घृत चटावें, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा भद्रा व्यतिपात वैधृति को छोड़ कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. ह. श्र. रे. मू. हों तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिका पथ्य शुभ है ॥

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती तीनों उत्तरा रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में, रवि गुरु और भौम वारों में, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं ॥

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध गुरु या चन्द्र वार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जल पूजन उत्तम है; परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र पौष या अधिक मास पूरा होने पर भी जल पूजन न करना चाहिये।

जातकर्म और नामकर्म का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन भद्रा और व्यतिपात को छोड़ कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्म काल से ११वें या १२वें दिन सोम बुध गुरु और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा रो. ह. अश्विनी पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है ॥

अथ दोला (झूला) रोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२वें दिन, शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन से रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर (१।४।५।६।७।९।१०।११ वें शुभग्रह हों ३।६।११ पापग्रह हों तो) उत्तम होता है ॥

निष्क्रमण मुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुष्य. ह. मू. पुन. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में, भौम शनि को छोड़ कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभदिन में, तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करे, इसी दिन सूर्य और नक्षत्र

भूम्यवेशनमहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल

आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवा कर या भोजन

बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों वारों नक्षत्रों और लग्नों में ... बालका का निष्क्रमण करे, इसी दिन सूर्य और नक्षत्र

भूम्युपवेशनमुहूर्त---पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर स्थिरलग्न में शुभ दिन में बालक के करधनी (कटिसूत्र) बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

तत्र मन्त्रः---रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुःप्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये! इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रक्खें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है॥

अन्नप्राशन का मुहूर्त---जन्म मास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें कन्या का भद्रादिदोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम बुध गुरु और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्विनी पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पापग्रह रहित हो, १, ६, ८ स्थानों में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी २ के मत से जन्मनक्षत्र अनु. शततारका और स्वाती अशुभ हैं॥

कर्णवेध का मुहूर्त---चैत्र पौष देवशयन (आषाढ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म-मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़ कर जन्म से १२ वें दिन या १६वें दिन या ६वें, ७वें, ८वें, मास या विषम वर्षों में सोम, बुध गुरु शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्विनी पुष्य अभिजित नक्षत्रों में, जब लग्न से अष्टमस्थान शुद्ध हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला वृष धन या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है॥

कन्या का नासिकाछेदन मुहूर्त---कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत. स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम पहर के समय नासिकावेध शुभ है।

मुण्डन का मुहूर्त---गर्भाधानकाल से या जन्म काल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़ कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र बुध गुरु और शुक्रवार लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टमलग्न को छोड़, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, तिथियों में संक्रान्ति के दिन को छोड़, जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये, मृ. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध.. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिये निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये॥

मुण्डनकर्म में विशेष---स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुद्ध समय में अपने २ इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो---"यथाकुलधर्मवः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त---मुण्डन के लिये जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये हैं वेही हजामत बनवाने के लिये शुभ हैं। वर्जित काल---शनि रवि भौमवार हजामत से नोवें दिन, सन्ध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन, रात्रि में बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवा कर या भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है॥

विशेष फल---यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है॥ किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और रूपजीवी जैसे नट भांड इत्यादि वह किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं॥ वर्णभेद से क्षौर का वार---ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय भौमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त---जन्म से ५वें या ७ वें वर्ष में उत्तरायणसूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम बुध गुरु और शुक्र वार को, ह० अश्विनी पुष्य अभि० श्र० स्वा० रे० पुन० आर्द्रा चित्रा अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष कर्क तुला और मकर राशियां न होनी चाहियें॥

विद्यारम्भ का मुहूर्त---उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि बुध गुरु और शुक्रवार को, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में, मृ० आर्द्रा पुन० हस्त चि० स्वा० श्र० ध० शत० अश्विनी मू० तीनों पूर्वा० तीनों उत्तरा, रो० पुष्य आश्ले० अनु० रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है॥

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त---सू० भौम शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये० आश्ले० म०, तीनों पूर्वा० भ० कृ० वि० आर्द्रा उषा० शत० नक्षत्र शुभ हैं॥

सीने परोने (सूचीकर्म) का मुहूर्त---अश्वि० पुन० चि० अनु० ध० ये नक्षत्र सूर्य बुध चन्द्र बृ० शु० ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियों शुभ हैं॥

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त---यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा संगति (सम्मेलन का कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत के अर्थ हैं पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत तन्तु-(धागा)-विशेष यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देख कर जन्म से वा गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उस के बाद सावित्रीपतितव्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा. रो. आश्ले. स्वा. श्र. ध. मृ. मू. रे. चि. अनु. तीनों पूर्वा. आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिये पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य है) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढशुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२ को और संक्रान्ति दिन को तथा रोगबाण को छोड़ कर मध्यान्ह के पहिले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८वें स्थान में चं. शु. १२ वें स्थान में और १।५।८ पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्णचन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल वृद्ध अस्त के समय को छोड़ कर उपनयन शुभ है।

(शेष पृष्ठ ६५ पर दूसरे कालम के नीचे देखें)

योनिनाड्यादि ज्ञान चक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावर योनि	नाड़ी	गणः	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शला० में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटीके म. धु.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	अश्वमुख	३	पूफा	पूफा.	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	उर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु.	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्र लघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पूफा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्र क्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उफा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदु मैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मिश्रसाधा.	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्र क्रूर	गजदंत	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पूभा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चि.	चि.	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.	३०

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनि नाड़ीगण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं ॥

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणों वाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिन्ह भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ीदोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहिले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (—) और जहां अधिक समझा गया वहां धनका चिन्ह (+) दिया गया है। गुणों की संख्याके नीचे कोई अंक वा चिन्ह नहीं है वहां निर्दोष समझना चाहिये। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिये कि ३६ गुणों में केवल १२ गुण मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इस लिये सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और इसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिये। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिये विचार न करना चाहिये ; क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्—ढर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुकेगोयुग्मम-थीकके। रौप्यं कांस्यमथैकनाड़ियुजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत् ॥

अपवाद—न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विद्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा-विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे ॥

कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक

मेलापक सारिणी

कन्या	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ॥।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ॥।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ॥।	ह १	चि ॥
तुला	चि ॥	२२	१४ १२	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	११ ३	२२	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४	२० ३४
	स्वा १	२१ २+	२८	२६ ३	११ ३६	१४ ३५	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२८	२३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ ४	२७॥ ४+	२१ ४+
	वि ॥।	२२	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४+
वृश्चिक	वि ।	१६॥ ६+	१६॥ १६	२४॥ ३६	१९॥ ३	१३॥ १३	२१॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६
	अनु १	२३॥ २	१८॥ १६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१९॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३
	ज्ये १	२० ३५	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ ४	२९॥	१२ ६	७ ३४६२	४ ६३	१९॥ ५३	१९ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४
धनु	मू १	१९॥ ३५	१२ १५	२५ ५+	१९॥ ६	२२॥ १६	१२॥ ६	२९	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२६
	पूषा १	२५॥ +५	१७॥ ३२	१९॥ -२०५	१४ १६२	१८॥ ६	२०॥ ३६	१९ ३	२६	२७	२२॥ ६	१८॥ २३६	१६॥ १६	११ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३
	उषा ।	२४ ५+	२५॥ ५+	१९॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२ +	२८॥	२८॥	२० १
मकर	उषा ॥।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२४॥ -६	२८	२८	१४ १६	८॥ १३६	२० ५	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५
	श्र १	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९॥ -६	२४॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३१	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५+
	ध ॥	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२३	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	२०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५
कुम्भ	ध ॥	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ ६+	१७ ३६
	शत १	२४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६॥	२८ ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	११ ६	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	१०॥ १३६	१०॥ २३६	२५ ६
	पूभा ॥।	१७॥ ३	२४॥ २+	१९॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	११॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७ १६
मीन	पूभा ।	१४॥ ३४	२१॥ ४२	१६॥ -१४	१९ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+
	उभा १	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	३६ ५	१९ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३१	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२
	रे १	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३६	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	१९

कन्या	वरस्य	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	चि ॥	स्वा १	वि ॥।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ॥।	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ॥।	पूभा ।	उभा १	रे १
तुला	चि ॥	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	११॥ ३६	२०॥ ४	२७	२३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६३	१२ ६
	स्वा १	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	३२ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	१९ ३६
	वि ॥।	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ ०१	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२१॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि ।	२१॥ ६	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१२ १५	१८ १५२	९॥ ३५
	अनु १	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२२॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	३७ ३५	२६ ५+
	ज्ये १	१९॥ ४	१४॥ ४	१९ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० +५
धनु	मू १	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६
	पूषा १	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा ।	२० १	१९ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३
मकर	उषा ॥।	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१४	१६॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र १	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२९॥	३३॥ ३
	ध ॥	१९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध ॥	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ +४	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
	शत १	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	२९ ०१३	८ १३४०	१४॥ १४	१५॥ ४
	पूभा ॥।	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२१॥	२१॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२० -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९॥ ४२
मीन	पूभा ।	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१९ -१५	२५ +५	९॥ १३५	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	१४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उभा १	२ १३६२	१९ ६	१९॥ १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२१॥ १	२१॥	२१॥	२१॥	१४॥ १३	५॥ १३४	२४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०॥ ३५	२६ ५+	२१ ५+	२५	२८॥	२०॥ १	२३॥ १	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२९॥ +२	३३	२८ ३

बिना मेल के विवाह —अयोजिता सन्धिलब्धा क्रीता स्नेहादिनार्पिता । स्वयमेवागता कन्या नवाल्हा शुद्धिमेलके । मनसश्चक्षुषो यस्मिन् वरे श्रद्धा च शोभिते । [illegible]

ग्रहमेलापकविचारः—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो, और कन्या की जन्म कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय, तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न से ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिये और दोनों का पञ्चम भाव विशेषता से देखना चाहिये। और कन्या के सप्तमेश तथा शु आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादिदोषजां कन्यामच्युतविवाहादिशान्तिं विधाय दारहायोगजायायुष्मते वराय दद्यात्।

विवाहार्थं वर के गुण—कुल, शील स्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन, सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिये।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन, नास्तिक, आजीविका से रहित, अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा, ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिये।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल (अथवा अतिदुर्बल लम्बी व पतली), झगड़ालू, अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करें।

वाग्दान—(कुड़माई—सगाई) से पहिले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारणी से विचार कर लेना और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्न पूर्वक वर्जित करने चाहियें—(१) दारिद्र्य, (२) मृत्युः, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार, (५) संतान का अभाव।

वर वरण मुहूर्त—उ. ३ रो. कृ. पू. ३, रिक्तामावस्या को छोड़ कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देख कर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठ कर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगावे, तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत कर और वर के मुख में एक छुहारा या मीठा (गुड़, बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े—"तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते हृयरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्य प्रदास्यति" कहे।

कन्यावरण मुहूर्त—उ. षा. स्वा. श्र. पूर्वा ३, अनु. ध. कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फल पुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहियें।

विवाहकाल नियम—१६ वर्ष से पहले पुरुष का और आठ वर्ष से पहिले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। कन्याओं के विवाह विषय में सब धर्मशास्त्र और ऋषियों की एकानुमति है। उक्तञ्च—पदि सा दातृवैकल्याद्रजः पश्येत् कुमारिका॥ भ्रूणहत्याश्च यावत्यः पतितः स्यात्तदप्रदः(ज्ञातः)। तस्माद्विवाहयेत् कन्यां यावन्नर्तुमती भवेदिति सम्वर्तः॥ अतः रजोदर्शन से पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान करे) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देख कर विवाह कर देवे। तद्यथा—मासत्रयादूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है। वसिष्ठः—दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः॥

विवाह से पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिये मेलापक सारणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (−) का चिन्ह लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार

(पृष्ठ ६१ का शेष)

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यंप्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः॥

प्रयोग चक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनाशदः
चरणे	४	साधनाहितः

मन्त्र दीक्षामुहूर्त—अधिकमासरहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. भा. फा. इन मासों में, शुक्ल पक्ष की २।३।५।७।१०। ११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष. मि. सिं. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११वें पापग्रह हों, तब मन्त्र-दीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सत्तीर्थ पर, सूर्य-चन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मन्त्रदीक्षा लेते समय मास तथा तिथ्यादि पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिये॥

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्तम्—श्रा. आश्वि. का. वै. माघ, मार्ग. फा.मासों में २।६।७।१०।१३।१५ तिथियों में अथवा—या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा,सू.शु. बृ.बं.वारों में पुनः, पु.स्वा. उ. ३,श्र. ध. श. रे.अ.ह. ऽनु.रा.मृ.ज्ये. नक्षत्रों में (स्वस्वामिनक्षत्रे वा) लग्नात् ३।६।११ पापः; १।४।५।७।९।१० सौम्या, चन्द्रतारानुकूले; गुरुशुक्रयोरुदितयोः शुभे लग्ने १२ शुद्धे सति मह्यवादियागरहिते। (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे) प्रारम्भ करना शुभ है।

"राश्यभिधान कल्पलता" ग्रन्थ देखकर निर्दोष शुद्ध सुन्दर नाम रख लेना चाहिये। बहुत से विद्वान् कन्या-संकल्प के समय पर ही "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः" बोलते हुए शीघ्रता से नाम बदल देते हैं जिस में अनेक दोष रह जाते हैं। नाम बदलने का फल कुछ नहीं होता। एतदर्थ लग्न से पहले ही अच्छी तरह सारणी आदि देखकर बदलना चाहिए ॥

अथ विवाह मासः—विवाहशुद्धौ-मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। वर्ज्योऽर्को धनुषश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे तथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥ केशवेन यदि गौरीहतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्ममासादिषु निषेधः—सब से जेठे लड़के अथवा सब से बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़ कर और जो पुरोहित पहिला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावे, दूसरे आचार्य से करावे। इसी प्रकार जिस गृह में पहिला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है, अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़ कर दानादि पूर्वक करे।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छे मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या वा पुत्र के विवाह के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहिले कर ले और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध तिलतर्पणभी न करे और मुंडन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पल्टने पर फिर भले ही शुभ कार्य कर ले वहां छः मास का विचार नहीं है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—साहे चिट्ठी (कुंकुमपत्रिका) आने पर, विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण में १ साल, स्त्री के मरण में ३ मास, भाई व पुत्र के मरण में १॥ मास, कुल वालों के मरण में २०॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे॥

विवाह के मुहूर्त प्रथम ही शुद्ध कर चुके हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देख कर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र शुद्ध देखिये और वधू की राशि से चन्द्र गुरु देखिये, बस इसी को त्रिबल शुद्धि कहते हैं। यह त्रिबल शुद्धि जिस उत्तम विवाह लग्न के दिन मिले वही विवाह दिन उत्तम है। यदि रवि गुरु पूज्य हों तो मध्यम है। यदि सूर्य गुरु नेष्ट हों तो विवाह नहीं [illegible]

(बृह०)। तुलाराशौ अपूज्यरविः—धर्मधीधनगतो दिवाकरस्तौलिराशिजनितस्य शोभनः। आवश्यके पूज्यरविपरिहारः—गार्ग्यांगिरोसत्वशिष्ठगौतमपराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहाः ॥ (मु० प्र० सा०)।

विवाहादौ त्रिबल शोधनम्

पूज्य गुरुः—१०।६।३।१
श्रेष्ठ गुरुः—९।५।११।२।७
नेष्ट गुरुः—४।८।१२
श्रेष्ठ रविः—३।६।१०।११
पूज्य रविः—१।२।५।७।९
नेष्ट रविः—४।८।१२
नेष्ट चन्द्रः—४।८ पूज्य चन्द्रः—१२
श्रेष्ठ चन्द्रः—१।२।३।५।६।७।९।१०।११

{ध. मी. कर्क राशि में हों तो नेष्ट गुरु भी श्रेष्ठ है।}

कन्यावरयोः तैलादिलापने (चन्द्र) दिन संख्या

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैलादि ला.	७	५	९	९	५	७	७	९	५	९	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि—रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु मू. रे. एतद्वेधरहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहिततिथिषु शुभम् ॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्तः—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहले ३।६।९ इन दिनों को छोड़ कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्द हाथ दलना पीसना कूटना मंगल-कलशादि स्थापन करना घर लीपना आंगन सफाई भूषण घढाना वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोया बांधना गणेशादि पूजन नान्दीश्राद्ध मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाहमुहूर्त में दश दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धा तिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त अलग दिये हुए हैं। इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१ लत्तादोषज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाश	भयम्	मृत्यु	भयम्	बंधुनाश	कार्यहानि	कुलक्षयं	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिनने से उ. फा. १२वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त [illegible]

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	विवाहन.
श्ले	मृ	ध	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये	
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध	
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उफा	म	
चि	म	ह	श	स्वा	ह	पूषा	मू	अनु	चि	पूफा	
मू	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा	

हर्षण, वैधृति, साध्य—व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इस नक्षत्र में विवाह करने से पात दोष होता है।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. बु. श. रा. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है ॥

४ वेधदोष चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.		
अभि.	उषा.	श्रवण	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	म.	ह.	उफा.	

ऊपर के नक्षत्रका विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिये।

५ जामित्र दोष चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उ.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	न.
अनु	ज्ये	ध	पूभा.	उभा.	अ	कृ	मृ.	पुन	उफा	ह	श्र.न.

विवाह लग्न से ७वें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है, ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं, याने १४वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

७ एकार्गल दोष:—

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है ॥

८ उपग्रह—

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें ८वें १० वें १४वें १५वें १८वें १९वें २१वें २२वें २३वें २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९ क्रांतिसाम्य दोष चक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	कं०	तु०
सिंह	म०	ध०	वृश्चि	मी०	कुं०

नीचे या ऊपर की राशि पर सूर्य हो या चन्द्रमा हो तो स्थल क्रांतिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमा में।

६ बाणज्ञानाय सुलभ चक्रम्

बाण नाम	गतांशा: प्रति राशौ अर्कस्य	५ कर्म वर्ज्या:	वार वर्ज्या:	समयपरत्वेन वर्ज्या:
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्रौत्याज्यम्
वन्हि	२।११।२०।२९	गृहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवात्याज्यम्
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययो:वर्ज्यम्

१० दग्धा तिथि दोष:

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशय:
२	४	६	८	१०	१२	तिथय:

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं सो विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजंगं क्रांतिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनविवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

लत्तादि दोषाणां परिहार वाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रे बांगर) जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त) एकार्गलं च काश्मीरे वेध सर्वत्र वर्जयेत् ॥ उपग्रहर्क्षे कुरुवाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त अवस्थान) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम् ॥ सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे: (उज्जैन प्रान्त) च लत्ताभं त्यजेत् विद्धं किल सर्वदेशे ॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिता: ॥

विशेष परिहार:—चित्रांगते पात विचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धा:। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजात:, सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपात: ॥

युतिपरिहार:—स्वक्षेत्रग: स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधु:। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्यो: श्रेयसे तदा ॥ अत्यावश्यके वेधपरिहार:—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नत: (नारद:) ॥ अतोन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिम: ॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो नचान्यपादभादरात् (वसिष्ठ:) ॥ अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्याक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागा:—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नत: ॥ अस्यापवाद:—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते ॥ जामित्रपरिहार:-(व्यवहारसमुच्चये)-स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्र वर्गगे। हत्वा जामित्रकृद्दोष करोति विपुलं सुखम्। मुहूर्तचिंतामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ता जामित्रकर्तर्युदयास्तदोषा:। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदयेतु दोषा: ॥

विवाहे लग्न शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं. पाप:	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभा: लग्नेश	०	मं.	०	श. चं	त्याज्या:
चं. क्रूरा	कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च				चं.	मं.	चं.मं. शुभा:		विद्धभञ्च			गोधूली त्याज्या:

सर्वथा लग्न भंग योगाः—व्यये शनिः खेऽब्जनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ रिपौ मृतौग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरू समौ) ।। वर्गोत्तमं विनात्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदस्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ।। दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ।। पंगवन्धादि लग्नानां गौड़मालवयोरेव त्यागः, बादरायणः—मासशून्यायह्वास्तारा राशयो बधिरादयः। गौड़मालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशेन गर्हिताः ।।

कर्त्तरी दोषः—लग्नस्य पृष्ठाग्रयोः साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारी न कर्त्तरी चेति पितामहोक्तिः। "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्तरी। दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न ।।

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह ।। अपवादांतरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ।। मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांशग्रहाद्भवाः। ये दोषान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी ।। अब्दायनर्तु मासोत्थाः पक्षतिथ्यर्क्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे। लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये ।। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत् ।। बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्य सहस्रं लक्षमंगिरा ।। स्मरण रहे कि पुर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्तगणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३	स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे
६	३	६	२	२	२	६	६	६		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		स्याद्दशविंशोपका-
			५	५	९					
			६	६	१०					धिकम्
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	१।।		विशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा

वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिके नैवं फलं विचत्ते ।। गोधूलिं त्रिविधां वदन्ति मुनयो नारीविवाहादिके, हेमन्ते शिशिरे प्रयाति मृदुतां पिण्डीकृते भास्करे। ग्रीष्मेऽर्द्धास्तमिते वसन्तसमये भानौ गते दृश्यतां, सूर्ये चास्तमुपागते भगवति प्रावृट्शरत्कालयोः ।।

गोधूलिके त्याज्यदोषः—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः ।। अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे। लग्ने षष्ठेऽष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः ।। "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्ण चाण्डालादि जातीनां विवाह मुहूर्तः—कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां, वारे योगे चापि धिष्ण्ये निषिद्धे। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं, प्रीत्यर्थायुःप्राप्तये शौनकाद्याः ।।

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभ ज्ञानाय चक्रम्।

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्रीः	उन्नति	फलम्

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यक साभिजित्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेधभृगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः ।।

वधूप्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहिले पहल आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर समदिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरांत ३ रे, ५ वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है। ५ वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना। व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्। रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा. ३ पुष्य अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १।२। ।५। ६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में ५।८।११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है।

प्रवेशस्य समयमाह—वधू प्रवेशो न दिवाप्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः, सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ।।

विवाहतः प्रथमवर्षे वधूनिवास फलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या ५वें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हों तब सोम, बुध, गुरु या शुक्रवार को २, ३, ६, ७, या १२ वीं

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. मृ.

मुहूर्तः—जाते द्विरागमे पत्न्या पुनः

द्विरागमे राहुदिक् ज्ञानम्

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. मृ. रे. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ हैं। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः—द्विरागमे षोडशवासरान्तरे एकादशाहे समवासरेषु। नचात्र ऋक्षं न तिथिर्न-योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम् ॥

शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः—सम्मुख वा दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीड़न आदि उपद्रव तथा दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाह-सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे संमुखेऽस्तगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वा प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अन्धशुक्रज्ञानम्—रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः। तावच्छुक्रो भवेदन्धः संमुखे दक्षिणे शुभः ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पाम्बरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम्। महाश्वेतगवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्। तत्रार्घ्य मन्त्रः—ॐ नमस्ते सर्वलोकेश नमस्ते भृगुनन्दनः! मम सर्वार्थसिद्ध्यर्थं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥

प्रथम स्त्री-संगम मुहूर्तः—स्त्रीणां रजोदर्शनोत्तरं वा पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि उत्तरा ३, रो. पुष्य. अनु. ह. मृ. चि. स्वा. ध. एषु. भेषु, रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, शुभवासरे एकयाम-रात्रोत्तरं प्रथमः पुत्रार्थी संगमः शुभः ॥

नववध्वा पाक कर्म मुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, २।५।८। ११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे, सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवास्त्रीणां वस्त्र सुवर्णरत्नभूषणादि धारण मुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. ध. रे, अश्वि, एषुभेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावास्यारहिततिथिषु, नूतनवस्त्रसौवर्णरत्नरजत-दन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

रोमज वस्त्र धारण मुहूर्तः—नीलवस्त्रोदिते धिष्ण्ये रेवतीपुष्ययोरपि। शुक्रे शनैश्चरेऽर्के च धारयेद्रोमजाम्बरम् ॥

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालेन समर्पितम्। निन्द्येऽपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम् ॥

भूषण घट्टन मुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।

दुकान खोलने का मुहूर्तः—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३. पुष्य. अनु. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, मंगलबार को छोड़ अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़ कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पापरहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र शुक्र लग्न में हों तो अत्यंत शुभ है ॥

भर्तृगृहात्पितृगृहागमन मुहूर्तः—पूर्वा. ३. भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु भेषु. चं. ब. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

द्व्यंग (बरोजा) मुहूर्तः—जाते द्विरागमे पत्न्या पुनः पतिगृहे गमः। पितृगेहे स्थिता या च स द्व्यंग इति कीर्तितः ॥ ह. मृ. श्र. अश्वि. पुष्य. ध. पुन. रे. एषु नक्षत्रेषु, सत्तिथौ सुलग्ने विवाहोक्तमासेषु राहोर्दक्षिण-पृष्ठगे च सति स्त्रीणां द्व्यंगः शुभः ॥

द्व्यंगार्थं राहुदिक् ज्ञानम्

सूर्य राशि	राहु दिशा
१।५।९	पूर्व
२।६।१०	दक्षिण
३।७।११	पश्चिम
४।८।१२	उत्तर

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्ट चक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन नक्षत्र तक गिन कर चक्र से शुभा-शुभ फल जानें ॥

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋत	सन्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवा कर्म (नौकरी) मुहूर्त—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र. बु. बृ. शु. वारेषु शुभग्रहे लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामि-सेवकयोः राशीशयोर्नि मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्तः—अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु. भेषु. रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. बृ. शु. वारेषु, शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः सत् ॥

द्रव्य प्रयोग मुहूर्तः—पुन. स्वा. मृ. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि, एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु, ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभ ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिये वर्जित काल—मंगलवार, संक्रांति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्र-युक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिये। कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३. वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्री काशीनाथमते क्रय विक्रय मुहूर्तः—पुष्य. पूभा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा. ३. आश्ले. रे. एत भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य्य क्रयविक्रयाणां कार्यम् ॥

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है। वस्तु बेचने के नक्षत्र—पूफा. पूषा. पूभा. वि. कृ. श्ले. भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचनेवालों को ९५ फी-सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचने के नक्षत्र दिखलाये गये हैं परन्तु संप्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना, ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये बात कहाँ तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करनेवाले व्यापारी

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्तः—४। ।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो, कृ. आर्द्रा. भ. अ. श्ले. म. ज्ये. मू. चि. पूर्वा. ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार—

ग्रा-भात् वासकर्तृनक्षत्र यावद्द गणना कार्या		
स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृह स्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४, श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ ७ हस्ति, ८ (०)। इसमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो चार आदि सम संख्या की अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिये और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न ही चार द्वार वाले घर में। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती हैं। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं॥

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान—

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुण कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने इस नक्षत्र को आठ से भाग देवें शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ॥

वास्तुभूमि का शुभाशुभ विचारः—

नई बस्ती में गृहादि बनवाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा एक हाथ गहरा गड्ढा बना कर उसको जल से भर देवें, प्रातःकाल उसको देखें यदि जल युक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है॥

मकान बनवाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा—

मकान की नीव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक न निकले अथवा ३॥ साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़; राख बाल निकलें तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्तः—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारंभ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. बृ. शु. श. वारों में, रो. मृ. चि. ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह, तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्स चक्रम् सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मी प्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छ	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः—पुष्य. उ. ३. रो. मृ. श्र. आश्ले. पूषा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो इस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्ति दायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। चि. अ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धन-धान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रान्ति मिति दिन पांचवे, सप्तम नवमे जोय। दश इक्कीस चौबीस में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्ज्जनीयाः। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नीव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता॥

गृहमध्ये कूप विचार :—

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुखम्	शत्रुभयं

अथ चुल्ली चक्रविचारः।

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लीचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें।

नूतन गृहप्रवेशे मुहूर्त :—

माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (गार्ग) कार्तिक-मासयोः॥ (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा ३ अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में, चं. बृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्नों में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, ४ था ८ वां स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्मराशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमालायुक्त कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात जीर्ण वा तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. और मार्गशीर्ष फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है॥

शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्याम्	आग्नेयां
देवालयारम्भे सूर्य	मी. मेष. वृष	मि. क. सिं.	कर्क तुला वृश्चिक	धन मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य	सिं. कं. तु.	वृश्चि.ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भेसूर्य	म. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धन
खात दिशा ज्ञानं	आग्नेयां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों उ. रो. ध. श. म. पूषा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों, चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध वा मीन या कर्क में हो लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १६ वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप चक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डित जल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वाद तथा शीघ्र जल	दक्षि. ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रित जल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल

गणना क्रमः—मध्य पूर्व आग्नेय दक्षिण आदि क्रमेण बोध्यम् ॥

सूर्यभात्तड़ाग चक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

शेष ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम् वारिवाहे वारिहानिम्। गणना-क्रमः—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्य वारिवाहः।

ईशान	पूर्व	आग्नेय
श्र. भ. कृ. मध्यजल	पुन. पु. श्ले. जलाभावः	म.पूफा.उफा. मध्य जलम्
उत्तर	मध्य	दक्षिण
पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	रो. मृ. आर्द्रा. शीघ्रजलम्	ह. चि. स्वा. जलाभावः
वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य
श्र. ध. श. क्षारजलम्	मू. पूषा. उषा अमृतजलम्	वि. अनु. ज्ये. बहुजलम्

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने। मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमा महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ॥

अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रे. एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २।३।५।७।८।१०। ११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १।२।३।५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११। स्थानेषु शुभैः, ६।११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता विशेषण लग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः : कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठामुहुर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्तः—श्र. ध. मृ. मू. अनु. रे. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३. पुन. पु. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़ कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना, यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानि कारक, शेष दो बचने पर पाताल में धन हानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करना। इसके बाद आहुति चक्र जरूर देखिये।

ग्रहमुखे होमाहुति ज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा। नित्य नैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेऽप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शांती चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालये अग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्गभंगगृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकर्मनृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षते ॥

पापग्रहमुखे हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्ति विधाय

गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने । आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् । गोमूत्र-मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचार—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ।

अर्थ—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे का वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दुगना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना ।

हल प्रवहण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामावषष्ठ्यष्टमी रहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनें				
३	८	९	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

बीज वपने राहु चक्रम् राहु नक्षत्रात् दिनभं यावत गणना कार्या								
८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्तः—ह० अश्वि० पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. म. मू. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ॥

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा) द्यपादस्थे संजायते रजः ।

तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्न भक्षणमु र्तः—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्र को छोड़ कर सू. चं. बु. गु. शुक्रवार शुभ है ॥

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्तः—गाय लेना हो तो उ. फा. से दिननक्षत्र तक गिने; उसमें से मस्तक पर ३ फल लाभदायक, मुख पर २ फल हानि, पाद पर ६ फल अर्थ लाभ, हृदय में ५ फल सुख, स्तन में ६ फल महालाभ, भग पर १ फल वृद्धि, गुह्य पर ४ फल भय होता है । महिषी लेनी हो तो भी इसी क्रम से शुभाशुभ फल जानो, परन्तु वहां सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने । वृषभ ले ा हो तो भी, परन्तु ६नक्षत्र पाद पर धरशेष स्थानमें दो-दो धरो और गाय के समान फल जानो । (चौदस चौथ चौपाया । मंगल हानि करे घर आया) ॥

सूर्य नक्षत्रात्काष्ठादि (गृहरा) आदि संस्थापन चक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्वाथकर्म	सुखं	संख्या
[illegible]	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभं	फलम्

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु उत्तरा ३, रो. ह. पुष्य अश्वि. श मृ. वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शु. वार हों, शुक्ल पक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है ॥ तृण काष्ठादि संग्रहे निषेधः—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए ।

औषध का मुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्म नक्षत्र को छोड़ कर इन नक्षत्रों में, ४।९।१४ को छोड़ कर शुभतिथियों में, भौम शनि को छोड़ अन्य वारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा. आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एतद्भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकेष्वपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमन-कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

दिग्द्वार लग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम्
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
१ १	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	महाभयं

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांशक में यात्रा कदापि न करे । शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह और ३।६।१०।११। वें पाप ग्रह हों । अशुभ लग्न वह है जब १।६। ८।१२ वें चन्द्रमा, १० वें शनि, ७ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो । अन्यच्च—यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा । दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित हैं ॥

दिक् शूल ज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूल चक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.
चं.श.	चं. बृ	गुरु	सू. शु.	सू. शु.	भौम	मं.	बु. श.	वारा	ज्ये.	पूभा.	रोहि.	उफा.

दिक्शूल परिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य दैत्येज्य दिवाकराणाम । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥ १ ॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि । [illegible] भाक ॥ २ ॥

उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	[illegible]	शुभ	फलम
	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	फलम

पयस्तथा । गुरुमांसादि वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि । माषान्भुक्त्वा शनिवारे शूले गच्छन्न दोषभाक् ॥ २ ॥

[illegible] सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें ।

शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे
सम्मुखे नेष्ट	

पू.	अग्नि.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बायें की शुभ (मुहूर्तचिन्तामणि में बायें अशुभ, दाहिने शुभ) ॥ समयशूल उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्न-काल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए ॥ गर्गगुरु अंगिरा मुहूर्त—गर्गजी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे । बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे, अंगिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय । भगवान के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषःकालः सप्तपञ्चा (५७) रुणोदयः । अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

चन्द्रवास चक्रम			
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन्राशौ आवश्यके घटयात्मक चन्द्रवास चक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घटयात्मक चन्द्रवास जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए ।

कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे ।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदः । पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषालयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥ इति ॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषम् । कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः ।

सर्वार्थसिद्धि योगः—शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे । शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त्य में हो तो मृत्यु होती है । सर्वत्र अंक आने से सौख्य जय लाभ हो । विजयादशमी को बिना सर्वार्थादिमुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है । बायाँ स्वर चल समय पूर्व व ईशान को और दाया चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य मत जाओ, हानि होती है । जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है ।

वर्णक्रमेण प्रस्थान विधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधुघृत, शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी के घर में या नगर से बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान रक्खें । अथवा सब से मन की प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए ।

यात्राके पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व

दिने चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्						
सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्							
घटि	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
३॥।	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला.
७॥	अ.	रो.	ला	शु.	चं.	का	उ.
११।	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला	शु.
१५	रो.	ला	शु.	चं.	का	उ.	अ.
१८॥।	का	उ.	अ.	रो.	ला	शु.	चं
२२॥	ला	शु.	चं.	का	उ.	अ	रो.
२६।	उ.	अ.	रो.	ला	शु.	चं.	का.
३०	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला.

सूचना यदि ३० घटी से न्यूनाधिक्य दिन या रात्रि मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी पल ज्ञात होंगे ।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बायें ते दाहिने जो आवे तत्काल । अन धन लक्ष्मी बहु-मिले चलते प्रातःकाल ॥ विप्र २ अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गो, दधि, सर्षप, कमल, निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गौरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धिवाक्य, सजल पूर्णघट यात्रा पश्चाद्रिक्तघट यात्रा समय देखना शुभ है । अशुभशकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट अंगहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है ।

रामदैवज्ञोक्तं आवश्यके यात्रा मुहूर्तं चक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया त्रयोदशी, चतुर्थी चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाओं आगे उठा कर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े कार्य सिद्ध, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त चि. ह. पु. मृ. पूर्वा. रे. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सतिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूले सति शुभः।

यात्रा निवृत्तौ प्रवेश मुहूर्तः—मृ. रे .अनु. रो. उ. रे. ह. अ. पुष्य. स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु २।५।६।८।९।११। १२ एषु लग्नेषु; १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पा[illegible]:४।८।शुद्धौ शुभः। वि. कृ. पू. रे. भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आ. ले. नक्षत्राणि; ४।९।१४।६।१२।८।३० तिथयः; सू. मं. वारौ १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को भिल्लाप कष्टप्रद मित्र होता है विशेषः—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनं। नवमे जातु नो कुर्यादि्दने वारे तिथावपि।

अथ घात चन्द्र वारादीनां चक्रम्

मे	वृ	मि.	क	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मे.		कु.	मि.	म.	मि.	व.	वृष	मि.	सिं	ध.	कुं.	घातचन्द्र
र.		चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	श.	घातवार
म.	ह.	स्वा.	ऽनु	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कं.	वृश्चि.	मि.	मे.	स्त्रीचन्द्रग
का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	बै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	ऽगं	बृः	वं.	गं.	व्या.	वै.	घातयोग
१	-	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

युद्ध: विवाह राजसेवा; वाहन; रोगादि कार्यों में घात चक्र देखना और तीर्थ यात्रा तथा विवाहादि शुभकार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है। "घाततिथिर्घातवार घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।"

वाम दक्षिण निर्देश——

अथ चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना; पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही सरठ (गिरगट) के [illegible] के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्गविभागे पल्ली (छिपकली, कोढ़किरली) पतन फलम्

स्थानम	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम	फलम
शिरसि	राज्यलाभ	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंध	वामपादे	नाश:
नासाग्रे	व्याधि	वामकर्णे	बहुलाभ	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभ:
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयो:	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागम्	हस्तयो:	वस्त्रलाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाश:
कटिभागे	अश्वलाभ	बा. मणिबंधे	कीर्तिनाश:	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम	दक्षिणपादे	गमनम	मुखे	मिष्टान्नभोजनं
ललाटे	बन्धुदर्शन	उत्तरोष्ठे	धननाश:	पादमध्य	स्त्रीनाश:
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयो:	धनाप्ति:	पादान्ते	मृत्यु:
कण्ठे	शत्रुनाश:	उदरे	भूषणलाभ:	केशान्ते	मरणम्
जंघयो:	शुभम्	स्कन्धयो:	विजय:	नखेषु	धान्यलाभ:
द. मणिबंध	मनस्ताप:	हृदये	धनलाभ:	दक्षांगुष्ठे	धनलाभ:

पल्लीपतने प्रशस्त वारतिथ्यर्क्षाणि——यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्वि. रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इतोऽन्यदभेषु निद्या: ॥

पल्लीपाते कर्तव्य कर्म——पल्ली (किरली) तथा सरठ (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मत्युयोग, दग्धदिन, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शांति के लिये जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्——छिक्का प्राय: सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग से अथवा——छींक सूचनी छल कर लीन्हीं; पीनस सरदी खांस फल होनी। छींक पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सर्व सवारे ॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भाषै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशैं ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी ॥ अपनी छींक महा दुखदाई ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वेश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का——आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्का: शुभावहा: ॥ एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक ॥

...भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही सरठ (गिरगिट) के चढ़ने का जान। ...के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अङ्गस्फुरण फलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	भूमिलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्वबृद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल लसन मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी यथोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पातफलचक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूमिकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रह अतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध, महर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटा ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमी के पशु हो	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिन अन्धेरा	प्रजाक्षय	ग्रहयुद्ध	राजाओं में विग्रह	तिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहस्पृति	अकाल	सूर्यचंद्र मंद पड़े	देशक्षय	वनपशु गांव बसे	मनु.शून्य हों
श्वेतमंडल	भय हो	कृष्ण मंडल	राज्य नाश	उल्लू बोले	गृह शून्य हो
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	बांबी कबूतर-घर में बसे	गृहस्वा.नाश
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश		
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमिगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब-अधिक देख पड़े	रोगभय
स्त्रीवध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्र बालकवध	दुर्भिक्ष पड़े		राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सब वस्तु महंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकरवर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिनका पक्ष	प्रजानाश

अथ वासरस्तैल तैलाभ्यंग फल विविधक

वाराः	सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.
फलम्	तापम्	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्तहानि	विपत्ति	सुख सुभोग
पातन	पुष्पं	०	मृति	०	दूर्वा	गोमय	०

तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

तदात्राह—
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांति वैधृतावपि। षष्ठ्यष्ट॰योश्च विष्टयां च, तैलाभ्यंगो नपर्वसु

विशेषः—यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो, अथवा उत्सव के दिन वा वात-रोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काकस्पर्शादी फलम्—मस्तक पर काकस्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है, कमर, कन्धे पर भी अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है॥ काकमैथुन का देखना छः मास के मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इच्छित कार्य नाश करता है। इसके दोष दूर करने से निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृत-छाया-पात्र दान पञ्चगव्य से स्नान भी करे, इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते है॥

अथ काक वचन फल विचारः—काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत्। त्रयोदशपदं दत्वा षड्भिर्भागं समाहरेत्॥ लाभच्छेदस्तथा सौख्यं भोजनं च धनागमम्। निश्शेषमरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम्॥

कपोतः (कबूतर)—सिर पर गिरे वा स्व पालतू कबूतर के बिना अन्य कबूतर वा उल्लू गृह में चला जावे तो मृत्यु व मान स्थान हानि होती है, तद्दोष—निवृत्यर्थ दुर्गापाठ, होम सप्तधान्य दानादि करने से शान्ति हो॥

अथ स्वप्न-विचारः

स्वप्न ७ प्रकारका होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए का सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना), चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्थामें इच्छाकी हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित (दिन मे कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण), सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)॥ पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुज्ञजन को देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रखे, फिर स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन कर शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्नाः——राजा विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्र वाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना। महल, पर्वत, सिंह अश्व, इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, वेदध्वनि, श्रवण रक्त पीत, पुष्प-दर्शन, दर्पण, प्राप्ति, दही चावल भोजन, जूआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा, कपास इन दो वस्तुओं को छोड़ कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखें कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियों में बहुत गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश वा तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट खावे तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू या सर्प के जल में पैर पर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकडी, पैरों में जंजीर का बन्ध पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊँ, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना, राज्य लाभ करता है, गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोग-नाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्रीप्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्यालाभ अन्य आदि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्टा अपने अंग में लगाना श्वेत, चन्दन, श्वेत वस्त्र श्वेत पुष्पों से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर आकर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी, समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना, कष्टनिवृत्ति करता है। ऊँचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है, राजा गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे, ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों, तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाय बिना भाग गया हो तो उसको समझ लेना चाहिये कि हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे। यदि किसी की बहन यह स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जावेगा, और यदि वह विवाहिता है तो उसके घर में सर्व प्रकार से सुख शांति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्नाः——लाल वस्त्र पहिरना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई कपास, तेल लोहा मिलना, इनसे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश क[illegible] स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि वा कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग-कष्टसूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का कटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊँट, गधे भैंसे पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्रवाली स्त्री का आलिंगन करना बन्दर, सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत, प्रेत, चाण्डालों के साथ मिलना अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़े, महल ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र, इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक होती है। अगर "विधवा" स्त्री यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे, या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूद कर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्टकरेगा।

स्वप्न का फल कब मिलेगा ?

रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का तीन मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहिले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मण-भोजनादि करवाना चाहिये। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

आयुर्निर्णय——१——लग्नेश अष्टमेश से तथा जन्मलग्न और चन्द्र पर से आयुष्य का निर्णय करे दोनों से एकवाक्यता न मिले तो जन्म लग्न होरा लग्न से आई आयु ठीक समझे चरे चरे, स्थिरे-द्विस्स्वभावे-दीर्घायुः। द्विःस्वभाव-द्विस्वभावे, चरे-स्थिरे मध्यायुः। स्थिरे स्थरे। चरे-द्विःस्वभावे-अल्पायुः।

२——११, १, ४, ७, १०, ५, ३, इन स्थानों में लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के पड़ने से दीर्घायु होती है। ३।४ में पापग्रह हों; पणफर में भी यदि पापग्रह हों तो मध्यायुः इसके अतिरिक्त अल्पायुः।

३——लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यायु, शत्रु हो तो अल्पायु।

अंक प्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखवावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्य सिद्ध होवे। यदि ८।४ १०।५ बचे तो कार्यनाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

* अथ सर्वसाधारणोपयोगी प्रश्नः *

मित्र मिलाप प्र. १			मुकदमा प्र. २			यात्रा प्र. ३		
७	२	१	४	२	१	५	४	३
३	६	५	३	९	८	१	६	९
४	९	८	६	७	५	२	८	७
पशु लेने का प्र. ४			लाभालाभ का प्र. ५			नौकरी का प्र. ६		
२	१	३	७	६	५	१	५	८
४	५	६	६	८	९	७	३	६
७	९	८	२	३	१	९	४	२
विद्या परीक्षा प्र. ७			परदेशी प्र. ८			शत्रुनाश प्र. ९		
७	८	५	१	३	४	६	८	९
४	३	२	३	२	८	२	१	३
९	१	६	९	६	५	४	५	७

प्रश्नकर्ता पूत हुए ब्राह्मण आदि से पंचांग की पूजा करके जिस विषय का प्रश्न करना चाहे उसी विषय के चक्र के नवघरों में से किसी एक घर पर ईश्वरस्मरण करता हुआ अंगुली रक्खे, फिर उसी विषय के फल चक्र में उसी संख्या के सामने फल देख लेवे, यथार्थ फल मिलेगा। स्मरण रहे कि प्रश्न एक दिन में एक ही बार करना चाहिये, बार बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल न मिलेगा।

मित्र मिलाप फल (१)
१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र [illegible] युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)
१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी।
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जावेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)
१ गमन मत करो, लाभ नहीं।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर हैं।
३ भूलकर भी मत जाओ, हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शकुन विचारके गमन करो लाभ होगा।
७ यात्रा पीड़ाकारक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा प्रबल हो पर खर्च विशेष होगा।

पशु लेने का फल (४)
१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु अभी खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु मोल मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम।

लाभालाभ का फल (५)
१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से सवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)
१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी, धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, यत्न रखो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६ ग्रह रुकावट करेंगे ग्रह दान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा।
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षाका फल (७)
१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होवेगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देवेगी।
५ विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होवेगा।
८ विद्या से विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)
१ परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में थका आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में फिरता है।
५ रास्ते में ठहर गया है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च में तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी रवाना हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)
१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होय।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से भय मिटे।
८ सुलह हो जावेगी।
९ शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

गुप्त चिंता का प्र० १०			कर्ज लेना देना प्र० ११			खेती करें या नहीं प्र० १२		
७	८	२	१	३	२	?	८	३
९	६	१	८	९	६	६	४	७
३	४	५	५	४	७	५	१	२
रोगी का प्र० १३			गर्भ में क्या है प्र० १४			चोरी गई का प्र० १५		
१	६	२	७	६	१	८	७	३
७	५	८	४	२	८	४	९	६
३	४	९	३	५	९	२	५	१
पुत्र गोद लेना प्र० १६			अनाज खरीद का प्र० १७			विवाह शादी प्र० १८		
३	५	६	८	७	५	५	४	३
४	१	८	९	४	३	२	१	६
२	९	७	२	१	६	८	९	७

रोजगार का प्र० १९		
६	७	९
३	४	८
१	५	२

गुप्त चिन्ता का फल (१०)
१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम का नतीजा खराब होगा।
४ किसी का भरोसा न करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही में रहेगी।
७ तेरा दुःख से बाहर पड़ा है। ८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता सच्ची है किसी की मदद लो।

कर्ज लेने देने का फल (११)
१ यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२ पैसा देना भय है आगे नहीं रहे।
३ लेने देने का नतीजा खराब रहेगा।
४ लेन में मुश्किल होगी।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६ इस जगह हानि लाभ सम है।
७ लेने देने में कोई हर्ज नहीं।
८ अन्त समय [illegible] में आराम होगा।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा।

खेती करें या नहीं फल (१२)
१ खेती में लाभ रहेगा।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३ खेती को कीड़े का भय है।
४ मनोकामना सिद्ध होगी।
५ [illegible] मेहनत [illegible] लाभ।
६ थोड़ी वर्षा पर सावधानी से।
७ खेती में [illegible] भय है।
८ [illegible] के कारण कुछ हानि होगी।
९ खेती में हानि रहेगी, मत करो।

रोगी का प्रश्न फल (१३)
१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२ ग्रहदशा खराब है, शांति करो।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४ चिन्ता न करो आराम होगा।
५ रोगी की आबोहवा बदली करो।
६ रोगी को पथ्य से रक्खो।
७ चिन्ता न करो, ९ दिन भारी हैं।
८ आराम हो जावेगा, पर खर्च अधिक है।
९ होनहार में किसी का वश नहीं चलता।

गर्भ में क्या है फल (१४)
१ इस गर्भ की कुशलता नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ जोड़ी [illegible] जन्मेगी।
९ लड़का लड़की जोड़े होंगे।

चोरी गई का फल (१५)
१ वस्तु शीघ्र मिलेगी, चोर घरही है।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा।
४ चोर जबर है, माल न मिलेगा।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा।
६ चोरने तेरी वस्तु और को दे दी।
७ माल आधा नष्ट हो गया।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ो।
९ चोर छोड़ देगा तुम्हारा माल मिलेगा।

पुत्र गोद लेने का फल (१६)
१ गोद लेने से लाभ रहेगा।
२ यह लड़का वफादार नहीं।
३ लड़का खर्च करावेगा।
४ लड़का अच्छा नहीं है।
५ अच्छी निभेगी।
६ सावधानी से गोद लेना।
७ बेमुहब्बत निकलेगा।
८ घर में अनबन रहेगी।
९ बुराई नहीं है।

अनाज खरीद फल (१७)
१ अनाज में भारी लाभ होगा।
२ नफा टोटा समान रहेगा।
३ घाटा रहेगा।
४ अन्न के खराब होने का भय है।
५ साझी व्यापार न करें।
६ देर से बिकेगा।
७ अनाज में सवाये होंगे।
८ बेचना ठीक है, लेना मत।
९ प्रश्न फल अनुकूल है।

विवाह शादी का फल (१८)
१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं।
३ विवाह न होगा।
४ विवाह जरूर होगा।
५ विवाह में रुकावटें होंगी।
६ किसी की खुशामद करो।
७ खर्च करो, काम बनेगा।
८ थोड़ा विलम्ब से होगा।
९ स्त्री गुणवाली मिलेगी।

रोजगार प्रश्न फल (१९)
१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा।
२ विशेष परिश्रम करने से रोजगार होगा।
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४ जलमिट्टी कोयला से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी।
६ दुश्मन नुकसान करेंगे सावधान।
७ रोजगार ठीक होने में देर है।
८ खोटे ग्रहकी दशा है अभी चुप रहो।
९ जो विचारा है वह पूर्ण नहीं होगा।

❁ अथ वर्षप्रवेश सारणीयम् ❁

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

त्रिराशिपति चक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राशयः
सू	शु	श	शु	वृ	चं	बु	मं	श	मं	वृ	चं	दि ल. प.
वृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	वृ	चं	रा ल. प.

वर्षफल साधन प्रकारः—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष जाने । स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्रसौरात्) इस प्रकार से गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे जो सारिणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश होता है । यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना ; ऊपर के वारांक में सात से अधिक आ जाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्ष प्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा । (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट-सूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना । प्रविष्टों के अनुसार कभी कभी वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है । इस इष्ट के अनुसार आगे लिखी स्वदेशीय लग्न सारिणी से लग्न साधन करके वर्ष-कुंडली लगाना । वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जब कि जन्म और वर्षप्रवेश सामयिक गणित एक ही करण ग्रन्थ से की हो । वर्ष बनाने में जन्मस्थान की स्वदेशीय सारणियों से वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्षपत्र अशुद्ध होगा । मुन्थानयनप्रकारः—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना; यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है ।

अथ त्रिपताकी चक्रम्—तिरछी और खड़ी तीन तीन रेखा खींचकर उनके कोण परस्पर मिलाकर त्रिपताकी चक्र तैयार करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का लग्न रख कर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है कि गतवर्षों में एकयुक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्मराशि से चन्द्रमा होता है, एक युक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्म-स्थान से होते हैं; परंच राहु केतु को विपरीत जानना ॥ फल—यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से सन्ताप, शनैश्चर से रोग, भौम के वेध से शरीर पीड़ा होती है ; शुभग्रहों के वेध से जय [illegible]

अथ हर्ष बलम्

स्थानबल—सूर्य लग्न से ९, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु० ५, श० १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं । स्वोच्चबल—सू. १।५, चं० २।४, मं० १।८।१०, बु० ३।६।, गु० ९।१२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं । पुरुष स्त्री बल—स्त्रीग्रह (चं०, बु० शु० श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू० मं० गु०) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं । दिनरात्रिबल—दिन के वर्षेष्ट में पुरुष ग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं । मित्र शत्रु ज्ञानम्—जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रह से ३।५।९।११ इन स्थानों पर जो ग्रह हों वह उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वें हों तो सम, १।४।७।१०वें होवें तो शत्रु ।

वर्षेश निर्णये दृष्टि ज्ञानम्—९।५वें ४५ कला, ३रे ४० कला, ११वें १० कला ४।१०वें १५ कला, और १७वें पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती है ।

अथ वर्षेश निर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी इन पांचो अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उनमें से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा । कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल दृष्टि अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा ॥ यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा ॥ फल—वर्षेश ६।८।१२वें अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा, यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो ।

अथ लग्नपत्रात् सूक्ष्म लग्न साधनम्—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो । फिर सूर्य की राशि, अंश प्रमाण लग्नसारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्प कोष्ठक के राशि अंश लेना ; राशि अंश के नीचे स्पष्ट सूर्य की कला विकला युक्त करना । तदनन्तर इष्टयुक्त किये हुए कोष्ठक और अल्पकोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) [illegible]

मुद्दा दशा चक्र विधिश्च

जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है । योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, ३ और जोड़ें, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है ॥

मुद्दादशा क्रमः

शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा

मं.	पिं.	ध	भ्रा	भ.	उ	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

ग्रह के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से सन्ताप, शनैश्चर से रोग, भौम के वेध से शरीर पीड़ा होती है ; शुभग्रहों के वेध से जय सौम्य लाभ होता है, शुभाशुभ ग्रहों का वेध देख कर वर्ष का फल कहे ।।

कोष्ठक और अल्पकोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्धि जो अंश कला विकला फल आवे वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से [illegible]

।। लग्न सारणीयम् ।।

पलभा ७।१२

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४
०	३८	४५	५२	५६	४	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२
वृषभ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
१	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
२	१६	२७	३६	४७	५७	७	१९	३०	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९
३	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५
४	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१
५	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७
६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३
७	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८
८	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४२	५३	३	१३	२३	३३	४३
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३
९	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७
१०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	१	८	१५	२२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	२०९
०	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	
वृषभ	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	२४२
१	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	
मिथुन	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	२९९
२	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	
कर्क	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	३४७
३	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	
सिंह	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	३४६
४	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	
कन्या	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३५०
५	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	
तुला	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	३५०
६	२५	३७	४९	१	१३	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	
वृश्चिक	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	३४६
७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	
धनु	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	३४७
८	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	
मकर	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	२९९
९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	
कुम्भ	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	२४२
१०	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	४	
मीन	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२०९
११	५५	२	९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	

।। दशमलग्न सारणीयम् ।। (लङ्कोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५
०	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८
वृषभ	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६
२	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	५	१५
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
८	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	लङ्कोदय पलानि
मेष	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	२७८
०	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	
वृषभ	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	२९९
१	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
मिथुन	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	३२३
२	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
कर्क	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	३२३
३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
सिंह	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९९
४	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	
कन्या	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	२७८
५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	
तुला	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	२७८
६	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	
वृश्चिक	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	२९९
७	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
धनु	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	३२३
८	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
मकर	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	३२३
९	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
कुम्भ	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	२९९
१०	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	
मीन	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	२७८
११	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४०, इसकी राशि १ अंश १५ के प्रमाण लग्नसारणी में कोष्ठक देखो तो ८।४८ है । इसमें इष्ट घटचादि ९।५ मिलाया तो १७।५३ हुए यह इष्ट युक्त किया हुआ लग्नसारणी का कोष्ठक हुआ इस इष्टकोष्ठक से अल्पकोष्ठक सारणी में देखो तो (१७।५१) तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि के ५ अंश लिये । इसके नीचे सूर्य की कला ५० विकला ४० को युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक १७।५३ और अल्पकोष्ठक १७।५१ का अन्तर किया तो पल २ हुआ इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१ और ऐष्य (आगे का) कोष्ठक १८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्धि ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया तो १२० हुए, इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई ; शेष १० बचे इनको ६० से गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया तो लब्धि ५५ विकला आई । इस अंशादि फल ०।१०।५५ की प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्ट लग्न हुआ ।

```
११)  २  (०।१०।५५
    ६०
   १२०
   ११०
    १०
    ६०
   ६००
   ६०५
```

अथ दशमलग्न साधनम्—सूर्योदयात् घटचादि इष्टकाल में से दिनार्ध हीन करना, जो शेष बचे वह दशमभाव का इष्ट होता है (यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर घटाना') । इसी दशम भावेष्ट का जन्मकालीन इष्ट मान कर इस दशम-लग्नसारणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशम भाव सिद्ध होता है । कभी कभी दशमभाव में नवम या एकादश राशि भी हो जाती है । दशमभाव में ६ राशियुक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि करने से सप्तमभाव होता है ।

भावसाधनम्—चतुर्थभाव में लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे, उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे, अर्थात् प्रथम बार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने से द्वितीयभाव की आरम्भसन्धि होगी, फिर उसी आरम्भसन्धि में षष्ठांशयुक्त करने से दूसरा भाव होवेगा । इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५ बार षष्ठांश युक्त करने से चतुर्थ भाव की आरंभ संधि तक चारों भाव हो जावेंगे । इसके अनन्तर एक २ बढ़ाते हुए उत्क्रम से चतुर्थभाव की आरम्भ संधि से लग्न की विराम संधि तक १ से ५ पर्यन्त केवल राशिसंख्या में युक्त करने से सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे, अर्थात् चतुर्थभाव की आरंभसंधि में एक राशियुक्त करने से पंचम भाव की आरम्भ संधि हो जावेगी, तीसरे भाव में २ राशि युक्त करने से पंचम भाव होगी, इसी प्रकार क्रमपूर्वक सन्धि सहित ६ भाव हो जावेंगे इसके अनन्तर शे० ६ भावों के साधन उपर्युक्त सन्धि सहित छः ही भावों में ६–६ राशियुक्त करने से सन्धि सहित द्वादश भाव होते हैं ।।

संवत् २००७ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्ट सूर्योदय समये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

(दिन द्वयान्तरकरणात्सूक्ष्मगतिः) केतकी अहर्गणः ५४६२ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इन्द्र.
चैत्रशुक्लपक्षः	१	र.	११। ४।४३।५०	५।१०।१५।५८	१०।२६। ६।५८	१०।१।२१।४०	९।२०।५९।२०	४।२२। ६।५०	११।१४।५२।१७	२। ७।४९।३०	५।२३।२४।११
	२	चं.	११। ५।४३।२३	५। ९।५६।४२	१०।२७।५८।११	१०।१।३४।४४	९।२१।४३।३४	४।२२। २।१०	११।१४।४९। ७	२। ७।५०। २	५।२३।२२।४१
	३	मं.	११। ६।४२।५६	५। ९।३६।११	१०।२९।५०।४९	१०।१।४७।५३	९।२२।२९। २	४।२१।५७।४०	११।१४।४५।५६	२। ७।५०।३५	५।२३।२१। ७
	४	बु.	११। ७।४२।२६	५। ९।१६। १	११। १।४४।२४	१०।२। ०।५४	९।२३।१५।५४	४।२१।५२।५९	११।१४।४२।४६	२। ७।५१।१४	५।२३।१९।३४
	५	गु.	११। ८।४१।५२	५। ८।५५।५९	११। ३।३९।२२	१०।२।१३।५२	९।२४। ३।११	४।२१।४७।२९	११।१४।३९।३५	२। ७।५२। १	५।२३।१७।५६
	६	शु.	११। ९।४१।१८	५। ८।३४।३७	११। ५।३५।३१	१०।२।२६।४६	९।२४।५०।५६	४।२१।४३।५५	११।१४।३६।२५	२। ७।५२।४४	५।२३।१६।२६
	६	श.	११।१०।४०।४१	५। ८।१३।५५	११। ७।३२।४९	१०।२।३९।२९	९।२५।३९।५४	४।२१।३९।३९	११।१४।३३।१४	२। ७।५३।३१	५।२३।१४।४५
	७	र.	११।११।४०। १	५। ७।५३। २	११। ९।३१।२३	१०।२।५२। ५	९।२६।२९। २	४।२१।३५।१०	११।१४।३०। ४	२। ७।५४।२५	५।२३।१३।१६
	८	चं.	११।१२।३९।२०	५। ७।३२।४६	११।११।३१। ८	१०।३। ४।५२	९।२७।१९।५९	४।२१।३०।५०	११।१४।२६।५३	२। ७।५५।२३	५।२३।११।३८
	९	मं.	११।१३।३८।३९	५। ७।१०।५९	११।१३।३२। २	१०।३।१७।२८	९।२८।११। ६	४।२१।२६।३०	११।१४।२३।४३	२। ७।५६।२०	५।२३। ९।५८
	१०	बु.	११।१४।३७।५८	५। ६।४९।३०	११।१५।३४। ८	१०।३।३०। ०	९।२९। २।२०	४।२१।२२।१९	११।१४।२०।३२	२। ७।५७।१८	५।२३। ८।२०
	११	गु.	११।१५।३७।१२	५। ६।२८।४४	११।१७।३६।४७	१०।३।४३।२२	९।२९।५४।१४	४।२१।१८। ४	११।१४।१७।२२	२। ७।५८।१६	५।२३। ६।४३
	१२	शु.	११।१६।३६।२४	५। ६। ८।१७	११।१९।४०।३४	१०।३।५४।४७	१०। ०।४७।१०	४।२१।१३।५५	११।१४।१४।११	२। ७।५९।२४	५।२३। ५। ६
	१३	श.	११।१७।३५।३४	५। ५।४८। ४	११।२१।४४।३८	१०।४। ७। १	१०। १।४०।५९	४।२१। ९।५०	११।१४।११। ०	२। ८। ०।३२	५।२३। ३।२९
	१५	र.	११।१८।३४।४३	५। ५।२८।१९	११।२३।४९।२३	१०।४।१९।१६	१०। २।३५।२८	४।२१। ५।४९	११।१४। ७।५०	२। ८। १।४१	५।२३। १।४८
वैशाखकृष्णपक्षः	१	चं.	११।१९।३३।४९	५। ५। ९। ०	११।२५।५४।२२	१०।४।३१।१६	१०। ३।२९।३८	४।२१। १।५२	११।१४। ४।३९	२। ८। २।५४	५।२३। ०। ७
	२	मं.	११।२०।३२।५६	५। ४।४९। ५	११।२७।५८।२६	१०।४।४३।१७	१०। ४।२५। ८	४।२०।५७।५८	११।१४। १।२९	२। ८। ४।१२	५।२२।५८।२४
	३	बु.	११।२१।३२। १	५। ४।२८।२६	०। ०। ३। ०	१०।४।५५।१९	१०। ५।२०।५३	४।२०।५४।११	११।१३।५८।१८	२। ८। ५।३१	५।२२।५६।५३
	४	गु.	११।२२।३१। १	५। ४। ९।१४	०। २। ६।४०	१०।५। ६।५४	१०। ६।१६।५२	४।२०।५०।२८	११।१३।५५। ८	२। ८। ६।५४	५।२२।५५।१२
	५	शु.	११।२३।२९।५९	५। ३।४९।५२	०। ४। ९। ४	१०।५।१८।५०	१०। ७।१३।४१	४।२०।४६।४४	११।१३।५१।५७	२। ८। ८।१७	५।२२।५३।२८
	६	श.	११।२४।२८।५३	५। ३।३२। ६	०। ६। ९।१८	१०।५।३०।४३	१०। ८।१०।४८	४।२०।४३।४१	११।१३।४८।४६	२। ८। ९।४३	५।२२।५१।४७
	७	र.	११।२५।२७।४९	५। ३।१४।२४	०। ८। ७।४९	१०।५।४२।२२	१०। ९। ८। २	४।२०।४०। ८	११।१३।४५।३६	२। ८।११।१७	५।२२।५०।१०
	८	चं.	११।२६।२६।४१	५। २।५६।१६	०।१०। ३।४७	१०।५।५३।५६	१०।१०। ६। ७	४।२०।३६।४०	११।१३।४२।२५	२। ८।१२।५४	५।२२।४८।२५
	९	मं.	११।२७।२५।३१	५। २।३८।४९	०।११।५७।१४	१०।६। ५।२४	१०।११। ४।४१	४।२०।३३।१४	११।१३।३९।१५	२। ८।१४।३८	५।२२।४६।४४
	१०	बु.	११।२८।२४।१८	५। २।२२। ५	०।१३।४७। ६	१०।६।१६।४१	१०।१२। ३।४०	४।२०।२९।५६	११।१३।३६। ४	२। ८।१६।१९	५।२२।४५। ७
	११	गु.	११।२९।२३। ६	५। २। ५।३८	०।१५।३३।४०	१०।६।२८। ८	१०।१३। २।५३	४।२०।२६।४२	११।१३।३२।५४	२। ८।१८।११	५।२२।४३।३०
	१२	शु.	०। ०।२२।५१	५। १।५१। ०	०।१७।१८। ४	१०।६।३९।१४	१०।१४। २।१०	४।२०।२३।३५	११।१३।२९।४३	२। ८।१९।५२	५।२२।४१।५६
	१३	श.	०। १।२०।३४	५। १।३६।१८	०।१८।५४।२५	१०।६।५०।२४	१०।१५। १।५३	४।२०।२०।३१	११।१३।२६।३२	२। ८।२१।४३	५।२२।४०।१९
	१४	र.	०। २।१९।१४	५। १।२२।३२	०।२०।२८। १	१०।७। १।१९	१०।१६। १।३७	४।२०।१७।३१	११।१३।२३।२२	२। ८।२३।२८	५।२२।३८।४१
	३०	चं.	०। ३।१७।५३	५। १। ७।४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

संवत् २००७ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ५४९२ मासारंभे

मासः	ति. वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इंद्र
वैशाख शुक्लपक्षः ।	१ मं	०। ४।१६।३१	५। ०।५४।२२	०।२३।२४।४७	१०। ७।२२।५५	१०।१८। ३।४३	४।२०।११।५३	११।१३।१७। ०	२। ८।२७।२५	५।२२।३५।२८
	२ बु	०। ५।१५। ६	५। ०।४२।२५	०।२४।४४।२८	१०। ७।३३।३२	१०।१९। ४।५९	४।२०। ९।११	११।१३।१३।४९	२। ८।२९।२४	५।२२।३३।५०
	३ गु	०। ६।१३।३८	५। ०।३१।१६	०।२६। ०।४०	१०। ७।४४।१०	१०।२०। ६।३२	४।२०। ६।३६	११।१३।१०।३९	२। ८।३१।२६	५।२२।३२।१३
	४ शु	०। ७।१२। ७	५। ०।२०।३५	०।२७।१२।१४	१०। ७।५४।३२	१०।२१। ८।२०	४।२०। ४। १	११।१३। ७।२८	२। ८।३३।३२	५।२२।३०।४०
	५ श	०। ८।१०।३४	५। ०।१०।१६	०।२८।१८।११	१०। ८। ४।५९	१०।२२।१०।२६	४।२०। १।३४	११।१३। ४।१७	२। ८।३५।३८	५।२२।२९। २
	६ र	०। ९। ९। ०	५। ०। ३। १	०।२९।१६।११	१०। ८।१५।२९	१०।२३।१२।४३	४।१९।५९।१३	११।१३। १। ६	२। ८।३७।४८	५।२२।२७।२९
	७ चं	०।१०। ७।२५	४।२९।५९। १	१। ०।१४।५६	१०। ८।२५।३७	१०।२४।१५।१६	४।१९।५७। ०	११।१२।५७।५६	२। ८।४०। १	५।२२।२५।५५
	८ मं	०।११। ५।४८	४।२९।४४।३८	१। १। ६।१८	१०। ८।३५।३८	१०।२५।१८।१४	४।१९।५४।५०	११।१२।५४।४५	२। ८।४२।२२	५।२२।२४।२५
	९ बु	०।१२। ४।१०	४।२९।३७।५९	१। १।५१।११	१०। ८।४५।५४	१०।२६।२१।२२	४।१९।५२।४८	११।१२।५१।३४	२। ८।४४।४२	५।२२।२२।५५
	१० गु	०।१३। २।२९	४।२९।३१।५२	१। २।३०।५०	१०। ८।५५।३७	१०।२७।२४।५०	४।१९।५०।३७	११।१२।४८।२४	२। ८।४७। २	५।२२।२१।१०
	११ शु	०।१४। ०।४८	४।२९।२६।२०	१। ३। ४।५२	१०। ९। ५।२४	१०।२८।२७।५८	४।१९।४९।२६	११।१२।४५।१३	२। ८।४९।२२	५।२२।१९।५२
	१२ श	०।१४।५९। ४	४।२९।२१।४८	१। ३।३२।४६	१०। ९।१५। ४	१०।२९।३१।४४	४।१९।४७।४२	११।१२।४२। २	२। ८।५१।४३	५।२२।१८।२५
	१३ र	०।१५।५७।१६	४।२९।१७।२४	१। ३।५५।४१	१०। ९।२४।१८	११। ०।३५।४६	४।१९।४५।५७	११।१२।३८।५२	२। ८।५४।१४	५।२२।१६।५२
	१४ चं	०।१६।५५।२८	४।२९।१४।५३	१। ४।११।५३	१०। ९।३३।४७	११। १।३९।५४	४।१९।४४।२८	११।१२।३५।४१	२। ८।५६।४६	५।२२।१५।२५
	१५ मं	०।१७।५३।३९	४।२९।१२।११	१। ४।२२।४४	१०। ९।४३।१६	११। २।४४।४९	४।१९।४२।५८	११।१२।३२।३१	२। ८।५९।१७	५।२२।१३।५५
ज्येष्ठ कृष्णपक्षः ।	१ बु	०।१८।५१।४९	४।२९।१०।५५	१। ४।२८।१९	१०। ९।५२। ८	११। ३।४९। ५	४।१९।४१।३५	११।१२।२९।२०	२। ९। १।५२	५।२२।१२।२९
	३ गु	०।१९।४९।५९	४।२९। ९।४७	१। ४।२७।५०	१०।१०। १। ८	११। ४।५३।४६	४।१९।४०।१९	११।१२।२६।१०	२। ९। ४।४१	५।२२।११। ६
	४ शु	०।२०।४८। ७	४।२९।१०।१९	१। ४।२१।३२	१०।१०।१०। १	११। ५।५९।१०	४।१९।३९।१४	११।१२।२२।५९	२। ९। ७। ८	५।२२। ९।४०
	५ श	०।२१।४६।१३	४।२९।१०।५२	१। ४।१०।४४	१०।१०।१८।५०	११। ७। ४। ८	४।१९।३८।१०	११।१२।१९।४८	२। ९। ९।४७	५।२२। ८।१३
	६ र	०।२२।४४।१५	४।२९।१३।१२	१। ३।५५।४८	१०।१०।२७।४०	११। ८। ९। ७	४।१९।३७।१२	११।१२।१६।३८	२। ९।१२।२९	५।२२। ६।५४
	७ चं	०।२३।४२।१३	४।२९।१५।२४	१। ३।३५।१७	१०।१०।३६। ४	११। ९।१४।३५	४।१९।३६।१८	११।१२।१३।२७	२। ९।१५।१४	५।२२। ५।२८
	८ मं	०।२४।४०।११	४।२९।१८।१४	१। ३।११।४९	१०।१०।४४।३५	११।१०।२०।३८	४।१९।३५।३५	११।१२।१०।१६	२। ९।१८। ५	५।२२। ४। ८
	९ बु	०।२५।३८। ७	४।२९।२२।१४	१। २।४४। ६	१०।१०।५२।४१	११।११।२६।३१	४।१९।३४।५९	११।१२। ७। ५	२। ९।२०।५३	५।२२। २।४९
	१० गु	०।२६।३६। ६	४।२९।२५।२६	१। २।१५।२२	१०।११। ०।३२	११।१२।३२।३८	४।१९।३४।२३	११।१२। ३।५५	२। ९।२३।४२	५।२२। १।३०
	११ शु	०।२७।३४। १	४।२९।२९।४९	१। १।४४। ६	१०।११। ८।२०	११।१३।३८।२०	४।१९।३३।५४	११।१२। ०।४४	२। ९।२६।३८	५।२२। ०।१४
	१२ श	०।२८।३१।५३	४।२९।३५।३१	१। १।११। २	१०।११।१६।१६	११।१४।४४।५६	४।१९।३३।३६	११।११।५७।३३	२। ९।२९।३१	५।२१।५८।५२
	१३ र	०।२९।२९।४५	४।२९।४१।२४	१। ०।३६।५८	१०।११।२४। ०	११।१५।५०।४९	४।१९।३३।२२	११।११।५४।२३	२। ९।३२।३०	५।२१।५७।४७
	१४ चं	१। ०।२७।३६	४।२९।४८।५८	१। ०। २।५६	१०।११।३१।२६	११।१६।५७।४३	४।१९।३३।११	११।११।५१।१२	२। ९।३५।२८	५।२१।५६।३५
	३० मं	१। १।२५।२५	४।२९।५६।३८	०।२९।२७।५०	१०।११।३८।४२	११।१८। ४।२३	४।१९।३३।११	११।११।४८। १	२। ९।३८।२८	५।२१।५५।२३

संवत् २००७ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ५५२१ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इंद्र.
ज्येष्ठ शुक्लपक्षः ।	१	बु	१। २।२३।१३	५। ०। ५। २	०।२८।५४।४३	१०।११।४५।४३	११।१९।११। २	४।१९।३३।२२	११।११।४४।५१	२। ९।४१।३५	५।२१।५४।१४
	१	गु	१। ३।२०।५८	५। ०।१३।५५	०।२८।२१।५४	१०।११।५३। २	११।२०।१८। ०	४।१९।३३।५८	११।११।४१।४०	२। ९।४४।१७	५।२१।५२।५९
	२	शु	१। ४।१८।४३	५। ०।२३।४९	०।२७।५१।२५	१०।११।५९।५३	११।२१।२५।१६	४।१९।३४।१६	११।११।३८।३०	२। ९।४७।२४	५।२१।५१।४७
	३	श	१। ५।१६।२६	५। ०।३४। १	०।२७।२२।४८	१०।१२। ६।४०	११।२२।३२।२४	४।१९।३४।३७	११।११।३५।१९	२। ९।५०।२८	५।२१।५०।३८
	४	र	१। ६।१४।११	५। ०।४५।२९	०।२६।५६।११	१०।१२।१३। १	११।२३।३९।४७	४।१९।३५। ६	११।११।३२। ८	२। ९।५३।३८	५।२१।४९।३६
	५	चं	१। ७।११।५३	५। ०।५७।१४	०।२६।३३। ४	१०।१२।१९।५२	११।२४।४७। २	४।१९।३५।४६	११।११।२८।५७	२। ९।५६।४२	५।२१।४८।३२
	६	मं	१। ८। ९।३५	५। १। ९।२२	०।२६।१२।२५	१०।१२।२६। २	११।२५।५४।३६	४।१९।३६।३२	११।११।२५।४६	२। ९।५९।५३	५।२१।४७।३१
	७	बु	१। ९। ७।१४	५। १।२१।२५	०।२५।५५।४४	१०।१२।३२।१७	११।२७। २।३१	४।१९।३७।२३	११।११।२२।३६	२।१०। २।५६	५।२१।४६।३०
	८	गु	१।१०। ४।४९	५। १।३४।१९	०।२५।४२।४७	१०।१२।३८।२४	११।२८।१०।२६	४।१९।३८।१७	११।११।१९।२५	२।१०। ६। ७	५।२१।४५।२९
	९	शु	१।११। २।२४	५। १।४८। ०	०।२५।३३।३८	१०।१२।४४।१३	११।२९।१८।१४	४।१९।३९।२२	११।११।१६।१४	२।१०। ९।१८	५।२१।४४।३५
	१०	श	१।११।५९।५९	५। २। २।१०	०।२५।२६।५६	१०।१२।४९।५५	०। ०।२६। ६	४।१९।४०।२६	११।११।१३। ४	२।१०।१२।३२	५।२१।४३।३७
	१२	र	१।१२।५७।३१	५। २।१७।१०	०।२५।२५।१६	१०।१२।५५।१६	०। १।३४।२३	४।१९।४१।४६	११।११। ९।५३	२।१०।१५।५०	५।२१।४२।४०
	१३	चं	१।१३।५५। २	५। २।३२।१७	०।२५।२८।३०	१०।१३। ०।४०	०। २।४२।३६	४।१९।४३। ५	११।११। ६।४२	२।१०।१९। ८	५।२१।४१।४९
	१४	मं	१।१४।५२।३४	५। २।४८। ७	०।२५।३५।३८	१०।१३। ५।५३	०। ३।५०।५३	४।१९।४४।२८	११।११। ३।३२	२।१०।२२।२६	५।२१।४१। २
	१५	बु	१।१५।५०। ५	५। ३। ४।३०	०।२५।४७।१०	१०।१३।१०।५९	०। ४।५९।१३	४।१९।४५।५४	११।११। ०।२१	२।१०।२५।५५	५।२१।४०।१२
प्र. आषाढ कृष्णपक्षः ।	१	गु	१।१६।४७।३४	५। ३।२१।४०	०।२६। ३। ४	१०।१३।१५।५४	०। ६। ७।३०	४।१९।४७।३१	११।१०।५७।१०	२।१०।२९।१३	५।२१।३९।२५
	२	शु	१।१७।४५। २	५। ३।३९। ७	०।२६।२३।४६	१०।१३।२०।३१	०। ७।१६।१६	४।१९।४९।१६	११।१०।५३।५९	२।१०।३२।३६	५।२१।३८।३८
	३	श	१।१८।४२।३०	५। ३।५६।५६	०।२६।४७।५६	१०।१३।२५। ५	०। ८।२५।४३	४।१९।५१। ७	११।१०।५०।४८	२।१०।३६। ०	५।२१।३७।५५
	४	र	१।१९।३९।५६	५। ४।१५।१४	०।२७।१७।५९	१०।१३।२९।३५	०। ९।३३।३३	४।१९।५३। २	११।१०।४७।३८	२।१०।३९।२९	५।२१।३७।१६
	५	चं	१।२०।३७।२१	५। ४।३३।४७	०।२७।५०।२८	१०।१३।३४। १	०।१०।४२।१८	४।१९।५५।१२	११।१०।४४।२७	२।१०।४२।५०	५।२१।३६।२९
	६	मं	१।२१।३४।४८	५। ४।५२।५२	०।२८।२६।५३	१०।१३।३७।४४	०।११।५१।२५	४।१९।५७।२८	११।१०।४१।१६	२।१०।४६।१९	५।२१।३५।५३
	७	बु	१।२२।३२।१३	५। ५।१२।३२	०।२९।१०।४४	१०।१३।४१।४६	०।१३। ०।२९	४।२०। ०। ४	११।१०।३८। ६	२।१०।४९।३४	५।२१।३५।२६
	८	गु	१।२३।२९।३६	५। ५।३२।३८	०।२९।५६।५३	१०।१३।४५।२२	०।१४। ९।३२	४।२०। २।१७	११।१०।३४।५५	२।१०।५२।५९	५।२१।३४।५२
	९	शु	१।२४।२६।५८	५। ६।५३।१३	१। ०।४६।५२	१०।१३।४८।४३	०।१५।१८।५४	४।२०। ४।४१	११।१०।३१।४४	२।१०।५६।२८	५।२१।३४। ८
	१०	श	१।२५।२४।२०	५। ७।१४। २	१। १।४१।१०	१०।१३।५२। ५	०।१६।२७।५०	४।२०। ७। ८	११।१०।२८।३३	२।११। ०। ०	५।२१।३३।३६
	११	र	१।२६।२१।३९	५। ६।३५।२०	१। २।३९।१८	१०।१३।५५।१६	०।१७।३७।१२	४।२०। ९।४०	११।१०।२५।२२	२।११। ३।३६	५।२१।३३। ७
	१२	चं	१।२७।१८।५८	५। ६।५६।४९	१। ३।४१।१७	१०।१३।५८।१६	०।१८।४६।३७	४।२०।१२।१८	११।१०।२२।१२	२।११। ७। ५	५।२१।३२।३८
	१३	मं	१।२८।१६।१७	५। ७।१८।२५	१। ४।४६।३४	१०।१४। ०।३६	०।१९।५६।१०	४।२०।१५।१८	११।१०।१९। १	२।११।१०।३७	५।२१।३२।१३
	१४	बु	१।२९।१३।३५	५। ७।४१।२८	१। ५।५५।३०	१०।१४। ३। ४	०।२१। ५।३८	४।२०।१८।११	११।१०।१५।५०	२।११।१४।१०	५।२१।३१।४८
	३०	गु	२। ०।१०।५४	५। ८। ४। ८	१। ७। ८।२४	१०।१४। ५।४२	०।२२।१५।[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

संवत् २००७ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ५५५१ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इंद्र.
प्र० आषाढ़ शुक्लपक्षः ।	१	शु	२। १। ८।१३	५। ८।२७।११	१। ८।२४।३२	१०।१४। ७।४४	०।२३।२५। ८	४।२०।२४।१८	११।१०। ९।२९	२।११।२१।१४	५।२१।३१। १
	२	श	२। २। ५।२९	५। ८।५०।४२	१। ९।४३।३०	१०।१४। ९।५४	०।२४।३४।४८	४।२०।२७।२५	११।१०। ६।१८	२।११।२४।४७	५।२१।३०।४७
	३	र	२। ३। २।४६	५। ९।१४।२०	१।११। ६।१८	१०।१४।११।३८	०।२५।४४।४९	४।२०।३०।४०	११।१०। ३। ७	२।११।२८।१९	५।२१।३०।२९
	४	चं	२। ४। ०। ३	५। ९।३८।१६	१।१२।३२।१०	१०।१४।१३।२६	०।२६।५४।४०	४।२०।३४। ५	११। ९।५९।५६	२।११।३१।४८	५।२१।३०। ७
	५	मं	२। ४।५७।२०	५।१०। २।४६	१।१४। ०।५८	१०।१४।१४।४९	०।२८। ४।४१	४।२०।३७।२३	११। ९।५६।४५	२।११।३५।२८	५।२१।२९।५६
	६	बु	२। ५।५४।३६	५।१०।२७।१८	१।१५।३२।३१	१०।१४।१६।१२	०।२९।१५।११	४।२०।४०।४८	११। ९।५३।३५	२।११।३९।२२	५।२१।२९।४९
	७	गु	२। ६।५१।५०	५।१०।५२।३७	१।१७। ६।५८	१०।१४।१७।१०	१। ०।२५।१२	४।२०।४४।२४	११। ९।५०।२४	२।११।४२।३६	५।२१।२९।४२
	८	शु	२। ७।४९। ५	५।११।१८।१८	१।१८।४५।१८	१०।१४।१८। ०	१। १।३५।१३	४।२०।४८।११	११। ९।४७।१३	२।११।४६।१२	५।२१।२९।३५
	९	श	२। ८।४६।२०	५।११।४३।५९	१।२०।२५।३७	१०।१४।१८।४३	१। २।४५।२२	४।२०।५१।५४	११। ९।४४। २	२।११।४९।५२	५।२१।२९।३१
	१०	र	२। ९।४३।३४	५।१२।१०।१२	१।२२। ९। ४	१०।१४।१९।१९	१। ३।५५।३४	४।२०।५५।३४	११। ९।४०।५१	२।११।५३।२८	५।२१।२९।२८
	११	चं	२।१०।४०।४७	५।१२।३६।३६	१।२३।५५।१९	१०।१४।१९।३७	१। ५। ६। ०	४।२०।४९।४६	११। ९।३७।४१	२।११।५७।११	५।२१।२९।२४
	१२	मं	२।११।३८। १	५।१३। ३।१४	१।२५।४६।१३	१०।१४।१९।५५	१। ६।१६।३४	४।२१। ४।१६	११। ९।३४।३०	२।१२। ०।३२	५।२१।२९।२४
	१३	बु	२।१२।३५।१५	५।१३।३०।२५	१।२७।३८। २	१०।१४।१९।४८	१। ७।२६।५३	४।२१। ८।१७	११। ९।३१।१९	२।१२। ४।१२	५।२१।२९।२८
	१५	गु	२।१३।३२।२७	५।१३।५७।४७	१।२९।३१।४४	१०।१४।१९।१६	१। ८।३७।२३	४।२१।१२।२५	११। ९।२८। ८	२।१२। ७।५५	५।२१।२९।३१
द्वि० आषाढ़ कृष्णपक्षः ।	१	शु	२।१४।२९।३९	५।१४।२५। ७	२। १।२८।३०	१०।१४।१८।५०	१। ९।४८। ७	४।२१।१६।४१	११। ९।२४।५७	२।१२।११।३५	५।२१।२९।३८
	२	श	२।१५।२६।५१	५।१४।५२।१०	२। ३।२८।४४	१०।१४।१८।११	१।१०।५८।५९	४।२१।२१। ४	११। ९।२१।४६	२।१२।१५।११	५।२१।२९।४६
	३	र	२।१६।२४। ४	५।१५।२१। ४	२। ५।३०।३२	१०।१४।१७।१०	१।१२। ९।४३	४।२१।२५।३४	११। ९।१८।३५	२।१२।१८।५०	५।२१।२९।५६
	४	चं	२।१७।२१।१६	५।१५।४९।४४	२। ७।३४।३०	१०।१४।१५।५८	१।१३।२०।३५	४।२१।३०। ४	११। ९।१५।२५	२।१२।२२।३०	५।२१।३०। ७
	५	मं	२।१८।१८।३०	५।१६।१८।२२	२। ९।४०।५५	१०।१४।१४।४२	१।१४।३३।१६	४।२१।३४।३७	११। ९।१२।१४	२।१२।२५।५९	५।२१।३०।२२
	६	बु	२।१९।१५।४३	५।१६।४७।३५	२।११।४८।५०	१०।१४।१३।१९	१।१५।४२।२२	४।२१।३९।१८	११। ९। ९। ३	२।१२।२९।३८	५।२१।३०।४०
	७	गु	२।२०।१२।५६	५।१७।१६।४१	२।१३।५७।२२	१०।१४।११।३५	१।१६।५३।१७	४।२१।४३।५५	११। ९। ५।५२	२।१२।३३।१४	५।२१।३०।५८
	८	शु	२।२१।१०।१०	५।१७।४५।५८	२।१६। ६।५८	१०।१४। ९।५०	१।१८। ४।२४	४।२१।४८।५०	११। ९। २।४१	२।१२।३६।४७	५।२१।३१।१९
	९	श	२।२२। ७।२३	५।१८।१५।२२	२।१८।१७।५३	१०।१४। ७।४४	१।१९।१५।११	४।२१।५३।४६	११। ८।५९।३०	२।१२।४०।२३	५।२१।३१।३७
	१०	र	२।२३। ४।३५	५।१८।४५।२९	२।२०।२७।५८	१०।१४। ५।३१	१।२०।२६।१०	४।२१।५८।३७	११। ८।५६।१९	२।१२।४३।५५	५।२१।३२। २
	११	चं	२।२४। १।४७	५।१९।१५।५४	२।२२।३९। ४	१०।१४। ३।१४	१।२१।३७।४४	४।२२। ३।४०	११। ८।५३। ८	२।१२।४७।२८	५।२१।३२।२८
	१२	मं	२।२४।५८।५९	५।१९।४५।४७	२।२४।४९।३०	१०।१४। ०।४०	१।२२।४९। १	४।२२। ८।४५	११। ८।४९।५७	२।१२।५१। ०	५।२१।३२।५६
	१२	बु	२।२५।५६।१३	५।२०।१६।१६	२।२६।५९।३१	१०।१३।५७।५०	१।२४। ०।१४	४।२२।१३।५२	११। ८।४६।४७	२।१२।५४।३२	५।२१।३३।२२
	१३	गु	२।२६।५३।२७	५।२०।४७। ६	२।२९। ८।१०	१०।१३।५५। १	१।२५।११।३१	४।२२।१८।५४	११। ८।४३।३६	२।१२।५८। ५	५।२१।३३।५०
	१४	शु	२।२७।५०।४०	५।२१।१८। ०	३। १।१५।२२	१०।१३।५१।४७	१।२६।२३। २	४।२२।२४।१४	११। ८।४०।२५	२।१३। १।३७	५।२१।३४।२३
	३०	श	२।२८।४७।५३	५।२१।४९।१२	३। ३।२२।४७	१०।१३।४९।३२	१।२७।३४।४४	४।२२।२९।३५	११। ८।३७।१४	२।१३। ५। ६	५।२१।३५। २

संवत् २००७ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ५५२१ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इंद्र.
ज्येष्ठ शुक्लपक्षः ।	१	बु	१। २।२३।१३	५। ०। ५। २	०।२८।५४।४३	१०।११।४५।४३	११।१९।११। २	४।१९।३३।२२	११।११।४४।५१	२। ९।४१।३५	५।२१।५४।१४
	१	गु	१। ३।२०।५८	५। ०।१३।५५	०।२८।२१।५४	१०।११।५३। २	११।२०।१८। ०	४।१९।३३।५८	११।११।४१।४०	२। ९।४४।१७	५।२१।५२।५९
	२	शु	१। ४।१८।४३	५। ०।२३।४९	०।२७।५१।२५	१०।११।५९।५३	११।२१।२५।१६	४।१९।३४।१६	११।११।३८।३०	२। ९।४७।२४	५।२१।५१।४७
	३	श	१। ५।१६।२६	५। ०।३४। १	०।२७।२२।४८	१०।१२। ६।४०	११।२२।३२।२४	४।१९।३४।३७	११।११।३५।१९	२। ९।५०।२८	५।२१।५०।३८
	४	र	१। ६।१४।११	५। ०।४५।२९	०।२६।५६।११	१०।१२।१३। १	११।२३।३९।४७	४।१९।३५। ६	११।११।३२। ८	२। ९।५३।३८	५।२१।४९।३६
	५	चं	१। ७।११।५३	५। ०।५७।१४	०।२६।३३। ४	१०।१२।१९।५२	११।२४।४७। २	४।१९।३५।४६	११।११।२८।५७	२। ९।५६।४२	५।२१।४८।३२
	६	मं	१। ८। ९।३५	५। १। ९।२२	०।२६।१२।२५	१०।१२।२६। २	११।२५।५४।३६	४।१९।३६।३२	११।११।२५।४६	२। ९।५९।५३	५।२१।४७।३१
	७	बु	१। ९। ७।१४	५। १।२१।२५	०।२५।५५।४४	१०।१२।३२।१७	११।२७। २।११	४।१९।३७।२३	११।११।२२।३६	२।१०। २।५६	५।२१।४६।३०
	८	गु	१।१०। ४।४९	५। १।३४।१९	०।२५।४२।४७	१०।१२।३८।२४	११।२८।१०।२६	४।१९।३८।१७	११।११।१९।२५	२।१०। ६। ७	५।२१।४५।२९
	९	शु	१।११। २।२४	५। १।४८। ०	०।२५।३२।३८	१०।१२।४४।१३	११।२९।१८।१४	४।१९।३९।२२	११।११।१६।१४	२।१०। ९।१८	५।२१।४४।३५
	१०	श	१।११।५९।५९	५। २। २।१०	०।२५।२६।५६	१०।१२।४९।५५	०। ०।२६। ६	४।१९।४०।२६	११।११।१३। ४	२।१०।१२।३२	५।२१।४३।३७
	१२	र	१।१२।५७।३१	५। २।१७।१०	०।२५।२५।१६	१०।१२।५५।१६	०। १।३४।२३	४।१९।४१।४६	११।११। ९।५३	२।१०।१५।५०	५।२१।४२।४०
	१३	चं	१।१३।५५। २	५। २।३२।१७	०।२५।२८।३०	१०।१३। ०।४०	०। २।४२।३६	४।१९।४३। ५	११।११। ६।४२	२।१०।१९। ८	५।२१।४१।४९
	१४	मं	१।१४।५२।३४	५। २।४८। ७	०।२५।३५।३८	१०।१३। ५।५३	०। ३।५०।५३	४।१९।४४।२८	११।११। ३।३२	२।१०।२२।२६	५।२१।४१। २
	१५	बु	१।१५।५०। ५	५। ३। ४।३०	०।२५।४७।१०	१०।१३।१०।५९	०। ४।५९।१३	४।१९।४५।५४	११।११। ०।२१	२।१०।२५।५५	५।२१।४०।१२
प्र. आषाढ कृष्णपक्षः ।	१	गु	१।१६।४७।३४	५। ३।२१।४०	०।२६। ३। ४	१०।१३।१५।५४	०। ६।७।३०	४।१९।४७।३१	११।१०।५७।१०	२।१०।२९।१३	५।२१।३९।२५
	२	शु	१।१७।४५। २	५। ३।३९। ७	०।२६।२३।४६	१०।१३।२०।३१	०। ७।१६।१६	४।१९।४९।१६	११।१०।५३।५९	२।१०।३२।३६	५।२१।३८।३८
	३	श	१।१८।४२।३०	५। ३।५६।५६	०।२६।४७।५६	१०।१३।२५। ५	०। ८।२४।४३	४।१९।५१। ७	११।१०।५०।४८	२।१०।३६। ०	५।२१।३७।५५
	४	र	१।१९।३९।५६	५। ४।१५।१४	०।२७।१७।५९	१०।१३।२९।३५	०। ९।३३।३३	४।१९।५३। २	११।१०।४७।३८	२।१०।३९।२९	५।२१।३७।१६
	५	चं	१।२०।३७।२१	५। ४।३३।४७	०।२७।५०।२८	१०।१३।३४। १	०।१०।४२।१८	४।१९।५५।१२	११।१०।४४।२७	२।१०।४२।५०	५।२१।३६।२९
	६	मं	१।२१।३४।४८	५। ४।५२।५२	०।२८।२६।५३	१०।१३।३७।४४	०।११।५१।२५	४।१९।५७।२८	११।१०।४१।१६	२।१०।४६।१९	५।२१।३५।५३
	७	बु	१।२२।३२।१३	५। ५।१२।३२	०।२९।१०।४४	१०।१३।४१।४६	०।१३। ०।२९	४।२०। ०। ४	११।१०।३८। ६	२।१०।४९।३४	५।२१।३५।२६
	८	गु	१।२३।२९।३६	५। ५।३२।३८	०।२९।५६।५३	१०।१३।४५।२२	०।१४। ९।३२	४।२०। २।१७	११।१०।३४।५५	२।१०।५२।५९	५।२१।३४।५२
	९	शु	१।२४।२६।५८	५। ६।५३।१३	१। ०।४६।५२	१०।१३।४८।४३	०।१५।१८।५४	४।२०। ४।४१	११।१०।३१।४४	२।१०।५६।२८	५।२१।३४। ८
	१०	श	१।२५।२४।२०	५। ७।१४। २	१। १।४१।१०	१०।१३।५२। ५	०।१६।२७।५०	४।२०। ७। ८	११।१०।२८।३३	२।११। ०। ०	५।२१।३३।३६
	११	र	१।२६।२१।३९	५। ६।३५।२०	१। २।३९।१८	१०।१३।५५।१६	०।१७।३७।१२	४।२०। ९।४०	११।१०।२५।२२	२।११। ३।३६	५।२१।३३। ७
	१२	चं	१।२७।१८।५८	५। ६।५६।४९	१। ३।४१।१७	१०।१३।५८।१६	०।१८।४६।३७	४।२०।१२।१८	११।१०।२२।१२	२।११। ७। ५	५।२१।३२।३८
	१३	मं	१।२८।१६।१७	५। ७।१८।२५	१। ४।४६।३४	१०।१४। ०।३६	०।१९।५६।१०	४।२०।१५।१८	११।१०।१९। १	२।११।१०।३७	५।२१।३२।१३
	१४	बु	१।२९।१३।३५	५। ७।४१।२८	१। ५।५५।३०	१०।१४। ३। ४	०।२१। ५।३८	४।२०।१८।११	११।१०।१५।५०	२।११।१४।१०	५।२१।३१।४८
	३०	गु	२। ०।१०।५४	५। ८। ४। ८	१। ७। ८।२४	१०।१४। ५।४२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

संवत् २००७ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ५५५१ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इंद्र.
प्र० आषाढ़ शुक्लपक्षः।	१	शु	२। १। ८।१३	५। ८।२७।११	१। ८।२४।३२	१०।१४। ७।४४	०।२३।२५। ८	४।२०।२४।१८	११।१०। ९।२९	२।११।२१।१४	५।२१।३१। १
	२	श	२। २। ५।२९	५। ८।५०।४२	१। ९।४३।३०	१०।१४। ९।५४	०।२४।३४।४८	४।२०।२७।२५	११।१०। ६।१८	२।११।२४।४७	५।२१।३०।४७
	३	र	२। ३। २।४६	५। ९।१४।२०	१।११। ६।१८	१०।१४।११।३८	०।२५।४४।४९	४।२०।३०।४०	११।१०। ३। ७	२।११।२८।१९	५।२१।३०।२९
	४	चं	२। ४। ०। ३	५। ९।३८।१६	१।१२।३२।१०	१०।१४।१३।२६	०।२६।५४।४०	४।२०।३४। ५	११। ९।५९।५६	२।११।३१।४८	५।२१।३०। ७
	५	मं	२। ४।५७।२०	५।१०। २।४६	१।१४। ०।५८	१०।१४।१४।४९	०।२८। ४।४१	४।२०।३७।२३	११। ९।५६।४५	२।११।३५।२८	५।२१।२९।५६
	६	बु	२। ५।५४।३६	५।१०।२७।१८	१।१५।३२।३१	१०।१४।१६।१२	०।२९।१५।११	४।२०।४०।४८	११। ९।५३।३५	२।११।३९।२२	५।२१।२९।४९
	७	गु	२। ६।५१।५०	५।१०।५२।३७	१।१७। ६।५८	१०।१४।१७।१०	१। ०।२५।१२	४।२०।४४।२४	११। ९।५०।२४	२।११।४२।३६	५।२१।२९।४२
	८	शु	२। ७।४९। ५	५।११।१८।१८	१।१८।४५।१८	१०।१४।१८। ०	१। १।३५।१३	४।२०।४८।११	११। ९।४७।१३	२।११।४६।१२	५।२१।२९।३५
	९	श	२। ८।४६।२०	५।११।४३।५९	१।२०।२५।३७	१०।१४।१८।४३	१। २।४५।२२	४।२०।५१।५४	११। ९।४४। २	२।११।४९।५२	५।२१।२९।३१
	१०	र	२। ९।४३।३४	५।१२।१०।१२	१।२२। ९। ४	१०।१४।१९।१९	१। ३।५५।३४	४।२०।५५।३४	११। ९।४०।५१	२।११।५३।२८	५।२१।२९।२८
	११	चं	२।१०।४०।४७	५।१२।३६।३६	१।२३।५५।१९	१०।१४।१९।३७	१। ५। ६। ०	४।२०।४९।४६	११। ९।३७।४१	२।११।५७।११	५।२१।२९।२४
	१२	मं	२।११।३८। १	५।१३। ३।१४	१।२५।४६।१३	१०।१४।१९।५५	१। ६।१६।३४	४।२१। ४।१६	११। ९।३४।३०	२।१२। ०।३२	५।२१।२९।२४
	१३	बु	२।१२।३५।१५	५।१३।३०।२५	१।२७।३८। २	१०।१४।१९।४८	१। ७।२६।५३	४।२१। ८।१७	११। ९।३१।१९	२।१२। ४।१२	५।२१।२९।२८
	१५	गु	२।१३।३२।२७	५।१३।५७।४७	१।२९।३१।४४	१०।१४।१९।१६	१। ८।३७।२३	४।२१।१२।२५	११। ९।२८। ८	२।१२। ७।५५	५।२१।२९।३१
द्वि० आषाढ़ कृष्णपक्षः।	१	शु	२।१४।२९।३९	५।१४।२५। ७	२। १।२८।३०	१०।१४।१८।५०	१। ९।४८। ७	४।२१।१६।४१	११। ९।२४।५७	२।१२।११।३५	५।२१।२९।३८
	२	श	२।१५।२६।५१	५।१४।५२।१०	२। ३।२८।४४	१०।१४।१८।११	१।१०।५८।५९	४।२१।२१। ४	११। ९।२१।४६	२।१२।१५।११	५।२१।२९।४६
	३	र	२।१६।२४। ४	५।१५।२१। ४	२। ५।३०।३२	१०।१४।१७।१०	१।१२। ९।४३	४।२१।२५।३४	११। ९।१८।३५	२।१२।१८।५०	५।२१।२९।५६
	४	चं	२।१७।२१।१६	५।१५।४९।४४	२। ७।३४।३०	१०।१४।१५।५८	१।१३।२०।३५	४।२१।३०। ४	११। ९।१५।२५	२।१२।२२।३०	५।२१।३०। ७
	५	मं	२।१८।१८।३०	५।१६।१८।२२	२। ९।४०।५५	१०।१४।१४।४२	१।१४।३३।१६	४।२१।३४।३७	११। ९।१२।१४	२।१२।२५।५९	५।२१।३०।२२
	६	बु	२।१९।१५।४३	५।१६।४७।३५	२।११।४८।५०	१०।१४।१३।१९	१।१५।४२।२२	४।२१।३९।१८	११। ९। ९। ३	२।१२।२९।३८	५।२१।३०।४०
	७	गु	२।२०।१२।५६	५।१७।१६।४१	२।१३।५७।२२	१०।१४।११।३५	१।१६।५३।१७	४।२१।४३।५५	११। ९। ५।५२	२।१२।३३।१४	५।२१।३०।५८
	८	शु	२।२१।१०।१०	५।१७।४५।५८	२।१६। ६।५८	१०।१४। ९।५०	१।१८। ४।२४	४।२१।४८।५०	११। ९। २।४१	२।१२।३६।४७	५।२१।३१।१९
	९	श	२।२२। ७।२३	५।१८।१५।२२	२।१८।१७।५३	१०।१४। ७।४४	१।१९।१५।११	४।२१।५३।४६	११। ८।५९।३०	२।१२।४०।२३	५।२१।३१।३७
	१०	र	२।२३। ४।३५	५।१८।४५।२९	२।२०।२७।५८	१०।१४। ५।३१	१।२०।२६।१०	४।२१।५८।३७	११। ८।५६।१९	२।१२।४३।५५	५।२१।३२। २
	११	चं	२।२४। १।४७	५।१९।१५।५४	२।२२।३९। ४	१०।१४। ३।१४	१।२१।३७।४४	४।२२। ३।४०	११। ८।५३। ८	२।१२।४७।२८	५।२१।३२।२८
	१२	मं	२।२४।५८।५९	५।१९।४५।४७	२।२४।४९।३०	१०।१४। ०।४०	१।२२।४९। १	४।२२। ८।४५	११। ८।४९।५७	२।१२।५१। ०	५।२१।३२।५६
	१२	बु	२।२५।५६।१३	५।२०।१६।१६	२।२६।५९।३१	१०।१३।५७।५०	१।२४। ०।१४	४।२२।१३।५२	११। ८।४६।४७	२।१२।५४।३२	५।२१।३३।२२
	१३	गु	२।२६।५३।२७	५।२०।४७। ६	२।२९। ८।१०	१०।१३।५५। १	१।२५।११।३१	४।२२।१८।५४	११। ८।४३।३६	२।१२।५८। ५	५।२१।३३।५०
	१४	शु	२।२७।५०।४०	५।२१।१८। ०	३। १।१५।२२	१०।१३।५१।४७	१।२६।२३। २	४।२२।२४।१४	११। ८।४०।२५	२।१३। १।३७	५।२१।३४।२३
	३०	श	२।२८।४७।५३	५।२१।४९।१२	३। ३।२१।४७	१०।१३।४९।३२	१।२७।३४।४४	४।२२।२९।३५	११। ८।३७।१४	२।१३। ५। ६	५।२१।३५। २

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ५५८१ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इंद्र.
द्वि० आषाढ शुक्लपक्षः।	१	र	२।२९।४५। ९	५।२२।२०।३१	३। ५।२७।४०	१०।१३।४५। ७	१।२८।४६। ५	४।२२।३४।५२	११। ८।३४। ४	२।१३। ८।४२	५।२१।३५।३८
	२	चं	३। ०।४२।२६	५।२२।५२।२३	३। ७।३०।२९	१०।१३।४१।२०	१।२९।५७।४३	४।२२।४०।४५	११। ८।३०।५३	२।१३।११।५३	५।२१।३६।१८
	३	मं	३। १।३९।४२	५।२३।२४।१४	३। ९।३२। २	१०।१३।३७।३४	२। १। ९।३६	४।२२।४६।३४	११। ८।२७।४२	२।१३।१५।२२	५।२१।३६।५४
	४	बु	३। २।३६।५८	५।२३।५६।३१	३।११।३२।२०	१०।१३।३३।३२	२। २।२१।११	४।२२।५१।५४	११। ८।२४।३१	२।१३।१८।५४	५।२१।३७।४१
	५	गु	३। ३।३४।१६	५।२४।२८।५२	३।१३।३१।१६	१०।१३।२९।१७	२। ३।३३। ७	४।२२।५७।४०	११। ८।२१।२०	२।१३।२२।२६	५।२१।३८।२०
	७	शु	३। ४।३१।३४	५।२५। १।३०	३।१५।२७।२३	१०।१३।२५। १	२। ४।४४।५६	४।२३। ३।२५	११। ८।१८। ९	२।१३।२५।४४	५।२१।३९।११
	८	श	३। ५।२८।५२	५।२५।३४। ५	३।१७।२३।३५	१०।१३।२०।३१	२। ५।५६।५३	४।२३। ९। ०	११। ८।१४।५८	२।१३।२९।१३	५।२१।३९।५८
	९	र	३। ६।२६। ८	५।२६। ७।१२	३।१९।१६।५५	१०।१३।१५।४७	२। ७। ८।४६	४।२३।१४।५३	११। ८।११।४८	२।१३।३२।३१	५।२१।४०।४८
	१०	चं	३। ७।२३।२७	५।२६।३९।५०	३।२१। ७।२६	१०।१३।१०।५९	२। ८।२०।४९	४।२३।२१। ०	११। ८। ८।३७	२।१३।३६।११	५।२१।४१।५३
	११	मं	३। ८।२०।४७	५।२७।१३।१९	३।२२।५९।३१	१०।१३। ६। ०	२। ९।३२।५६	४।२३।२६।४३	११। ८। ५।२६	२।१३।३९।३२	५।२१।४२।३२
	१२	बु	३। ९।१८। ७	५।२७।४६।२६	३।२४।४८।१८	१०।१३।०। ४७	२।१०।४४।५६	४।२३।३२।४९	११। ८। २।१५	२।१३।४२।४७	५।२१।४३।२६
	१३	गु	३।१०।१५।२८	५।२८।२०।१३	३।२६।३५।४९	१०।१२।५५।१६	२।११।५७। ७	४।२३।३८।५६	११। ७।५९। ४	२।१३।४६।१२	५।२१।४४।३१
	१४	शु	३।११।१२।४९	५।२८।५४। ७	३।२८।२१।२५	१०।१२।५०।१७	२।१३। ९।१४	४।२३।४५। ३	११। ७।५५।५३	२।१३।४९।२६	५।२१।४५।२९
	१५	श	३।१२।१०।११	५।२९।२७।४०	४। ०। ४।३४	१०।१२।४४।२४	२।१४।२१।२९	४।२३।५१।१४	११। ७।५२।४२	२।१३।५२।४५	५।२१।४६।३०
श्रावण कृष्णपक्षः।	१	र	३।१३। ७।३४	६। ०। २। ६	४। १।४६।२६	१०।१२।३८।३८	२।१५।३३।४३	४।२३।५७।३२	११। ७।४९।३२	२।१३।५६। २	५।२१।४७।३८
	२	चं	३।१४। ४।५६	६। ०।३६।१४	४। ३।२७।१८	१०।१२।३२।५३	२।१६।४५।५८	४।२४। ३।५०	११। ७।४६।२१	२।१३।५९।१३	५।२१।४८।४०
	३	मं	३।१५। २।१९	६। १।१०।४१	४। ५। ६। ४	१०।१२।२६।४६	२।१७।५८। १	४।२४।१०। १	११। ७।४३।१०	२।१४। २।२०	५।२१।४९।४८
	४	बु	३।१५।५९।४६	६। १।४५।२५	४। ६।४३।३०	१०।१२।२०।४२	२।१९।१०।३४	४।२४।१६।३०	११। ७।३९।५९	२।१४। ५।३५	५।२१।५०।४९
	५	गु	३।१६।५७।१४	६। २।२०। ६	४। ८।१८।५८	१०।१२।१४।२८	२।२०।२२।४८	४।२४।२२।५९	११। ७।३६।४८	२।१४। ८।३५	५।२१।५२। ५
	६	शु	३।१७।५४।४२	६। २।५४।२५	४। ९।५३। २	१०।१२। ८। ६	२।२१।३५।२८	४।२४।२९।२०	११। ७।३३।३८	२।१४।११।४२	५।२१।५३।१७
	७	श	३।१८।५२।११	६। ३।३०।११	४।११।२५।३०	१०।१२। १।३७	२।२२।४७।४९	४।२४।३५।४९	११। ७।३०।२७	२।१४।१४।५३	५।२१।५४।३२
	८	र	३।१९।४९।४१	६। ४। ५।३५	४।१२।५६।२०	१०।११।५५। ५	२।२४। ०।२५	४।२४।४२।५०	११। ७।२७।१६	२।१४।१७।४२	५।२१।५५।४१
	९	चं	३।२०।४७।११	६। ४।४०।५२	४।१४।२५। ५	१०।११।४८।१८	२।२५।१३।१६	४।२४।४९।२६	११। ७।२४। ५	२।१४।२०।४६	५।२१।५६।५३
	१०	मं	३।२१।४४।४१	६। ५।१६।१६	४।१५।५२।१६	१०।११।४१।१७	२।२६।२६। २	४।२४।५६।१०	११। ७।२०।५४	२।१४।२३।४९	५।२१।५८।१६
	११	बु	३।२२।४२।१४	६। ५।५२।१२	४।१७।१७।३१	१०।११।३४।३४	२।२७।३९। ०	४।२५। २।५६	११। ७।१७।४३	२।१४।२६।५३	५।२१।५९।३१
	१२	गु	३।२३।३९।४७	६। ६। २८।८	४।१८।४१। २	१०।११।२७।३२	२।२८।५१।४०	४।२५। ९।४०	११। ७।१४।३३	२।१४।२९।५३	५।२२। ०।५०
	१३	शु	३।२४।३७।२२	६। ७। ४।३०	४।२०। ३।११	१०।११।२०।३१	३। ०।४ ।२३	४।२५।१६।१२	११। ७।११।२२	२।१४।३२।५६	५।२२। २।१७
	१४	श	३।२५।३४।५७	६। ७।४०।३७	४।२१।२२। ५	१०।११।१३।१९	३। १।१७।२८	४।२५।२३। २	११। ७। ८।११	२।१४।३५।४९	५।२२। ३।३६
	३०	र	३।२६।३२।३२	६। ८।१६।५९	४।२२।३९।२९	१०।११। ६। ४	३। २।३०।१४	४।२५।३०। ०	११। ७। ५। ०	२।१४।३८।५३	५।२२। ५। ६

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः

सवत् २००७ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः।

केतकी अहर्गणः ५६१० मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इंद्र.
श्रावण शुक्लपक्षः।	१	चं	३।२७।३०।१०	६। ८।५३।२८	४।२३।५५।१२	१०।१०।५८।४४	३। ३।४३। ८	४।२५।३६।४७	११। ७। १।५०	२।१४।४१।४२	५।२२। ६।३२
	२	मं	३।२८।२७।४७	६। ९।३०।१८	४।२५। ९। ०	१०।१०।५१।१४	३। ४।५६। ६	४।२५।४३।४४	११। ६।५८।३९	२।१४।४४।३१	५।२२। ७।५९
	३	बु	३।२९।२५।२७	६।१०। ७।१२	४।२६।२०।१३	१०।१०।४३।४८	३। ६। ९।११	४।२५।५०।४६	११। ६।५५।२८	२।१४।४७।२४	५।२२। ९।३२
	४	गु	४। ०।२३।१०	६।१०।४४।२८	४।२७।२९।३१	१०।१०।३६।२२	३। ७।२२।१६	४।२५।५७।४३	११। ६।५२।१७	२।१४।५०।१३	५।२२।१०।५९
	५	शु	४। १।२०।५५	६।११।२१।३२	४।२८।३६।१८	१०।१०।२८।४१	३। ८।३५।२४	४।२६। ४।४४	११। ६।४९। ६	२।१४।५२।५५	५।२२।१२।३२
	६	श	४। २।१८।४२	६।११।५८।४८	५।२९।४०।१९	१०।१०।२०।५६	३। ९।४८।३६	४।२६।११।४९	११। ६।४५।५५	२।१४।५५।४४	५।२२।१४। ६
	७	र	४। ३।१६।२८	६।१२।३५।५६	५। ०।४२।१८	१०।१०।१३। ५	३।११। २। ६	४।२६।१८।५४	११। ६।४२।४४	२।१४।५८।३३	५।२२।१५।३६
	८	चं	४। ४।१४।१५	६।१३।१३।२३	५। १।४१।४२	१०।१०। ५।३५	३।१२।१५। ०	४।२६।२६। ६	११। ६।३९।३३	२।१५। १। ५	५।२२।१७।१७
	१०	मं	४। ५।१२। ३	६।१३।५१। ४	५। २।३७।४४	१०। ९।५७।४०	३।१३।२८।२६	४।२६।३३।१४	११। ६।३६।२३	२।१५। ३।४७	५।२२।१८।५८
	११	बु	४। ६। ९।५३	६।१४।२८।४८	५। ३।३१।२६	१०। ९।४९।४८	३।१४।४१।४२	४।२६।४०।२६	११। ६।३३।१२	२।१५। ६।१४	५।२२।२०।३८
	१२	गु	४। ७। ७।४५	६।१५। ६।५८	५। ४।२२।३४	१०। ९।४२। ०	३।१५।५४।२४	४।२६।४७।४५	११। ६।३०। १	२।१५। ८।४६	५।२२।२२।१९
	१३	शु	४। ८। ५।३८	६।१५।४५।१२	५। ५। ९।३२	१०। ९।३३।५८	३।१७। ८।२०	४।२६।५५।१२	११। ६।२६।५०	२।१५।११।२०	५।२२।२४। ०
	१४	श	४। ९। ३।३५	६।१६।२३। २	५। ५।५४।१३	१०। ९।२५।४८	३।१८।२२। ८	४।२७। २।३५	११। ६।२३।३९	२।१५।१३।३७	५।२२।२५।५२
	१५	र	४।१०। १।३१	६।१७। १। ८	५। ६।३४।४४	१०। ९।१७।५३	३।१९।३५।३५	४।२७। ९।४३	११। ६।२०।२८	२।१५।१६। ८	५।२२।२७।४३
भाद्रपद कृष्णपक्षः।	१	चं	४।१०।५९।२८	६।१७।३९।३२	५। ७।११।२८	१०। ९। ९।५८	३।२०।४९।१६	४।२७।१६।५९	११। ६।१७।१७	२।१५।१८।३६	५।२२।२९।२०
	२	मं	४।११।५७।२७	६।१८।१७।५६	५। ७।४३।५९	१०। ९। १।५९	३।२२। २।४९	४।२७।२४।१४	११। ६।१४। ६	२।१५।२१। ०	५।२२।३१। ५
	३	बु	४।१२।५५।२८	६।१८।५६।३१	५। ८।१२।१४	१०। ८।५४। ७	३।२३।१६।३४	४।२७।३१।४१	११। ६।१०।५६	२।१५।२३।२०	५।२२।३२।५३
	४	गु	४।१३।५३।२९	६।१९।३५।२०	५। ८।३६। ०	१०। ८।४६।१६	३।२४।३०।१४	४।२७।३९। ०	११। ६। ७।४५	२।१५।२५।४१	५।२२।३४।४४
	५	शु	४।१४।५१।३२	६।२०।१४।१३	५। ८।५६। ६	१०। ८।३८।१७	३।२५।४३।५५	४।२७।४६।१९	११। ६। ४।३४	२।१५।२७।५४	५।२२।३६।३२
	६	श	४।१५।४९।३६	६।२०।५३।१३	५। ९। ९।५०	१०। ८।३०।४७	३।२६।५७।४३	४।२७।५३।३८	११। ६। १।२३	२।१५।३०। ७	५।२२।३८।२४
	७	र	४।१६।४७।४४	६।२१।३२।३५	५। ९।१८।५०	१०। ८।२३। ६	३।२८।११।२८	४।२८। १। १	११। ५।५८।१३	२।१५।३२।१३	५।२२।४०।१९
	८	चं	४।१७।४५।५५	६।२२।११।५६	५। ९।२०।२४	१०। ८।१५।१८	३।२९।२५। ५	४।२८। ८।२०	११। ५।५५। २	२।१५।३४।१९	५।२२।४२।११
	९	मं	४।१८।४४। ८	६।२२।५१।२५	५। ९।१९।१९	१०। ८। ७।४४	४। ०।३९।११	४।२८।१५।५०	११। ५।५१।५१	२।१५।३६।२९	५।२२।४४।१०
	९	बु	४।१९।४२।२०	६।२३।३०।४३	५। ९।१०।३४	१०। ८। ०।१४	४। १।५३।१०	४।२८।२३।१७	११। ५।४८।४०	२।१५।३८।२८	५।२२।४६। ५
	१०	गु	४।२०।४०।३५	६।२४।१०। ८	५। ८।५५।३७	१०। ७।५२।४४	४। ३। ७। १	४।२८।३०।४७	११। ५।४५।२९	२।१५।४०।२३	५।२२।४८। ०
	११	शु	४।२१।३८।५१	६।२४।४९।५२	५। ८।३४। ५	१०। ७।४५।२५	४। ४।२१। ७	४।२८।३८।१७	११। ५।४२।१८	२।१५।४२।२२	५।२२।४९।५९
	१२	श	४।२२।३७। ८	६।२५।२९।४२	५। ८। ६।११	१०। ७।३८।१०	४। ५।३४।५५	४।२८।४५।४३	११। ५।३९। ७	२।१५।४४।१०	५।२२।५१।५८
	१३	र	४।२३।३५।२६	६।२६। ९।५४	५। ७।३१। ५	१०। ७।३०।४७	४। ६।४८।५८	४।२८।५३।१३	११। ५।३५।५६	२।१५।४५।५८	५।२२।५३।५६
	१४	चं	४।२४।३३।४७	६।२६।५०।२०	५। ६।५०।२८	१०। ७।२३।३८	४। ८। ३। ०	४।२९। ०।४०	११। ५।३२।४६	२।१५।४७।४९	५।२२।५५।५५
	३०	मं	४।२५।३२।१०	६।२७।३०।४०	५। ६। ३।१४	१०। ७।१६।३४	४। ९।१७।१०	४।२९। ८। २	११। ५।२९।३५	२।१५।४९।३४	५।२२।५७।५४

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः।

केतकी अहर्गणः ५६४० मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इंद्र.
भाद्रपद शुक्लपक्षः।	१	बु	४।२६।३०।३४	६।२८।१०।५२	५। ५।१०।२३	१०। ७। ९।२५	४।१०।३१। ८	४।२९।१५।३२	११। ५।२६।२४	२।१५।५१।२२	५।२३। ०। ०
	३	गु	४।२७।२९। १	६।२८।५१।२२	५। ४।१३। ५	१०। ७। २।२८	४।११।४४।५३	४।२९।२३। २	११। ५।२३।१३	२।१५।५३। २	५।२३। २। ६
	४	शु	४।२८।२७।२८	६।२९।३१।४४	५। ३।१२।२५	१०। ६।५५।४८	४।१२।५९।३१	४।२९।३०।३२	११। ५।२०। २	२।१५।५४।४०	५।२३। ४। ८
	५	श	४।२९।२५।५६	७। ०।१२।३६	५। २। ९।१४	१०। ६।४९।४०	४।१४।१३।५२	४।२९।३७।५९	११। ५।१६।५१	२।१५।५६।१७	५।२३। ६।१४
	६	र	५। ०।२४।२६	७। ०।५३।२०	५। १। २। २	१०। ६।४३। ५	४।१५।२७।५४	४।२९।४५।३६	११। ५।१३।४०	२।१५।५७।५०	५।२३। ८।२०
	७	चं	५। १।२२।५७	७। १।३४।१२	५। ०। २।१०	१०। ६।३६।२९	४।१६।४२। ७	४।२९।५३। २	११। ५।१०।२९	२।१५।५९।२०	५।२३।१०।३०
	८	मं	५। २।२१।३२	७। २।१५।११	४।२९। १। १	१०। ६।३०।१२	४।१७।५६।२०	५। ०। ०।३२	११। ५। ७।१८	२।१६। ०।४७	५।२३।१२।३६
	९	बु	५। ३।२०।११	७। २।५६। २	४।२८। ८।१७	१०। ६।२३।५६	४।१९।१०।५५	५। ०। ८। ६	११। ५। ४। ७	२।१६। २।१०	५।२३।१४।४२
	१०	गु	५। ४।१८।५३	७। ३।३७।१६	४।२७।१९।१२	१०। ६।१७।५३	४।२०।२५। ५	५। ०।१५।२५	११। ५। ०।५६	२।१६। ३।२९	५।२३।१६।५२
	११	शु	५। ५।१७।३६	७। ४।१८। ७	४।२६।३५।५३	१०। ६।१२। ०	४।२१।३९।३६	५। ०।२२।५२	११। ४।५७।४६	२।१६। ४।४४	५।२३।१८।५८
	१२	श	५। ६।१६।२१	७। ४।५९।४२	४।२५।५९।५८	१०। ६। ६।११	४।२२।५४। ०	५। ०।३०।२२	११। ४।५४।३५	२।१६। ५।५३	५।२३।२१। ४
	१३	र	५। ७।१५। ६	०। ५।४१।१७	४।२५।३२।३५	१०। ६। ०।२९	४।२४। ८।३५	५। ०।३७।५२	११। ४।५१।२४	२।१६। ६।५८	५।२३।२३।१३
	१४	चं	५। ८।१३।५५	७। ६।२२।५९	४।२५।१३।३७	१०। ५।५४।५८	४।२५।२३। २	५। ०।४५।१०	११। ४।४८।१३	२।१६। ८। ६	५।२३।२५।२६
	१५	मं	५। ९।१२।४७	७। ७। ४।३०	४।२५। ०।११	१०। ५।४९।३४	४।२६।३७।३८	५। ०।५२।४४	११। ४।४५। २	२।१६। ९। ७	५।२३।२७।३६
आश्विन कृष्णपक्षः।	१	बु	५।१०।११।३९	७। ७।४५।५०	४।२५। १।५९	१०। ५।४४। ६	४।२७।५२। ८	५। १। ०।११	११। ४।४१।५१	२।१६।१०।१२	५।२३।२९।४६
	२	गु	५।११।१०।३२	७। ८।२७।२३	४।२५। ९।३६	१०। ५।३९।११	४।२९। ६।५४	५। १। ७।४४	११। ४।३८।४०	२।१६।११। ६	५।२३।३१।५९
	३	शु	५।१२। ९।२८	७। ९। ९।५४	४।२५।२७।५४	१०। ५।३४।१६	५। ०।२१।२५	५। १।१५। ७	११। ४।३५।२९	२।१६।१२। ४	५।२३।३४।१२
	४	श	५।१३। ८।२६	७। ९।५२।२७	४।२५।५४। ७	१०। ५।२९।२४	५। १।३६।१८	५। १।२२।२३	११। ४।३२।१८	२।१६।१३। १	५।२३।३६।२५
	५	र	५।१४। ७।२६	७।१०।३४।४८	४।२६।३०। ७	१०। ५।२४।५८	५। २।५०।५३	५। १।२९।४६	११। ४।२९। ८	२।१६।१३।५४	५।२३।३८।३८
	६	चं	५।१५। ६।२८	७।११।१६।५५	४।२७।१५।४३	१०। ५।२०।२८	५। ४। ५।४२	५। १।३७। ८	११। ४।२५।५७	२।१६।१४।३१	५।२३।४०।५५
	७	मं	५।१६। ५।३१	७।११।५९।१०	४।२८। ९।११	१०। ५।१६।१६	५। ५।२०।२०	५। १।४४।३१	११। ४।२२।४६	२।१६।१५।१८	५।२३।४३। ८
	८	बु	५।१७। ४।३८	७।१२।४१।३४	४।२९।१०।४१	१०। ५।१२। ७	५। ६।३५।१०	५। १।५१।४७	११। ४।१९।३५	२।१६।१६। १	५।२३।४५।२२
	९	गु	५।१८। ३।५०	७।१३।२४।१४	५। ०।१८।११	१०। ५। ८।१०	५। ७।५०।१३	५। १।५९।१७	११। ४।१६।२४	२।१६।१६।२६	५।२३।४७।३८
	१०	शु	५।१९। ३। ०	७।१४। ६।५०	५। १।३३।३६	१०। ५। ४।२६	५। ९। ५। २	५। २। ६।३२	११। ४।१३।१३	२।१६।१६।५२	५।२३।४९।४८
	११	श	५।२०। २।१३	७।१४।४९।३४	५। २।५३।५६	१०। ५। १।१२	५।१०।१९।५५	५। २।१३।४४	११। ४।१०। ३	२।१६।१७।२४	५।२३।५२। १
	१२	र	५।२१। १।२७	७।१५।३२।२४	५। ४। ९। ०	१०। ४।५७।४०	५।११।३४।४४	५। २।२१। ०	११। ४। ६।५२	२।१६।१८। ०	५।२३।५४।१८
	१३	चं	५।२२। ०।४३	७।१६।१५।१२	५। ५।४८।३२	१०। ४।५४।४७	५।१२।४९।३७	५। २।२८।१६	११। ४। ३।४१	२।१६।१८।३२	५।२३।५६।३१
	१४	मं	५।२३। ०। १	७।१६।५८। ४	५। ७।२१। ४	१०। ४।५१।३०	५।१४। ४।३०	५। २।३५।२४	११। ४। ०।३०	२।१६।१८।५८	५।२३।५८।४८
	३०	बु	५।२३।५९।२५	७।१७।४१।१७	५। ८।५७। ४	१०। ४।४८।५८	५।१५।१९।३४	५। २।४२।३६	११। ३।५७।१९	२।१६।१९।२६	५।२४। १। १

संवत् २००७ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ५६६९ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इंद्र.
आश्विन शुक्लपक्षः ।	१	गु	५।२४।५८।४९	७।१८।२४।३६	५।१०।३५।१७	१०। ४।४६।१९	५।१६।३४।२४	५। २।४९।४१	११। ३।५४। ९	२।१६।१९।५५	५।२४। ३।१८
	२	शु	५।२५।५८।१३	७।१९। ७।४८	५।१२।१४।१७	१०। ४।४३।५५	५।१७।४९।२६	५। २।५६।५३	११। ३।५०।५८	२।१६।२०।१०	५।२४। ५।३१
	३	श	५।२६।५७।३८	७।१९।५१।१८	५।१३।५५।१९	१०। ४।४१।४९	५।१९। ४।२६	५। ३। ३।५८	११। ३।४७।४७	२।१६।२०।२०	५।२४। ७।४४
	४	र	५।२७।५७। ४	७।२०।३४।५२	५।१५।३६।५०	१०। ४।३९।५०	५।२०।१९।२६	५। ३।१०।५५	११। ३।४४।३६	२।१६।२०।२४	५।२४।१०। १
	५	चं	५।२८।५६।३५	७।२१।१७।५६	५।१७।१९।२३	१०। ४।३७।५९	५।२१।३४।२६	५। ३।१८। ०	११। ३।४१।२५	२।१६।२०।२४	५।२४।१२।१८
	७	मं	५।२९।५६।०७	७।२२। १।४८	५।१९। २।२४	१०। ४।३६।२२	५।२२।४९।१९	५। ३।२४।५८	११। ३।३८।१४	२।१६।२०।१७	५।२४।१४।२८
	८	बु	६। ०।५५।४१	७।२२।४५।३२	५।२०।४५।४३	१०। ४।३४।५९	५।२४। ४।१२	५। ३।३१।५५	११। ३।३५। ३	२।१६।२०।१०	५।२४।१६।४१
	९	गु	६। १।५५।१९	७।२३।२९।१७	५।२२।२९। ५	१०। ४।३३।५६	५।२५।१९।२३	५। ३।३८।५६	११। ३।३१।५२	२।१६।१९।५५	५।२४।१८।५४
	१०	शु	६। २।५४।५८	७।२४।१३।५०	५।२४।१२।३२	१०। ४।३२।४९	५।२६।३४।३७	५। ३।४५।४७	११। ३।२८।४१	२।१६।१९।४४	५।२४।२१। ७
	११	श	६। ३।५४।३८	७।२४।५६।२८	५।२५।५५।३४	१०। ४।३१।५२	५।२७।४९।५२	५। ३।५२।३४	११। ३।२५।३१	२।१६।१९।३०	५।२४।२३।२४
	१२	र	६। ४।५४।२४	७।२५।४०।२६	५।२७।३८।३५	१०। ४।३१।१६	५।२९। ५। २	५। ३।५९।२८	११। ३।२२।२०	२।१६।१९।१२	५।२४।२५।३७
	१३	चं	६। ५।५४।१२	७।२६।२४।२५	५।२९।२१।१८	१०। ४।३०।५०	६। ०।२०। ६	५। ४। ६।११	११। ३।१९। ९	२।१६।१८।५४	५।२४।२७।५०
	१४	मं	६। ६।५४। १	७।२७। ८।२५	६। १। ३।३६	१०। ४।३०।४३	६। १।३५।२४	५। ४।१२।५४	११। ३।१५।५८	२।१६।१८।२९	५।२४।३०। ७
	१५	बु	६। ७।५३।५०	७।२७।५२।४८	६। २।४५।३२	१०। ४।३०।३६	६। २।५०।४२	५। ४।१९।५४	११। ३।१२।४७	२।१६।१७।४६	५।२४।३२।१७
कार्तिक कृष्णपक्षः ।	१	गु	६। ८।५३।४१	७।२८।३७।१२	६। ४।२७।११	१०। ४।३०।५०	६। ४। ६। ०	५। ४।२६।२४	११। ३। ९।३६	२।१६।१७।२०	५।२४।३४।२६
	२	शु	६। ९।५३।३५	७।२९।२१।२५	६। ६। ८।१७	१०। ४।३१।१९	६। ५।२१। ७	५। ४।३३।५६	११। ३। ६।२५	२।१६।१६।४४	५।२४।३६।३६
	३	श	६।१०।५३।३०	८। ०। ५।३५	६। ७।४९।१२	१०। ४।३२। २	६। ६।३६।२९	५। ४।३९।२९	११। ३। ३।१४	२।१६।१६। ८	५।२४।३८।४९
	४	र	६।११।५३।२९	८। ०।४९।५२	६। ९।२९।१७	१०। ४।३२।४९	६। ७।५१।३२	५। ४।४५।५८	११। ३। ०। ४	२।१६।१५।३२	५।२४।४०।५९
	४	चं	६।१२।५३।२८	८। १।३४।१२	६।११। ९। ७	१०। ४।३३।५८	९। ९। ६।५८	५। ४।५२।१९	११। २।५६।५३	२।१६।१४।४९	५।२४।४३। ८
	५	मं	६।१३।५३।२९	८। २।१८।४७	६।१२।४८।४७	१०। ४।३५।१७	६।१०।२२। ८	५। ४।५८।४८	११। २।५३।४२	२।१६।१३।५९	५।२४।४५।११
	६	बु	६।१४।५३।३१	८। ३। ३।२५	६।१४।२७।५८	१०। ४।३६।५०	६।११।३७।२६	५। ५। ५।१०	११। २।५०।३१	२।१६।१३। ८	५।२४।४७।२०
	७	गु	६।१५।५३।३४	८। ३।४८।२९	६।१६। ५।४९	१०। ४।३८।४२	६।१२।५२।५५	५। ५।११।४६	११। २।४७।२१	२।१६।१२।११	५।२४।४९।२६
	८	शु	६।१६।५३।४०	८। ४।३३। ०	६।१७।४३।४४	१०। ४।४०।२६	६।१४। ८।१७	५। ५।१७।५२	११। २।४४।१०	२।१६।११।१०	५।२४।५१।३२
	९	श	६।१७।५३।५०	८। ५।१७।४२	६।१९।२१।११	१०। ४।४२।१४	६।१५।२३।३५	५। ५।२३।५६	११। २।४०।५९	२।१६।१०।१२	५।२४।५३।४२
	१०	र	६।१८।५४। ०	८। ६। २।३५	६।२०।५८।३९	१०। ४।४४।४६	६।१६।३९। ०	५। ५।३०। ०	११। २।३७।४८	२।१६। ९। ७	५।२४।५५।४८
	११	चं	६।१९।५४।१३	८। ६।४७।२०	६।२२।३५।३१	१०। ४।४७।१०	६।१७।५४।३६	५। ५।३६। ४	११। २।३४।३७	२।१६। ८। २	५।२४।५७।५४
	१२	मं	६।२०।५४।२९	८। ७।३२।२४	६।२४।१२।५४	१०। ४।४९।५२	६।१९। ९।५८	५। ५।४२। ७	११। २।३१।२६	२।१६। ६।५८	५।२५।५९।५६
	१३	बु	६।२१।५४।४७	८। ८।१७।३८	६।२५।४८।१४	१०। ४।५२।४४	६।२०।२५।२३	५। ५।४८। ७	११। २।२८।१५	२।१६। ५।४२	५।२५। १।५९
	१४	गु	६।२२।५५। ५	८। ९। २।४६	६।२७।२३।४६	१०। ४।५५।४४	६।२१।४०।४८	५। ५।५४। ४	११। २।२५। ४	२।१६। ४।३७	५।२५। ४। ५

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ;

केलकी अहर्गणः ५६९८ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र	शनि	राहु	वरुण	इंद्र
कार्तिक शुक्लपक्षः ।	१	शु	६।२३।५५।२४	८। ९।४८।१४	६।२८।५९।२०	१०। ४।५८।५९	६।२२।५६।१०	५। ६। ०। ०	११। २।२१।५४	२।१६। ३।२२	५।२५। ६। ४
	२	श	६।२४।५५।४५	८।१०।३३।३६	७। ०।३४।२३	१०। ५। २।२४	६।२४।११।४२	५। ६। ५।३८	११। २।१८।४३	२।१६। २। २	५।२५। ८। २
	३	र	६।२५।५६। ६	८।११।१८।४७	७। २। ९।१४	१०। ५। ६।११	६।२५।२६।५३	५। ६।११।१७	११। २।१५।३२	२।१६। ०।५०	५।२५।१०। १
	४	चं	६।२६।५६।२९	८।१२। ४। ८	७। ३।४३।२३	१०। ५।१०। १	६।२६।४२।२२	५। ६।१६।५९	११। २।१२।२१	२।१५।५९।२०	५।२५।१२। ०
	५	मं	६।२७।५६।५६	८।१२।४९।४४	७। ५।१७। २	१०। ५।१४। २	६।२७।५७।५४	५। ६।२२।४१	११। २। ९।१०	२।१५।५७।४०	५।२५।१४। २
	६	बु	६।२८।५७।२४	८।१३।३५।१७	७। ६।५१।२९	१०। ५।१८।१४	६।२९।१३।१२	५। ६।२८।१२	११। २। ५।५९	२।१५।५६।१७	५।२५।१६। ०
	७	गु	६।२९।५७।५४	८।१४।२०।३५	७। ८।२४।२९	१०। ५।२२।३७	७। ०।२८।४४	५। ६।३३।४३	११। २। २।४८	२।१५।५४।४३	५।२५।१७।५६
	८	शु	७। ०।५८।२७	८।१५। ६।२५	७। ९।५७।३६	१०। ५।२७।११	७। १।४४। ६	५। ६।३९। ०	११। १।५९।३७	२।१५।५३। ६	५।२५।१९।५२
	९	श	७। १।५९। ०	८।१५।५२।१६	७।११।३१। ८	१०। ५।३१।५९	७। २।५९।४९	५। ६।४४। ६	११। १।५६।२६	२।१५।५१।२९	५।२५।२१।४३
	१०	र	७। २।५९।३३	८।१६।३८। २	७।१३। ३।२५	१०। ५।३६।५०	७। ४।१५। ७	५। ६।४९।३०	११। १।५३।१५	२।१५।४९।४४	५।२५।२३।२८
	११	चं	७। ४। ०। ७	८।१७।२३।४९	७।१४।३५।४९	१०। ५।४२।११	७। ५।३०।३२	५। ६।५४।४४	११। १।५०। ५	२।१५।४८। ७	५।२५।२५।२६
	१२	मं	७। ५। ०।४२	८।१८। ९।३२	७।१६। ७।३७	१०। ५।४७।३०	७। ६।४६। ८	५। ६।५९।५३	११। १।४६।५४	२।१५।४६।२३	५।२५।२७।१८
	१३	बु	७। ६। १।१९	८।१८।५५।२३	७।१७।३९। ७	१०। ५।५२।५२	७। ८। १।३७	५। ७। ४।५५	११। १।४३।४३	२।१५।४४।३५	५।२५।२९। २
	१४	गु	७। ७। १।५९	८।१९।४१।१३	७।१९।१०।४८	१०। ५।५८।३४	७। ९।१७। ६	५। ७। ९।५०	११। १।४०।३२	२।१५।४२।४३	५।२५।३०।४७
	१५	गु	७। ८। २।४१	८।२०।२७।१४	७।२०।४१।३१	१०। ६। ४।२३	७।१०।३२।३८	५। ७।१४।४९	११। १।३७।२१	२।१५।४०।४८	५।२५।३२।३५
मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः ।	१	श	७। ९। ३।२६	८।२१।१३।३०	७।२२।११।२५	१०। ६।१०।३४	७।११।४८। ७	५। ७।१९।३७	११। १।३४।१०	२।१५।३८।४६	५।२५।३४।२३
	२	र	७।१०। ४।१२	८।२१।५९।४९	७।२३।४२।५०	१०। ६।१६।३३	७।१३। ३।४७	५। ७।२४।१८	११। १।३०।५९	२।१५।३६।५०	५।२५।३६। ७
	३	चं	७।११। ४।५८	८।२२।४६। ५	७।२५।१२।२५	१०। ६।२२।४१	७।१४।१९।१६	५। ७।२८।४८	११। १।२७।४८	२।१५।३४।५२	५।२५।३७।४८
	४	मं	७।१२। ५।४५	८।२३।३२।२४	७।२६।४२।४०	१०। ६।२९।१७	७।१५।३४।४८	५। ७।३३।२९	११। १।२४।३७	२।१५।३२।४९	५।२५।३९।३२
	५	बु	७।१३। ६।३४	८।२४।१८।२९	७।२८।१२।१८	१०। ६।३५।५६	७।१६।५०।१७	५। ७।३७।५५	११। १।२१।२६	२।१५।३०।५४	५।२५।४१।१३
	६	गु	७।१४। ७।२४	८।२५। ४।४१	७।२९।४१। २	१०। ६।४२।४३	७।१८। ५।३८	५। ७।४२।२५	११। १।१८।१५	२।१५।२८।५२	५।२५।४२।५४
	७	शु	७।१५। ८।१४	८।२५।५०।५६	८। १। ९।३२	१०। ६।४९।४४	७।१९।२१।१८	५। ७।४६।४४	११। १।१५। ५	२।१५।२६।४९	५।२५।४४।२८
	८	श	७।१६। ९। ६	८।२६।३७।१२	८। २।३७।३०	१०। ६।५६।४२	७।२०।३६।४७	५। ७।५०।५३	११। १।११।५४	२।१५।२४।४७	५।२५।४६। १
	९	र	७।१७। ९।५८	८।२७।२३।३८	८। ४। ४।३०	१०। ७। ४। ५	७।२१।५२।१६	५। ७।५५। १	११। १। ८।४३	२।१५।२२।४४	५।२५।४७।३८
	१०	चं	७।१८।१०।५२	८।२८।१०।१६	८। ५।३१।२६	१०। ७।११।१६	७।२३। ७।४८	५। ७।५९। ९	११। १। ५।३२	२।१५।२०।१३	५।२५।४९।१२
	११	मं	७।१९।११।४८	८।२८।५६।३८	८। ६।५७।११	१०। ७।१८।५४	७।२४।२३।२०	५। ८। ३। ४	११। १। २।२१	२।१५।१८। ७	५।२५।५०।४२
	१२	बु	७।२०।१२।४४	८।२९।४३।५४	८। ८।२२।५८	१०। ७।२६।४२	७।२५।३८।४६	५। ८। ७। १	११। ०।५९।१०	२।१५।१५।५८	५।२५।५२।१२
	१३	गु	७।२१।१३।४०	९। ०।२९।२४	८। ९।४५।३२	१०। ७।३४।४१	७।२६।५४।२२	५। ८।१०।४४	११। ०।५५।५९	२।१५।१३।४४	५।२५।५३।४२
	१४	शु	७।२२।१४।३५	९। १।१६।१६	८।११। ८।३१	१०। ७।४२।४३	७।२८। ९।४७	५। ८।१४।२८	११। ०।५२।४८	२।१५।११।१७	५।२५।५५। ८
	१५	श	७।२३।१५।३१	९। २। ३।११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible] (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः।

केतकी अहर्गण: ५७२८ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इंद्र.
मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः।	१	र	७।२४।१६।३०	९। २।४९।५५	८।१३।४९। ५	१०। ७।५९।१०	८। ०।४०।५९	५। ८।२१।३२	११। ०।४६।२६	२।१५। ६।२१	५।२५।५७।५४
	२	चं	७।२५।१७।३२	९। ३।३६।२२	८।१५। ६।५८	१०। ८। ७।३७	८। १।५६।३५	५। ८।२४।५८	११। ०।४३।१६	२।१५। ४। ५	५।२५।५९।१३
	३	मं	७।२६।१८।३६	९। ४।२२।५५	८।१६।२१।५८	१०। ८।१६।२६	८। ३।११। ४	५। ८।२८।१६	११। ०।४०। ५	२।१५। १।५५	५।२६। ०।३२
	५	बु	७।२७।१९।४०	९। ५। ९।३२	८।१७।३५।२०	१०। ८।२५।१२	८। ४।२७।४०	५। ८।३१।२६	११। ०।३६।५४	२।१४।५९।२०	५।२६। १।४८
	६	गु	७।२८।२०।४५	९। ५।५६।१३	८।१८।४५। ७	१०। ८।३४।१३	८। ५।४३। ८	५। ८।३४।३७	११। ०।३३।४३	२।१४।५६।५३	५।२६। २।५६
	७	शु	७।२९।२१।५०	९। ६।४३। ५	८।१९।५१।१६	१०। ८।४३।१६	८। ६।५८।३०	५। ८।३७।३४	११। ०।३०।३२	२।१४।५४।३२	५।२६। ४।१६
	८	श	८। ०।२२।५५	९। ७।२९।५६	८।२०।५१।५९	१०। ८।५२।३४	८। ८।१४। २	५। ८।४०।२३	११। ०।२७।२२	२।१४।५२। ८	५।२६। ५।२४
	९	र	८। १।२४। ०	९। ८।१६।४४	८।२१।५०।१०	१०। ९। १।५५	८। ९।२९।२०	५। ८।४३।२३	११। ०।२४।११	२।१४।४९।४८	५।२६। ६।४३
	१०	चं	८। २।२५। ७	९। ९। ३।३६	८।२२।४१।२०	१०। ९।११।३१	८।१०।४४।५३	५। ८।४६।१६	११। ०।२१। ०	२।१४।४७।२०	५।२६। ७।५२
	११	मं	८। ३।२६।१४	९। ९।५०।३८	८।२३।२६।१०	१०। ९।२१।११	८।१२। ०।३२	५। ८।४८।४०	११। ०।१७।४९	२।१४।४४।५३	५।२६। ९। ०
	१२	बु	८। ४।२७।२०	९।१०।३७।३४	८।२४। ४।१२	१०। ९।३०।४७	८।१३।१६।१६	५। ८।५१।११	११। ०।१४।३८	२।१४।४२।१४	५।२६।१०। १
	१२	गु	८। ५।२८।२७	९।११।२४।२९	८।२४।३०। ८	१०। ९।४०।३४	८।१४।३१।२३	५। ८।५३।३५	११। ०।११।२८	२।१४।३९।४३	५।२६।११। २
	१३	शु	८। ६।२९।३५	९।१२।११।२०	८।२४।५०। ६	१०। ९।५०।३५	८।१५।४६।५१	५। ८।५५।५२	११। ०। ८।१७	२।१४।३७। ५	५।२६।१२। ७
	१४	श	८। ७।३०।४५	९।१२।५८।२३	८।२४।५७।१८	१०।१०। ०।४६	८।१७। २।३१	५। ८।५८। ८	११। ०। ५। ६	२।१४।३४।२६	५।२६।१३। ८
	१५	र	८। ८।३१।५५	९।१३।४५।२९	८।२४।५५।४८	१०।१०।१०।५५	८।१८।१७।४२	५। ९। ०।१८	११। ०। १।५५	२।१४।३१।३४	५।२६।१४।१०
पौष कृष्णपक्षः।	१	चं	८। ९।३३। ५	९।१४।३२।२०	८।२४।४१। ६	१०।१०।२१।११	८।१९।३३। ०	५। ९। २।२०	१०।२९।५८।४४	२।१४।२८।५९	५।२६।१५। ०
	२	मं	८।१०।३४।१६	९।१५।१९।३०	८।२४।१४। २	१०।१०।३१।३४	८।२०।४८।३२	५। ९। ४।१६	१०।२९।५५।३४	२।१४।२६।२४	५।२६।१५।५८
	३	बु	८।११।३५।२५	९।१६। ६।३२	८।२३।३६।४७	१०।१०।४२।१०	८।२२। ४। ५	५। ९। ६। ०	१०।२९।५२।२३	२।१४।२३।५३	५।२६।१६।४८
	४	गु	८।१२।३६।३५	९।१६।५३।३५	८।२२।५२। ८	१०।१०।५२।५५	८।२३।१९।३०	५। ९। ७।४८	१०।२९।४९।१२	२।१४।२१।१४	५।२६।१७।३८
	५	शु	८।१३।३७।४५	९।१७।४०।४४	८।२१।५९।१७	१०।११। ३।५८	८।२४।३४।५५	५। ९। ९।१८	१०।२९।४६। १	२।१४।१८।४०	५।२६।१८।२९
	६	श	८।१४।३८।५५	९।१८।२७।५०	८।२०।४७।१७	१०।११।१४।५६	८।२५।५०।१३	५। ९।१०।४४	१०।२९।४२।५०	२।१४।१६। ५	५।२६।१९।१२
	७	र	८।१५।४०। ५	९।१९।१४।५३	८।१९।३७। ५	१०।११।२५।३७	८।२७। ५।३५	५। ९।१२। ४	१०।२९।३९।४०	२।१४।१३।३०	५।२६।१९।५२
	८	चं	८।१६।४१।१६	९।२०। १।५९	८।१८।२२।१२	१०।११।३६।४३	८।२८।२१। ४	५। ९।१३।१६	१०।२९।३६।२९	२।१४।१०।५२	५।२६।२०।३८
	९	मं	८।१७।४२।२७	९।२०।४८।५८	८।१७। ४।२६	१०।११।४७।४९	८।२९।३६।१८	५। ९।१४।२८	१०।२९।३३।१८	२।१४। ८।२०	५।२६।२१।१८
	१०	बु	८।१८।४३।३७	९।२१।३५।५३	८।१५।४७।२४	१०।११।५९। ६	९। ०।५१।४७	५। ९।१५।३६	१०।२९।३०। ७	२।१४। ५।४६	५।२६।२१।५४
	११	गु	८।१९।४४।४६	९।२२।२२।४१	८।१४।३०।४०	१०।१२।१०।४४	९। २। ७। ५	५। ९।१६।२६	१०।२९।२६।५७	२।१४। ३। ७	५।२६।२२।३०
	१२	शु	८।२०।४५।५६	९।२३। ९।५४	८।१३।१७।३८	१०।१२।२२।१२	९। ३।२२।२३	५। ९।१७।२०	१०।२९।२३।४६	२।१४। ०।३२	५।२६।२३। २
	१४	श	८।२१।४७। ७	९।२३।५७।११	८।१२। ६।५४	१०।१२।३३।५०	९। ४।३७।४८	५। ९।१८। ४	१०।२९।२०।३५	२।१३।५७।५८	५।२६।२३।३८
	३०	र	८।२२।४८।१७	९।२४।४४।२०	८।११। ८।३१	१०।१२।४५।३६	९। ५।५३।१०	५। ९।१८।४०	१०।२९।१७।२४	२।१३।५५।२६	५।२६।२४। ४

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ५७५७ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इंद्र.
पौष शुक्लपक्षः।	१	चं	८।२३।४९।२७	९।२५।३३।३०	८।१०।१९।२६	१०।१२।५७।२८	९। ७। ८।२०	५। ९।१९।१२	१०।२९।१४।१४	२।१३।५२।५२	५।२६।२४।३६
	२	मं	८।२४।५०।३६	९।२६।१८।४३	८। ९।३९।१०	१०।१३। ९।१४	९। ८।२३।३८	५। ९।१९।३७	१०।२९।११। ३	२।१३।५०।१०	५।२६।२५। १
	३	बु	८।२५।५१।४४	९।२७। ५।५६	८। ९। ८।५६	१०।१३।२१।११	९। ९।३८।४९	५। ९।१९।४८	१०।२९। ७।५२	२।१३।४७।३८	५।२६।२५।२६
	४	गु	८।२६।५२।५३	९।२७।५३।१०	८। ८।४८।५४	१०।१३।३३।१४	९।१०।५४। ४	५। ९।१९।५५	१०।२९। ४।४१	२।१३।४५।११	५।२६।२५।४९
	५	शु	८।२७।५४। २	९।२८।४०।३०	८। ८।३८।४२	१०।१३।४५।३२	९।१२। ९।१८	५। ९।२०। २	१०।२९। १।३०	२।१३।४२।५०	५।२६।२६। २
	६	श	८।२८।५५।१०	९।२९।२७।४०	८। ८।३८।२०	१०।१३।५७।४०	९।१३।२४।३०	५। ९।२०।१०	१०।२८।५८।१९	२।१३।४०। ८	५।२६।२६।२४
	७	र	८।२९।५६।१८	१०। ०।१४।५६	८। ८।४६।३४	१०।१४। ९।५४	९।१४।३९।४३	५। ९।२०। ६	१०।२८।५५। ९	२।१३।३७।४८	५।२६।२६।३८
	८	चं	९। ०।५७।२५	१०। १। २।१०	८। ९। २।१३	१०।१४।२२।१६	९।१५।५४।५८	५। ९।१९।५५	१०।२८।५१।५८	२।१३।३५।२०	५।२६।२६।५३
	९	मं	९। १।५८।३२	१०। १।४९।१९	८। ९।२६। २	१०।१४।३४।४८	९।१७।१०। ८	५। ९।१९।२३	१०।२८।४८।४७	२।१३।३३। ०	५।२६।२७। ०
	१०	बु	९। २।५९।३९	१०। २।३६।४०	८। ९।५५।४४	१०।१४।४७।१७	९।१८।२५।१७	५। ९।१८।५४	१०।२८।४५।३७	२।१३।३०।३६	५।२६।२७।११
	११	गु	९। ४। ०।४३	१०। ३।२३।४९	८।१०।२७।५८	१०।१४।५९।५३	९।१९।४०।१२	५। ९।१८।२२	१०।२८।४२।२६	२।१३।२८।१२	५।२६।२७।१८
	१२	शु	९। ५। १।४७	१०। ४।१०।४४	८।११।११।४२	१०।१५।१२।३६	९।२०।५५।२३	५। ९।१७।३५	१०।२८।३९।१५	२।१३।२५।४८	५।२६।२७।२२
	१३	श	९। ६। २।५१	१०। ४।५७।५८	८।११।५७।२२	१०।१५।२५।२३	९।२२।१०।३०	५। ९।१६।४४	१०।२८।३६। ४	२।१३।२३।२४	५।२६।२७।२५
	१४	र	९। ७। ३।५५	१०। ५।४५।११	८।१२।४६।५५	१०।१५।३८।१७	९।२३।२५।२६	५। ९।१५।५०	१०।२८।३२।५३	२।१३।२०।५६	५।२६।२७।२६
	१४	चं	९। ८। ४।५९	१०। ६।३२।३१	८।१३।४०। ५	१०।१५।५१। ४	९।२४।४०।३४	५। ९।१४।४६	१०।२८।२९।४२	२।१३।१८।४०	५।२६।२७।२५
	१५	मं	९। ९। ६। ३	१०। ७।१९।५२	८।१४।३६।३६	१०।१६। ४। ५	९।२५।५५।२३	५। ९।१३।३७	१०।२८।२६।३१	२।१३।१६।२६	५।२६।२७।२४
माघ कृष्णपक्षः।	१	बु	९।१०। ७। ५	१०। ८। ६।५८	८।१५।३६। ४	१०।१६।१७। ६	९।२७।१०।२३	५। ९।१२।२५	१०।२८।२३।२१	२।१३।१४।१३	५।२६।२७।२२
	२	गु	९।११। ८। ६	१०। ८।५४। ०	८।१६।३८।३८	१०।१६।३०।११	९।२८।२५।२३	५। ९।११। २	१०।२८।२०।१०	२।१३।१२।११	५।२६।२७।१५
	३	शु	९।१२। ९। ६	१०। ९।४०।५५	८।१७।४३।३०	१०।१६।४३।१६	९।२९।४०।२३	५। ९। ९।३६	१०।२८।१६।५९	२।१३।१०। ५	५।२६।२७। ७
	४	श	९।१३।१०। ७	१०।१०।२७।५८	८।१८।५०।३५	१०।१६।५६।२८	१०। ०।५५।२६	५। ९। ८। २	१०।२८।१३।४८	२।१३। ८। ६	५।२६।२६।५६
	५	र	९।१४।११। ८	१०।११।१५। ४	८।२०। ०। ७	१०।१७। ९।३६	१०। २।१०।३०	५। ९। ६।१८	१०।२८।१०।३८	२।१३। ६। ४	५।२६।२६।४२
	६	चं	९।१५।१२।५८	१०।१२। २।१३	८।२१।१३।५२	१०।१७।२३। ६	१०। ३।२५।२३	५। ९। ४।३४	१०।२८। ७।२७	२।१३। ३।५८	५।२६।२६।२०
	८	मं	९।१६।१२।४९	१०।१२।४९।१९	८।२२।२४। ४	१०।१७।३६।२९	१०। ४।४०। ५	५। ९। २।३१	१०।२८। ४।१६	२।१३। १।५२	५।२६।२५।५९
	९	बु	९।१७।१३।४१	१०।१३।३६।३२	८।२३।३८।२४	१०।१७।४९।५९	१०। ५।५४।५८	५। ९। ०।४३	१०।२८। १। ५	२।१२।५९।४६	५।२६।२५।४४
	१०	गु	९।१८।१४।३४	१०।१४।२३।४२	८।२४।५४।३६	१०।१८। ३।३६	१०। ७। ९।४७	५। ८।५८।३४	१०।२७।५७।५५	२।१२।५७।४८	५।२६।२५।२६
	११	शु	९।१९।१५।२७	१०।१५।१०।४८	८।२६।१७। ०	१०।१८।१७।१३	१०। ८।२४।३६	५। ८।५७। ४	१०।२७।५४।४४	२।१२।५५।४४	५।२६।२५। ५
	१२	श	९।२०।१६।१९	१०।१५।५७।३६	८।२७।३१। १	१०।१८।३०।४७	१०। ९।३९।२२	५। ८।५४।३६	१०।२७।५१।३३	२।१२।५३।४६	५।२६।२४।३६
	१३	र	९।२१।१७। ८	१०।१६।४४।३५	८।२८।५१।४३	१०।१८।४४।२८	१०।१०।५३।५६	५। ८।५२।१६	१०।२७।४८।२३	२।१२।५१।४७	५।२६।२४। ७
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ५७८७ मासारंभे

मासः	ति. वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इंद्र.
माघ शुक्लपक्षः ।	१ बु	९।२४।१९।२७	१०।१९। ५।२४	९। २।५८।१२	१०।१९।२५।४१	१०।१४।३८। २	५।८।४४।३१	१०।२७।३८।५१	२।१२।४६।१९	५।२६।२२।३४
	२ गु	९।२५।२०।१२	१०।१९।५२।१९	९। ४।२३।२०	१०।१९।३९।३६	१०।१५।५२।४१	५।८।४१।४६	१०।२७।३५।४०	२।१२।४४।३८	५।२६।२२। १
	३ शु	९।२६।२०।५७	१०।२०।३९।१८	९। ५।४८।४३	१०।१९।५३।२८	१०।१७। ७।१२	५।८।३८।५३	१०।२७।३२।३०	२।१२।४२।५८	५।२६।२१।२९
	४ श	९।२७।२१।३९	१०।२१।२६।१७	९। ७।१५।२९	१०।२०। ७।२३	१०।१८।२१।४७	५।८।३६। ०	१०।२७।२९।१९	२।१२।४१।१३	५।२६।२०।४२
	५ र	९।२८।२२।२१	१०।२२।१३। ८	९। ८।४२।५०	१०।२०।२१।२५	१०।१९।३६।२९	५।८।३३। ०	१०।२७।२६। ८	२।१२।३९।४३	५।२६।२०। ६
	६ चं	९।२९।२३। २	१०।२३। ०।११	९।१०।११।२८	१०।२०।३५।२४	१०।२०।५०।५३	५।८।२९।५३	१०।२७।२२।५७	२।१२।३८।१०	५।२६।१९।२३
	७ मं	१०। ०।२३।४०	१०।२३।४६।५९	९।११।४१।३८	१०।२०।४९।२३	१०।२२। ५।२०	५।८।२६।४६	१०।२७।१९।४६	२।१२।३६।४३	५।२६।१८।३६
	८ बु	१०। १।२४।१७	१०।२४।३३।४०	९।१३।१२।२२	१०।२१। ३।२९	१०।२३।१९।५९	५।८।२३।२४	१०।२७।१६।३६	२।१२।३५।१३	५।२६।१७।५३
	९ गु	१०। २।२४।५२	१०।२५।२०।२८	९।१४।४४। २	१०।२१।१७।३८	१०।२४।३४।२३	५।८।२०। २	१०।२७।१३।२५	२।१२।३३।५४	५।२६।१७। ६
	१० शु	१०। ३।२५।२४	१०।२६। ७।२३	९।१६।१६।२३	१०।२१।३१।४४	१०।२५।४८।४३	५।८।१६।३७	१०।२७।१०।१४	२।१२।३२।३५	५।२६।१६।१६
	११ श	१०। ४।२५।५६	१०।२६।५४।१४	९।१७।४९।४१	१०।२१।४६। १	१०।२७। ३।४०	५।८।१३।१६	१०।२७। ७। ४	२।१२।३१।१६	५।२६।१५।२५
	१२ र	१०। ५।२६।२२	१०।२७।४०।३७	९।१९।२४।२९	१०।२२। ०। ७	१०।२८।१७।१७	५।८। ९।३६	१०।२७। ३।५३	२।१२।३०। ०	५। ६।१४।२८
	१३ चं	१०। ६।२६।४९	१०।२८।२७। ४	९।२०।५९।२८	१०।२२।१४।२०	१०।२९।३१।४१	५।८। ५।५६	१०।२७। ०।४२	२।१२।२८।५२	५।२६।१३।३७
	१४ मं	१०। ७।२७।१७	१०।२९।१३।३४	९।२२।३५।४६	१०।२२।२८।३७	११। ०।४५।५४	५।८। २।१७	१०।२६।५७।३२	२।१२।२७।४०	५।२६।१२।४७
	१५ बु	१०। ८।२७।४६	११। ०। ०।२२	९।२४।१३। ८	१०।२२।४३। १	११। २। ०।१४	५।७।५८।३४	१०।२६।५४।२१	२।१२।२६।३५	५।२६।११।४२
फाल्गुन कृष्णपक्षः ।	१ गु	१०। ९।२८।१३	११। ०।४७।१०	९।२५।५१।११	१०।२२।५७।२५	११। ३।१४।३८	५।७।५४।५०	१०।२६।५१।१०	२।१२।२५।१२	५।२६।१०।४१
	२ शु	१०।१०।२८।३५	११। १।३३।५०	९।२७।२९।५६	१०।२३।११।४६	११। ४।२८।४७	५।७।५१।११	१०।२६।४८। ०	२।१२।२४। ७	५।२६। ९।४०
	३ श	१०।११।२८।५५	११। २।२०।२८	९।२९। १।५०	१०।२३।२६।१७	११। ५।४२।५८	५।७।४७।१०	१०।२६।४४।५०	२।१२।२३। २	५।२६। ८।३५
	४ र	१०।१२।२९।१२	११। ३। ६।५४	१०। ०।५०।३५	१०।२३।४०।३४	११। ६।५६।५६	५।७।४३।१२	१०।२६।४१।३९	२।१२।२२।०१	५।२६। ७।३४
	५ चं	१०।१३।२९।२८	११। ३।५३। ६	१०। २।३२। ६	१०।२३।५४।५८	११। ८।१०।५९	५।७।३९। ४	१०।२६।३८।२९	२।१२।२१।१०	५।२६। ६।२८
	६ मं	१०।१४।२९।४४	११। ४।३९।१८	१०। ४।१५। ४	१०। २४।९।२२	११। ९।२५।१६	५।७।३४।५५	१०।२६।३५।१८	२।१२।२०।१०	५।२६। ५।२०
	७ बु	१०।१५।२९।५७	११। ५।२५।२४	१०। ५।५८।४१	१०।२४।२३।५३	११।१०।३९।२९	५।७।३०।४३	१०।२६।३२। ७	२।१२।१९।२६	५।२६। ४।१६
	८ गु	१०।१६।३०।१०	११। ६।१२।१८	१०। ७।४३।२३	१०।२४।३८।१३	११।११।५३।२४	५।७।२६।३१	१०।२६।२८।५६	२।१२।१८।४३	५।२६। ३। ४
	९ शु	१०।१७।३०।२२	११। ६।५८।४१	१०। ९।२८।५९	१०।२४।५२।४१	११।१३। ७। ८	५।७।२२।१२	१०।२६।२५।४६	२।१२।१८। ७	५।२६। १।४४
	१० श	१०।१८।३०।३२	११। ७।४४।५६	१०।११।१६। ८	१०। २५।७। ५	११।१४।२१। ७	५।७।१७।४९	१०।२६।२२।३५	२।१२।१७।२८	५।२६। ०।३२
	११ र	१०।१९।३०।३९	११। ८।३१। ८	१०।१३। ३।४७	१०।२५।२१।३२	११।१५।३५। ४	५।७।१३।२३	१०।२६।१९।२४	२।१२।१६।५५	५।२५।५९।२०
	१३ चं	१०।२०।३०।४४	११। ९।१७।१७	१०।१४।५२।३७	१०।२५।३६। ०	११।१६।४९। १	५।७। ९। ०	१०।२६।१६।१४	२।१२।१६।२६	५।२५।५८। ५
	१४ मं	१०।२१।३०।४६	११।१०। ३।१८	१०।१६।४२।१८	१०।२५।५०।२८	११।१८। २।३८	५।७। ४।३०	१०।२६।१३। ३	२।१२।१५।५४	५।२५।५६।४९
	३० बु	१०।२२।३०।४५	११।१०।४९।१२	१०।१८।३३।११	१०। २६।४।५५	११।१९।१६। ५	५।७। ०। ०	१०।२६। ९।५२	२।१२।१५।३६	५।२५।५५।३०

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गण: ५८१६ मासारंभे

मासः	ति. वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इन्द्र.
फाल्गुन शुक्लपक्षः ।	१ गु	१०।२३।३०।४३	११।११।३५।२४	१०।२०।२५।१२	१०।२६।१९।२४	११।२०।३०।१८	५। ६।५५।२६	१०।२६। ६।४२	२।१२।१५।१८	५।२५।५४।१४
	२ शु	१०।२४।३०।३९	११।१२।२१।३६	१०।२२।१८। ४	१०।२६।३३।५८	११।२१।४३।५५	५। ६।५०।४९	१०।२६। ३।३२	२।१२।१५। ०	५।२५।५२।४८
	३ श	१०।२५।३०।३४	११।१३। ७।४४	१०।२४।१२। ७	१०।२६।४८।२९	११।२२।५७।२५	५। ६।४६।१६	१०।२६। ०।२१	२।१२।१४।४२	५।२५।५१।२९
	४ र	१०।२६।३०।२९	११।१३।५३।५६	१०।२६। ७।१६	१०।२७। २।५६	११।२४।१०।५५	५। ६।४१।३५	१०।२५।५७।१०	२।१२।१४।३१	५।२५।५०। २
	५ चं	१०।२७।३०।२०	११।१४।४०। १	१०।२८। ३।२९	१०।२७।१७।२०	११।२५।२४।१८	५। ६।३६।५४	१०।२५।५४। ०	२।१२।१४।१७	५।२५।४८।४०
	६ मं	१०।२८।३०। ९	११।१५।२५।४१	११। ०। ०।२५	१०।२७।३१।४८	११।२६।३७।५२	५। ६।३२।१७	१०।२५।५०।४९	२।१२।१४। ६	५।२५।४७।२०
	६ बु	१०।२९।२९।५६	११।१६।११।३५	११। १।५८।२३	१०।२७।४६।१६	११।२७।५१। ७	५। ६।२८। ५	१०।२५।४७।३८	२।१२।१३।४७	५।२५।४५।५०
	७ गु	११। ०।२९।४२	११।१६।५७।२२	११। ३।५७।१४	१०।२८। ०।५८	११।२९। ४।२३	५। ६।२३।२४	१०।२५।४४।२७	२।१२।१३।४१	५।२५।४४।२८
	८ शु	११। १।२९।२६	११।१७।४३।५९	११। ५।५६।२०	१०।२८।१५।२५	०। ०।१७।२४	५। ६।१८।४०	१०।२५।४१।१७	२।१२।१३।४१	५।२५।४३। ५
	९ श	११। २।२९।१०	११।१८।२८।४४	११। ७।५६।३१	१०।२८।२९।४९	०। १।३०।३६	५। ६।१३।५२	१०।२५।३८। ६	२।१२।१३।५२	५।२५।४१।३१
	१० र	११। ३।२८।५२	११।१९।१४।३१	११। ९।५७। ४	१०।२८।४४।१७	०। २।४४। २	५। ६। ९।११	१०।२५।३४।५६	२।१२।१४। ६	५।२५।४०। १
	११ चं	११। ४।२८।३०	११।२०। ०।२९	११।११।५७। ०	१०।२८।५८।४४	०। ३।५७। ०	५। ६। ४।२६	१०।२५।३१।४५	२।१२।१४।२८	५।२५।३८।३१
	१२ मं	११। ५।२८। ५	११।२०।४६। ८	११।१३।५७।३२	१०।२९।१३। ५	०। ५।१०।१६	५। ५।५९।३१	१०।२५।२८।३४	२।१२।१४।४९	५।२५।३७। ५
	१३ बु	११। ६।२७।३७	११।२१।३२।२६	११।१५।५७।५०	१०।२९।२७।२९	०। ६।२३।२४	५। ५।५४।४७	१०।२५।२५।२४	२।१२।१५।२२	५।२५।३५।२८
	१४ गु	११। ७।२७। ८	११।२२।१६।४४	११।१७।५७।३२	१०।२९।४१।५६	०। ७।३६।११	५। ५।४९।५९	१०।२५।२२।१३	२।१२।१५।५८	५।२५।३३।५८
	१५ शु	११। ८।२६।३७	११।२३। ३।१८	११।१९।५५।१२	१०।२९।५६।२४	०। ८।४९। ७	५। ५।४५।१४	१०।२५।१९। २	२।१२।१६।३४	५।२५।३२।२४
चैत्र कृष्णपक्षः ।	१ श	११। ९।२६। २	११।२३।४७।५३	११।२१।५१।१८	११। ०।१०।३७	०।२०। १।४८	५। ५।४०।३४	१०।२५।१५।५२	२।१२।१७। ६	५।२५।३०।४३
	२ र	११।१०।२५।२६	११।२४।३३।१८	११।२३।४५।२५	११। ०।२५।१२	०।११।१४।२०	५। ५।३५।४६	१०।२५।१२।४१	२।१२।१७।४२	५।२५।२९।१३
	३ चं	११।११।२४।४७	११।२५।१८।५०	११।२५।३७।१९	११। ०।३९।२९	०।१२।२७। ७	५। ५।३०।५८	१०।२५। ९।३१	२।१२।१८।१४	५।२५।२७।३६
	४ मं	११।१२।२४। ६	११।२६। ४।१६	११।२७।२६।१०	११। ०।५३।४९	०।१३।३९।५०	५। ५।२६।१७	१०।२५। ६।२०	२।१२।१८।५४	५।२५।२६। ६
	५ बु	११।१३।२३।२५	११।२६।४९।३०	११।२९।११।४६	११। १। ८। ६	०।१४।५२।४८	५। ५।२१।३६	१०।२५। ३। ९	२।१२।१९।४१	५।२५।२४।३१
	७ गु	११।१४।२२।४३	११।२७।३४।३७	०। ०।५२।५२	११। १।२२।३४	०।१६। ५।२८	५। ५।१६।५५	१०।२४।५९।५८	२।१२।२०।२८	५।२५।२२।५२
	८ शु	११।१५।२२। ०	११।२८।१९।४०	०। २।२९।२४	११। १।३६।४७	०।१७।१७।५६	५। ५।१२।१८	१०।२४।५६।४८	२।१२।२१।११	५।२५।२१।१४
	९ श	११।१६।२१।१३	११।२९। ४।४१	०। ४। १।३४	११। १।५१। ४	०।१८।३०।२२	५। ५। ७।३७	१०।२४।५३।३७	२।१२।२२। ८	५।२५।१९।३७
	१० र	११।१७।२०।२३	११।२९।४९।४२	०। ५।२९।२८	११। २। ५।२५	०।१९।४२।४७	५। ५। ३। ०	१०।२४।५०।२६	२।१२।२३। ६	५।२५।१८। ०
	११ चं	११।१८।१९।३२	०। ०।३४।५९	०। ६।५१।२९	११। २।१९।३७	०।२०।५५।१२	५। ४।५८।२३	१०।२४।४७।१६	२।१२।२४। ४	५।२५।१६।२६
	१२ मं	११।१९।१८।३८	०। १।२०।१०	०। ८। ७।३४	११। २।३३।४३	०।२२। ७।१६	५। ४।५४।१२	१०।२४।४४। ५	२।१२।२४।५१	५।२५।१४।४२
	१३ बु	११।२०।१७।४४	०। २। ५।१३	०। ९।१८।५८	११। २।४८। ४	०।२३।१९।४४	५। ४।४९।४८	१०।२४।४०।५४	२।१२।२५।४४	५।२५।१३।१२
	१४ गु	११।२१।१६।४९	०। २।५०। ६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।२४।३७।४४	२।१२।२६।४९	५।२५।११।११
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।२४।३४।३३	२।१२।२८। १	५।२५। ९।४७

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु दैनिकश्चंद्र: स्पष्ट:

चैत्रशुक्लपक्ष:

ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
१	र	११। २४।७।२२	११।११।५०।४०	११।१३।५३।५८	११।१५।५७।१५	११।१७।५९।२२	११।२०। ०।५१
२	चं	११।२२। २।२१	११।२४।३। ५०	११।२६।५। २०	११।२८। ६।४९	०। ०। ८।१४	०। २। ८।४१
३	मं	०। ४। ९। ८	०। ६। ९।३५	०। ८।१०। २	०।१०।१०।२९	०।१२।१०।५६	०।१४।११।१५
४	बु	०।१६।११।२१	०।१८।११।२८	०।२०।११।३४	०।२२।११।४०	०।२४।११।४६	०।२६।११।५२
५	गु	०।२८।१२।२८	१। ०।१३। ४	१। २।१३।४०	१। ४।१४।१७	१। ६।१४।५३	१। ८।१५।२९
६	शु	१।१०।१६।१५	१।१२।१८। ६	१।१४।१९।५८	१।१६।२१।४९	१।१८।२३।४०	१।२०।२५।३२
६	श	१।२२।२७।२४	१।२४।३०।१३	१।२६।३३।४६	१।२८।३७।१९	२। ०।४०।५२	२। २।४४।२५
७	र	२। ४।४७।५८	२। ६।५१।४३	२। ८।५७।२४	२।११। ३। ५	२।१३। ८।४७	२।१५।१४।२८
८	चं	२।१७।२०।१०	२।१९।२५।५१	२।२१।३३।२३	२।२३।४१।३५	२।२५।४९।४७	२।२७।५७।५९
९	मं	३। ०। ६।१२	३। २।१४।२४	३। ४।२३।५८	३। ६।३४।५८	३। ८।४५।५९	३।१०।५७। ०
१०	बु	३।१३। ८। १	३।१५।१९। २	३।१७।३०।५८	३।१९।४४।३१	३।२१।५८। ४	३।२४।११।३८
११	गु	३।२६।२५।१२	३।२८।३८।४५	४। ०।५३।१७	४। ३। ९।२०	४। ५।२५।२३	४। ७।४१।२७
१२	शु	४। ९।५७।३०	४।१२।१३।३४	४।१४।३०।४१	४।१६।४८।४३	४।१९। ६।४६	४।२१।२४।४८
१३	श	४।२३।४२।५१	४।२६। ०।५४	४।२८।२०।२८	५। ०।४०।३९	५। ३। ०।५०	५। ५।२१। २
१५	र	५। ७।४१।१४	५।१०। १।२५	५।१२।२३। ३	५।१४।४४।४१	५।१७। ६।१९	५।१९।२७।५७

ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
१	चं	५।२१।४९।३५	५।२४।११।३०	५।२६।३३।५३	५।२८।५६।१७	६। १।१८।४०	६। ३।४१। ४
२	मं	६। ६। ३।२७	६। ८।२६।२५	६।१०।४९।३४	६।१३।१२।४३	६।१५।३५।५२	६।१७।५९। १
३	बु	६।२०।२२।११	६।२२।४५।२०	६।२५। ८।३०	६।२७।३१।३९	६।२९।५४।४८	७। २।१७।५८
४	गु	७। ४।४०।५३	७। ७। ३।३७	७। ९।२६।१७	७।११।४८।५७	७।१४।११।३९	७।१६।३४।२०
५	शु	७।१८।५६।१०	७।२१।१७।४६	७।२३।३९।२२	७।२६। ०।५७	७।२८।२२।३२	८। ०।४३।४०
६	श	८। ३। ३।४६	८। ५।२३।५३	८। ७।४३।५९	८।१०। ४। ६	८।१२।२४।१२	८।१४।४३। १
७	र	८।१७। १। ०	८।१९।१८।५९	८।२१।३६।५७	८।२३।५४।५५	८।२६।१२।५३	८।२८।२९।१६
८	चं	९। ०।४५।१७	९। ३। १।१८	९। ५।१७।१९	९। ७।३३।११	९। ९।४९।२०	९।१२। ३। ४
९	मं	९।१४।१६।३५	९।१६।३०। ६	९।१८।४३।३७	९।२०।५७। ७	९।२३।१०।३८	९।२५।२१।३४
१०	बु	९।२७।३२।१८	९।२९।४३। १	१०। १।५३।४४	१०। ४। ४।२७	१०। ६।१५।१०	१०। ८।२३।४७
११	गु	१०।१०।३३।५५	१०।१२।४०। ३	१०।१४।४८।१२	१०।१६।५६।२१	१०।१९। ४।२९	१०।२१।११।११
१२	शु	१०।२३।१६।४८	१०।२५।२२।२६	१०।२७।२८। ४	१०।२९।३३।४१	११। १।३९।१८	११। ३।४४।३०
१३	श	११। ५।४७।५९	११। ७।५१।२८	११। ९।५४।५७	११।११।५८।२६	११।१४। १।५४	११।१६। ५।२३
१४	र	११।१८। ७।५०	११।२०। ९।३४	११।२२।११।१८	११।२४।१३। २	११।२६।१४।४६	११।२८।१६।३०
३०	चं	०। ०।१८। ६	०। २।१८।४४	०। ४।१९।२२	०। ६।२०। ०	०। ८।२०।३८	०।१०।२१।१६

ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
१	मं	०।१२।२१।५४	०।१४।२२।१५	०।१६।२२।२१	०।१८।२२।२७	०।२०।२२।३२	०।२२।२२।३८
२	बु	०।२४।२२।४३	०।२६।२२।४८	०।२८।२३।११	१। ०।२३।३३	१। २।२३।५६	१। ४।२४।१८
३	गु	१। ६।२४।४१	१। ८।२५। ४	१।१०।२६। ८	१।१२।२७।४१	१।१४।२९।१४	१।१६।३०।४७
४	शु	१।१८।३२।२०	१।२०।३३।५३	१।२२।३५।२६	१।२४।३७।५७	१।२६।४१। १	१।२८।४४। ६
५	श	२। ०।४७।१०	२। २।५०।१५	२। ४।५३।१९	२। ६।५६।४२	२। ९। १।५७	२।११। ७।१२
६	र	२।१३।१२।२८	२।१५।१७।४४	२।१७।२३। ०	२।१९।२८।१६	२।२१।३५।१९	२।२३।४२।५८
७	चं	२।२५।५०।३७	२।२७।५८।१७	३। ०। ५।५७	३। २।१३।३७	३। ४।२२।३४	३। ६।३२।५३
८	मं	३। ८।४३।१३	३।१०।५३।३३	३।१३। ३।५३	३।१५।१४।१३	३।१७।२५।२६	३।१९।३८।२४
९	बु	३।२१।५१।२२	३।२४। ४।२०	३।२६।१७।१८	३।२८।३०।१६	४। ०।४४। ४	४। २।५९।३९
१०	गु	४। ५।१५।१४	४। ७।३०।५०	४। ९।४६।२६	४।१२। २। २	४।१४।१८।२९	४।१६।३६। ६
११	शु	४।१८।५३।४३	४।२१।११।२०	४।२३।२८।५७	४।२५।४६।३४	४।२८। ५।२३	५। ०।२५। ९
१२	श	५। २।४४।५६	५। ५। ४।४३	५। ७।२४।३०	५। ९।४४।१७	५।१२। ५।३६	५।१४।२६।५९
१३	र	५।१६।४८।२२	५।१९। ९।१५	५।२१।३१। ८	५।२३।५२।४६	५।२६।१५।१३	५।२८।३७।४०
१४	चं	६। १। ०। ७	६। ३।२२।३४	६। ५।४५। १	६। ८। ७।५९	६।१०।३१। ३	६।१२।५४। ७
१५	मं	६।१५।१७।११	६।१७।४०।१६	६।२०। ३।२१	६।२२।२६।३८	६।२४।४९।५५	६।२७।१३।१२

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गण: ५८१६ मासारंभे

मासः	ति. वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इन्द्र.
फाल्गुन शुक्लपक्षः ।	१ गु	१०।२३।३०।४३	११।११।३५।२४	१०।२०।२५।१२	१०।२६।१९।२४	११।२०।३०।१८	५। ६।५५।२६	१०।२६। ६।४२	२।१२।१५।१८	५।२५।५४।१४
	२ शु	१०।२४।३०।३९	११।१२।२१।३६	१०।२२।१८। ४	१०।२६।३३।५८	११।२१।४३।५५	५। ६।५०।४९	१०।२६। ३।३२	२।१२।१५। ०	५।२५।५२।४८
	३ श	१०।२५।३०।३४	११।१३। ७।४४	१०।२४।१२। ७	१०।२६।४८।२९	११।२२।५७।२५	५। ६।४६।१६	१०।२६। ०।२१	२।१२।१४।४२	५।२५।५१।२९
	४ र	१०।२६।३०।२९	११।१३।५३।५६	१०।२६। ७।१६	१०।२७। २।५६	११।२४।१०।५५	५। ६।४१।३५	१०।२५।५७।१०	२।१२।१४।३१	५।२५।५०। २
	५ चं	१०।२७।३०।२०	११।१४।४०। १	१०।२८। ३।२९	१०।२७।१७।२०	११।२५।२४।१८	५। ६।३६।५४	१०।२५।५४। ०	२।१२।१४।१७	५।२५।४८।४०
	६ म	१०।२८।३०। ९	११।१५।२५।४१	११। ०। ०।२५	१०।२७।३१।४८	११।२६।३७।५२	५। ६।३२।१७	१०।२५।५०।४९	२।१२।१४। ६	५।२५।४७।२०
	६ बु	१०।२९।२९।५६	११।१६।११।३५	११। १।५८।२३	१०।२७।४६।१६	११।२७।५१। ७	५। ६।२८। ५	१०।२५।४७।३८	२।१२।१३।४७	५।२५।४५।५०
	७ गु	११। ०।२९।४८	११।१६।५७।२२	११। ३।५७।१४	१०।२८। ०।५८	११।२९। ४।२३	५। ६।२३।२४	१०।२५।४४।२७	२।१२।१३।४१	५।२५।४४।२८
	८ शु	११। १।२९।२६	११।१७।४२।५९	११। ५।५६।२०	१०।२८।१५।२५	०। ०।१७।२४	५। ६।१८।४०	१०।२५।४१।१७	२।१२।१३।४१	५।२५।४३। ५
	९ श	११। २।२९।१०	११।१८।२८।४४	११। ७।५६।३१	१०।२८।२९।४९	०। १।३०।३६	५। ६।१३।५२	१०।२५।३८। ६	२।१२।१३।५२	५।२५।४१।३१
	१० र	११। ३।२८।५२	११।१९।१४।३१	११। ९।५७। ४	१०।२८।४४।१७	०। २।४४। २	५। ६। ९।११	१०।२५।३४।५६	२।१२।१४। ६	५।२५।४०। १
	११ चं	११। ४।२८।३०	११।२०। ०।२९	११।११।५७। ०	१०।२८।५८।४४	०। ३।५७। ०	५। ६। ४।२६	१०।२५।३१।४५	२।१२।१४।२८	५।२५।३८।३१
	१२ मं	११। ५।२८। ५	११।२०।४६। ८	११।१३।५७।३२	१०।२९।१३। ५	०। ५।१०।१६	५। ५।५९।३१	१०।२५।२८।३४	२।१२।१४।४९	५।२५।३७। ५
	१३ बु	११। ६।२७।३७	११।२१।३१।२६	११।१५।५७।५०	१०।२९।२७।२९	०। ६।२३।२४	५। ५।५४।४७	१०।२५।२५।२४	२।१२।१५।२२	५।२५।३५।२८
	१४ गु	११। ७।२७। ८	११।२२।१६।४४	११।१७।५७।३२	१०।२९।४१।५६	०। ७।३६।११	५। ५।४९।५९	१०।२५।२२।१३	२।१२।१५।५८	५।२५।३३।५८
	१५ शु	११। ८।२६।३७	११।२३। २।१८	११।१९।५५।१२	१०।२९।५६।२४	०। ८।४९। ७	५। ५।४५।१४	१०।२५।१९। २	२।१२।१६।३४	५।२५।३२।२४
चैत्र कृष्णपक्षः ।	१ श	११। ९।२६। २	११।२३।४७।५३	११।२१।५१।१८	११। ०।१०।३७	०।२०। १।४८	५। ५।४०।३४	१०।२५।१५।५२	२।१२।१७। ६	५।२५।३०।४३
	२ र	११।१०।२५।२६	११।२४।३३।१८	११।२३।४५।२५	११। ०।२५।१२	०।११।१४।२०	५। ५।३५।४६	१०।२५।१२।४१	२।१२।१७।४२	५।२५।२९।१३
	३ चं	११।११।२४।४७	११।२५।१८।५०	११।२५।३७।१९	११। ०।३९।२९	०।१२।२७। ७	५। ५।३०।५८	१०।२५। ९।३१	२।१२।१८।१४	५।२५।२७।३६
	४ मं	११।१२।२४। ६	११।२६। ४।१६	११।२७।२६।१०	११। ०।५३।४९	०।१३।३९।५०	५। ५।२६।१७	१०।२५। ६।२०	२।१२।१८।५४	५।२५।२६। ६
	५ बु	११।१३।२३।२५	११।२६।४९।३०	११।२९।११।४६	११। १। ८। ६	०।१४।५२।४८	५। ५।२१।३६	१०।२५। ३। ९	२।१२।१९।४१	५।२५।२४।३१
	७ गु	११।१४।२२।४३	११।२७।३४।३७	०। ०।५२।५२	११। १।२२।३४	०।१६। ५।२८	५। ५।१६।५५	१०।२४।५९।५८	२।१२।२०।२८	५।२५।२२।५२
	८ शु	११।१५।२२। ०	११।२८।१९।४०	०। २।२९।२४	११। १।३६।४७	०।१७।१७।५६	५। ५।१२।१८	१०।२४।५६।४८	२।१२।२१।११	५।२५।२१।१४
	९ श	११।१६।२१।१३	११।२९। ४।४१	०। ४। १।३४	११। १।५१। ४	०।१८।३०।२२	५। ५। ७।३७	१०।२४।५३।३७	२।१२।२२। ८	५।२५।१९।३७
	१० र	११।१७।२०।२३	११।२९।४९।५२	०। ५।२९।२८	११। २। ५।२५	०।१९।४२।४७	५। ५। ३। ०	१०।२४।५०।२६	२।१२।२३। ६	५।२५।१८। ०
	११ चं	११।१८।१९।३२	०। ०।३४।५९	०। ६।५१।२९	११। २।१९।३७	०।२०।५५।१२	५। ४।५८।२३	१०।२४।४७।१६	२।१२।२४। ४	५।२५।१६।२६
	१२ मं	११।१९।१८।३८	०। १।२०।१०	०। ८। ७।३४	११। २।३३।४३	०।२२। ७।१६	५। ४।५४।१२	१०।२४।४४। ५	२।१२।२४।५१	५।२५।१४।४२
	१३ बु	११।२०।१७।४४	०। २। ५।१३	०। ९।१८।५८	११। २।४८। ४	०।२३।१९।४४	५। ४।४९।४८	१०।२४।४०।५४	२।१२।२५।४४	५।२५।१३।१२
	१४ शु	११।२१।१६।४९	०। २।५०। ६	०।१०।२४।४३	११। ३। २।१७	०।२४।३१।५२	५। ४।४५।२५	१०।२४।३७।४४	२।१२।२६।४९	५।२५।११।११
	३०	[illegible]	०। ३।३६।४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चैत्रशुक्लपक्षः

संवत् २००७ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
चैत्रशुक्लपक्षः	१	र	११। ९।४७।२२	११।११।५०।४०	११।१३।५३।५८	११।१५।५७।१५	११।१७।५९।२२	११।२०। ०।५१
	२	चं	११।२२। २।२१	११।२४। ३।५०	११।२६। ५।२०	११।२८। ६।४९	०। ०। ८।१४	०। २। ८।४१
	३	मं	०। ४। ९। ८	०। ६। ९।३५	०। ८।१०। २	०।१०।१०।२९	०।१२।१०।५६	०।१४।११।१५
	४	बु	०।१६।११।२१	०।१८।११।२८	०।२०।११।३४	०।२२।११।४०	०।२४।११।४६	०।२६।११।५२
	५	गु	०।२८।१२।२८	१। ०।१३। ४	१। २।१३।४०	१। ४।१४।१७	१। ६।१४।५३	१। ८।१५।२९
	६	शु	१।१०।१६।१५	१।१२।१८। ६	१।१४।१९।५८	१।१६।२१।४९	१।१८।२३।४०	१।२०।२५।३२
	६	श	१।२२।२७।२४	१।२४।३०।१३	१।२६।३३।४६	१।२८।३७।१९	२। ०।४०।५२	२। २।४४।२५
	७	र	२। ४।४६। २	२। ६।५१।४३	२। ८।५७।२४	२।११। ३। ५	२।१३। ८।४७	२।१५।१४।२८
	८	चं	२।१७।२०।१०	२।१९।२५।५१	२।२१।३३।२३	२।२३।४१।३५	२।२५।४९।४७	२।२७।५७।५९
	९	मं	३। ०। ६।१७	३। २।१४।२४	३। ४।२३।५८	३। ६।३४।५८	३। ८।४५।५९	३।१०।५७। ०
	१०	बु	३।१३। ८। १	३।१५।१९। २	३।१७।३०।५८	३।१९।४४।३१	३।२१।५८। ४	३।२४।११।३८
	११	गु	३।२६।२५।१२	३।२८।३८।४५	४। ०।५३।१७	४। ३। ९।२०	४। ५।२५।२३	४। ७।४१।२७
	१२	शु	४। ९।५७।३०	४।१२।१३।३४	४।१४।३०।४१	४।१६।४८।४३	४।१९। ६।४६	४।२१।२४।४८
	१३	श	४।२३।४२।५१	४।२६। ०।५४	४।२८।२०।२८	५। ०।४०।३९	५। ३। ०।५०	५। ५।२१। २
	१५	र	५। ७।४१।१४	५।१०। १।२५	५।१२।२३। ३	५।१४।४४।४१	५।१७। ६।१९	५।१९।२७।५७
वैशाखकृष्णपक्षः	१	चं	५।२१।४९।३५	५।२४।११।३०	५।२६।३३।५३	५।२८।५६।१७	६। १।१८।४०	६। ३।४१। ४
	२	मं	६। ६। ३।२७	६। ८।२६।२५	६।१०।४९।३४	६।१३।१२।४३	६।१५।३५।५२	६।१७।५९। १
	३	बु	६।२०।२२।११	६।२२।४५।२०	६।२५। ८।३०	६।२७।३१।३९	६।२९।५४।४८	७। २।१७।५८
	४	गु	७। ४।४०।५३	७। ७। ३।३७	७। ९।२६।१७	७।११।४८।५७	७।१४।११।३९	७।१६।३४।२०
	५	शु	७।१८।५६।१०	७।२१।१७।४६	७।२३।३९।२२	७।२६। ०।५७	७।२८।२२।३२	८। ०।४३।४०
	६	श	८। ३। ३।४६	८। ५।२३।५३	८। ७।४३।५९	८।१०। ४। ६	८।१२।२४।१२	८।१४।४३। १
	७	र	८।१७। १। ०	८।१९।१८।५९	८।२१।३६।५७	८।२३।५४।५५	८।२६।१२।५३	८।२८।२९।१६
	८	चं	९। ०।४५।१७	९। ३। १।१८	९। ५।१७।१९	९। ७।३३।१९	९। ९।४९।२०	९।१२। ३। ४
	९	मं	९।१४।१६।३५	९।१६।३०। ६	९।१८।४३।३७	९।२०।५७। ७	९।२३।१०।३८	९।२५।२१।३४
	१०	बु	९।२७।३२।१८	९।२९।४३। १	१०। १।५३।४४	१०। ४। ४।२७	१०। ६।१५।१०	१०। ८।२३।४७
	११	गु	१०।१०।३३।५५	१०।१२।४०। ३	१०।१४।४८।१२	१०।१६।५६।२१	१०।१९। ४।२९	१०।२१।११।११
	१२	शु	१०।२३।१६।४८	१०।२५।२२।२६	१०।२७।२८। ४	१०।२९।३३।४१	११। १।३९।१८	११। ३।४४।३०
	१३	श	११। ५।४७।५९	११। ७।५१।२८	११। ९।५४।५७	११।११।५८।२६	११।१४। १।५४	११।१६। ५।२३
	१४	र	११।१८। ७।५०	११।२०। ९।३४	११।२२।११।१८	११।२४।१३। २	११।२६।१४।४६	११।२८।१६।३०
	३०	चं	०। ०।१८। ६	०। २।१८।४४	०। ४।१९।२२	०। ६।२०। ०	०। ८।२०।३८	०।१०।२१।१६
वैशाखशुक्लपक्षः	१	मं	०।१२।२१।५४	०।१४।२२।१५	०।१६।२२।२१	०।१८।२२।२७	०।२०।२२।३२	०।२२।२२।३८
	२	बु	०।२४।२२।४३	०।२६।२२।४८	०।२८।२३।११	१। ०।२३।३३	१। २।२३।५६	१। ४।२४।१८
	३	गु	१। ६।२४।४१	१। ८।२५। ४	१।१०।२६। ८	१।१२।२७।४१	१।१४।२९।१४	१।१६।३०।४७
	४	शु	१।१८।२२।२०	१।२०।३३।५३	१।२२।३५।२६	१।२४।३७।५७	१।२६।४१। १	१।२८।४४। ६
	५	श	२। ०।४७।१०	२। २।५०।१५	२। ४।५३।१९	२। ६।५६।४२	२। ९। १।५७	२।११। ७।१२
	६	र	२।१३।१२।२८	२।१५।१७।४४	२।१७।२३। ०	२।१९।२८।१६	२।२१।३५।११	२।२३।४२।५८
	७	चं	२।२५।५०।३७	२।२७।५८।१७	३। ०। ५।५७	३। २।१३।३७	३। ४।२२।३४	३। ६।३२।५३
	८	मं	३। ८।४३।१३	३।१०।५३।३३	३।१३। ३।५३	३।१५।१४।१३	३।१७।२५।२६	३।१९।३८।२४
	९	बु	३।२१।५१।२२	३।२४। ४।२०	३।२६।१७।१८	३।२८।३०।१६	४। ०।४४। ४	४। २।५९।३९
	१०	गु	४। ५।१५।१४	४। ७।३०।५०	४। ९।४६।२६	४।१२। २। २	४।१४।१८।२९	४।१६।३६। ६
	११	शु	४।१८।५३।४३	४।२१।११।२०	४।२३।२८।५७	४।२५।४६।३४	४।२८। ५।२३	५। ०।२५। ९
	१२	श	५। २।४४।५६	५। ५। ४।४३	५। ७।२४।३०	५। ९।४४।१७	५।१२। ५।३६	५।१४।२६।५९
	१३	र	५।१६।४८।२२	५।१९। ९।१५	५।२१।३३। ८	५।२३।५२।४६	५।२६।१५।१३	५।२८।३७।४०
	१४	चं	६। १। ०। ७	६। ३।२२।३४	६। ५।४५। १	६। ८। ७।५९	६।१०।३१। ३	६।१२।५४। ७
	१५	मं	६।१५।१७।११	६।१७।४०।१६	६।२०। ३।२१	६।२२।२६।३८	६।२४।४९।५५	६।२७।१३।१२

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
ज्येष्ठकृष्णपक्षः	१	बु	६।२९।३६।२९	७। १५।३।४६	७। ४।२२।५१	७। ६।४५।४३	७। ९। ८।३४	७।११।३१।…
	३	गु	७।१३।५४।१६	७।१६।१७।७	७।१८।३९। ९	७।२१। १। ०	७।२३।२२।५१	७।२५।४४।…
	४	शु	७।२८। ६।३२	८। ०।२८। ६	८। २।४८।३५	८। ५। ९। ४	८। ७।२९।३२	८। ९।५०।…
	५	श	८।१२।१०।२८	८।१४।२९।५४	८।१६।४८।१९	८।१९। ६।४४	८।२१।२५। ८	८।२३।४३।…
	६	र	८।२६। १।५६	८।२८।१९। २	९। ०।३५।३८	९। २।५२।१४	९। ५। ८।५०	९। ७।२५।…
	७	चं	९। ९।४२। १	९।११।५६।२४	९।१४।१०।२७	९।१६।२४।३०	९।१८।३८।३२	९।२०।५२।…
	८	मं	९। २३।६।३६	९।२५।१८।१४	९।२७।२९।३५	९।२९।४०।५६	१०। १।५२।१७	१०। ४। ३।…
	९	बु	१०। ६।१४।५९	१०। ८।२४।१८	१०।१०।३३। ४	१०।१२।४१।४९	१०।१४।५०।३४	१०।१६।५९।…
	१०	गु	१०।१९। ८। ४	१०।२१।१५।१५	१०।२३।२१।२२	१०।२५।२७।२९	१०।२७।३३।३६	१०।२९।३९।…
	११	शु	११। १।४५।५०	११। ३।५१।१८	११। ५।५५।१६	११। ७।५९।१४	११।१०। ३।१२	११।१२। ७।…
	१२	श	११।१४।११। ८	११।१६।१५। ६	११।१८।१७।४०	११।२०।१९।४५	११।२२।२१।५०	११।२४।२३।…
	१३	र	११।२६।२५।५८	११।२८।२८। २	०। ०।२९।४८	०। २।३०।३७	०। ४।३१।२६	०। ६।३२।…
	१४	चं	०। ८।३३। ४	०।१०।३३।५३	०।१२।३४।४२	०।१४।३५। ७	०।१६।३५।१८	०।१८।३५।…
	३०	मं	०।२०।३५।४०	०।२२।३५।५१	०।२४।३६। २	०।२६।३६।१३	०।२८।३६।३०	१। ०।३६।…
ज्येष्ठ शुक्लपक्षः	१	बु	१। २।३७। ६	१। ४।३७।२४	१। ६।३७।४२	१। ८।३८। ०	१।१०।३८।३६	१।१२।३९।…
	१	गु	१।१४।४१। ५	१।१६।४२।२०	१।१८।४३।३५	१।२०।४४।५०	१।२२।४६। ५	१।२४।४८।…
	२	शु	१।२६।५१। ३	१।२८।५३।४५	२। ०।५६।२७	२। २।५९। ९	२। ५। १।५१	२। ७। ४।…
	३	श	२। ९। ९।४४	२।११।१४।३१	२।१३।१९।१८	२।१५।२४। ५	२।१७।२८।५२	२।१९।३३।…
	४	र	२।२१।४०।३६	२।२३।४७।४१	२।२५।५४।४६	२।२८। १।५१	३। ०। ८।५६	३। २।१६।…
	५	चं	३। ४।२४।२६	३। ६।३४।१०	३। ८।४३।५४	३।१०।५३।३८	३।१३। ३।२२	३।१५।१३।…
	६	मं	३।१७।२३।४१	३।१९।३६। ३	३।२१।४८।२६	३।२४। ०।४८	३।२६।१३।११	३।२८।२५।…
	७	बु	४। ०।३८।४२	४। २।५३।४०	४। ५। ८।३९	४। ७।२३।३८	४। ९।३८।३७	४।११।५३।…
	८	गु	४।१४। ९।२६	४।१६।२६।४४	४।१८।४४। २	४।२१। १।२०	४।२३।१८।३८	४।२५।३५।…
	९	शु	४।२७।५४।२०	५। ०।१३।४२	५। २।३३। ४	५। ४।५२।२६	५। ७।११।४९	५। ९।३१।…
	१०	श	५।११।५१।५२	५।१४।१२।५३	५।१६।३३।५४	५।१८।५४।५५	५।२१।१५।५६	५।२३।३७।…
	१२	र	५।२५।५९।२४	५।२८।२१।४२	६। ०।४४। ०	६। ३। ६।१९	६। ५।२८।३७	६। ७।५१।…
	१३	चं	६।१०।१४।१४	६।१२।३७।१३	६।१५। ०।१२	६।१७।२३।११	६।१९।४६।१०	६।२२। ९।…
	१४	मं	६।२४।३३।५३	६।२६।५६।१५	६।२९।१९।३७	७। १।४३। ०	७। ४। ६।१२	७। ६।२९।…
	१५	बु	७। ८।५२। ०	७।११।१४।५४	७।१३।३७।४८	७।१६। ०।४२	७।१८।२३। १	७।२०।४५।…
प्र. आषाढकृष्णपक्षः	१	गु	७।२३। ७।१३	७।२५।२९।१९	७।२७।५१।२५	८। ०।१३।२३	८। २।३४।११	८। ४।५५। ०
	२	शु	८। ७।१५।४८	८। ९।३६।३६	८।११।५७।२४	८।१४।१७।२५	८।१६।३६।२१	८।१८।५५।१७
	३	श	८।२१।१४।१३	८।२३।३३।१९	८।२५।५२। ५	८।२८। ९।४५	९। ०।२६।४७	९। २।४३।४९
	४	र	९। ५। ०।५०	९। ७।१७।५१	९। ९।३४।५२	९।११।४९।५६	९।१४। ४।३२	९।१६।१९।०८
	५	चं	९।१८।३३।४४	९।२०।४८।२०	९।२३। २।५६	९।२५।१५।१४	९।२७।२७।१०	९।२९।३९। ६
	६	मं	१०। १।५१। २	१०। ४। २।५८	१०। ६।१४।५४	१०। ८।२४।४६	१०।१०।३४। ७	१०।१२।४३।२८
	७	बु	१०।१४।५२।४९	१०।१७। १।१०	१०।१९। ९।३१	१०।२१।१९।११	१०।२३।२५।५२	१०।२५।३२।३३
	८	गु	१०।२७।३९।१४	१०।२९।४५।५५	११। १।५२।३६	११। ३।५८।३७	११। ६। ३।१०	११। ८। ७।४३
	९	शु	११।१०।१२।१६	११।१२।१६।४९	११।१४।२१।२२	११।१६।२५।५५	११।१८।२८।३४	११।२०।३१। १
	१०	श	११।२२।३३।२८	११।२४।३५।५५	११।२६।३८।२२	११।२८।४०।४९	०। ०।४२।४४	०। २।४३।…
	११	र	०। ४।४५। २	०। ६।४६। ९	०। ८।४७।१६	०।१०।४८।२३	०।१२।४९।३०	०।१४।४९।…
	१२	चं	०।१६।५०।१३	०।१८।५०।२७	०।२०।५०।४१	०।२२।५०।५५	०।२४।५१।१९	०।२६।५१।…
	१३	मं	०।२८।५१।४४	१। ०।५२। २	१। २।५२।२०	१। ४।५२।३८	१। ६।५२।५६	१। ८।५३।१४
	१४	बु	१।१०।५३।५०	१।१२।५४।४८	१।१४।५५।४६	१।१६।५६।४४	१।१८।५७।४२	१।२०।५८।४०
	३०	गु	१।२२।५९।३८	१।२५। १।४७	१।२७। ४।१०	१।२९। ६।३३	२। १। ८।५६	२। ३।११।२०

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः

प्र. आषाढशुक्लपक्षः

ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
१	शु	२। ५।१३।४३	२। ७।१६।४२	२। ९।२१। ५	२।११।२५।२८	२।१३।२९।५१	२।१५।३४।१४
२	श	२।१७।३८।३७	२।१९।४३। ०	२।२१।४९।१७	२।२३।५५।५२	२।२६। २।२७	२। २८।९। २
३	र	३। ०।१५।३७	३। २।२२।१२	३। ४।३०।११	३। ६।३९।३१	३। ८।४८।३३	३।१०।५७।४३
४	चं	३।१३। ६।५३	३।१५।१५।०३	३।१७।२६। ९	३।१९।३८। १	३।२१।४९।५३	३।२४। १।४५
५	मं	३।२६।१३।३७	३।२८।२५।२९	४। ०।३८। ७	४। २।५२।३९	४। ५। ७।११	४। ७।२१।४३
६	बु	४। ९।३६।१५	४।११।५०।४७	४।१४।०६। ६	४।१६।३३। ३	४।१८।४०। ०	४।२०।५६।५७
७	गु	४।२३।१३।५८	४।२५।३०।५१	४।२७।४८।४३	५। ०। ७।३१	५। २।२६।३९	५। ४।४५। ७
८	शु	५। ७। ३।५५	५। ९।२२।४३	५।११।४३। १	५।१४। ३।४९	५।१६।२४।३७	५।१८।४५।२५
९	श	५।२१। ६।१३	५।२३।२७। २	५।२५।४९। ४	५।२८।११। ६	६। ०।३३। ८	६। २।५५।१०
१०	र	६। ५।१७।१३	६। ७।३९।५०	६।१०। २।५२	६।१२।२५।५४	६।१४।४८।५५	६।१७।११।५७
११	चं	६।१९।३६।५९	६।२१।५८।१५	६।२४।२१।३४	६।२६।४४।५३	६।२९। ८।१३	७। १।३१।३२
१२	मं	७। ३।५४।४९	७। ६।१७।५५	७। ८।४१। १	७।११। ४। ७	७।१३।२७।१३	७।१५।५०।१९
१३	बु	७।१८।१३। ७	७।२०।३५।२६	७।२२।५७।५०	७।२५।२०।१४	७।२७।४२।३८	८। ०। ४।५६
१५	गु	८। २।२७। ७	८। ४।४८।१८	८। ७। ९।२९	८। ९।३०।४०	८।११।५१।५१	८।१४।११।२४

द्वि. आषाढकृष्णपक्षः

ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
१	शु	८।१६।३०।५६	८।१८।५०।२८	८।२१।१०। ०	८।२३।२९।३२	८।२५।४९।०४	८।२८। ७।१५
२	श	९। ०।२४।४५	९। २।४१।१५	९। ४।५८।४५	९। ७।१६।१५	९। ९।३३।४५	९।११।५०।२४
३	र	९।१४। ५।३४	९।१६।२०।४४	९।१८।३५।५४	९।२०।५१। ४	९।२३। ६।१४	९।२५।२१। ९
४	चं	९।२७।३६।४७	९।२९।५१।२५	१०। १।५७। ३	१०। ४। ९।४१	१०। ६।२२।१९	१०। ८।३२।३९
५	मं	१०।१०।४२।३७	१०।१२।५२।३५	१०।१५। २।३३	१०।१७।१२।३१	१०।१९।२२।२९	१०।२१।३०।३७
६	बु	१०।२३।३७।५८	१०।२५।४५।१८	१०।२७।५२।३८	१०।२९।५९।५९	११। २। ७।१९	११। ४।१३।३४
७	गु	११। ६।१८।३८	११। ८।२३।४२	११।१०।२८।४६	११।१२।३३।५०	११।१४।३८।५४	११।१६।४३।५३
८	शु	११।१८।४६।४४	११।२०।४९।३५	११।२२।५२।२६	११।२४।५५।१७	११।२६।५८। ८	११।२९। ०।५९
९	श	०। १। ३। ८	०। ३। ४।३२	०। ५। ५।५६	०। ७। ७।२०	०। ९। ८।४४	०।११।१०। ८
१०	र	०।१३।११।३२	०।१५।१२। ०	०।१७।१२।२५	०।१९।१२।५०	०।२१।१३।१५	०।२३।१३।४०
११	चं	०।२५।१४। ५	०।२७।१४।२८	०।२९।१४।४५	१। १।१५। १	१। ३।१५।१७	१। ५।१५।३३
१२	मं	१। ७।१५।४८	१। ९।१६। ३	१।११।१६।३१	१।१३।१७।१२	१।१५।१७।५३	१।१७।१८।३४
१२	बु	१।१९।१९।१५	१।२१।१९।५६	१।२३।२१।२६	१।२५।२३।२९	१।२७।२५।३२	१।२९।२७।३५
१३	गु	२। १।२९।३८	२। ३।३१।४१	२। ५।३३।४४	२। ७।३६।३५	२। ९।४०।२९	२।११।४४।२३
१४	शु	२।१३।४८।१७	२।१५।५२।११	२।१७।५६। ५	२।२०। ०। ०	२।२२। ६। १	२।२४।१२। २
३०	श	२।२६।१८। ३	२।२८।२४। ४	३। ०।३०। ५	३। २।३६। ६	३। ४।४३।५०	३। ६।५२।२९

द्वि. आषाढशुक्लपक्षः

ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
१	र	३। ९। १। ८	३।११। ९।४७	३।१३।१८।२६	३।१५।२७। ५	३।१७।३६।५४	३।१९।४८।१४
२	चं	३।२१।५९।३४	३।२४।१०।५४	३।२६।२२।१४	३।२८।३३।३४	४। ०।४५।४६	४। २।५९।४२
३	मं	४। ५।१३।३८	४। ७।२७।३४	४। ९।४१।३०	४।११।५५।२६	४।१४।१०।१६	४।१६।२६।४५
४	बु	४।१८।४३।१४	४।२०।५९।४३	४।२३।१६।१२	४।२५।३२।४१	४।२७।५०। ५	५। ०। ८।२५
५	गु	५। २।२६।४५	५। ४।४५। ५	५। ७। ३।२५	५। ९।२१।४५	५।११।४१।३८	५।१४। २। ९
७	शु	५।१६।२२।४०	५।१८।४३।११	५।२१। ३।४२	५।२३।२४।१५	५।२५।४६। ३	५।२७।०७।५१
८	श	६। ०।२९।३९	६। २।५१।२७	६। ५।१३।१५	६। ७।३५।३०	६। ९।५८।२४	६।१२।२१।१८
९	र	६।१४।४४।१२	६।१७। ७। ६	६।१९।३०। ०	६।२१।५३।१४	६।२४।१६।३३	६।२६।३९।५२
१०	चं	६।२९। ३।११	७। १।२६।३०	७। ३।४९।५०	७। ६।१३। ३	७। ८।३६।१५	७।१०।५९।२७
११	मं	७।१३।२२।३९	७।१५।४१।५१	७।१८। ८।४१	७।२०।३३।२०	७।२२।५४।५९	७।२५।१६।३८
१२	बु	७।२७।३९।१७	८। ०। १।५३	८। २।२३।२६	८। ४।४४।५९	८। ७। ६।३२	८। ९।२८। ५
१३	गु	८।११।४९।३८	८।१४।१०।३७	८।१६।३०।३१	८।१८।५०।२७	८।२१।१०।२३	८।२३।३०।१९
१४	शु	८।२५।५०।१५	८।२८। ८।५६	९। ०।२६।४९	९। २।४४।४२	९। ५। २।३५	९। ७।२०।२८
१५	श	९। ९।३८।२१	९।११।५४।३०	९।१४।१०।११	९।१६।२६। ८	९।१८।४९।५७	९।२०।५७।४६

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०—१० घटीषु दैनिकश्चन्द्रः स्पष्टः

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
श्रावणकृष्णपक्षः	१	र	९।२३।१३।३५	९।२५।२७। ०	९।२७।४०।१३	९।२९।५३।२६	१०। २। ६।३९	१०। ४।११।[illegible]
	२	चं	१०। ६।३३। ५	१०। ८।४३।५८	१०।१०।५४।४१	१०।१३। ५।२४	१०।१५।१६। ७	१०।१७।२६।[illegible]
	३	मं	१०।१९।३७।३३	१०।२१।४६। ०	१०।२३।५३।५८	१०।२६। १।५६	१०।२८। ९।५४	११। ०।१७।[illegible]
	४	बु	११। २।२५।५०	११। ४।३३।१६	११। ६।३८।४७	११। ८।४४।१८	११।१०।४९।४०	११।१२।५५।[illegible]
	५	गु	११।१५। ०।५१	११।१७। ५। ५	११।१९। ८।२७	११।२१।११।४९	११।२३।१५।११	११।२५।१८।[illegible]
	६	शु	११।२७।२१।५५	११।२९।२५।१७	०। १।२७।२५	०। ३।२९। ९	०। ५।३०।५३	०। ७।३२।[illegible]
	७	श	०। ९।३४।२१	०।११।३६। ५	०।१३।३७।४२	०।१५।३८।२२	०।१७।३९। २	०।१९।३[illegible]
	८	र	०।२१।४०।२२	०।२३।४१। २	०।२५।४१।४२	०।२७।४२। ६	०।२९।४२।१७	१। १।४[illegible]
	९	चं	१। ३।४२।३९	१। ५।४२।५०	१। ७।४३। १	१। ९।४३।१२	१।११।४३।४६	१।१३।४४।[illegible]
	१०	मं	१।१५।४५। ६	१।१७।४५।४६	१।१९।४६।२६	१।२१।४७। ६	१।२३।४८। ०	१।२५।४९।[illegible]
	११	बु	१।२७।५१।२८	१।२९।५३।१२	२। १।५४।५६	२। ३।५६।४०	२। ५।५८।२४	२। ८। १[illegible]
	१२	गु	२।१०। ४।४४	२।१२। ८।११	२।१४।११।३८	२।१६।१५। ५	२।१८।१८।३२	२।२०।२[illegible]
	१३	शु	२।२२।२७।५२	२।२४।३३।२१	२।२६।३८।५०	२।२८।४४।११	३। ०।४९।४८	३। २।५[illegible]
	१४	श	३। ५। २।५१	३। ७।१०।५३	३। ९।१८।५५	३।११।२६।५७	३।१३।३४।५९	३।१५।[illegible]
	३०	र	३।१७।५२।३५	३।२०। ३।२२	३।२२।१४। ९	३।२४।२४।५६	३।२६।३५।४३	३।२८।४[illegible]
श्रावणशुक्लपक्षः	१	चं	४। ०।५८।२६	४। ३।११।४४	४। ५।२५। २	४। ७।३८।२०	४। ९।५१।३८	४।१२।[illegible]
	२	मं	४।१४।११।२४	४।१६।३५।२५	४।१८।५१।२६	४।२१। ७।२७	४।२३।२३।२८	४।२५।३[illegible]
	३	बु	४।२७।५६।२४	५। ०।१४।२०	५। २।३२।१६	५। ४।५०।१२	५। ७। ७। ८	५। ९।२[illegible]
	४	गु	५।११।४५।४५	५।१४। ५।४९	५।१६।२५।५३	५।१८।४५।५७	५।२१। ६। १	५।२३।२६[illegible]
	५	शु	५।२५।४७।४३	५।२८। ९।१८	६। ०।३०।५३	६। २।५२।२८	६। ५।१४। ३	६। ७।३६[illegible]
	६	श	६। ९।५८।४८	६।१२।२१।२९	६।१४।४४।१०	६।१७। ६।५१	६।१९।२९।३२	६।२१।५२[illegible]
	७	र	६।२४।१५।४२	६।२६।३८।४९	६।२९। १।५६	७। १।२५। ३	७। ३।४९। ९	७। ६।१२[illegible]
	८	चं	७। ८।३५।५३	७।१०।५९।१५	७।१३।२२।३७	७।१५।४५।५९	७।१८। ९। ६	७।२०।३२[illegible]
	१०	मं	७।२२।५५।५८	७।२५।१७।५४	७।२७।४०।५०	८। ०। ३।४७	८। २।२५।३८	८। ४।४७[illegible]
	११	बु	८। ७। ९।२०	८। ९।३१।११	८।११।५३। २	८।१४।१४।१८	८।१६।३४।४४	८।१८।५५।[illegible]
	१२	गु	८।२१।१५।३६	८।२३।३६। २	८।२५।५६।२८	८।२८।१५।२७	९। ०।३३।४७	९। २।५२[illegible]
	१३	शु	९। ५।१०।२७	९। ७।२८।४७	९। ९।४७। ७	९।१२। ३।४२	९।१४।२०। ८	९।१६।३६[illegible]
	१४	श	९।१८।५३। ०	९।२१। १।२६	९।२३।२५।४८	९।२५।३९।४४	९।२७।५३।४०	१०। ०। ७[illegible]
	१५	र	१०। २।२१।३२	१०। ४।३५।२८	१०। ६।४९।१२	१०। ९। ०।३१	१०।११।११।५०	१०।१३।२३[illegible]
भाद्रपदकृष्णपक्षः	१	चं	१०।१५।३४।२८	१०।१७।४५।४७	१०।१९।५७। ६	१०।२२। ५।५०	१०।२४।१४।३१	१०।२६।२३।१२
	२	मं	१०।२८।३१।५३	११। ०।४०।३४	११। २।४९।१५	११। ४।५६। ०	११। ७। २। ३	११। ९। ८। ६
	३	बु	११।११।१४। ९	११।१३।२०।१२	११।१५।२६।१५	११।१७।३३।२३	११।१९।३५।१७	११।२१।३९।११
	४	गु	११।२३।४३। ५	११।२५।४६।५०	११।२७।५०।५३	११।२९।५४।४७	०। १।५७। १	०। ३।५९। ७
	५	शु	०। ६। १।१३	०। ८। ३।११	०।१०। ५।२५	०।१२। ७।३१	०।१४। ९। ९	०।१६।१०। १
	६	श	०।१८।१०।५३	०।२०।११।४५	०।२२।१३।३७	०।२४।१३।२९	०।२६।१४।२१	०।२८।१४।४२
	७	र	१। ०।१४।५८	१। २।१५।१४	१। ४।१५।३०	१। ६।१५।४६	१। ८।१६। २	१।१०।१६।२८
	८	चं	१।१२।१६।५९	१।१४।१७।३०	१।१६।१८। १	१।१८।१८।३२	१।२०।१९। ३	१।२२।१९।३४
	९	मं	१।२४।२०।३७	१।२६।२२। ०	१।२८।२३।२८	२। ०।२४।५६	२। २।२६।२४	२। ४।२७।५२
	९	बु	२। ६।२९।२०	२। ८।३३। ७	२।१०।३५। ६	२।१२।३८। ५	२।१४।४१। ४	२।१६।४४। ३
	१०	गु	२।१८।४७। २	२।२०।५०।५२	२।२२।५५।५८	२।२५। १। ८	२।२७। ६।१०	२।२९।११।[illegible]
	११	शु	३। १।१६।२२	३। ३।२१।२९	३। ५।२८।५८	३। ७।३६।२७	३। ९।४३।५६	३।११।५१।[illegible]
	१२	श	३।१३।५८।५४	३।१६। ६।२३	३।१८।१५।५०	३।२०।२५।५५	३।२२।३६। ०	३।२४।४६।[illegible]
	१३	र	३।२६।५६।१०	३।२९। ६।१५	४। १।१७।५१	४। ३।३०।३३	४। ५।४३।१५	४। ७।५५।[illegible]
	१४	चं	४।१०। ८।३९	४।१२।२२।२१	४।१४।३५।३७	४।१६।५५। ३	४।१९। १।२९	४।२१।२१।५५
	३०	मं	४।२३।३७।२१	४।२५।५५।४७	४।२८। ९।३६	५। ०।२७। ६	५। २।४४।३६	५। ५। २। ६

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०—१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
भाद्रपदशुक्लपक्षः	१	बु	५। ७।१९।३६	५। ९।३७। ६	५।११।५६।२३	५।१४।१६। २	५।१६।३५।४१	५।१८।५५।२०
	३	गु	५।२१।१४।५९	५।२३।३४।५१	५।२५।५६।१२	५।२८।१७।३३	६। ०।३८।५४	६। ३। ०।१५
	४	शु	६। ५।२१।३६	६। ७।४३।२५	६।१०। ५।५६	६।१२।२८।२७	६।१४।५०।५८	६।१७।१३।२९
	५	श	६।१९।३६। ०	६।२१।५९। ५	६।२४।२२।१४	६।२६।४५।२३	६।२९। ८।३२	७। १।३१।४१
	६	र	७। ३।५४।५५	७। ६।१८।२५	७। ८।४१।५५	७।११। ५।२५	७।१३।२८।५५	७।१५।५२।२५
	७	चं	७।१८।१५।३७	७।२०।३८।४१	७।२३। १।४५	७।२५।२४।५०	७।२७।४७।५४	८। ०।१०।५४
	८	मं	८। २।३३। ५	८। ४।५५।१६	८। ७।१७।२७	८। ९।३९।३८	८।१२। १।४९	८।१४।२३।२५
	९	बु	८।१६।४४।२१	८।१९। ५।१७	८।२१।२६।१३	८।२३।४७। ९	८।२६। ८। ५	८।२८।२७।२३
	१०	गु	९। ०।४६।१४	९। ३। ५। ५	९। ५।२३।५६	९। ७।४२।४७	९।१०। १।३६	९।१२।१८।३५
	११	शु	९।१४।३५।३४	९।१६।५२।३३	९।१९। ९।३२	९।२१।२६।३१	९।२३।४३। ६	९।२५।५७।४२
	१२	श	९।२८।१३।१८	१०। ०।२६।५४	१०। २।४१।३०	१०। ४।५६। ६	१०। ७।१०। ८	१०। ९।२२। ३
	१३	र	१०।११।३३।५८	१०।१३।४५।५२	१०।१५।५७।४६	१०।१८। ९।४०	१०।२०।२१। ७	१०।२२।३०।२३
	१४	चं	१०।२४।३९।३९	१०।२६।४८।५५	१०।२८।५८।११	११। १। ७।२७	११। ३।१६।४३	११। ५।२३।२०
	१५	मं	११। ७।२९।५७	११। ९।३६।३४	११।११।४३।११	११।१३।४९।४८	११।१५।५६।२५	११।१८। १।४३
आश्विनकृष्णपक्षः	१	बु	११।२०। ६।१०	१०।२२।१०।३७	१०।२४।१५। ४	१०।२६।१९।३१	१०।२८।२३।५८	०। ०।२७।५८
	२	गु	०। २।३०।२५	०। ४।३२।५२	०। ६।३५।१९	०। ८।३७।४६	०।१०।४०।१३	०।१२।४२।४०
	३	शु	०।१४।४४।११	०।१६।४५।१८	०।१८।४६।२५	०।२०।४७।३२	०।२२।४८।३९	०।२४।४९।४६
	४	श	०।२६।५०।५०	०।२८।५१। ८	१। ०।५१।२६	१। २।५१।४४	१। ४।५२। २	१। ६।५२।२०
	५	र	१। ८।५२।३८	१।१०।५२।५८	१।१२।५३।२२	१।१४।५३।४६	१।१६।५४।१०	१।१८।५४।३४
	६	चं	१।२०।५४।५८	१।२२।५५।२२	१।२४।५६।२०	१।२६।५७।३१	१।२८।५८।४२	२। ०।५९।५३
	७	मं	२। ३। १। ४	२। ५। २।१५	२। ७। ३।४१	२। ९। ६।१०	२।११। ८।३९	२।१३।११। ८
	८	बु	२।१५।१३।३७	२।१७।१६। ६	२।१९।१८।३५	२।२१।२२।२७	२।२३।२७। ४	२।२५।३१।४१
	९	गु	२।२७।३६।१८	२।२९।४०।५५	३। १।४५।३२	३। ३।५०।३८	३। ५।५७।२३	३। ८। ४। ८
	१०	शु	३।१०।१०।५३	३।१२।१७।३८	३।१४।२४।२३	३।१६।३१। ८	३।१८।४०।२५	३।२०।४९।५०
	११	श	३।२२।५९।१५	३।२५। ९।४०	३।२७।१९। ५	३।२९।२८।३०	४। १।३८।३२	४। ३।५०।१३
	१२	र	४। ६। १।५४	४। ८।१३।३५	४।१०।२५।१६	४।१२।३६।५७	४।१४।५१। ०	४।१७। ६। ८
	१३	चं	४।१९।२१।१६	४।२१।३६।२४	४।२३।५१।३२	४।२६। ६।४०	४।२८।२३।१७	५। ०।४०।२३
	१४	मं	५। २।५७।२९	५। ५।१४।३५	५। ७।३१।४१	५। ९।४८।४७	५।१२। ७।४२	५।१४।२६।४५
	३०	बु	५।१६।४५।४८	५।१९। ४।५१	५।२१।२३।५४	५।२३।४३।१२	५।२६। ४। ८	५।२८।२५। २
आश्विनशुक्लपक्षः	१	गु	६। ०।४६। ०	६। ३। ६।५६	६। ५।२७।५२	६। ७।४९।२७	६।१०।११।४०	६।१२।३३।५३
	२	शु	६।१४।५६। ६	६।१७।१८।१९	६।१९।४०।३२	६।२२। ३।३१	६।२४।२६।३५	६।२६।४९।३९
	३	श	६।२९।१२।४३	७। १।३५।४७	७। ३।५८।५८	७। ६।२२।२५	७। ८।४५।५२	७।११। ९।१९
	४	र	७।१३।३२।४६	७।१५।५६।१३	७।१८।१९।३०	७।२०।४२।३९	७।२३। ५।४८	७।२५।२८।५७
	५	चं	७।२७।५२। ६	८। ०।१५।१२	८। २।३७।३८	८। ५। ०। ४	८। ७।२२।३०	८। ९।४४।५६
	७	मं	८।१२। ७।२२	८।१४।२९।२५	८।१६।५०।३६	८।१९।११।४७	८।२१।१३।५८	८।२३।५४। ९
	८	बु	८।२६।१५।२०	८।२८।३६। ०	९। ०।५५।३२	९। ३।१५। ४	९। ५।३४।३६	९। ७।५४। ८
	९	गु	९।१०।१२।२२	९।१२।२९।४९	९।१४।४७।१६	९।१७। ४।४३	९।१९।२२।१०	९।२१।३९।३७
	१०	शु	९।२३।५६।३०	९।२६।११।४०	९।२८।२६।५०	१०। ०।४२। ०	१०। २।५७।१०	१०। ५।१२।२०
	११	श	१०। ७।२६।३७	१०। ९।३९।११	१०।११।५२।४५	१०।१४। ५।१९	१०।१६।१७।५३	१०।१८।३०।२७
	१२	र	१०।२०।४१। ८	१०।२२।५१। २	१०।२५। ०।५६	१०।२७।१०।५०	१०।२९।२०।४४	११। १।३०।३८
	१३	चं	११। ३।४०।१०	११। ५।४७।२७	११। ७।५४।४४	११।१०। २। १	११।१२। ९।१८	११।१४।१६।३५
	१४	मं	११।१६।२३।५२	११।१८।२९।१३	११।२०।३४।१७	११।२२।३९।२१	११।२४।४४।२५	११।२६।४९।२९
	१५	बु	११।२८।५४।३३	०। ०।५८।३३	०। ३। १।२३	०। ५। ४।१३	०। ७। ७। ३	०। ९। ९।५३

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
कार्तिककृष्णपक्षः	१	गु	०।११।१२।४३	०।१३।१५।३३	०।१५।१६।५९	०।१७।१८।२४	०।१९।१९।४९	०।२१।२१।१४
	२	शु	०।२३।२२।३९	०।२५।२४। ४	०।२७।२५। १	०।२९।२५।३१	१। १।२६। ०	१। ३।२६।२९
	३	श	१। ५।२६।५८	१। ७।२७।२७	१। ९।२७।५६	१।११।२८।२३	१।१३।२८।३७	१।१५।२८।५१
	३	र	१।१७।२९। ५	१।१९।२९।१९	१।२१।२९।३३	१।२३।२९।५३	१।२५।३०।५१	१।२७।३१।४९
	४	चं	१।२९।३२।४७	२। १।३३।४५	२। ३।३४।४३	२। ५।३५।४१	२। ७।३७।१२	२। ९।३९।२०
	५	मं	२।११।४१।२८	२।१३।४३।३६	२।१५।४५।४४	२।१७।४७।५२	२।१९।५०। ०	२।२१।५३।५४
	६	बु	२।२३।५७।५६	२।२६। १।५८	२।२८। ६। ०	३। ०।१०। २	३। २।१४। ४	३। ४।१९। ५
	७	गु	३। ६।२५।१४	३। ८।३१।२३	३।१०।३७।३२	३।१२।४३।४१	३।१४।४९।५०	३।१६।५६।१९
	८	शु	३।१९। ५।११	३।२१।१४। ३	३।२३।२२।५५	३।२५।३१।४७	३।२७।४०।३९	३।२९।४९।३१
	९	श	४। २। ०।४२	४। ४।१२। ८	४। ६।२३।३४	४। ८।३५। ०	४।१०।४६।२६	४।१२।५७।५२
	१०	र	४।१५।११।३०	४।१७।२५।३५	४।१९।३९।४०	४।२१।५३।४५	४।२४। ७।५०	४।२६।२१।५५
	११	चं	४।२८।३८। ९	५। ०।५४।४५	५। ३।११।२१	५। ५।२७।५७	५। ७।४४।३३	५।१०। १। ९
	१२	मं	५।१२।१९।४३	५।१४।३८।१७	५।१६।५६।५१	५।१९।१५।२५	५।२१।३३।५९	५।२३।५३। २
	१३	बु	५।२६।१३।३५	५।२८।३४। ८	६। ०।५४।४१	६। ३।१५।१४	६। ५।३५।४७	६। ७।५७। १
	१४	ग	६।१०।१८।४७	६।१२।४०।३३	६।१५। २।१९	६।१७।२४। ५	६।१९।४५।५१	६।२२। ८।४८
कार्तिकशुक्लपक्षः	१	गु	६।२४।३१।५५	६।२६।५५। २	६।२९।१८। ९	७। १।४१।१६	७। ४। ४।३४	७। ६।२७।५९
	२	श	७। ८।५१।२४	७।११।१४।४९	७।१३।३८।१४	७।१६। १।३९	७।१८।२४।४४	७।२०।४८। २
	३	र	७।२३।११।१६	७।२५।३४।३०	७।२७।५७।४४	८। ०।२०।५५	८। २।४३।३६	८। ५। ६।१७
	४	चं	८। ७।२८।५८	८। ९।५१।३९	८।१२।१४।२०	८।१४।३६।२८	८।१६।५८। ४	८।१९।१९।४०
	५	मं	८।२१।४१।१६	८।२४। २।५२	८।२६।२४।२८	८।२८।४४।३५	९। १। ४।३४	९। ३।२४।३३
	६	बु	९। ५।४४।३२	९। ८। ४।३१	९।१०।२४। ८	९।१२।४२। ४	९।१५। १। ०	९।१७।१९।५६
	७	गु	९।१९।३५।५२	९।२१।५३।४८	९।२४।१०।५६	९।२६।२६।४५	९।२८।४२।३४	१०। ०।५८।२३
	८	शु	१०। ३।१४।१२	१०। ५।३०। १	१०। ७।४४।३८	१०। ९।५७।५४	१०।१२।११।१०	१०।१४।२४।२६
	९	श	१०।१६।३७।४२	१०।१८।५०।५८	१०।२१। २।५६	१०।२३।१३।३५	१०।२५।२४।१४	१०।२७।३४।५३
	१०	र	१०।२९।४५।३२	११। १।५६।११	११। ४। ५।५०	११। ६।१३।४४	११। ८।२१।३८	११।१०।२९।३२
	११	चं	११।१२।३७।२६	११।१४।४५।२०	११।१६।५२।५८	११।१८।५८।२९	११।२१। ४। ०	११।२३। ९।३१
	१२	मं	११।२५।१५। २	११।२७।२०।३३	११।२९।२६। ४	०। १।२९।५९	०। ३।३३।५५	०। ५।३६।३१
	१३	बु	०। ७।३९।४७	०। ९।४३। ३	०।११।४६।१९	०।१३।४९।१३	०।१५।५०।५९	०।१७।५२।४५
	१४	गु	०।१९।५४।३१	०।२१।५६।१७	०।२३।५८। ३	०।२५।५९।४९	०।२८। ०।४८	१। ०। १।२५
	१५	शु	१। २। २। २	१। ४। २।३८	१। ६। ३।१४	१। ८। ३।५०	१।१०। ४।२५	१।१२। ४।४१
मार्गशीर्षकृष्णपक्षः	१	श	१।१४। ४।५७	१।१६। ५।१३	१।१८। ५।२९	१।२०। ५।४५	१।२२। ६। १	१।२४। ६।२७
	२	र	१।२६। ७। ५	१।२८। ७।४३	२। ०। ८।२१	२। २। ८।५९	२। ४। ९।३७	२। ६।१०।१५
	३	चं	२। ८।११।४७	२।१०।१३।३७	२।१२।१५।२७	२।१४।१७।१७	२।१६।१९। ७	२।१८।२०।५७
	४	मं	२।२०।२३। ३	२।२२।२६।३२	२।२४।३०। १	२।२६।३३।३०	२।२८।३६।५९	३। ०।४०।२८
	५	बु	३। २।४३।२२	३। ४।४८।५९	३। ६।५४।३६	३। ९। ०।१३	३।११। ५।५०	३।१३।११।२७
	६	गु	३।१५।१५।२७	३।१७।२३।३३	३।१९।३१।३९	३।२१।३९।४५	३।२३।४७।५१	३।२५।५५।५७
	७	शु	३।२८। १।३४	४। ०।१२।२६	४। २।२३।१८	४। ४।३४।१०	४। ६।४५। २	४। ८।५५।५४
	८	श	४।११। ४।१०	४।१३।१७।३२	४।१५।३०।५४	४।१७।४४।१६	४।१९।५७।३८	४।२२।११। ०
	९	र	४।२४।२४।३८	४।२६।३९।४४	४।२८।५४।५०	५। १। ९।५६	५। ३।२५। २	५। ५।४०। ८
	१०	चं	५। ७।५६।३१	५।१०।१४।२९	५।१२।३२।२७	५।१४।५०।२५	५।१७। ८।२३	५।१९।२६।२१
	११	मं	५।२१।४२।४९	५।२४। ३। ०	५।२६।२३।११	५।२८।४३।२२	६। १। ३।३३	६। ३।२३।४४
	१२	बु	६। ५।४३।२१	६। ८। ४।५७	६।१०।२६।३३	६।१२।४८। ९	६।१५। ९।४५	६।१७।३१।२१
	१३	गु	६।१९।५२।५२	६।२२।१५।३८	६।२४।३८।२४	६।२७। १।१०	६।२९।२३।५६	७। १।४६।४२
	१४	शु	७। ४। ९।४०	७। ६।३३।५७	७। ८।५६।१४	७।११।१९।३१	७।१३।४२।४८	७।१६। ६। ५
	३०	श	७।१८।२७।२८	७।२०।५०।५३	७।२३।१४।१८	७।२५।३७।४३	७।२८। १। ८	८। ०।२४।३३

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
मार्गशीर्षशुक्लपक्षः	१	र	८।२।४९।२१	८।५।१२।१६	८।७।३५।११	८।९।५८।६	८।१२।२१।१	८।१४।४३।१३
	२	चं	८।१७।५।४	८।१९।२६।५५	८।२१।४८।४६	८।२४।१०।३७	८।२६।३२।२८	८।२८।५२।५९
	३	मं	९।१।१३।२७	९।३।३३।५५	९।५।५[illegible]।२३	९।८।१४।५१	९।१०।३४।४८	९।१२।५३।५
	५	बु	९।१५।११।२२	९।१७।२९।३९	९।१९।४७।५६	९।२२।६।१३	९।२४।२३।४०	९।२६।४०।६
	६	गु	९।२८।५६।३२	१०।१।१२।५८	१०।३।२९।२४	१०।५।४५।५०	१०।८।०।४४	१०।१०।१४।३४
	७	शु	१०।१२।२८।२४	१०।१४।४२।१४	१०।१६।५६।४	१०।१९।९।५४	१०।२१।२२।२	१०।२३।३३।१७
	८	श	१०।२५।४४।३२	१०।२७।५५।४७	११।०।७।२	११।२।१८।१७	११।४।२८।२२	११।६।३६।५३
	९	र	११।८।४५।२४	११।१०।५५।५५	११।१३।५।२६	११।१५।१०।५७	०।१७।१२।२५	०।१९।२४।२२
	१०	चं	०।२१।२०।११	०।२३।३६।१६	०।२५।४२।१३	०।२७।४८।१०	०।२९।५४।७	०।१।५७।५८
	११	मं	०।४।१।४३	०।६।५।२८	०।८।९।१३	०।१०।१२।५८	०।१२।१६।४३	०।१४।१९।३५
	१२	बु	०।१६।२२।३६	०।१८।२३।३७	०।२०।२५।३८	०।२२।२७।३९	०।२४।२९।४०	०।२६।३१।४१
	१२	गु	०।२८।३२।२८	१।०।३३।१२	१।२।३३।५६	१।४।३४।४०	१।६।३५।२४	१।८।३६।८
	१३	शु	१।१०।३६।४०	१।१२।३६।५४	१।१४।३७।८	१।१६।३७।२२	१।१८।३७।३६	१।२०।३७।५०
	१४	श	१।२२।३८।४	१।२४।३८।३०	१।२६।३८।५७	१।२८।३९।२४	२।०।३९।५०	२।२।४०।१७
	१५	र	२।४।४०।४५	२।६।४१।१३	२।८।४१।३९	२।१०।४४।५	२।१२।४५।३१	२।१४।४६।५७
पौषकृष्णपक्षः	१	चं	२।१६।४८।२३	२।१८।४९।४९	२।२०।५१।५१	२।२२।५४।४९	२।२४।५७।४७	२।२७।०।४५
	२	मं	२।२९।३।४३	३।१।६।४१	३।३।९।३९	३।५।१४।२६	३।७।१९।३०	३।९।२४।३४
	३	बु	३।११।२९।३८	३।१३।३४।४२	३।१५।३९।४६	३।१७।४६।३	३।१९।५३।२८	३।२२।०।५३
	४	गु	३।२४।८।१८	३।२६।१५।४३	३।२८।२३।८	४।०।३१।१३	४।२।४१।१६	४।४।५१।१९
	५	शु	४।७।१।२२	४।९।११।२५	४।११।२१।२८	४।१३।३१।४४	४।१५।४४।२९	४।१७।५७।१४
	६	श	४।२०।९।५९	४।२२।२२।४४	४।२४।३५।२९	४।२६।४८।२१	४।२९।३।४१	५।१।१९।१
	७	र	५।३।३४।२१	५।५।४९।४१	५।८।५।१	५।१०।२०।३८	५।१२।३८।१२	५।१४।५५।४६
	८	चं	५।१७।१३।२०	५।१९।३०।५४	५।२१।४८।२८	५।२४।६।४६	५।२६।२६।२३	५।२८।४६।०
	९	मं	६।१।५।३७	६।३।२५।१४	६।५।४८।५१	६।८।५।२८	६।१०।२६।४४	६।१२।४८।०
	१०	बु	६।१५।९।१६	६।१७।३०।३२	६।१९।५१।४८	६।२२।१४।८	६।२४।३६।३४	६।२६।५९।०
	११	गु	६।२९।२२।२६	७।१।४३।५२	७।४।६।२२	७।६।२९।४१	७।८।५२।५०	७।११।१५।५९
	१२	शु	७।१३।३९।८	७।१६।२।१७	७।१८।२५।३७	७।२०।४८।५९	७।२३।११।२१	७।२५।३५।४३
	१४	श	७।२७।५९।५	८।०।२२।२३	८।२।४५।१७	८।५।८।११	८।७।३१।५	८।९।५३।५९
	३०	र	८।१२।१६।५३	८।१४।३९।२२	८।१७।१।३०	८।१९।२३।३८	८।२१।४५।४६	८।२४।७।५४
पौषशुक्लपक्षः	१	चं	८।२६।३०।२	८।२८।५०।५५	९।१।११।४१	९।३।३२।२७	९।५।५३।१३	९।८।१३।५९
	२	मं	९।१०।३४।१३	९।१२।५५।५७	९।१५।११।४१	९।१७।३०।२५	९।१९।४९।९	९।२२।७।५३
	३	बु	९।२४।२५।४२	९।२६।४२।३४	९।२८।५९।२६	१०।१।१६।१८	१०।३।३३।१०	१०।५।५०।२
	४	गु	१०।८।[illegible]।२१	१०।१०।१९।४६	१०।१२।३४।११	१०।१४।४८।३६	१०।१७।३।१	१०।१९।१७।२६
	५	शु	१०।२१।३०।४	१०।२३।४१।५२	१०।२५।५३।४०	१०।२८।५।२८	११।०।१७।१६	११।२।२९।४
	६	श	११।४।३९।२४	११।६।४८।५१	११।८।५८।१८	११।११।७।४५	११।१३।१७।१२	११।१५।२६।३९
	७	र	११।१७।३४।३९	११।१९।४०।४६	११।२१।४६।५३	११।२३।५३।०	११।२५।५९।७	११।२८।५।१४
	८	चं	०।०।११।११	०।२।१५।२८	०।४।१९।४५	०।६।२४।२	०।८।२८।१९	०।१०।३२।३६
	९	मं	०।१२।३६।५३	०।१४।३९।५५	०।१६।४२।१५	०।१८।४४।३५	०।२०।४६।५५	०।२२।४९।१५
	१०	बु	०।२४।५१।३५	०।२६।५३।४३	०।२८।५४।४१	१।०।५५।३९	१।२।५६।३७	१।४।५७।३५
	११	ग	१।६।५८।३३	१।८।५९।३१	१।११।०।७	१।१३।०।२१	१।१५।०।३५	१।१७।०।४९
	१२	शु	१।१९।१।३	१।२१।१।१७	१।२३।१।३१	१।२५।१।५०	१।२७।२।९	१।२९।२।२८
	१३	श	२।१।२।४७	२।३।३।६	२।५।३।२५	२।७।३।५०	२।९।५।१	२।११।६।१२
	१४	र	२।१३।७।२३	२।१५।८।३४	२।१७।९।४५	२।१९।१०।५६	२।२१।१२।५२	२।२३।१५।२१
	१४	चं	२।२५।१७।५०	२।२७।२०।१९	२।२९।२२।४८	३।१।२५।१७	३।३।२७।५४	३।५।३२।३१
	१५	मं	३।७।३७।८	३।९।४१।४५	३।११।४६।२२	३।१३।५०।५९	३।१५।५५।३६	३।१८।०।१३

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०—१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
माघकृष्णपक्षः	१	बु	३।२०।८।२१	३।२२।१५।८	३।२४।२१।५५	३।२६।२८।४२	३।२८।३५।२९	४।०।४३।९
	२	गु	४।२।५२।३६	४।५।२।३	४।७।११।३०	४।९।२०।५७	४।११।३०।२४	४।१३।४०।१५
	३	शु	४।१५।५२।२०	४।१८।४।२५	४।२०।१६।३०	४।२२।२८।३५	४।२४।४०।४०	४।२६।५३।२
	४	श	४।२९।७।४७	५।१।२२।३२	५।३।३७।१७	५।५।५२।२	५।८।६।४७	५।१०।२१।५६
	५	र	५।१२।३९।२	५।१४।५६।८	५।१७।१३।१४	५।१९।३०।२०	५।२१।४७।२६	५।२४।५।१५
	६	चं	५।२६।२४।२८	५।२८।४३।४१	६।१।२।५४	६।३।२२।७	६।५।४१।२०	६।८।१।२६
	८	मं	६।१०।२२।१४	६।१२।४३।२	६।१५।३।५०	६।१७।२४।३८	६।१९।४५।२६	६।२२।७।२५
	९	बु	६।२४।२९।३१	६।२६।५१।३७	६।२९।१३।४३	७।१।३५।४९	७।३।५८।१०	७।६।२१।१७
	१०	गु	७।८।४४।२४	७।११।७।३१	७।१३।३०।३८	७।१५।५३।४५	७।१८।१६।५७	७।२०।४०।१४
	११	शु	७।२३।३।३१	७।२५।२६।४८	७।२७।५०।५	८।०।१३।२१	८।२।३६।२३	८।४।५९।२५
	१२	श	८।७।२२।२७	८।९।४५।२९	८।१२।८।३१	८।१४।३१।९	८।१६।५३।२७	८।१९।१५।४५
	१३	र	८।२१।३८।३	८।२४।०।२१	८।२६।२२।३९	८।२८।४३।४९	९।१।४।४७	९।३।२५।४५
	१४	चं	९।५।४६।४३	९।८।७।४१	९।१०।२८।१९	९।१२।४७।३७	९।१५।६।५५	९।१७।२६।१३
	३०	मं	९।१९।४५।३१	९।२२।४।४९	९।२४।२३।१०	९।२६।४०।२८	९।२८।५७।४६	१०।१।१५।४
माघशुक्लपक्षः	१	बु	१०।३।३३।२२	१०।५।४९।४०	१०।८।५।२७	१०।१०।२०।२४	१०।१२।३५।२१	१०।१४।५०।१८
	२	गु	१०।१७।५।१५	१०।१९।२०।१२	१०।२१।३३।१५	१०।२३।४५।३१	१०।२५।५७।४७	१०।२८।१०।३
	३	शु	११।०।२२।१९	११।२।३४।३५	११।४।४५।७	११।६।५४।४४	११।९।४।२१	११।११।१३।५८
	४	श	११।१३।२३।३५	११।१५।३३।१२	११।१७।४१।३६	११।१९।४८।३७	११।२१।५५।३८	११।२४।२।३९
	५	र	११।२६।९।४०	११।२८।१६।४१	०।०।२३।१७	०।२।२७।५७	०।४।३२।३७	०।६।३७।१७
	६	चं	०।८।४१।५७	०।१०।४६।३७	०।१२।५१।१७	०।१४।५५।३	०।१६।५७।४१	०।१९।०।१९
	७	मं	०।२१।२।५७	०।२३।५।३५	०।२५।८।१३	०।२७।१०।३०	०।२९।११।४३	१।१।१२।५६
	८	बु	१।३।१४।९	१।५।१५।२२	१।७।१६।३५	१।९।१७।४८	१।११।१८।२५	१।१३।१८।४५
	९	गु	१।१५।१९।५	१।१७।१९।२५	१।१९।१९।४५	१।२१।२०।५	१।२३।२०।२४	१।२५।२०।३५
	१०	शु	१।२७।२०।४६	१।२९।२०।५७	२।१।२१।८	२।३।२२।१८	२।५।२१।२८	२।७।२१।५२
	११	श	२।९।२२।३९	२।११।२३।२६	२।१३।२४।१३	२।१५।२५।०	२।१७।२५।४७	२।१९।२६।३४
	१२	र	२।२१।२८।२३	२।२३।३०।३५	२।२५।३२।४७	२।२७।३४।५९	२।२९।३७।११	३।१।३९।२३
	१३	चं	३।३।४१।५५	३।५।४५।५८	३।७।५०।१	३।९।५४।४	३।११।५८।८	३।१४।१।१२
	१४	मं	३।१६।६।१६	३।१८।११।५४	३।२०।१८।५	३।२२।२४।१६	३।२४।३०।२७	३।२६।३६।३८
	१५	बु	३।२८।४९।४९	४।०।५०।२	४।२।५८।५४	४।५।७।४६	४।७।१६।३८	४।९।२५।३०
फाल्गुनकृष्णपक्षः	१	गु	४।११।३४।२२	४।१३।४३।४१	४।१५।५५।१४	४।१८।६।४७	४।२०।१८।२०	४।२२।२९।५३
	२	शु	४।२४।४१।२६	४।२६।५३।११	४।२९।७।१८	५।१।२१।२५	५।३।३५।३२	५।५।४९।३९
	३	श	५।८।३।४६	५।१०।१८।१३	५।१२।३४।५३	५।१४।५१।३३	५।१७।८।१३	५।१९।२४।५३
	४	र	५।२१।४१।३३	५।२३।५८।४६	५।२६।१७।१३	५।२८।३५।४०	६।०।५४।७	६।३।१२।३४
	५	चं	६।५।३३।१	६।७।५०।३२	६।१०।११।७	६।१२।३१।४२	६।१४।५२।१७	६।१७।१२।५२
	६	मं	६।१९।३३।२७	६।२१।५५।८	६।२४।१६।५८	६।२६।३८।४४	६।२९।०।३८	७।१।२२।२८
	७	बु	७।३।४४।३२	७।६।७।२६	७।८।३०।२०	७।१०।५३।१४	७।१३।१६।८	७।१५।३९।२
	८	गु	७।१८।२।९	७।२०।२५।२६	७।२२।४८।४३	७।२५।१२।०	७।२७।३५।१७	७।२९।५८।३४
	९	शु	८।२।२१।४१	८।४।४४।४८	८।७।७।५५	८।९।३१।२	८।११।५४।९	८।१४।१६।५८
	१०	श	८।१६।३९।२४	८।१९।१।५०	८।२१।२४।२६	८।२३।४६।४७	८।२६।९।८	८।२८।३०।४७
	११	र	९।०।५२।१३	९।३।१३।३९	९।५।३५।५	९।७।५९।११	९।१०।१७।४१	९।१२।३७।२०
	१३	चं	९।१४।५६।५९	९।१७।१६।३८	९।१९।३६।१७	९।२१।५५।५६	९।२४।१४।४४	९।२६।३९।२३
	१४	मं	९।२८।४९।५७	१०।१।३।३१	१०।३।२५।५	१०।५।४१।३९	१०।७।५२।३	१०।१०।१४।३४
	३०	बु	१०।१२।३०।१५	१०।१४।४५।३६	१०।१७।१।७	१०।१९।१६।२४	१०।२१।३०।२२	१०।२३।४३।१५

संवत् २००७ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०—१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
फाल्गुनशुक्लपक्षः	१	गु	१०।२५।५६। ८	१०।२८। ९। १	११। ०।२१।५४	११। २।३४।४७	११। ४।४७।५८	११। ६।५६।१४
	२	शु	११। ९। ६।२९	११।११।१६।४४	११।१३।२७। ०	११।१५।३७।१५	११।१७।४९। ७	११।१९।५३।४१
	३	श	११।२२। २।१५	११।२४। ८।४९	११।२६।१६।२३	११।२८।२३।५६	०। ०।३०।५३	०। २।३६। ७
	४	र	०। ४।४१।२१	०। ६।४६।३५	०। ८।५१।४९	०।१०।५७। ३	०।१३। २।१७	०।१५। ५।३८
	५	चं	०।१७। ८।४३	०।१९।११।४८	०।२१।१४।५३	०।२३।१७।५८	०।२५।२१। ३	०।२७।२३।३१
	६	मं	०।२९।२४।५७	१। १।२६।२३	१। ३।२७।४९	१। ५।२९।१४	१। ७।३०।४०	१। ९।३२। ६
	६	बु	१।११।३२।४४	१।१३।३३। ९	१।१५।३३।३४	१।१७।३३।५९	१।१९।३४।२४	१।२१।३४।४९
	७	गु	१।२३।३५।१३	१।२५।३५।२०	१।२७।३५।२७	१।२९।३५।३४	२। १।३५।४१	२। ३।३५।४८
	८	शु	२। ५।३५।५५	२। ७।३६।१७	२। ९।३६।५३	२।११।३७।२९	२।१३।३८। ५	२।१५।३८।४१
	९	श	२।१७।३९।१७	२।१९।३९।५३	२।२१।४१।३०	२।२३।४३।१७	२।२५।४५। ४	२।२७।४६।५१
	१०	र	२।२९।४८।३८	३। १।५०।२५	३। ३।५२।४६	३। ५।५६।२३	३। ८। ०। ०	३।१०। ३।३७
	११	चं	३।१२। ७।१४	३।१४।१०।५१	३।१६।१४।२८	३।१८।१९।४४	३।२०।२५।३१	३।२२।३१।१८
	१२	मं	३।२४।३७। ५	३।२६।४२।५२	३।२८।४८।३९	४। ०।५५। ९	४। ३। ३।२३	४। ५।११।३७
	१३	बु	४। ७।१९।५१	४। ९।२८। ५	४।११।३६।१९	४।१३।४५। ७	४।१५।५६। ७	४।१८। ७। ७
	१४	गु	४।२०।१८। ७	४।२२।२९। ८	४।२४।४०। ८	४।२६।५१।२१	४।२९। ४।५२	५। १।१८।२३
	१५	शु	५। ३।३१।५४	५। ५।४५।२५	५। ७।५८।५६	५।१०।१२।३१	५।१२।२८।४७	५।१४।४[illegible]।[illegible]
चैत्रकृष्णपक्षः	१	श	५।१७। १। ३	५।१९।१७।११	५।२१।३३।१९	५।२३।४९।५४	५।२६। ७।५५	५।२८।२५।५६
	२	र	६। ०।४३।५७	६। ३। १।५८	६। ५।११।५९	६। ७।३८।५२	६। ९।५९। १	६।१२।१९। २
	३	चं	६।१४।३९।१८	६।१६।५९।२७	६।१९।१९।३६	६।२१।४०।५१	६।२४। २।३४	६।२६।२४।१७
	४	मं	६।२८।४६। ०	७। १। ७।४३	७। ३।२९।३१	७। ५।५२।१०	७। ८।१४।४९	७।१०।३७।२८
	५	बु	७।१३। ०। ७	७।१५।२२।४६	७।१७।४५।३६	७।२०। ८।४५	७।२२।३१।५४	७।२४।५५। ३
	७	गु	७।२७।१८।१२	७।२९।४१।२१	८। २। ४।३३	८। ४।२७।४२	८। ६।५०।५१	८। ९।१४। ०
	८	शु	८।११।३७। ९	८।१४। ०।१२	८।१६।२२।५६	८।१८।४५।४०	८।२१। ८।२४	८।२३।३१। ८
	९	श	८।२५।५३।५२	८।२८।१५।४९	९। ०।३७।२५	९। २।५९। १	९। ५।२०।३७	९। ७।४२।१३
	१०	र	९।१०। ३।४४	९।१२।२३।५०	९।१४।४३।५६	९।१७। ४। २	९।१९।२४। ८	९।२१।४४।१४
	११	चं	९।२४। ३।४१	९।२६।२१।३७	९।२८।३९।३३	१०। ०।५७।२९	१०। ३।१५।२५	१०। ५।३३।२१
	१२	मं	१०। ७।५०।१६	१०।१०। ६।१७	१०।१२।२२।१८	१०।१४।३८।१९	१०।१६।५४।२०	१०।१९।१०।२१
	१३	बु	१०।२१।२४।४६	१०।२३।३८।१५	१०।२५।५१।४४	१०।२८। ५।१३	११। ०।१८।४२	११। २।३२।११
	१४	गु	११। ४।४४। ०	११। ६।५४।५४	११। ९। ५।४८	११।११।१६।४२	११।१३।२७।३६	११।१५।३८।३०
	३०	श	११।१७।४९। ०	११।१९।५९।११	११।२२। ९।२२	११।२४।१९।३३	११।२६।२९।४४	११।२८।३९।५५

विवाह के सूत्रोक्त नक्षत्र—

विद्वज्जनो। ज्योतिषग्रन्थों से रोहिण्यादि ११ नक्षत्र विवाहार्थ शुभ माने हैं। सर्वसिद्धिप्रद पुष्य-ब्रह्मा के द्वारा अयोग्य कृत्य से
[शा]पित होने पर और पूर्वाफाल्गुन्यादि नक्षत्र सीता आदि द्वारा शापित होने से विवाह में वर्जित हुए। यह बात शास्त्रज्ञों से छिपी हुई
नहीं है। परन्तु चित्रा-धनिष्ठा श्रवण और अश्विनी नक्षत्र वेदोक्त होते हुए भी इनकी विवाहमें उपेक्षा की जाती है यह उचित नहीं है।
[इ]न वैदिक नक्षत्रों का अन्य आगमज्ञोंने शुभ वा अशुभ कोई फल नहीं कहा इसी से ज्योतिषग्रन्थों में इनको छोड़ दिया है। तात्पर्य यह
है कि इस नक्षत्र चतुष्टयी का गुण विशेष नहीं है तो दोष भी किसी ने नहीं कहा। अतः सूत्रोक्त होने के कारण इनका ग्रहण
सर्वथा योग्य है, किंबहुना जब कोई गुणवान् नक्षत्र न मिले तो इनमें विवाह करना आर्षमतानुसार ठीक है। कपोलकल्पित बात नहीं
है। प्रमाणार्थ देखिए (पारस्करगृह्यसूत्र-उदगयने आपूर्यमाण पक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात्)।१। (त्रिषुत्रिषूत्तरादिषु)।२। हरिहर-
भाष्ये त्रिषु उत्तरा आदियेषां तानि उत्तरादीनि तेषु कतिषु त्रिषु-त्रिषु उ.फा.ह. चि.। उ.षा. श्र. ध.। उ. भा. रे. अश्विनी॥ इस
प्रमाण को देखकर मैं ने चित्रादि नक्षत्रों के साहे लगाए हैं। पूज्य विद्वान् लोग भ्रम न करते हुए स्वीकार करें। (पंचाङ्गकर्ता)

श्रीगणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ।

प्रणम्य भारतीं देवीं पादाब्जं श्रीगुरोरपि ।
वक्ष्येऽहं सुमुहूर्तादीन् लोकानां हितवाञ्छया ॥

सं० २००७ मध्ये विवाहादि मुहूर्त्ताः ।

अथ समयशुद्धिः

शुक्रास्त :—आश्विन शुक्ल १४ भौमवार से मार्गशीर्ष शुक्ल ५ बुधवार तक (सौरमान से कार्तिक प्र. ८ मार्गशीर्ष प्र. २८ तक) पूर्व में शुक्र का अस्त रहेगा। पञ्चाङ्गकार ने जो शुक्रोदयास्त के दिन लिखे हैं वह स्थूल रूप से मध्यम मान के हैं सूक्ष्म-स्पष्ट-मान के तो श्री केतकराचार्य्यकृत ज्योतिर्गणित से निकलते हैं सो हमने वही स्पष्ट करके लिखे हैं आकाशीय वातावरण ठीक हो तो प्रत्यक्ष दिखा भी सकते हैं।

गुर्वस्त :—फाल्गुन कृ. ७ बुधवार से चैत्र कृ. ९ शनिवारतक (सौरमान से फाल्गुन प्र. १७ से चैत्र प्र. १८ तक) गुरु का अस्त रहेगा।

सूचना—अस्त से पहिले तीन दिन वृद्धत्व दोष और उदय से पीछे तीन दिन बाल्यत्व दोष विशेष होता है जो अस्त की भांति सर्व शुभ कार्यों में वर्जित है।

शुद्धानिसपरिहाराणि च विवाह मुहूर्तानि

सर्वदेशों के लिये——

वै. प्र. ८ गु. रो. ।।।।ऽ चो. ।।।। ल. ८ चन्द्रोऽत्रसप्तम पूज्यः।
„ „ ९ शु. मृ. ।।।।।ऽऽ।। ल. ८ „ „
„ „ २३ शु. मृ. ।।।।।ऽ।। ल. गोध.
„ „ २६ चं. श्र. ऽ शु. ।।।ऽ चो. ।।।। ल. गोधू. वा. ९
„ „ २७ मं. ध. ।।।।।ऽ।। ल. गोधू. वा. ९
ज्ये. प्र. ५ गु. रो. ।।।।।।।। ल. अन्यगोधू.
„ „ ११ बु. म. ।।।।।।ऽ।। ल. ९ घ. ४०।२ उ.
„ „ १४ श. चि. ऽमं ऽ।।।ऽ।।। ल चि.
„ „ १५ रवि. चि. ऽ मं. ऽ।।ऽ वृ. ।।।। गोधू.
„ „ १९ गु. मू. ।ऽ।।ऽ रो. ।।।। ल. गो.
माघ. प्र. १४ श. ह. ।।।। ऽ वृ. ऽऽ ।। ल. ८ घ. ४८३२४ उ. वा. ९
माघ. प्र. १५ र. रु ।।।।।ऽऽ।। ल. ७।४४।४५ या.
मा. प्र. १८ बु. अनु. ।।।।ऽ रो ४७ या. ऽऽ।। ल. ७।९
„ „ २० शु. मू. ऽ श. ।।।ऽ अग्नि ऽऽ।ऽ ल. ८
फा. प्र. ३ बु. रो. ।।।।ऽ अग्नि ऽ।।। ल. ८ च. दा.
„ „ ५ शु. मृ. ।ऽ।।ऽ नृ. ।ऽ।। ल. ७
„ „ १० बु. म. ।।।ऽ बु. ।।ऽ।। ल. ८।९

"देशाचार से केवल पञ्जाब के लिये"

श्रा. प्र. ६ शु. चि. ।।ऽ मं. ।।ऽ नृ. ।।।। गोधू. चन्द्र मित्र राशिस्थः।
„ „ ७ श. चि. ।।ऽ मं. ।।।।।। ल. ८ आदिभाग चं०

मित्रराशिगत्वाद्युतिदोषो न ।

श्रा. प्र. ११ बु. मू. ऽ सू. ।।।।।।।। ल. अन्यगो.
„ „ १३ शु. उ. षा. ।।।।ऽ अग्नि ।ऽ।। ल- २
„ „ १५ र. ध. ।।।।।ऽ नृ. ।।।। दि. ल. ८ भू. दा. (रा. ल. ३)
„ „ २३ चं. रो. ।।।।ऽ अग्नि. ।ऽ।। ल. अन्य
„ „ २४ मं. रो. ।।।।।।ऽ।। ल. अन्यगो.
„ „ „ „ मृ ऽ बु. ।।।।ऽऽ।। ल. ३
„ „ २५ बु. मृ. ऽ बु. ।।।।ऽऽ।। लग्नाभावः।
भा. प्र. ४ रवि. अनु. ऽ मं. ।।।।।ऽ।। ल. ४
„ „ ८ गु. उ. षा. ऽ सू. ।।।।।।।। ल. गो वा. २
„ „ १८ र. रो. ।ऽ।।ऽ रो. ।ऽ। ल. ३।४
„ „ १९ चं. रो. ।ऽ।।ऽ रो. ।ऽ।। ल. अन्यगो ३
„ „ २० मं. मृ. ।।।।।ऽ।।। ल० अन्यगो वा २
„ „ २९ गु. चि. ।।।।।।।।। ल. चि.
आश्वि प्र. ३ मं. मू. ऽ श. ।।।ऽ अग्नि ।ऽ।। ल. अन्यगो.
„ „ ४ बु. उ. षा. ।।।।।।ऽ।। ल. ५ गुरु दा. वा. ३ चं. भू. दा।
„ „ ५ गु. उ. षा. ।।।।ऽ नृ. ।ऽ।। गो. वा ४-५ चन्द्रगुरू पूज्यौ क्रमात्।
आ. प्र. ६ शु. ध. ऽ सू. ।ऽ गु. ।।।।।। ल. ५ आ. चन्द्र गुरु दानात्।
„ „ ७ श. ध. ऽ सु. ।ऽ गु. ।।।।। दि.ल. ७
„ „ २८ श. अनु, ।।।।।।।।। ल. अन्यगो.
कार्तिक प्र. २ मं. श्र. ।ऽ।।।।।।। ल. ३ च. दा.

अशुद्ध विवाह मुहूर्तानि

वै. प्र. २ शु. उ. भा. केतु वेधः
„ „ ३ श. भद्रावैधृति कृष्णानंग चतुर्दिनकेतुवेधः
„ „ १४ बु. म. क्रान्तिसाम्यम्
„ „ १५ गु. म. क्रान्तिसाम्यम्
„ „ १६ शु. (क्रान्ति सा. ४८।१२ या) भौमयुतिश्च
„ „ १७ श. ह. राहुवेधः केतुयुतिश्च
„ „ १९ चं. स्वा (भ. ४४।५६ या) गुरुवेधः
„ „ २१ बु. अनु. मृत्यु पंचकम्।
„ „ ३० शु. उ. भा. मृत्यु पञ्चकः केतोर्वेधः
„ „ ३१ श. रे. मासान्त. भौम वेधश्च।
ज्येष्ठ प्र. ६ शु. मृ. धन लग्ने दशमस्थभौमदोषः अन्यलग्नाभावः।
„ „ १३ शु. उ. फा. ।।ऽ भौमयुतिः शुक्रवेधश्च।
„ „ १४ श. र. भद्राव्यतिपात राहुवेधः केतु युतिश्च
„ „ १५ र. स्वा. गुरुवेधः लग्नाभावश्च।
„ „ १६ चं. स्वा. गु. वे. परिघार्द्धम्।
„ „ १७ मं. अनु. भद्रा दोषः।
„ „ १८ बु. अनु. लग्नाभावः।
„ „ २१ श. उ. षा. मृत्यु पञ्चकं क्रान्तिसाम्यम्।
„ „ २६ गु. उ. भा. केतु वेधः।
„ „ २७ शु. रे. भौमवेधः।
„ „ २८ श. रे. भौमवेधः।
श्राव. प्र. २ चं. म. मृत्यु पंचकं ३७।। उपव्यति ४६।। उ. पूर्व लग्नाभावः।
श्रा. प्र. ३ मं. म. व्यतिपातः।
„ „ ४ बु. उ. फा. केतुयुतिः।
„ „ ५ गु. ह. राहुवेधः।
„ „ ९ चं. अनु. क्रान्ति साम्यम्।
„ „ १८ बु. उ. भा. रा युतिः।
„ „ १९ गु. रे. केतु वेधः।
„ „ २५ बु. उभा. ऽ बु. ।।।।ऽ।। लग्नाभावः रात्री।
„ „ ३२ बु. उ. फा. मासान्तः केतुयुतिश्च।
भा. प्र. १ गु. ह. निरंशक दोषः राहुवेधश्च।
„ „ २ शु. स्वा. मृत्यु पंचकं गुरुवेधः भौमयुतिः।
„ „ ३ श. स्वा. गुरुवेधः भौमयुतिश्च।
„ „ ५ चं. अनु. गोधूल्यां नक्षत्र गण्डांत. वेध [illegible]।

माघ. प्र. १४ श. ह. ।।।।। ऽ वृ. ऽऽ ।। ल. ८ घ. ४८३३४
उ. वा. ९

कार्तिक प्र. ३ गु. श्र. ।ऽ।।।।।।।। ल. ३ चं. दा.

" " २ शु. स्वा. मृत्यु पंचकं गुरुवेध: भौमयुतिः ।
" " ३ श. स्वा. गुरुवेध: भौमयुतिश्च ।
" " ५ चं. अनु. गोधूल्यां नक्षत्र गण्डांत वैधृतिश्च ।

" " १३ मं. उ. भा. राहुयुतिः ।
" " १४ बु. रे. केतु वेध: शनिवेधश्च ।
" " २८ बु. हस्ते राहुवेध: ।
" " ३० शु. स्वा. मृत्यु पंचकं भद्राच ।

आश्विन प्र. २ चं. मू. मृत्यु पंचकं भद्राच ।
" " ९ चं. उ. भा. क्रान्तिसाम्यम् ।

कार्तिक प्र.२ बु. उ. षा.(मृत्युपंचकं २९।१५ उ.) ।।।।।।ऽ।।
ल. अन्यगो. मृत्युपंचकं ।
" " ७ चं. उ. भा. शुक्रवृद्धत्व ।

माघ " १ र. रे. केतुशनिवेध: ।
" " ५ गु. रो. क्रान्ति सा. भ. ४८।४९ या ।
" " ६ शु. मृ. क्रान्तिसाम्यम् रविवेधश्च ।
" " ११ बु. म. (मृत्यु पं. ५५ या) रविवेध: ।
" " १२ गु. म. भ. ४१।१२ उ. रविवेध: ।
" " १३ शु. उ. फा. शनि केतुयुतिः ।
" " १४ श. उ. फा. शनि. केतुयुतिः ।
" " १६ चं. स्वा. गुरुभौमवेध: ।

माघ प्र. १७ मं. स्वा. गुरुभौमवेध: ।
" " १९ गु. अनु. भद्रादोष: ।
" " २२ र. उ. षा. कृष्णालंग चतुर्दिनं ।
" " २७ गु. उ. भा. (भ ३९।४८ उ.) पूर्वलग्नाभाव: ।
" " २८ श. रे. मृत्यु पं० ३७ उ. शनिकेतुवेध: ।

फाल्गुन प्र. ४ गु. रो. वैधृतिदोष: ।
" " ४ गु. मृ. वैधृतिः विष्कुम्भ ३ घटीच ।
" " १२ शु. उ. फा.(मृत्यु पं. २९ या) शनियुतिः ।
" " १३ श. ह. ।ऽ भुजगपातः ।
" " १५ चं. स्वा. क्रान्ति सा. गुरुवृद्धदोष: ।

वै. प्र. १८ रवि. चि. ऽ मं. शुक्रवेध: ।
" " १९ चं. चि ऽ मं. शुक्रवेध: ।

ज्ये. प्र. २२ र. श्र. ।।।।ऽ मृ. २५ या. ।ऽऽऽ क्रान्तिसाम्यम् ।
" २३ चं. श्र. का. साम्यं ५१।३५ या ।
" २४ मं. धं. ऽ चं. ।।।।ऽ।।। वैधृतिदोष: ।
" २८ श. अश्वि. शनिवेध: ।

श्रा. प्र. १४ श. श्र. ।।ऽ बु. ऽ सू. ऽ अ. १२ ब. या. ।।।।
" २० शु. अश्वि. ऽ चं. ऽ।ऽ शनिवेध: ।

मा. प्र. २ शु. चि. ।।।।ऽ मृ. ५ घ. उ. ।
" ९ शु. श्र. ।।ऽ चं. ऽ सू. वेध: ।
" १० श. ध. ।।ऽ शुक्रवेध: परदिनेऽपि ।
" १५ गु. अश्वि. रविवेध: ।

आश्वि प्र. ६ शु. श्र. ।।।।ऽ मृ. १० घ. या. ।।।। लग्नाभाव:

माघ प्र. २ चं. अश्वि. ।।।।ऽ मृ. ७-३० उ. ।ऽ।।
" १६ चं. चि. राहुवेध: ।
" २९ र. अश्वि. मासान्तदोष: ।

फा. प्र. १४ र. चि. ।ऽ। गु. रा. वेध: ।

अत्र क्वचित्स्मृतिदृष्टिदोषश्चेत्क्षन्तव्यं सुधीभिः ।
भुजंगक्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च ।
लग्नहीनं विवाहान्तं कर्त्ता पञ्च विवर्जयेत् ।।

नोट—१ यदि साहों में विवाह का लग्न दिन में प्रातः का शुद्ध हो तो बरात एक दिन पहले पहुँच जाना योग्य है। क्योंकि उस दिन पहले सायंकाल तक शान्तिकृत्य और जूठा टिक्का आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी ।।

२ विवाहादि मुहूर्त्तों में बाण-विचार तात्कालिक स्पष्टसूर्य के भुक्तांशों पर ही किया जाना शास्त्रसम्मत है, प्रविष्टों पर विचार करना ठीक नहीं, ऐसा काशी काश्मीर तक के सम्पूर्ण विद्वान् मानते हैं और वही जम्बू पटियाला आदि के प्राचीन पञ्चांगों से सुस्पष्ट है। किसी भी प्रामाणिक (मुहूर्त्तचिन्तामणि, मुहूर्तमार्तण्ड) मूल ग्रन्थकार ने पश्चिम वा उत्तर भारतीयों के लिये प्रविष्टों पर से बाण-विचार करना चाहिये ऐसा नहीं लिखा ।।

३ यदि गुरु शुक्र के उदयानन्तर ५-७ दिन के भीतर विवाह-मुहूर्त बनता हो तो साहे चिट्ठी माईयां पेड़े माष हस्तादि विवाहांगकृत्य का आरम्भ अस्त होने से पहिले ही से प्रारम्भ कर लेना चाहिये ।।

उपनयन मु०—

ज्ये. कृ. ३ गु. अनु. अत्यावश्ये ।
ज्ये. शु. ५ चन्द्र पुष्यभे ।
माघ कृ. ५ र. हस्ते ।
माघ शु. २ गु. शत. ।
माघ शु. १० भृ. मृग ।

फा. कृ. २ भृ. पूर्वा अत्यावश्ये ।

नोट—अत्यावश्यकता में चन्द्र बल देखकर सत्तीर्थ पर अन्य समय भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है इसी तरह ऋषितर्पण के समय भी मंत्र दीक्षा जनेऊ लिया जा सकता है।

द्विरागमन मु०—

वै. शु. १३ र. हस्त ।
ज्ये. कृ. ३ गु. अनु. ।
ज्ये. कृ. १० गु. श. ।
माघ शु. १० भृ. मृग. ।
माघ शु. १२ र. पुन. ।
माघ शु. १३ चं. पुष्य ।

सूचना—यदि दीपावली को दीपों के प्रकाश में स्त्री पति के घर आवे तो उसमें कोई मास नक्षत्रादि की शुद्धि न देखे ऐसे समय पतिगृह प्रवेश हो तो लक्ष्मी वृद्धि व सर्वसुख प्राप्त होता है।

जैन पर्व निर्णयः श्री वीर संवत् २४७६–७७ आत्म सं० ५४–५५ वि० २००७ ई० १९५०–५१

पर्व	तिथि	वार	सौर	ई०	
श्री विजयानन्द सूरीश्वर (श्री आत्मारामजी) का जन्मदिन	चैत्र शुदी १	रवि	चैत्र ६	१९ मार्च	१९५०
श्री बूटेराय जी का स्वर्ग दिन	,, ,, ,,	,,	,, ,,	,, ,,	,,
सिद्ध चक्र ओली शुरु	,, शुदी ६	शनि	,, १२	२५ ,,	,,
श्री वर्धमान जन्म (महावीर जयन्ती)	,, ,, १३	शुक्र	,, १८	३१ ,,	,,
ओली संपूर्ण सिद्धाचल मेला	,, ,, १५	रवि	,, २०	२ अप्रैल	,,
श्री ऋषभदेव वर्षी तप पारणा अक्षय तृ०	वै० ,, ३	गुरु	वै० ८	२० ,,	,,
श्री विजयानन्द स्वर्गवास दिन	ज्ये० ,, ८	,,	ज्ये० १२	२५ मई	,,
चौमासी अठाई प्रारम्भ	शुद्ध आ० शुदी ७	शुक्र	श्रा० ६	२१ जु०	,,
चौमासी चौदस श्रीवासु पुज्य मोक्ष	,, आ० ,, १४	शुक्र	,, १३	२८ ,,	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण	,, ,, ,, १५	शनि	,, १४	२९ ,,	,,
श्री नेमीनाथ जन्म	श्रा० ,, ५	शुक्र	भा० २	१८ अगस्त	,,
पर्यूषणा पर्व अठाई शुरु	भा० बदी ११	,,	,, २३	८ सित०	,,
कल्पसूत्र गृहस्थानरात्रिजागरन	,, ,, १३	रवि	,, २५	१० ,,	,,
कल्पसूत्र वांचना प्रारंभ	,, ,, १४	चंद्र.	,, २६	११ ,,	,,
वीरजन्म उत्सव	,, ,, ३०	मं	,, २७	१२ ,,	,,
संवत्सरीपर्व	,, शु० ४	शुक्र	,, ३०	१५ ,,	,,
विजयहीर सूरी स्वर्गदिन	,, ,, ११	,,	आश्वि. ६	२२ ,,	,,
श्री नवपद आंबिल अठाई शुरु	आश्विन ,, ७	मं.	कार्तिक १	१७ अकतूबर	,,
श्री नवपद आंबिल अठाई संपूर्ण	,, ,, १५	बुध	,, ९	२५ ,,	,,
श्री वर्धमान (महावीर) निर्वाणदिन दीपमाला वीर सं० २४७६ संपूर्ण	कार्तिक वदी ३०	गुरु	,, २४	९ नवम्बर	,,
श्री गौतम स्वामी केवलज्ञान वीर सं० २४७७ शुरु	,, शुदी १	शुक्र	,, २५	१० ,,	,,
भाईदूज (आचार्य) श्रीमद्विजय वल्लभसूरीश्वर जन्मदिन	,, शुदि २	शनि	,, २६	११ ,,	,,
ज्ञान (सौभाग) पंचमी	,, ,, ५	मं.	,, २९	१४ ,,	,,
चौमासी अठाई शुरु	,, ,, ७	गुरु	मार्ग. १	१६ ,,	,,
,, चौदस	,, ,, १४	,,	,, ८	२३ ,,	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण श्रीसिद्धाचल व हस्तिनापुर मेला	१५	शुक्र	,, ९	२४ ,,	,,
मौन एकादशी	मार्ग ,, ११	मं.	पौष ५	१९ दिसंबर	,,
श्री पार्श्वनाथ जन्म	पौष वदी १०	बुध	,, २०	३ जन.	१९५१
श्री ऋषभदेव मोक्ष मेरु १३	माघ ,, १३	रवि	माघ २२	४ फर.	
चौमासी अठाई शुरु	फा. शु. ७	गुरु	चैत्र २	१५ मार्च	,,
,, चौदस	,, ,, १४	,,	,, ९	२२ ,,	,,
,, अठाई समाप्त	,, ,, १५	शुक्र	,, १०	२३ ,,	,,
श्री ऋषभदेव जन्मदीक्षा	चैत्र वदी ८	,,	,, [illegible]		,,

भैषज्यरत्नावली

लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज श्री नरेन्द्रनाथ जी मित्र द्वारा संशोधित तथा आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालङ्कार कृत सुविस्तृत सरल तथा विवेचनात्मक भाषा-टीका सहित। पंचमावृत्ति बड़ी सज धज कर तैयार हुई है। पहली चार आवृत्ति हाथों हाथ बिक गई थी और लोगों की मांग बढ़ाबढ़ आ रही थी। अब की बार बहुत परिवर्द्धित कर दी गई है अर्थात् जितने योग इस संस्करण में मिलेंगे वह किसी भी आवृत्ति में आपको नहीं मिल सकेंगे। दूसरे विशेष गुण तो यह है कि इस संस्करण में सर्वत्र ही हर एक औषधि की मात्रा (doses) को समयानुकूल बना दिया है। जो किसी संस्करण में भी नहीं। आयुर्वेद की प्राचीन पुस्तकों में प्राचीन समय के अनुसार औषधियों की मात्रा बहुत ज्यादा है जो इस समय उलटी हानि कर देती हैं, विशेषकर साधारण वैद्यों को तो मात्रा देने में कठिनाई का सामना करना ही पड़ता है, इसी लिये इस संस्करण में इस कठिनाई को भी दूर कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त इस पांचवें संस्करण में भिन्न भिन्न योगों के अन्त में जहां जहां आवश्यक जंचा विशेषवचन दिया गया है। इसमें जहां पाठान्तरों में कहा योग का रूपान्तर दिखाया गया है वहां यह भी बताने की चेष्टा की है कि उस योग को रोग की किन अवस्थाओं में प्रयोग किया जाता है वा कराना चाहिये। व्याख्या में जहां जहां परिभाषा के अनुसार मान को दुगुना करना चाहिये वहां दुगुना ही करके लिखा गया है। अतः हर एक औषध-निर्माता यदि व्याख्या में कहे गये मान से औषध बनायेंगे तो औषध ठीक बनेगी। इस संस्करण में सब से बढ़ कर खूबी यह है कि उक्त कविराज श्री नरेन्द्रनाथ जी मित्र के अपने अनुभूत कई बड़े कीमती नुस्खे इसमें दिये हैं जो आपको कहीं नहीं मिल सकते। आयुर्वेद का कोई ऐसा प्रसिद्ध नुस्खा नहीं जो इसमें न दिया गया हो। पुस्तक बहुत उपयोगी हो गई है और वैद्यसमाज के बड़े काम की वस्तु है। पंचम संस्करण का मूल्य १३॥) रु०।

पुस्तक मिलने का पता :—

मोतीलाल बनारसीदास

पोस्ट बक्स ७५, चौक, बनारस

हमारे अपने प्रकाशित तथा प्रचारित ग्रन्थ

श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितविरचिता

वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी

श्रीमद्वासुदेवदीक्षित प्रणीत **बालमनोरमा** तथा श्रीज्ञानेन्द्र सरस्वती विरचित **तत्त्वबोधिनी** दो सरल तथा सुविस्तृत प्राचीन संस्कृत व्याख्याओं सहित। वैयाकरण के दिग्गज विद्वान् महामहोपाध्याय पं० श्रीगिरिधरशर्मा चतुर्वेदी तथा महामहोपाध्याय पं० श्रीपरमेश्वरानन्द शर्मा द्वारा संशोधित। सिद्धान्त कौमुदी जैसे कठिन ग्रन्थ को समझने के लिये यह दोनों व्याख्या नितान्त आवश्यक हैं। इन दोनों टीका के सहारे छात्र इस दुरूह ग्रन्थ को अनायास ही स्वयं लगा सकते हैं। इसलिये सब छात्रवर्ग से हमारा सप्रेम अनुरोध है कि अगर परीक्षा में उत्तीर्ण होना चाहते हैं तो इस संस्करण का उपयोग कर अनायास ही आप उत्तीर्ण हो जावेंगे। नवीन मोनो के सुन्दर टाइप में सफेद कागज पर छपी है। आजकल के महंगी के समय भी हमने इस पुस्तक का दाम प्रचारार्थ केवल प्रति भाग ५) रु० रखा है। पूर्ववत सम्पूर्ण पुस्तक चार भागों में समाप्त होगी। पूर्वार्द्ध दो भागों में छप कर तैयार है। उत्तरार्द्ध के दोनों भाग छप रहे हैं शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। प्रथम भाग (कारकान्त) ६२० पृष्ठ में मूल्य केवल ५) रु०, द्वितीय भाग (अव्ययी भाव समास से लेकर द्विरुक्तान्त तक) मूल्य ५) रु०।

अनुवाद—चन्द्रिका

पं० चक्रधर 'हंस शास्त्री, हिन्दी प्रभाकर, एम. ए. (डबल) एल. टी. विरचित। कोमलबुद्धि छात्रों को अनुवाद सिखलाने के लिये इससे बढ़कर पुस्तक आज तक कहीं नहीं छपी। यही कारण है कि भारतवर्ष के कोने २ में इस पुस्तक का आदर है इसीलिये तो थोड़े ही समय में यह इसका सातवां संस्करण छपकर तैयार हुआ है। इस संस्करण को नये सिर से संशोधित तथा परिवर्द्धित किया गया है। अनेकों संस्कृत परीक्षाओं के अनुवाद के प्रश्नपत्र भी साथ दिये हैं। हमारा हर एक छात्र से अनुरोध है कि अगर वह अनुवाद में अनायास ही उत्तीर्ण होना चाहते हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। मूल्य २) रु०।

आदर्श प्रस्तावरत्नमाला

सुप्रसिद्ध पं० श्रीविश्वनाथजी शास्त्री प्रिंसिपल, सरस्वती संस्कृत कालिज खन्ना विरचित। प्रस्ताव लिखने के लिये इससे बढ़कर पुस्तक आज तक कहीं नहीं छपी। छात्रों को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उन सबका अनुभव रखते हुए उक्त अनुभवी विद्वान् की यह कृति छात्रों के केवल हितार्थ ही लिखी गई है। एक बार इसे उपयोग में लाकर आप स्वयं अनुभव करेंगे कि यह कितनी उपयोगी है। पुस्तक छप रही है। शीघ्र प्रकाशित होगी।

नागानंद नाटक

श्रीहर्ष प्रणीत तथा छात्रोपयोगी अनेकों उपयोगी विषय तथा सरल संस्कृत तथा हिन्दी टीका सहित छप रहा है।

साहित्यदर्पणप्रश्नोत्तरी

साहित्यदर्पण के जितने भी प्रश्न परीक्षा में पूछे जा सकते हैं इसमें दिये गये हैं और उनके उत्तर भी। पुस्तक उपादेय है। कि बहुना प्रश्नोत्तारी में साहित्यदर्पण का सारा विषय सरल ढंग से देकर गागर में सागर का कार्य कर दिया मूल्य है १)

सरलानुवाद—चन्द्रिका

पं० चक्रधर 'हंस' शास्त्री, हिन्दीप्रभाकर एम. ए. एल. टी कृत। अनुवादचंद्रिका का संक्षिप्त संस्करण। मूल्य १।) रु०।

मध्यसिद्धान्तकौमुदी

पंडित श्रीविश्वनाथजी शास्त्री प्रभाकरकृत, छात्रोपयोगी अत्यन्त सरल प्रभाकरी टीका तथा अनेकों उपयोगी परिशिष्ट सहित। नया संस्करण छपता है।

प्रकाशक—**मोतीलाल बनारसीदास**

पोस्ट बक्स ७५, चौक, बनारस।

प्रारंभिक–पाणिनीय

पं० श्रीविश्वनाथजी शास्त्री प्रिंसिपल सरस्वती संस्कृत कालिज खन्ना ने लघुकौमुदी से पहले कोमलबुद्धि छात्रों के पढ़ने के लिये इसे तैयार किया है इसमें लघुकौमुदी के केवल वही सूत्र दिये हैं जो प्रारम्भ में छात्रों को पढ़ने नितान्त आवश्यक हैं। साथ में सूत्रों का भाषानुवाद भी दिया है। मूल्य केवल १) रु०।

संस्कृत–व्याकरण–सार

प्रो० रामचन्द्र शर्मा एम. ए. अध्यापक डी. ए. वी. कालिज जालंधर विरचित। जो हिन्दी द्वारा संस्कृत भाषा का व्याकरण सीखना चाहते हैं उनके लिये यह बेजोड़ पुस्तक है पक्की जिल्द सहित मूल्य ६) रु०।

अनुवादकला

नवीन पाणिनीय सुप्रसिद्ध प्रो० चारुदेवजी शास्त्री विरचित। उच्च कक्षा के छात्रों के लिये अनुवाद का यह नितान्त उपयोगी पुस्तक है। उक्त प्रोफेसर साहिब ने अपने जीवन के अध्ययन तथा अध्यापन का निचोड़ इस पुस्तक में दिया है। पुस्तक छप रहा है।

लघुसिद्धान्तकौमुदी

सुप्रसिद्ध टीकाकार व्याकरणाचार्य श्री पं० श्रीधरानन्दजी शास्त्री विरचित अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित। सब रूप-सिद्धि इसमें दी है। अनुवाद इतना सरल है कि बिना गुरू के ही छात्र समझ सकते हैं। प्रथम भाग छप रहा है। शीघ्र प्रकाशित होगा। द्वितीय भाग जुहोत्यादि से लेकर अन्त तक मूल्य ४) रु०।

प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता :—

मोतीलाल बनारसीदास

पोस्ट बक्स ७५, चौक, बनारस

कर्मकाण्ड. धर्मशास्त्र, व्रत, माहात्म्य आदि ग्रन्थ

अर्की विवाह	=)
अनन्तव्रत कथा	॥)
उपनयन पद्धति	१।)
एकादशी माहात्म्य भा. टी.	४)
ऋषिपंचमी	।=)
कर्मविपाक भा. टी.	५)
कार्तिक माहात्म्य	३)
कुण्डमंडप	॥)
कुण्डली फारम	६) सै.
कुम्भविवाह	=)
गणेशचौथ	=)
गयामाहात्म	१॥)
गरुड़पुराण भा. टी.	२)
गोदानपद्धति	=)
ग्रहप्रयोग	२।)
चित्र गुप्त	।=)
चान्द्रायणव्रत	।)
जन्मदिनपूजा	=)
जीवितपुत्रिका	।)
तुलसीविवाह	१॥)
दशकर्म पद्धति	१॥)
दशांग दुर्गा	१॥)
दवी भागवत भा. टी.	५०)
दुर्गा मूल	२) २॥)
दुर्गा भा. टी.	१॥), ३)
नारायणावली भा. टी.	१।)
नारकेत भा. टी.	२)
प्रेतमंजरी	२)
प्रतिष्ठा महोदधि	५)
पंचदान	।=)
पुत्तलविधान	।=)
पुरुषोत्तम माहात्म	४)
बृहस्तोत्र रत्नाकर	३)
भागवत भा. टीका खुला पत्रा बढ़िया	३२)
भागवत श्रीधरी सं०	२४)
भागवत दशम भाषा टीका	८)
भागवत भाषा सुख सागर	६) १२)
महालक्ष्मी कथा पूजन	॥)
मनस्मृति भाषा टीका	३)
मूलाशांती	।=)
माघ माहात्म	४)
यजुर्वेद मूल खुला	५)
रुद्री पाठ मूल	।॥)
वासिष्ठी हवन भा. टी.	।॥=)
वर्षकृत्य	६)
वास्तु पूजा	।=)
विवाह पद्धति भा. टी.	१)
वैशा माहात्म	३)
शिवार्चन	१॥)
शिलान्यास	।)
षोडशसंस्काविधि	३)
श्रादधविवेक	२)
श्रावणी	१॥)

वेदान्त ग्रन्थ तथा रामायणादि

हिन्दी टीका सहित तथा केवल हिन्दी

अच्युतलेखमाला	१॥)
आत्म पुराण भाषा	३५)
चन्द्रकान्त १, ३,	१६)
तुलसीरामायण भा० टी० ज्वालाप्रसाद गुटका १२) मध्यम २०) बड़ा	४२॥)
तु० रामायण रामेश्वर भट्ट	८)
रामचरित मानस मूल १॥) मध्यम ३) मोटा अक्षर ६) भा० टी० गुटका	५)
मोटा अक्षर	१५)
दशश्लोकी भ० टी०	।)
नारदभक्ति सूत्र	।॥=)
पंचदशी भा० टी०	५)
प्रकरणपंचक भा० टी०	॥)
ब्रह्मसूत्र शंकरभाष्य रत्नप्रभा हिन्दी टीका भोलेबाबा	१४)
बृहदारण्यकवार्तिकसार भा० टी०	९)
भगवदगीता शंकरानंद हि० टी०	४॥)

भगवदगीता शंकरानंद हि० टी० ४॥)

युक्ति प्रकाश १॥)
योग वसिष्ठ भा० टी० संपूर्ण ३०)
" " केवल भाषा २८)
वाक्यसुधा ॥)
विवरण प्रमेय संग्रह ४॥)
वेदान्त सिद्धान्त मुक्तावली १)
वेदान्तसिद्धान्त कल्पवल्ली ।॥)
सिद्धान्तलेश संग्रह भा० टी० ३)
सिद्धान्त सार हि० टी १॥)
धर्मकल्पद्रुम २५॥)
धर्मविज्ञान ३ भाग १३)

ज्योतिष सम्बंधि ग्रन्थ

केवल संस्कृत ग्रन्थ

अदभुतसागर मूल १०)
आर्यभट्टीय सभाष्य २ भाग ३॥)
करणपद्धति ।–)
कर्णप्रकाश १॥)
गणकतरंगिणी १।॥)
गोल परिभाषा ≡)
गोलीयरेखागणित सटीक १॥)
चलनकलन १॥)
चलनकलन प्रश्नोत्तर ।॥)
चापीयत्रिकोणगणित १॥)
ज्योतिष वेदांग १।॥)
ज्योतिषसिद्धान्तसंग्रह ।)
दीर्घवृत्तलक्षण १॥)
दशाफलदर्पण ४)
दैवज्ञकामधेनु ४॥)
धराभ्रम सटीक ॥)
नारदीय संहिता ।॥)
नाह्निदस्तपंच विंशतिका =)
प्रतिभाबोधक ।॥)
प्रश्नवैष्णव ॥)
प्रश्नांक चूडामणि =)
माभ्रमबोध ॥)
भाग्य रेखनिरूपण ॥)
महासिद्धान्त ४॥)
मूहूर्तचिन्तामणि पीयूषधारा ५)
वर्षपद्धति २)
रणदीपिका ।–)
रेखागणित ११-१२ अध्याय १॥)
" छटा " ।≈)
लीलावती सटीक ३)
वास्तवचन्द्रश्रृङ्गोन्नति १॥)
रविसिद्धान्त मञ्जरी १)
विश्वहितम् १)
विद्यामाधवीय ५॥)
सरल त्रिकोणमिति ३)
सरलरेखागणित (१—२) ॥=)
संग्रामविजयोदय २)
सारावली २॥)
सिद्धान्ततत्त्वविवेक ७) ७॥)
सिद्धान्तशिरोमणि सटीक ३॥) ६)
सूर्यसिद्धान्त सटीक ३॥)

हिन्दी टीका सहित ग्रन्थ

अहिबलचक्र ।)
कुण्डलीदर्पण १॥)
केरलप्रश्नसंग्रह ॥)
केशवीजातक २।॥)
खेट कौतुक ।=)
गणितकौमुदी २)
गणितमुक्तावली १।॥)
गर्गमनोरमा ।=)
ग्रहगोचर =)
ग्रहणफलदर्पण १)
ग्रहलाघव ३॥)
चमत्कारचिन्तामणि ॥)
जन्मपत्रदीपक १।)
जन्मपत्रिकाविधान १॥)
जातकालंकार ।॥)
जातकपारिजात १०)
जैमिनि सूत्र १॥) २॥)
ताजिकनीलकंठी २।॥) ४॥)
तिथिचिन्तामणि ॥)
धराचक्र ≡)
पंचस्वरा १॥)
पंचांगविज्ञान ।=)
पद्मकोश ।≡)
परवलयक्षेत्र ॥)
प्रश्नभूषण ।≡) ॥=)
प्रस्तारचक्र =)
बीजगणित ६) ८)
बीजवासना ॥=)
बृहज्जातक ३)
बृहज्ज्योतिषसार ३।)
बृहत्पाराशरहोरा पूर्वार्द्ध १०)
बृहद्होडाचक्र ॥) १)
भावकतूहल २)
भावफलाध्याय ।)
भुवनदीपक १)
मानसागरी ८)
मुहूर्त चिन्तामणि ३)
मुहूर्त मार्तण्ड ३)
योगनी जातक ।–)
रत्नगर्भाचक्र =)
लग्नचंद्रिका २)
लग्नरत्नाकर ।=)
लग्नवाराही =)
लघु जातक १॥)
लघुपाराशरी मध्यमपाराशरी १।)
लीलावती २॥)
वास्तुरत्नाकर २॥)
वास्तुरत्नावली २॥)
विवाहवृन्दावन २॥)
शिवजातक =)
शिशुबोध ॥=)
शीघ्रबोध १)
षट्पंचाशिका ॥)
सामुद्रिकरहस्य ३)

केवल हिन्दी ग्रन्थ

अर्घमार्तण्ड (पं० मुकन्दवल्लभ) १०)
आशुबोध ज्योतिष रतलाम ।=)
तिलकविचार रतलाम १)
द्वात्रिंशयोगावली =)
नेप्च्युन " ॥)
परीक्षाविचार " =)
मेघमाला भड्डली ।॥)
शनिविचार ।॥)
सुगम ज्योतिष १०)
संततिसमयविचार " १)
हर्षल " ॥)
हस्तपरीक्षा " ६॥)

English Translation

Brihat Jatak 8/8
Brihat Samhita 12/8
Astrology for Beginners 2/4/-
Astrology & Modern 2/4/-
Bhavarth Ratnakar 5/4/-
Female Horoscope 3/8/-
How to Judge Horoscope 3/12/-
Jatakalankara 1/8/-
Jatkadasa Marga 4/8/-
Jatak tattva 5/4/-
Jatak Parijata 14/-
Manual of Hindu Astronomy 4/8/-
Sanket nidhi 4/12/-
Sripati Padhti 2/8/-
Suryasidhanta Burgens 7/-
Shat Panchashika 1/4/-
Three Hundred Imp. Combinations 4/8/-
Uttara Kalamrita 4/-
Varshaphala 3/-

———

चिकित्सा संबंधि कुछ उपयोगी पुस्तकें

संस्कृत मूल अथवा संस्कृत टीका ग्रन्थ

अष्टांगसंग्रह इन्दु टीका शरीर निदान ६)
अष्टांगहृदय-मूल गुटका ३॥)
„ सर्वांगसुन्दरा-हेमाद्रि २५)
„ दास पंडित टीका प्रथम भाग ५।)
„ केरली टीका (उत्तर) ७)
अभिधान मंजरी-भिषगार्य १॥)
आयुर्वेदसूत्र-योगानंद २॥)
काकचण्डीश्वर कल्पतन्त्र ।॥=)
चक्रदत्त-संस्कृत टीका ६।)
चरक संहिता-मूल ६)
चरक संहिता-चक्रपाणी,
जज्जटटीका दो जिल्दों में १८)
तन्त्रयुक्ति ।॥)
द्रव्यगुणसंग्रह सं० टीका १।)
नलपाक १॥)
नेत्रचिकित्सा-डा० मुंजे ५)
भावप्रकाश-मूलमात्र ९)
भावप्रकाश निघंटु मूल १॥)
भैषज्यरत्नावली-सं० टीका ७॥)
माधवनिदान सुधालहरी १॥)
योगरत्न समुच्चय-दो भाग ९॥)
योगरत्नाकर-मूल ७)
रसरत्न समुच्चय मूल ३॥) सटीक १०)
रसवैशेषिक सूत्र सटीक २॥)
रसाध्याय: सटीक ॥=)
रसायनखण्ड-नित्यनाथ ॥)
रसार्णव-मूल २)
रसेंद्रसार संग्रह मूल १॥)
„ सटीक ५) तथा ३=)
रसोपनिषत् २।)
राजनिघंटु-नरहरी ३=)
वादिखण्ड-ऋद्धि खण्ड २)
वैद्यकौस्तुभ सटीक २)
शार्ङ्गधर-मूल २) सटीक ३।॥), ८)
सिद्धान्त निदान २ भाग १०)
सुश्रुत-मूल ८)
हरमखेला (२, ३, ४, ५ परिच्छेद) २॥)

हिन्दी टीका सहित ग्रन्थ

आयुर्वेदप्रकाश-पूर्वार्द्ध ४)
आयुर्वेदविज्ञानसार १॥)
आयुर्वेद परिभाषा १।)
आसवारिष्टसंग्रह १॥)
कामसूत्र २ भाग २४)
क्वाथमणिमाला १॥)
चक्रदत्त १०)
चरक संहिता जयदेवजी संपूर्ण ३२)
द्रव्यगुण विज्ञान-यादवजी २ भाग १०॥)
नाड़ी विज्ञान-कणाद ।-)
नाडी परीक्षा-रावण ।-)
नाडी ज्ञानदर्पण ॥)
पंचभूतविज्ञान-उपेन्द्रनाथ २)
पारदसंहिता २०)
भारतभैषज्यरत्नाकर संपूर्ण ५ भाग ५०)
भावप्रकाश-पूर्वार्द्ध १२)
भावप्रकाशनिघंटु-पं० विश्वनाथ ७)
भैषज्यरत्नावली-जयदेव १३॥)
माधवनिदान २॥), ४), ५)
योगचिन्तामणि ६)
योगतरंगिणी ६)
रसतरंगिणी-पं० सदानन्द १०)
रसमंजरी २।)
रसरत्नसमुच्चय १५)
रसरत्नाकर १६)
रसायनसार-श्यामसुन्दराचार्य ८)
रसेंद्रसार संग्रह ३), ६)
वैद्यक परिभाषा १॥)
वैद्य जीवन १।)
वैद्यरहस्य ५)
शरीरक्रियाविज्ञान-रणजीतराय ६)
शार्ङ्गधर संहिता ६ १०)
सुश्रुत-संपूर्ण अत्रिदेव छपता है
सुश्रुत-शरीरस्थान ३)
स्वस्थवृत्त समुच्चय-राजेश्वरदत्त ६॥)

केवल हिन्दी के ग्रन्थ

अण्ड तथा अन्त्रवृद्धि ।)
अनुपानकल्पतरु ।॥)
अनुपानविधि ॥)
अनुभूत योग २ भाग २)
अनुभूतचिन्तामणि २ भाग ८।)
अनुभूतयोग प्रकाश २ भाग ७॥)
अभिनवबूटीदर्पण सचित्र १०)
अमृतसागर गलेज १०)
अर्क गुणविधान १॥)
अर्श रोग विज्ञान ॥)
अरिष्टक (रीठा) गुणविमर्श ॥)
अश्वविज्ञान १)
आयुर्वेदप्रश्नोत्तरी ३)
आयुर्वेदमीमांसा जगन्नाथ १)
आयुर्वेदविश्व कोश ३ भाग २१)
आरोग्य प्रकाश-राम नारायण १।॥)
आरोग्य लेखांजलि-केदार नाथ १)
आरोग्य विधान जगन्नाथ ५)
आरोग्यशास्त्र-भावे २॥)
आसवविज्ञान-हरिशरणानंद १॥)
आहार सूत्रावली ॥)
आंख का अचूक इलाज-महेन्द्रनाथ २।)
इन्द्रायनगुण विधान ॥=)
उपचार पद्धति रवीन्द्र ।)
एकौषधिगुणविधान १।॥=)
एलोपैथिक गाइड-डा० रामनाथ ७॥)
औपसर्गिक रोग प्रथमभाग-घाणेकर ८)
औषधि गुणधर्म विवेचन ।-)
औषधि विवेचन १)
कब्ज और मलावरोध ॥)
करावादीनकादरी ३ भाग ३)
कर्णरोग विज्ञान २)
किशोररक्षा रवीन्द्र ॥)
कूपीपक्वरस निर्माण-हरिशरणानंद ५)
कौमारभृत्य-रघुवीर सिंह ८)
गंगयति निदान नरेंद्रनाथ ६)
गांवों में औषधरत्न २)
ग्राम्यचिकित्सा ॥=)
गूलर गुणविकाश १।)
घरेलु सस्ती दवायें ३)
घृतगुणविधान ॥)
चिकित्सकव्यवहार विज्ञान ।)
चिकित्सक हस्तपुस्तिका १)
चिकित्सा चन्द्रोदय ७भाग (हरिदास) ४६)
जननी और शिशु १)
जन्मनिरोध ८)
ज्वरमीमांसा (हरिशरणानंद) २॥)
जीवनतत्व (महेन्द्रनाथ) १॥)
जीवतिक्त विमर्श विटेमन्स १।)
जीवरसायन शुस्लर ४)
जीवाणु विज्ञान-घाणेकर ६।)
जुकाम (महेन्द्रनाथ) १॥)
तपेदिक „ ४)
टोटेका विज्ञान ।=)
तुलसी चिकित्सा ।)
तैल चिकित्सा ॥=)
त्रिदोष मीमांसा (हरिशरणानंद) २॥)
द्रव्यगुणादर्श (महेन्द्रनाथ) २॥)
दुग्धगुणविधान १)
दूध चिकित्सा (महेन्द्रनाथ) ४)
देहातियों की तन्दरुस्ती ।॥)
दैनिक प्रयोगावली (गंगाशरण) ३॥)
नपुंसक चिकित्सा ३)
नाड़ी दर्शन १)
नासारोग विज्ञान २)
निघंटु विज्ञान २)
नीम के उपयोग १)
नीम गुण विधान ।॥≡)
नैसर्गिक आरोग्य १॥)
पथ्यापथ्य निरूपण ॥)
पदार्थ विनिश्चय (कलकर्णी) १)

शरीरक्रियाविज्ञान-रणजीतराय ६) | किशोररक्षा रवीन्द्र ॥) | पदार्थ विनिश्चय (कलकत्ता) १)

परिचर्या गृहप्रबंध-टंडन २।)
पलाण्डु गुणविधान ॥)
पीपल गुणविधान ॥)
पेटेन्ट औषधियां २।)
पैसे २ के चुटकले ३)
प्रत्यक्षशरीर प्रथम भाग ६।)
प्रमेह विवेचन (महेन्द्रनाथ) २)
प्रमेहभास्कर ≡)
प्रयोग मंजुषा ॥।=)
प्रयोग रत्नावली २)
प्रयोग साहस्री उत्तर भाग १॥।=)
प्रयोग शतक ।-)
प्राणिज औषधि ।-)
प्रारंभिक उद्भिज शास्त्र ४॥)
प्रारंभिक भौतिकी सेठी ८)
प्रारंभिक रसायन फूलदेव ४॥।)
प्रारंभिक स्वास्थ्य ॥।)
फलसंरक्षणविज्ञान १)
फलाहार चिकित्सा २॥।)
फिटकरी गुणविधान १॥)
बच्चों के रोग और उनका इलाज २)
बबूल गुण विधान ॥)
बूटी प्रचार सचित्र ३)
बृहद इंजेक्शन चिकित्सा (रामविचार) ६)
भस्म और रसायन ।)
भारतीय जड़ी बूटी २॥)
भारतीय भौतिक विज्ञान ॥)
भारतीय रसपद्धति १॥)
भारतीय रसशास्त्र ।=)
भोजनविधि २)
भोजन ही अमृत है १॥।)
मकरध्वज ॥=)
मठा (महेन्द्रनाथ) ॥।=)
मट्ठा या छाछ १)
मधु के उपयोग १)
मधुमेह ॥)
मधुमेह चिकित्सा ।=)
मन्थर ज्वर की अनुभूत चिकित्सा १)

मानव शरीर रचना विज्ञान १४)
मानसिक चिकित्सा ४)
मुखरोग विज्ञान २)
मूत्र परीक्षा (रामकृष्ण) १)
मूत्रविज्ञान (डा० आशानंद) १।)
मोटापा दूर करने का उपाय १)
यकृत और प्लीहा रोग ॥)
यूनानी चिकित्सा सागर १०)
यूनानी शब्दकोश ।≡)
यूनानी सिद्धयोग संग्रह २॥)
रक्त के रोग (डा. घाणेकर) १०)
रणवीर प्रकाश संपूर्ण २०)
रसतंत्रसार प्रथम भाग ७) १०)
रसराज महोदधि संपूर्ण १२) १०)
रसायन प्रवेशिका ३)
रूपपरिचय (म्हस्कर) ३॥)
राजयक्ष्मा ।=)
राष्ट्रीय चिकित्सा १॥)
रोग परीक्षा पद्धति (डा० आशानंद) ७)
रोगोत्पादक मक्खी ≡)
रोगों की अचूक औषधि ७)
वटिका चिकित्सा ॥=)
वैद्यक शब्दकोश ।)
वैद्यवल्लभ ।=)
व्रणोपचार पद्धति ।=)
शरीर और स्वास्थ्य १)
शरीर परिचय १।)
शरीर विज्ञान भावे २॥)
श्वासरोग चिकित्सा ।)
शहद के गुण और उपयोग ॥।)
शिरोरोगविज्ञान ४)
सरल रोगविज्ञान ३)
सरल विषविज्ञान १॥।)
सरल व्यवहारायुर्वेद विषविज्ञान ४)
सर्पविषविज्ञान १।)
संतरा गुणविधान ।=)
संतान शास्त्र-चतुरसेन ५)
संक्षिप्त औषधपरिचय ॥=)

संक्षिप्त शल्यविज्ञान (डा० मु० [illegible]) ८)
स्टैथस्कोपविज्ञान १)
स्नानचिकित्सा ।=)
स्वप्नदोषविज्ञान २)
स्वास्थ्य और रोग (डा० त्रिलोकीनाथ) १०)
स्वास्थ्य के लिये शाक तरकारियां १॥।)
स्वास्थ्यरक्षा-हरीदास ५)
स्वास्थ्य विज्ञान-मु. स्वरूप ११)
स्वास्थ्यविज्ञान-घाणेकर ६)
स्वर्णक्षीरिगुणविधान ॥।)
सिद्ध प्रयोग २ भाग १॥)
सिद्ध मृत्युंजय योग १)
सिद्धयोगसंग्रह यादवजी २॥)
सिद्धौषधि प्रकाश १॥)

[illegible] ५)
सूचीवेध-राजकुमार २॥)
हमारा भोजन (महेन्द्रनाथ) ४)
हमारे बच्चे १॥।)
हमारी दिनचर्या १॥)
हमारे भोजन की समस्या १॥।)
हमारे शरीर की रचना २ भाग २५॥।)
होमियोपैथिक चिकित्सा ८)
History of Indian Medicine by G. Mookerji Vol. I & II 12/-
Vanaspati *by* Majumdar 3/12-
Ayurvedic Treatment of Kerala *by* Moos 3/-

चरक संहिता हिन्दी अनुवाद सहित

सुप्रसिद्ध टीकाकार आयुर्वेदाचार्य श्रीजयदेवजी विद्यालंकारकृत तंत्रार्थदीपिका नामक विवेचनात्मक तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित। चरक जैसे कठिन ग्रन्थ के समझने के लिये उक्त वैद्यजी का यह अनुवाद इतना लोकोपयोगी सिद्ध हुआ है कि ऐसा हिन्दी अनुवाद आज तक कहीं भी किसी भाषा में नहीं छपा। यही कारण है कि इतने थोड़े समय में यह इसका चौथा संस्करण छपा है। कागज की कठिनाई के कारण यह बहुत थोड़ा छापा है जो पुस्तक की मांग को देखते हुवे आशा है शीघ्र ही समाप्त हो जावेगा। इसलिये शीघ्रता करें ताकि फिर अगले संस्करण की प्रतीक्षा न करनी पड़े। दो बढ़िया पक्की कपड़े की जिल्दों में बड़े साईज में छपा है। मूल्य संपूर्ण ग्रन्थ का केवल ३२) कमीशन काट कर २८) में दिया जाता है।

चरक संहिता दो संस्कृत टीका सहित

श्री चक्रपाणिदत्त कृत आयुर्वेददीपिका तथा जज्जट कृत निरन्तर पद दो प्राचीन संस्कृत व्याख्यासहित बहुत बढ़िया बंबई निर्णयसागरी टाइप में छपा है। आयुर्वेदाचार्य श्री पं० हरिदत्तजी शास्त्री कृत अनेकों उपयोगी टिप्पणियों सहित। संपूर्ण दो पक्की कपड़े की जिल्दों में। मूल्य १८) कमीशन काट कर १५॥।)।

पुस्तक प्राप्ति स्थान :— **मोतीलाल बनारसीदास** पोस्ट बक्स ७५, चौक: बनारस

रसतरंगिणी (हिन्दी टीका सहित)

पक्की कपड़े की जिल्द सहित, चतुर्थ संस्करण, मूल्य १०) रु०

आयुर्वेद में रस शास्त्र की कितनी महत्ता है यह बात आज कल के प्रतिदिन के व्यवहार में आने वाली रसचिकित्सा पद्धति के अनुसरण करने वाले किसी से छिपी नहीं। यही नहीं रसशास्त्र में धातुविद्या का भी विशद वर्णन पाया जाता है। परन्तु रसचिकित्सा में व्यवहार में आने वाले खनिज द्रव्यों का शोधन मारण आदि किस विधि के अनुसार किया जाना चाहिये जिससे वह अत्यन्त गुणदायक हो सके यह एक बड़ी भारी कठिनाई वैद्य समाज के आगे थी। इसी कठिनाई को अनुभव करते हुवे लाहौर के सुप्रसिद्ध तथा सिद्धहस्त कविराज श्रीनरेन्द्रनाथजी मित्र तथा उनके सुयोग्य शिष्य प्राणाचार्य श्रीसदानंदजी ने उक्त पुस्तक मूल श्लोकों में तैयार की थी। इसकी विशेषता यह है कि इसमें केवल वही तरीके दिये गये हैं जो उनके अनुभव में आ चुके थे। ग्रन्थ की उपादेयता का इसी से पता चलता है कि प्रायः सभी आयुर्वेद विद्यालयों में यह पुस्तक पाठ्य क्रम में नियत है। इस संस्करण में मूल पुस्तक तथा आयुर्वेदाचार्य पं० हरिदत्त जी शास्त्रीकृत संस्कृत टीका तथा रस-विशेषज्ञ श्रीधर्मानन्दजी कृत सरल तथा विस्तृत रसविज्ञान नामक हिन्दी अनुवाद साथ दिया गया है। अब इस संस्करण से साधारण से साधारण व्यक्ति भी लाभ उठा सकता है। पुस्तक २४ अध्यायों में समाप्त हुई है। **पहले अध्याय** में रसशाला के विषय में पूरी जानकारी दी गई है। **दूसरे अध्याय** में परिभाषा संबंधि सभी बातों का सविस्तर वर्णन है, **तीसरे अध्याय** में मूषा आदि का वर्णन है **चौथे अध्याय** में हर प्रकार के यन्त्रों के चित्र, उनके बनाने के तरीके, उपयोग आदि सब दिया है। **पांचवें अध्याय** में पारद नाम, शुद्ध अशुद्ध स्वरूप, स्वाभाविक दोष, उनका परिचय, शुद्धि की आवश्यकता, शोधन के लिये पारे का मान, समय, पूजन, छ प्रकार के शोधन, हिंगुल से पारा निकालने की विधि, अष्ट संस्कार, स्वेदन, मर्दन, मूर्छन, उत्थापन, ऊर्ध्वपातन, अधः पातन, तिर्यक् पातन, बोधन, नियामन, दीपन, जारण, षड्गुण गन्धक जारण, इन सबके सब प्रकारों का वर्णन दिया है। **छठे अध्याय** में मूर्च्छना के स्वरूप तथा भेद, मुग्धरस, रसपुष्प, सिक्थतैल, रसकर्पूर, रसकर्पूर द्रव, कज्जली, रसपर्पटिका, रससिन्दूर, मकरध्वज, सिद्ध मकरध्वज, आदि इन सब के स्वरूप, भेद, गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोग आदि विस्तार से दिये हैं। **सातवें अध्याय** में पारद का सामान्य मारण, मृत पारद लक्षण, सप्त प्रकार, गुण, आमयिक प्रयोग, रसायन में पारद सेवन, क्षेत्रीकरण, रस, भक्षणकाल, मात्रा भेद अपथ्य, पथ्य, उपचार, कूष्मांड आदि का वर्णन है। **आठवें अध्याय** में गन्धक नाम, स्वरूप, अशुद्ध दोष, शोधनादि के छ प्रकार शुद्ध गन्धक के गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोग, कल्प, तैल, अपथ्य, द्रावक, सजलगन्धक आदि गन्धक विषयक विस्तार है। **नौवें अध्याय** में हिंगुल नाम, स्वरूप, भेद, निर्माण, दोष, प्रकार, शुद्ध हिंगुल गुण, प्रयोग, हिंगुलाद्य मलहर, हिंगुलीय रससिन्दूर, सिद्ध दरदामृत, हिंगुलीयमाणिक्य इन सब के गुण मात्रादि, सिद्ध हिंगुलेश्वर चपल निर्णय दिया है। **दसवें अध्याय** में [illegible] **सब प्रकार के भेद, दोष, लक्षण,** गुण, शोधन, मारण, भस्म को लोहितीकरण, अमृतीकरण, गुण, आमयिक प्रयोगादि, सत्वों की विशेषता, सत्वपातन, पिण्डीकरण, आदि का अभ्रक संबंधि सविस्तर वर्णन है। **ग्यारहवें अध्याय** में हरताल, मैनसिल, संखिया, फिटकिरि, खरिया मिट्टी, चूना, दुग्धपाषाण, गोदन्त आदि सब के नाम, भेद, स्वरूप, शोधन, मारण, मात्रा, गुण, परीक्षा तथा आमयिक प्रयोगादि दिये हैं। **बारहवें अध्याय** में शंख, क्षुद्र शंख, शक्ति, शृङ्ग तथा समुद्रफेन आदि इन सब के नाम, स्वरूप, भेद, शोधन, मारण, गुण तथा आमयिक प्रयोगादि दिये हैं। **तेरहवें अध्याय** में यवक्षार, नीम्बुकाम्लीय, सज्जीखार, टङ्कण, टङ्कणाम्ल आदि के नाम, निर्माण, गुण, मात्रा, शोधन तथा आमयिक प्रयोग दिये हैं। **चौदहवें** में नवसादर, सोरक, क्षार, लवण आदि इन सबके नाम, भेद, गुण, शोधन तथा आमयिक प्रयोगादि सविस्तर दिये हैं। **पंद्रहवें** में सुवर्ण संबंधि सब प्रकार के नाम, स्वरूप, लक्षण, निर्माण, मात्रा, गुण, मारण तथा आमयिक प्रयोगादि सविस्तर दिये हैं। **सोलहवें** में रजत तथा नवसादर बाष्पद्रव आदि के नाम, स्वरूप, हरप्रकार के शोधन, मारण, गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोगादि **सत्रहवें** में ताम्र, नाम, हरप्रकार के स्वरूप, भेद, लक्षण, फल, शोधन, मारण, मात्रा आमयिक, प्रयोग आदि सविस्तर वर्णन है। **अठारवें** में वंग (रांगा) के नाम लक्षण भेद, शोधन मारण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोग आदि सविस्तर दिये हैं। **उन्नीसवें** में सीसा, यशद, आदि के नाम, स्वरूप, फल, शोधन, मारण गुण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोगादि। **बीसवें** में लोह के भेद, नाम, परिचय, शोधन, मारण, गुण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोग **इक्कीसवें** में स्वर्णमाक्षिक, तूतिया, सिन्दूर मुर्दाशंख, खर्पर कान्तपाषाण, काशीस के नाम भेद, स्वरूप, गुण, शोधन, मारण आमयिक प्रयोग **बाईसवें** में पित्तल, कांसी अंजन, शिलाजीत, गेरु, आदि के नाम, भेद, स्वरूप, शोधन मारण, आमयिक प्रयोग। **तेइसवें** में सब रत्नों के नाम, परीक्षा, दोष, शोधन, मारण गुण मात्रा प्रयोग आदि। **चौबीसवें** में सब प्रकार के विषों के भेद, स्वरूप, शोधन, रस, गुण आदि दिया है।

यूनानी तिब्ब का फार्माकोपिया

(सरल हिन्दी में)

मसीह-उल-मुल्क हकीम अजमल खां साहिब ने केवल भारत के लीडर होने की वजह से मशहूर थे लेकिन वह एक चमत्कारी हकीम भी थे। इनके पास अनेकों विदेशों के निराश रोगी आकर स्वास्थ लाभ करते थे। हकीम साहिब और उनके परिवार तथा दिल्ली के अन्य हकीमों के नित्य उपयोग में आने वाले अद्भुत एवं चमत्कारी नुस्खों को श्री हकीम मन्नारामजी दुबल वाईस प्रिंसिपल, तिब्बीया कालेज दिल्ली ने इस पुस्तक में लिख दिया है तथा हर रोग का खुलासा तथा पथ्य भी साथ दिया है। पुस्तक सर्व साधारण के अत्यन्त उपयोगी है तथा नुस्खे भी बड़ी आसानी से मिलने वाले हैं। पुस्तक छपकर शीघ्र तैयार होगी मूल्य ५) रु०।

प्रकाशक— **मोतीलाल बनारसीदास चौक, बनारस।**

गुण, मात्रादि, सिद्ध हिंगुलेश्वर चपल निर्णय दिया है। इसके अध्याय में अभ्रक के

प्रकाशक — मोतीलाल बनारसीदास चौक, बनारस।

सुश्रुत संहिता सरल हिन्दी अनुवाद सहित

सुश्रुत संहिता का हिन्दी अनुवाद आजकल कोई भी नहीं मिलता। इस कमी को पूरा करने के लिये श्री अत्रिदेवजी गुप्त विद्यालंकार ने सरल हिन्दी अनुवाद संपूर्ण पुस्तक का किया है जो धड़ाधड़ छप रहा है। आशा है जनवरी १९५० तक तैयार हो जावेगा। मूल्य संपूर्ण पुस्तक बहुत सस्ता होगा।

गंगयति निदान

(सरल हिन्दी में)

कपड़े की जिल्द सहित मूल्य रु० ६)।

मूल लेखक पंजाब निवासी जैन यति गङ्गाराम। हिन्दी अनुवादकर्ता आयुर्वेदाचार्य श्रीनरेन्द्रनाथजी शास्त्री। पक्की कपड़े की जिल्द मूल्य ६) रु०।

पंजाब के गांवों में प्रायः वैद्य लोग इसी पुस्तक के आधार से रोगों का निदान करते हैं। भाषा इतनी सरल है कि सर्वसाधारण भी बड़ी आसानी से समझ सकता है। इसमें रोग जानने के उपाय, लक्षण, पूर्वरूप, उपशम, सम्प्राप्ति के लक्षण, भेद, स्वरूप, मिथ्याहार-विहार के लक्षण, ज्वर के पूर्वरूप, वात, पित्त, कफ, वातपित्त, वातकफ, पित्तकफ, सन्निपात आदि लक्षण ५२ प्रकार के सन्निपात का सविस्तर वर्णन है। विषमज्वर की संप्राप्ति, लक्षण, भेद, साध्यासाध्य, अर्थात् हर प्रकार के ज्वर का सविस्तर वर्णन है। स्थान स्थान पर पाश्चात्य मतानुसार भी वर्णन किया गया है। संग्रहणी रोग, अर्श (बवासीर) अजीर्णरोग, क्रिमिरोग, पाण्डुरोग, रक्तपित्तरोग राजयक्ष्मा, कासरोग, श्वासरोग, स्वरभेद, अरोचकरोग, छर्दिरोग, तृष्णारोग, मूर्छारोग, मदात्ययरोग, दाहरोग, उन्मादरोग, भूतोन्माद, अपस्माररोग, वातरोग, शूलरोग, उदावर्तरोग गुल्मरोग, हृदरोग, मूत्राघात, अश्मरीरोग, प्रमेहरोग, मेदोरोग, उदररोग, शोथरोग, वृद्धिरोग, अर्बुदरोग, श्लीपदरोग, विद्रधिरोग, व्रणशोथरोग, शारीरव्रणरोग, सद्योव्रणरोग, नाड़ीव्रणरोग, भगन्दररोग, उपदंश, शूकरोग, कुष्ठरोग, अम्लपित्तरोग, विसर्परोग, [illegible] रोग, प्लेग, चिप (चंडा) रोग, कुनखरोग, मुखरोग, ओष्ठरोग, [illegible], जिह्वारोग, तालुरोग, कंठरोग, सर्वसररोग, कर्णरोग, नासारोग, नेत्ररोग, शिररोग, शीर्षकलाशोथरोग, मस्तिष्करोग, बादगंठियारोग, हस्तमैथुनरोग, प्रदररोग, योनिव्यापदरोग, बाधकरोग, हिस्टीरिया, गर्भरोग, योनिसंवरण, गर्भिणी परिचर्या, प्रसूतरोग, स्तनरोग, दुग्धरोग, बालरोग, विषरोग, जंगमविषरोग, नाड़ीविज्ञान, मूत्र विज्ञान, शारीरिक विज्ञान, धरनरोग, उरोग्रह, पार्श्वशूलरोग आदि प्राचीन काल तथा आजकल में होने वाले हर एक प्रकार के रोगों के पूर्वरूप, भेद, संप्राप्ति, लक्षण, सामान्यनिदान विशेष लक्षण, वातज, पित्तज, कफज तथा साध्यासाध्य तथा पाश्चात्यमतानुसार सविस्तर वर्णन दिया गया है हिन्दी भाषा में इस प्रकार की कोई पुस्तक आज तक नहीं छपी। इस एक ही पुस्तक से सर्वसाधारण मनुष्य हर प्रकार के रोगों का ठीक ठीक निदान कर सकता है। भाषा इतनी सरल है कि हर एक मामूली पढ़ा लिखा भी इसे अच्छी तरह समझ सकता है।

मेघविनोद

(हिन्दी)

जैनयति श्रीमेघमुनि विरचित। श्रीनरेन्द्रनाथजी शास्त्री ने मूल पुस्तक का सरल हिन्दी अनुवाद कर दिया है। पंजाब के ग्रामों में प्रायः वैद्य लोग इस एक ही पुस्तक के सहारे हर रोग का इलाज करते हैं। नुस्खे इतने सरल तथा सस्ते हैं जो बाजार से आसानी से मिल सकते हैं। दूसरा संस्करण छप रहा है। शीघ्र प्रकाशित होगा। प्रतीक्षा करें।

प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता:—

मोतीलाल बनारसीदास

पोस्ट बक्स ७५, चौक, बनारस।

एलोपैथिक गाइड

लेखक—डा० रामनाथ वर्मा

पुस्तक क्या है। गागर में सागर। आज जब भारत स्वतंत्र हो चुका है और हिन्दी भाषा राष्ट्र भाषा बन गई है। आधुनिक ढंग से लिखी हुई डाक्टरी चिकित्सा की पुस्तक की अत्यन्त आवश्यकता थी जो सर्व साधारण तथा हरएक वैद्य, हकीम के काम आ सके और वह रोगों का ऐलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा पद्धति से बड़ी सरलता से इलाज कर सकें। इसी कमी का अनुभव करते हुये डाक्टर जी ने अपनी सारी आयु के अनुभव का निचोड़ इस पुस्तक में दे दिया है। हमारा तो यह दावा है कि जो साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसे एक बार देखेगा इसे अवश्य अपने पास सदा के लिये रखने का प्रयत्न करेगा। डाक्टरजी ने ऐलोपैथिक (डाक्टरी) सिद्धान्तानुसार शरीर के भिन्न २ अंगों का वर्णन तथा उनका कार्य, शरीर की सूक्ष्म रचना तथा भिन्न २ तन्तुओं का वर्णन, दन्तोद्गम, टीका लगवाना; बच्चों के विषय में कुछ जानने योग्य बातें, रक्त सञ्चार, नाड़ी परीक्षा, रक्तभार, लसीका वाहिनियां, प्रणाली विहीन ग्रन्थियां, हमारा भोजन, खाद्य पदार्थों का रसायनिक संगठन भोजन बनाने के संबंध में कुछ जानने योग्य बातें, भिन्न २ प्रकार के खाद्य पदार्थ, भोजन से रक्त की उत्पत्ति, भोजन किस स्थान पर कितनी देर रहता है, पाखाना, मूत्र परीक्षा, मूत्र के स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक अवयव, भिन्न २ आयु में मूत्र का परिमाण, विटेमिन्स, भिन्न २ खाद्य पदार्थ और उनकी विटेमिन्स, खाद्य तालिका, पाण्डु रोग और दौर्बल्य, कब्ज, मधुमेह, अतिसार, अजीर्ण, ज्वर, गठिया, सूजाक, नाड़ी दौर्बल्य, मोटापा, क्षयरोग, गर्भावस्था, वाय, टाइफाइड, रोगियों के लिये भिन्न २ प्रकार के आहार, मक्खी, मच्छर, खटमल आदि का वर्णन, सक्रामक रोग और उनसे बचने के उपाय, औषधियों को शरीर में प्रवेश करने के भिन्न २ मार्ग, व्यवस्था पत्रलेखन, औषधालय के संबंध में कुछ आवश्यक बातें, इन्जेक्शन्स (सूची भेद चिकित्सा इसमें प्रायः सभी प्रकार के इन्जेक्शन सका वर्णन है, किन २ बीमारियों में और कौन २ से) वेक्सीन थैरेपी, सीरम चिकित्सा, मुख्य २ रोग और उनके पूर्ण अनुभूत नुस्खे, अन्य उपयोगी नुस्खे इन्हेलेशन्स स्प्रे, लिक्टस, लिनिमेन्ट्स लोशन्स, मिक्सचर्स, आंइन्टमेन्टस्, पिग्मेन्ट्, पल्प पाऊडर्स, रोग और उनमें प्रयोग किये जाने वाले इन्जेक्शन्स और पेटन्ट औषधियां, कुछ पेटन्ट औषधियों का वर्णन, नवीन औषधियां जैसे पैनीसिलीन, सल्फोनेमाइड, आदि उनके गुण दोष, प्रयोग, उपचार, औषधियां हिन्दी अंग्रेजी नाम आदि अनेकों विषय इस पुस्तक में वर्णन कर दिये हैं। मू० ७॥) रु०।

अर्घ मार्तण्ड

(तेजी मन्दी का अनुपम ग्रन्थ)

पञ्चाङ्गकर्ता

राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभजी कृत

भारत सरकार द्वारा रजिष्टर्ड। इस ग्रन्थरत्न में रुई सूत्र वस्त्र शेयर ऊन सोना चाँदी तांबा लोहा आदि धातु तथा गुड़ खांड रसकस इलायची कालीमिर्च मसाला मूंगफली करयाना जवाहरात घृत तिल तैल सरसों बाजरा अलसी गेहूं चावल खली बिनौला लकड़ी रंग आदि प्रत्येक वस्तु की तेजी मन्दी के उत्तम अचूक सुनहरी चान्स सरल हिन्दी भाषा में दिल खोलकर लिखे गये हैं। जिन योगों को हजारों रुपये खर्च करने पर भी ज्योतिषी लोग नहीं बतलाते थे वह सब तेजी मन्दी के अनुभवसिद्ध गुप्त भेद २५ वर्ष की जांच के बाद लिखे गये हैं ऐसा ग्रन्थ अन्यत्र संसार की किसी भाषा में भी छपा हुआ नहीं मिलेगा। अन्त में सर्वोपकारार्थ लक्ष्मी-प्राप्ति के सिद्ध प्रयोग भी लिख दिये हैं जिनके करने से निर्भाग्य निर्धन भी लक्ष्मीयुक्त (धनीमानी) होकर सर्वसुख ऐश्वर्य की जिन्दगी भोग सकता है। व्यापारियों का तो यह जीवन है। पुस्तक बढ़िया कागज तथा कपड़े की पक्की जिल्द सहित तैयार हुई है, मूल्य १०) रुपये। यह पृष्ठों का मूल्य नहीं। गुण की भेंट मात्र है।

मोतीलाल बनारसीदास पुस्तक विक्रेता, चौक, बनारस।

किनारी बाजार–देहली

बांकीपुर–पटना

किनारी बाज़ार–देहली

बांकीपुर–पटना

प्रकाशक सुन्दरलाल जैन अध्यक्ष मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता ... और मुद्रक शान्तिलाल जैन, नवभारत प्रेस, भदैनी, बनारस